गुरु अमरदास रचनावली

रतन सिंह जग्गी

पब्लिकेशन ब्यूरो
पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला

गुरु अमरदास रचनावली

संपादक
प्रोफेसर रत्न सिंह जग्गी

पब्लिकेशन ब्यूरो
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
1982

GURU AMARDAS RACHNAVALI (Hindi)

edited by

DR RATTAN SINGH JAGGI
Professor & Head, Department of Punjabi Literary Studies,
Punjabi University, Patiala

मूल्य : 32/-
प्रथम संस्करण 1100

सरदार गुरबचन सिंह एम.एस-सी , रजिस्ट्रार, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला :
प्रकाशित की तथा फुलकियाँ प्रेस पटियाला के द्वारा मुद्रित हुई ।

प्राक्कथन

गुरु अमरदास जी मध्य-युग के एक महत्त्वपूर्ण धर्म-साधक, भक्त और समाज-सुधारक थे। लगभग ७२ वर्ष की वृद्धावस्था में, जब आमतौर पर मनुष्य अपनी सुध-बुध खो बैठता है, गुरु अमरदास जी ने सच्ची आध्यात्मिक जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए अपने कदम आगे बढ़ाए और इतनी दृढ़ता से बढ़ाए कि आयु की सीमाएँ उन्हें रोक न सकीं। उन्हों ने साधना के जो डग भरे, उन से सिख-भक्ति-आंदोलन को ऐसा व्यवस्थित रूप प्राप्त हुआ, जिस से इस धर्म-साधना के विकास की सम्भावनाएँ बढ़ने लगीं। गुरु जी ने अपनी वाणी के द्वारा मनुष्य को अपना आध्यात्मिक भविष्य उज्ज्वल करने की प्रेरणा दी।

सन् १९७९ गुरु अमरदास जी की पंचम शताब्दी का वर्ष था। इस शुभ अवसर पर पंजाबी यूनिवर्सिटी ने गुरु जी की जीवनी, व्यक्तित्व एवं चिंतन से सम्बन्धित अलग-अलग पक्षों पर १० पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई थी, जिन में प्रस्तुत पुस्तक भी शामिल थी। इस पुस्तक में गुरु अमरदास जी की सम्पूर्ण वाणी को देवनागरी में लिप्यंतरित किया गया है और पद-टिप्पणियों में आवश्यक शब्दों के अर्थ और भाव भी स्पष्ट करने का यत्न किया गया है। यह कार्य इस यूनिवर्सिटी के डॉ. रत्न सिंह जग्गी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पंजाबी साहित्य अध्ययन विभाग को सौंपा गया था, जिन्होंने बड़ी लगन और परिश्रम से यह संस्करण तैयार किया है और प्रारम्भ में एक विस्तृत भूमिका लिखकर बड़ी गम्भीरता एवं विद्वत्ता से गुरु अमरदास जी के व्यक्तित्व, धार्मिक विचारधारा और वाणी की साहित्यिकता पर प्रकाश डाला है।

मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के प्रकाशन से पंजाब के भक्ति-आंदोलन की विशिष्टता और गुरु अमरदास जी सम्बन्धी अध्ययन का विस्तार होगा।

पंजाबी यूनिवर्सिटी
पटियाला

भगत सिंह
उप-कुलपति

निवेदन

सन् १९७९ का वर्ष एक विशेष ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, क्योंकि इस वर्ष में पंजाब के भक्ति आंदोलन के तीसरे उत्तराधिकारी श्री गुरु अमरदास की पंचम जन्म-शताब्दी मनाई जा रही है। मध्य युगीन धर्म-साधकों में सिख गुरुओं और उनकी अमृत-वाणी का विशिष्ट एवं उल्लेखनीय स्थान एवं योगदान है। तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों ने जो विकट रूप धारण कर लिया था, उसे छिन्न-भिन्न कर भारतीय संस्कृति और धार्मिक सम्पदा को काल-कवलित होने से बचाने के लिए एक ज्योति में समाहित दस युग-पुरुषों की जिस परंपरा का विकास पंजाब की वीर-भूमि में दो शताब्दियों तक निरन्तर चलता रहा, वह वस्तुतः भारत की ही नहीं, विश्व के धर्म-इतिहास में भी एक पूर्णतया अनूठी एवं अद्वितीय घटना थी।

गुरु अमरदास ने अपनी धर्म-साधना के द्वारा प्राप्त हुई ब्रह्म-कांति से समस्त वातावरण को ज्योतिर्मय कर दिया। साम्प्रदायिक संकीर्णता से असंपृक्त वे वस्तुतः एक महान् सहज साधक थे। उनकी साधना कर्मकांडों से मुक्त, पूजा-विधियों से रहित, तर्क-वितर्क की शुष्कता से दूर और चित्तवृत्ति के निरोध से स्वतन्त्र एक ऐसी जीवन-विधि थी जिस को वर्ग, जाति, सम्प्रदाय, धर्म, देश एवं राष्ट्र की कृत्रिम सीमाएँ अपने बन्धन में बाँध न सकीं। उनकी साधना परम्परागत एवं रूढ़ धार्मिक अनुष्ठानों को त्याग कर सामान्य जन-जीवन में आ बिराजी थी। ब्रहम ज्ञान की अनिर्वचनीय अनुभूतियों के समय भी उन्होंने धरती के प्राणियों से अपना नाता तोड़ा नहीं था, क्योंकि प्राणी मात्र का हित-चिंतन सदैव उनके मन में बना रहा। उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। उन्होंने जो उपदेश दिया, पहले उस के अनुरूप अपने जीवन को ढाला और जब उस उपदेश की उपयोगिता प्रमाणित हो गई, तो उस को व्यवहार में लाने के लिए जिज्ञासुओं को प्रेरित किया।

गुरु साहिब को किसी प्रकार के सामाजिक अनाचार पसंद नहीं

थे। सती सदृश अमानवीय प्रथा को समाप्त करने का उद्यम इस बात का साक्ष्य है। सेवा उन के जीवन-दर्शन का आधार-तत्त्व था, जिसे वे प्रत्येक कठिनाई एवं असुविधा में और वृद्ध आयु में भी निभाते रहे, अपमानित हुए, परन्तु अपने कर्त्तव्य से न हटे। सामान्य मनुष्य ७०/७२ वर्ष की आयु में अपनी चेतना खो बैठता है, परन्तु गुरु अमरदास ने उस अवस्था में अपनी सच्ची आध्यात्मिक जिज्ञासा की तृप्ति के लिए ब्रह्म-ज्ञान के प्राप्ति-मार्ग पर कदम रखे और वे भी इतनी दृढ़ता के साथ कि वृद्ध आयु की दुर्बलताएँ उन्हें किसी प्रकार भी विचलित न कर पाईं। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम चरण में वह कुछ कर दिखाया जो सम्भवतः युवावस्था में कर सकना सरल प्रतीत नहीं होता। उन्होंने साधना के जो डग भरे, उनसे शतियों का अन्तर समाप्त हो गया। उन्होंने सिख-धर्म आंदोलन को ऐसा सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया कि तत्पश्चात् इस संगठन में किसी प्रकार के विकार के उत्पन्न हो सकने की सम्भावनाएं ख़त्म हो गईं। उन्होंने अपनी वाणी के द्वारा जो सन्देश दिया, उससे समूची मानवता, पद-दलित एवं दुःखित जनता को सान्त्वना प्रदान की, मायायुक्त संसार में मायामुक्त होकर विचरण करने की प्रेरणा दी, भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए उत्साहित किया और लोक से परलोक गमन का मार्ग-प्रशस्त किया।

भारत और विशेषतः पंजाब की अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं की ओर से गुरु जी की इस शताब्दी को सुचारु रूप से मनाने के लिए अपनी अपनी योजनाएँ बनाई गईं। पंजाबी विश्व-विद्यालय ने इस अवसर पर चार शोध-पत्रिकाओं के विशेषांकों के अतिरिक्त छः अन्य पुस्तकें प्रकाशित करने की भी व्यवस्था की। उन्हीं में से प्रस्तुत प्रकाशन एक है। इस संकलन में गुरु अमरदास की सम्पूर्ण वाणी का आदिग्रन्थीय राग-क्रम अनुसार लिप्यंतरण एवं सम्पादन किया गया है और कठिन शब्दों के अर्थ पद-टिप्पणियों के रूप में दे दिए गए हैं। प्रारम्भ में एक विस्तृत भूमिका जुटाई गई है जिसमें गुरु अमरदास की जीवनी, व्यक्तित्व, कृतित्व, आध्यात्मिक विचारधारा, साधना का स्वरूप और साहित्यिकता का विश्लेशण किया गया है।

हमें विश्वास है कि पंजाब के भक्ति आंदोलन तथा गुरु अमरदास की वाणी में रुचि रखने वाले हिन्दी पाठक हमारे इस प्रयास से अवश्य लाभान्वित होंगे।

पंजाबी साहित्य अध्ययन विभाग
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

रत्न सिंह जग्गी

विषय सूची

भूमिका

सेवा-पुंज और मानव-कल्याण में सदा ही दत्त-चित्त रहने वाले श्री गुरु अमरदास सिखों के तीसरे गुरु थे जिन की आयु सभी गुरुओं से अधिक दीर्घ थी। पहले, दूसरे, चौथे और पाँचवें गुरुओं के वे किसी-न-किसी रूप में समकालीन रहे थे। आयु में वे गुरु नानक से केवल दस वर्ष छोटे और गुरु अंगद से २५ वर्ष बड़े थे। अपनी अद्वितीय सेवा-साधना और अनन्य भक्ति के फलस्वरूप उन्हें गुरु नानक देव की गद्दी के तीसरे उत्तराधिकारी होने का गौरव प्राप्त हुआ।

जीवनी

जन्म-तिथि : गुरु अमरदास की जन्मतिथि के सम्बंध में प्राचीन और आधुनिक सभी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। महानकोशकार ने उनकी जन्मतिथि ५ मई १४७९ (वैशाख सुदि १४ संवत् १५३६) मानी है[1], परन्तु शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से पूरी छान-बीन करवा कर गुरु जी की पंचम शताब्दी ११ मई १९७९ को मनाने का आदेश जारी कर, इसी तिथि को उनकी प्रामाणिक जन्मतिथि घोषित किया गया है।

कुल-परम्परा : गुरु अमरदास का जन्म क्षत्रियों की भल्ला कुल में हुआ था। उनके दादा का नाम श्री हरि जी और पिता का नाम श्री तेजभान था। परन्तु गुरु जी की माता के नाम के सम्बंध में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत प्रचलित है, किसी ने रूप कौर, किसी ने बखत कौर और किसी ने लखी बताया है। इनमें से लखी के सम्बंध में अधिक और प्राचीन साक्ष्य उपलब्ध हैं[2]। अतः यह नाम सही प्रतीत होता है। श्री तेजभान भक्ति-भाव वाले बड़े शालीन और कर्मठ व्यक्ति थे। अनाज के व्यापार के अतिरिक्त वे खेती भी करते थे। उनके चार पुत्रों (अमरदास, ईशरदास, खेमराय और माणकचंद) में से (गुरु)

---

1. काह्न सिंह : भाई 'महान कोश', पृष्ठ ५६
2. 'भले कुल तेजो पिता माता लखो मात'—('महिमा प्रकाश')
   'माता लखो दे चानण पखी
   जनमें स्री अमरदास पूरन प्रतख'—('बंसावलीनामा दसां पातिशाहीआं का')

अमरदास सब से बड़े थे। व्यापार और खेती ये दोनों गुरु जी के कुल-परम्परागत व्यवसाय थे और भक्ति-भावना और कर्मनिष्ठा उन्हें बपौती के रूप में प्राप्त हुई थी।

जन्म-स्थान : गुरु अमरदास का जन्म बासर-के नामक गाँव में हुआ था जो छिहरटा (अमृतसर) रेलवे स्टेशन से लगभग पाँच किलो मीटर दक्षिण-पश्चिम की ओर था।[1] अब वह कालकवलित हो चुका है और उस स्थान पर केवल मिट्टी का एक टीला-सा शेष है। इस टीले से लगभग पौन किलो मीटर की दूरी पर स्थित बासर-की-गिलां बाद में, बसा गाँव है और उसका गुरु जी के जन्म-स्थान से कोई सम्बंध नहीं है। इस टीले से लगभग दो सौ मीटर के अंतर पर 'सन्ह साहिब' नामक एक गुरु-धाम है जिसका सम्बंध गुरु अमरदास के जीवन की किसी महत्त्वपूर्ण घटना से है।

पारिवारिक जीवन : गुरु अमरदास का विवाह २३ वर्ष की आयु में सन् १५०२ ई० (११ माघ संवत् १५५९) में हुआ था। उनकी सुपत्नी के नाम के सम्बंध में भी तीन मत प्रचलित हैं, यथा मनसा देवी, माली और रामो। रामो (राम कौर) के नाम की पुष्टि अधिकतर प्राचीन ग्रंथों से हो जाती है, इसलिए इसी को ठीक मान लेना उचित है। रामो स्यालकोट ज़िला के संखतरा नामक गाँव के श्री देवी चंद बहल की सुपुत्री थी। कुशल गृहस्वामिनी होने के साथ-साथ रामकौर एक निष्ठावान् पत्नी भी थी और अपने पति ही भक्ति-भावना को अधिक विकसित करने में अपना यथायोग सहयोग देती थी।

गुरु अमरदास की संतान के सम्बंध में भी विभिन्न निष्कर्ष निकालने वाले साक्ष्य उपलब्ध हैं। उन सभी का तार्किक विश्लेषण करने के पश्चात् गुरु जी के दो पुत्र—मोहन और मोहरी—और दो पुत्रियाँ—दानी और भानी—सिद्ध होती हैं। बीबी भानी का विवाह कालांतर में श्री जेठा जी के साथ सम्पन्न हुआ जिन्हें गुरु अमरदास के पश्चात् सिखों के चौथे गुरु होने का गौरव प्राप्त हुआ।

गुरु अमरदास का जीवन एक आध्यात्मिक जिज्ञासु का जीवन था। वे अपने व्यापारिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी हरि-भक्ति के लिए अवश्य समय निकाल लेते थे। वे प्रारंभ में वैष्णव भक्त थे। उनकी इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप सामान्यत: वे लोगों में भक्त अमरदास के नाम से प्रसिद्ध थे। युगीन प्रवृत्ति के अनुसार धार्मिक अनुष्ठानों में तीर्थयात्रा का विशेष महत्त्व था। अपने आध्यात्मिक भविष्य को सुधारने और लौकिक यात्रा को भली-भाँति

1. कान्ह सिंह भाई : 'महान कोश', पृ० ६३४

सम्पन्न करने के लिए गुरु जी ने तीर्थ-यात्रा के लिए मन बनाया और सर्व-प्रथम हरिद्वार की यात्रा ४२ वर्ष की आयु में सन् १५२१ में सम्पन्न की। तत्पश्चात् उन्होंने तीर्थ-यात्रा को एक वार्षिक लक्ष्य बना लिया और यह क्रम २० वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। वैष्णवी मान्यताओं को त्याग कर निराकार के उपासक बनने और गुरु-गद्दी पर आसीन होने के पश्चात् भी गुरु जी ने तीर्थ-यात्राएं की, परन्तु पूर्ववर्ती यात्राओं और इन यात्राओं में आधार-भूत अंतर है। पूर्ववर्ती कर्मकांडीय पद्धति से अनुप्राणित वैधी भक्ति परम्परा से सम्बद्ध थीं, जबकि परवर्ती यात्राएँ नानकत्व की सभी विशिष्टताओं से पोषित निराकार की उपासना और परा-भक्ति अथवा प्रेमा-भक्ति के प्रचार एवं प्रसार के लिए थीं। इनका उद्देश्य कर्मकांड-ग्रस्त मानवता को वास्तविक धर्म-बोध करा कर आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग-प्रशस्त करना था। इसके अतिरिक्त गुरु जी ने अड़सठ तीर्थों के स्थान पर गुरु-शब्द का मनन करने को ही सच्चा तीर्थ बतलाते हुए जिज्ञासु को नामाराधना की ओर प्रेरित किया—

सचा तीरथु जितु सतसरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए।
अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए[1]।

गुरु धारण करना : अपनी अंतिम तीर्थ-यात्रा के समय जब श्री गुरु अमरदास हरिद्वार से पंजाब लौट रहे थे तो मार्ग में मिहड़ा ग्राम के एक दुरगो अथवा दुर्गादास नाम के पंडित के बाग़ में कुछ समय के लिए रुके। वहाँ पंडित ने आपके चरणों में पद्म-चिह्न देख कर ज्योतिष के बल पर गुरु जी के अद्वितीय भविष्य का अनुमान लगाया। वहीं गुरु जी की भेंट एक ब्रह्मचारी साधु से हुई। विचारगत साम्य के फलस्वरूप दोनों एक दूसरे के अधिक निकट हो गए। जब गुरु जी अपने गाँव बासर-के लौटने लगे तो वह साधु भी उनके साथ हो लिया। आध्यात्मिक विचारों के आदान-प्रदान के समय जब उस साधु को ज्ञान हुआ कि (गुरु) अमरदास ने अभी तक कोई गुरु धारण नहीं किया, तो निगुरे के संपर्क में रहने के कारण उस ने अपने मन में बहुत पश्चात्ताप किया और अपनी साधना को निश्फल समझा। इस घटना ने गुरु जी के मन को झकझोर दिया। तीर्थ-यात्रा उनको व्यर्थ प्रतीत होने लगी और गुरु की प्राप्ति के लिए उनका मन लालायित हो उठा। दूसरे दिन जब प्रात:काल वे उठे तो उन के श्रवणों में मधुरकंठ से पढ़ी जा रही निम्नांकित अमृतवाणी का स्वर गूँजा, यथा—

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए।
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे। १।

1. आदि ग्रंथ, पृष्ट ७५३ (रागु सूही म० ३)

चित चेतसि की नही बावरिआ ।
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ । १ । रहाउ ।
जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ।
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी । २ ।
काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंचु अगनि तितु लागि रही ।
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनि जलिआ संन्ही चिंत भई । ३ ।
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ।
एकु नामु अंमृत ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा[1] । ४ ।

इस पद्य की भाव-विभूति से प्रभावित (गुरु) अमरदास के पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह मधुर आलाप उनके भाई की बहु और दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव की सुपुत्री बीबी अमरो का है। इस पद्य के रचयिता (गुरु नानक) के सम्बंध में जानने और उनकी गुरु-गद्दी पर प्रतिष्ठित गुरु अंगद देव के पास जाकर शिष्यत्व का गौरव प्राप्त करने की अभिलाषा से (गुरु) अमरदास बीबी अमरो को साथ लेकर खडूर साहिब पहुँचे, जहाँ गुरु अंगद का निवास था। समधी की सारी औपचारिकता का त्याग करते हुए ७१ वर्ष के वृद्ध (गुरु) अमरदास ने अपने से आयु में २५ वर्ष छोटे, गुरु अंगद के श्री-चरणों पर शीश रखते हुए आत्म-समर्पण कर दिया, घर-बार की सुध-बुध भूल गए, पिपासे चातक को स्वाति-बूँद प्राप्त हो गई, वे गुरु अंगददेव के ही हो गए। अपने गुरु की सेवा ही उनका परमपुरुषार्थ बन गया। रात-दिन वे लंगर की सेवा में लीन रहते। प्रात:काल उठकर अपने इष्ट-गुरु को स्नान कराने के लिए वे नौ किलोमीटर दूरस्थ ब्यास नदी से जल की गागर भर कर लाते। वर्षा हो अथवा झंझावात, जल की गागर भरने जाना (गुरु) अमरदास का नित्य-नियम था और इस नियम को निभाने में शत-प्रतिशत सफल रहे। इस सम्बंध में एक किवदंत्ती सुप्रसिद्ध है। एक बार शीतकाल की अंधकारपूर्ण रात्रि में जल की गागर उठाए जब खडूर साहिब ग्राम में प्रवेश करने लगे तो किसी जुलाहे की खड्डी के खूँटे से ठोकर खाकर गिर पड़े। उनके गिरने की आवाज़ को सुन कर जुलाहिन ने अंदर से ही प्रभात-बेला में सेवा करने वाले निष्काम साधक को व्यंग्यात्मक स्वर में 'अमरु निथावा' कह दिया। इस घटना का बोध होने पर गुरु अंगद ने दूसरे दिन संगत (जिज्ञासुओं की सभा) में (गुरु) अमरदास को बारह वरदान दिए, यथा-स्थानहीनों का स्थान, मानहीनों का मान, त्राणहीनों का त्राण, शरणहीनों की शरण, आश्रयहीनों का आश्रय, पक्षहीनों का

1. आदि ग्रंथ, पृ० ९९० (रागु मारू म० १)

पक्ष, धैर्यहीनों का धैर्य, पीरों के पीर, दयालगई बहोड़, जगत बंदीछोड़, भंनण घड़न समर्थ, सब जीविका जिस के हथ ।[1] वस्तुत: ये वरदान नहीं थे, अपितु भावी गुरु होने की ओर संकेत था ।

(गुरु) अमरदास की मान-प्रतिष्ठा को देख कर गुरु अंगद देव के पुत्रों के मन में गुरु-गद्दी से वंचित होने की संभावना बढ़ने लगी । फलस्वरूप वे (गुरु) अमरदास के प्रति वैरभाव को विकसित करने लगे । इसी समय गुरु अंगद देव ने (गुरु) अमरदास को गोंदा नाम के जागीरदार के साथ ब्यास नदी के किनारे नया गाँव बसाने के लिए आदेश दिया और इस आदेश का पालन आप ने सुचारु रूप से करके गोयंदवाल गाँव का शिलान्यास किया ।

गुरु-पद-प्राप्ति : लगभग ग्यारह वर्ष की निष्काम साधना, अनन्य सेवा और आध्यात्मिक परिपक्वता के परिणाम स्वरूप गुरु अंगद देव ने २९ मार्च १५५२ (चेत सुदि चार संवत् १६०९) को गुरुपद का समस्त अधिकार (गुरु) अमरदास को प्रदान कर गुरु नानक देव से प्राप्त ब्रह्म-ज्योति को आगे शरीरांतरित कर दिया और अपनी जागतिक यात्रा को सम्पन्न किया । गुरु अंगद देव के पुत्र—दातू और दासू—वास्तविक साधना के अभाव में गुरु-गद्दी से वंचित होने के कारण गुरु अमरदास से दुर्व्यहार करने लगे । फलत: शांत, धीर-गंभीर गुरु अमरदास ने खडूर से गोयंदवाल प्रव्रजन किया । कालांतर में दातू अपने भाड़े के दलबल सहित गोंयदवाल आया और सभा में बैठे वृद्ध गुरु अमर दास को पद-प्रहार से गिरा दिया । दातू की कुटिल भावना को देख कर बिना किसी को बताए गुरु जी गोंयदवाल से अपने गाँव बासर-के चल दिए और वहाँ एक कक्ष में अपने आप को बंद कर भक्ति में लीन रहने लगे । बाबा बुड्ढा के नेतृत्व में जिज्ञासु गुरु जी को ढूँढते हुए उस कक्ष के सामने पहुँचे । कक्ष के द्वार को न खोलने सम्बन्धी गुरु-आदेश को जानकर सिखों ने कक्ष की पूर्व-दिशा वाली दीवार में बड़ा सा सूराख कर उसमें प्रवेश किया और गुरु जी से गोंयदवाल वापिस चलने की प्रार्थना की, जिसको दयालु गुरु जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

विशेष कार्य : गोंयदवाल लौटने पर गुरु जी ने सिख-संस्था के विकास की ओर ध्यान दिया । गुरु नानक देव ने अपनी आध्यात्मिक यात्राओं के समय अपनी विचार-विभूति का दूर-दूर तक प्रसारण किया और असंख्य जिज्ञासुओं को अपना मतानुयायी बनाया । गुरु अंगद के समय अनुयायियों की संख्या में और वृद्धि हुई । सिख-साधकों का सिखी के मूल-केन्द्र और प्रेरणा-स्रोत

1. बलबीर सिंह दिल (डा०) : 'अमरकवि गुरु अमरदास', पृ० ३९

गुरु से अविरल सम्बन्ध बनाए रखने तथा सिखों द्वारा धार्मिक कार्यों के लिए भेंट रूप में दिए जाने वाले धन-धान्य को गोयंदवाल पहुँचाने की व्यवस्था करने के लिए गुरु अमरदास ने सिखी के समस्त प्रचार-क्षेत्र को सुविधा के लिए २२ केन्द्रों में विभक्त कर दिया और उनका कार्यभार चलाने के लिए वहाँ अपने विश्वस्त एवं सिद्धहस्त साधकों को नियुक्त किया। इसके साथ ही उन को संगत (सभा) में मंजी (चारपाई) पर बैठने का गौरव प्रदान किया। मंजियों के प्रयोग के फलस्वरूप ही इन केन्द्रों को मंजियों का अभिधान दिया जाने लगा। भाई काह्न सिंह के अनुसार इन मंजी-अधीशों के नाम इस प्रकार है—

१) अल्लायार, २) सचनिसचु, ३) साधारण, ४) सावणमल्ल, ५) सुखण ६) हुंदाल, ७) केदारी, ८) खेडा, ९) गंगूशाह, १०) दरबारी, ११) पारो, १२) फेरा, १३) बूआ, १४) बेणी, १५) महेसा, १६) माईदास, १७) माणकचंद, १८) मुरारी, १९) राजाराम, २०) रंगशाह, २१) रंगदास और २२) लाली।[1]

इस सूची से एक बात स्पष्ट होती है कि गुरु जी ने मंजी-अधीशों की नियुक्ति के समय धर्म तथा जाति भेद-भाव को किसी प्रकार का कोई महत्त्व नहीं दिया। आधुनिक विद्वानों के मतानुसार गुरु जी ने प्रचार-कार्य के लिए तपस्विनी स्त्रियों की नियुक्ति भी की और उन को मंजियों के समानांतर पीढ़ों पर बैठने का आदेश दिया।

उक्त मंजी-अधीशों द्वारा किए जाने वाले क्षेत्रीय समागमों के अतिरिक्त गुरु जी ने प्रत्येक वर्ष वैशाखी पर गोयंदवाल में महासमागम करने की व्यवस्था भी की और इस प्रकार का प्रथम समागम सन् १५६७ (१६२४ वि०) की वैशाखी को किया गया। गुरु जी ने, जैसा कि पीछे बताया जा चुका है, नव धर्म एवं नव-विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार के लिए तीर्थ-यात्राएँ भी की जिनका उद्देश्य पूर्व-कालीन तीर्थ-यात्राओं से भावना की दृष्टि से सर्वथा भिन्न था। इनमें कुरुक्षेत्र, यमुना और गंगा की यात्राएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। गुरमति के इस प्रचारयान तथा वार्षिक समागमों के विस्तृत प्रभाव के फलस्वरूप अन्य मतावलंबी धर्म-प्रचारक अपने गौरव को क्षति पहुँचने के भय से त्रस्त

---

1. 'महान-कोश' पृ० ६३४। स्मरण रहे कि प्राचीन ग्रंथों में मंजी-अधीशों के नामों की सूची में अंतर हैं। हाँ, इनमें से तेरह नाम (सचनिसचु, साधारण, सावणमल्ल, हुंदाल, खेडा, पारो, फेरा, महेसा, माईदास, माणकचंद, मुरारी, रंगदास, लालो) सभी सूचियों में एक-समान हैं।

होने लगे और तत्कालीन मुगल-सम्राट अकबर के पास गुरु जी की धर्म-निर्पेक्ष धर्म-साधना के विरुद्ध शिकायत की। सम्राट् अकबर के द्वारा गुरु जी को लाहौर बुलाए जाने पर जेठा जी (बाद में चौथे गुरु रामदास) को भेजा गया। जेठा जी ने बड़ी निष्ठा और अलौकिक सूझ से अकबर के पास गुरु-पक्ष की स्थिति स्पष्ट की। इससे सम्राट् बहुत प्रभावित हुआ। कालांतर में, सिख साम्प्रदायिक इतिहासकारों के अनुसार अकबर गुरु जी के दर्शन करने के लिए गोंयदवाल आया, संगत के साथ पंगत में बैठ कर लंगर का प्रसाद ग्रहण किया। गुरु के लंगर के लिए बादशाह ने कुछ जागीर भी देनी चाही, परन्तु गुरु जी के द्वारा उसे अस्वीकार किए जाने पर जेठा जी अथवा गुरु-पुत्री के नाम उसका पट्टा लिख दिया गया।

तीर्थ-यात्रा की लकीर की फ़कीरी को खत्म करने और अपने अनुयायिओं की भावना को विकेंद्रित होने से बचाने के लिए गुरु जी ने गोयंदवाल में एक बावली का निर्माण कराने की योजना बनायी। सन् १५५९ ई० (सन् १६१६ वि०) में इस के निर्माण-कार्य का प्रारंभ कर छः वर्षों के पश्चात् पूर्ण किया गया और तीर्थ-स्थानों पर योनियों की निवृत्ति के लोक-विश्वास को भ्रम की सीमा से निकालने के लिए गुरु जी ने इस बावली में ८४ सीढ़िआं भी बनवाईं। फलस्वरूप पंजाब निवासियों के मन मे अन्य किसी तीर्थ-यात्रा की इच्छा शेष न रही। उनके लिए सभी तीर्थों की यात्रा बावली में स्नान करने से ही सम्पन्न होने लगी। अमृतसर के सरोवर के निर्माण से पूर्व सिखों में बावली का स्नान विशेष आकर्षण और महत्त्व रखता था। डा. बलबीर सिंह दिल के मतानुसार गोयंदवाल सिखों के लिए स्वर्ग के समान था और बावली का स्नान 'ज़मज़म' (मक्का में स्थित पवित्र कुँआ) में स्नान करने के सदृश समझा जाता था।[1]

बावली के पश्चात् गुरु जी ने गुरुचक का निर्माण करने के योजना बनाई। गिलवाली, सुलतानविंड, तुंग, गुमटाला आदि गाँवों के मुखिओं को बुलाकर चक का स्थान निश्चित किया गया और इसके निर्माण का उत्तर-दायित्व जेठा जी को सन् १५७० में सौंपा गया।

लंगर (नित्य जन-भोज) की व्यवस्था का आरम्भ गुरु नानक देव ने ही कर दिया था। इस परम्परा को गुरु अंगद के समय और अधिक दृढ़ किया गया। गुरु अमरदास ने इस मर्यादा को अधिक स्थायी बनाने के लिए 'पहले पंगत पाछे संगत' की घोषणा की। अतः गुरु जी के दर्शनों के लिए जो जिज्ञासु भी आता, उस के लिए पहले लंगर में पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करना

1. 'अमरकवि गुरु अमरदास,' पृ० ४७

अनिवार्य बन गया। गुरु जी ने लंगर की पंगत-मर्यादा पर इस लिए अधिक बल दिया क्योंकि जाति भेद-भाव और ऊँच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए यही अपेक्षाकृत उचित साधन था। वर्णव्यवस्था के अंधविश्वासियों को यह बात पसन्द न आई, उनकी ओर से कई प्रकार के विरोधी प्रयत्न किए गए, परन्तु मानवता में भेदभाव की प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए गुरु की यह मर्यादा जन-साधारण को बहुत अच्छी लगी।

बाणी का प्रथम संकलन : गुरु अमरदास के समय गुरुबाणी की सरणी पर कुछ लोगों ने पदों की रचना करनी शुरू कर दी थी। इसलिए गुरु जी ने अपने पदों में यत्र-तत्र सद्गुरु की बाणी को ही वास्तविक और सच्चा मानने की बात कही है—

आवहु सिख सतिगुरु के पिआरिहो गावहु सची बाणी।
बाणी त गावहु गुरु केरी बाणीआ सिरि बाणी।
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी।
पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी।
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी[1]। २३।

गुरुबाणी को प्रक्षिप्त अंशों से बचाने के लिए गुरु जी ने बाणी एकत्रित करने का प्रयास किया और अपने पौत्र (मोहन के पुत्र) सहंसरराम से पोथियाँ लिखवाईं। इन पोथियों में से एक पोथी पटिआला में बाबा भगत सिंह के पास सुरक्षित है और दूसरी पोथी होशियारपुर ज़िला में मंडी दारापुर में बाबा दलीप सिंह के पास सुरक्षित है। ज्ञानी गुरदित सिंह ने बाबा प्रेम सिंह होती-वाले के पास सुरक्षित 'साखीआं गुरु बंस कीआं' नामक हस्तलिखित पुस्तक के आधार पर इन पोथिओं की रचना का आरंभ १५७० ई० (१६२७ वि० का आश्वन मास) में माना है। इनका आरंभ गुरु अमरदास के तत्त्वावधान में ब्यास नदी के किनारे हुआ और १५७२ ई० (सं० १६२९ वि० भादो १०) को इनका लेखन-कार्य सम्पन्न हुआ।[2] कल्याणदास उदासीन ने इन में से एक का रचना-काल १६५२ वि० (१२७ नानकशाही) माना है,[3] किंतु उसने तत्सम्बंधी कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया। अतः उनका कथन अमान्य है। प्रो. प्रीतम सिंह ने 'साखीआँ गुरु अमरदास भले कीआं' के आधार पर इन पोथियों का रचना

1. आदि ग्रंथ, पृ० ९२० (रागु रामकली अनंदु, म० ३)
2. 'आलोचना', जनवरी १९५६ ('गोइंदवाल वालीआं पोथीयां'), पृ० ८
3. 'सची खोज' तीसरा भाग, पृ० १६३

काल १५६५ से १५७४ ई० के बीच माना है[1]। पटियाला में सुरक्षित पोथी के एक पृष्ठ के हाशिए पर जेठा जी के स्वाक्षर लिखे बताए जाते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि विचाराधीन पोथियों की सृष्टि गुरु रामदास गुरु-पद ग्रहण करने (सं० १६३१ भादो सुदि ३—सन् १५७४ ई०) से पूर्व हो चुकी थीं। अतः ज्ञानी गुरदित सिंह का दिया हुआ साक्ष्य अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता है। इन पोथियों में संकलित कुछ वाणी इधर-उधर से सिख अनुयायियों से एकत्रित करवाई गई, कुछ पूर्व लिखित पोथियों से नकल करवाई गई और कुछ गुरु-घर के रबाबियों (मुसलमान गायकों) से सुनकर लिखी गई, क्योंकि उनको बहुत सी वाणी कंठस्थ थी।

इन पोथियों का आकार (१३"×१६") एक-समान है। मंडी दारापुर वाली पोथी के कुल ३०० पत्र है और पटियाला वाली में २२४। काग़ज़, लिखावट, हाशिआ की बनावट आदि विशिष्टताएँ इन दोनों की एक ही लिपिक की लिखी हुई प्रमाणित करती हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर लगभग तेरह-तेरह शब्दों की तेरह-तेरह पंक्तियां हैं। पंक्तियों की संख्या कई पृष्ठों पर न्यूनाधिक भी है। लिपी का स्वरूप पुरातन और स्थूल कुटिल है। कतिपय अक्षरों का स्वरूप वर्तमान गुरमुखी लिपि से किंचित् भिन्न भी है। इन दोनों पोथिओं में गुरु नानक और गुरु अमरदास विरचित वारें उपलब्ध नहीं हैं और न ही सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, वडहंस और तुखारी रागों में लिखे पद्य भी उपलब्ध हैं। इन तथ्यों के आधार पर सुतरां स्पष्ट है कि पोथिओं की मूलतः संख्या दो से अधिक थी।[2]

गुरु अमरदास के देहान्त के पश्चात् गुरु-पुत्रों ने ये पोथियों आगामी गद्दीदार गुरु रामदास को देने से इंकार कर दिया और जब गुरु अर्जुन देव ने सन् १६०४ ई० में गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन किया तो गुरु अमरदास के पुत्र बाबा मोहन (जो उनके मामा थे) के पास सुरक्षित इन पोथियों को मंगवाने के लिए अपने विश्वस्त सिखों को भेजा और बाबा मोहन के द्वारा इंकार किए जाने पर स्वयं पंचम गुरु गोंयदवाल गए और जिस चौबारा में बाबा मोहन निवास करते थे, उसके नीचे बैठकर 'मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा' से आरंभ होने वाले पद्य का गायन किया। इससे प्रसन्न होकर बाबा मोहन ने गुरवाणी की पोथियाँ गुरु अर्जुन को बड़े आदर से भेंट कर दीं। उनको प्राप्त कर गुरु अर्जुन देव अत्यन्त प्रसन्न हुए जो उनकी वाणी के

1. 'पंजाबी बोली अते गुरमुखी बारे', "पंजाब" सम्पा० डा० एम.एस. रंधावा, पृ० ३८६ (संस्करण १९६०)
2. 'आलोचना', जनवरी १९५६ ('गोइंदवाल वालीआं पोथीयां'), पृ० ८

निम्नांकित अंतःसाक्ष्य के आधार पर पूर्णरूपेण स्पष्ट है—

हम धनवंत भागठ सच नाइ ।
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ । १ । रहाउ ।
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ।
ता मेरै मनि भइआ निधाना । १ ।
रतन लाल जा का कछु न मोलु ।
भरे भंडार अखूट अतोल । २ ।[1]

सुस्पष्ट है यदि गुरु अमरदास वाणी-संकलन के लिए पोथियाँ लिखवाने का कार्य सम्पन्न न करवाते तो यह अपूर्व 'ख़ज़ाना' संभवतः दुष्प्राप्य हो जाता। अतः इस दृष्टि से यह गुरु अमरदास की विशेष देन है और वास्तव में वाणी एकत्रित करने का प्रथम सद्प्रयास है। इस प्रकार संभवतः उन्होंने और भी छोटी बड़ी पोथियाँ लिखवाई होंगी क्योंकि उनके सम्बंध में प्रचलित अनेक साखियों में उनके द्वारा गुरुवाणी की व्याख्या करने का कार्य आरंभ हो चुका था।

सुधारवादी उद्यम : गुरु अमरदास के समय समाज और धर्म के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कलूषित परम्पराएं स्थापित हो चुकी थीं जिन के फलस्वरूप समाज में अनेक प्रकार के जघन्य और हेय कृत्य किए जाते थे। पति की मृत्यु पर पत्नी के द्वारा उसके साथ चिता पर आत्मदाह करने की प्रथा उनमें से एक है। इस आत्मदाह में स्वेच्छा कम और सामाजिक जबर-दस्ती अधिक थी। गुरु जी को यह अमानवीय कृत्य बहुत बुरा लगा। उन्होंने अपने अनुयायिओं में स्त्री के सती होने पर पाबंदी लगाते हुए सूही राग में एक पद्य के द्वारा सती होने का विश्लेषण आध्यात्मिक संदर्भ में इस प्रकार किया—

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि ।
नानक सतीआ जाणीअनि जि बिहरे चोट मरंनि । १ ।
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि ।
सेवनि साइ आपणा नित उठि संमालंनि । २१ ।[2]

गुरु जी ने कन्या-हनन (दुखतरकुशी) की प्रथा को भी बहुत निकृष्ट घोषित करते हुए ऐसे व्यक्ति के संपर्क अथवा उसके दान, धन आदि को घृणित बताया है—

1. आदि ग्रन्थ, पृ० १८५-८६ (रागु गउड़ी, म० ५)
2. वही, पृष्ठ ७८७ (रागु सूही वार, म० ३)

ब्रह्मण कैली धातु कंन्का अणचारी का धानु ।

फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ।[1]

इसके अतिरिक्त जन्म और मरण से सम्बद्ध अनेकश: प्रथाओं का भी गुरु जी ने विरोध किया और उन परम्परागत अंधविश्वासों को त्याग देने के लिए लोगों को प्रेरणा दी । वर्णाश्रम-धर्म की पालना में गुरु जी को पूर्णतया विश्वास नहीं था । इसलिए इस अमानवीय बंधन को त्याग फेंकने के लिए गुरु जी सदा अपने सिखों को उत्साहित करते थे । स्त्रियों के लिए पर्दाप्रथा भी गुरु साहिब को मान्य नहीं थी । पर्दा के साथ स्त्रियों का उनके दर्शनार्थ दरबार में प्रवेश करना निषिद्ध था ।

देहांत : अपना अंतिम- काल समीप आया देख कर गुरु जी ने बड़ी सावधानी से अपने उत्तराधिकारी का निर्वाचन किया । जिस प्रकार प्रथम दो गुरुओं ने इस महान् पदवी के लिए अपने दोनों पुत्रों को योग्य न समझ कर प्रामाणिक सिखों को इस पद का अधिकारी घोषित किया, उसी प्रकार गुरु अमरदास ने भी अपने पुत्रों में किसी को इस योग्य न पाकर गुरुगद्दी का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व अपने दामाद जेठा जी को सौंप कर गुरु अंगद से प्राप्त की ब्रह्म- ज्योति को गुरु रामदास में शरीरांतरित कर दिया । जेठा जी सात वर्ष की आयु में गुरु-चरणों में सेवा करने के लिए उपस्थित हुए और निरन्तर साधना के फलस्वरूप उन्होंने गुरु होने का गौरव प्राप्त कर लिया । बाबा सुंदर विरचित 'सद' के आधार पर बाबा मोहरी ने तो जेठा जी (गुरु रामदास) के श्री-चरणों पर अपना शीश झुका दिया, परन्तु बाबा मोहन इस स्थिति से समझौता न कर पाए और गुरु अर्जुन द्वारा पोथियाँ प्राप्त करने की घटना तक उनके मन में वैमनस्य की भावना बनी रही ।

अंतिम समय गुरु जी ने अपने सम्बंधियों, परिवार के सभी सदस्यों और सिख-संगति को बुलाकर स्पष्ट कह दिया कि परमात्मा की इच्छा का पालन करते हुए वे अपनी इह- लीला समाप्त कर रहे है । इसलिए उन के देहांत के पश्चात् किसी प्रकार का भी कोई रुदन नहीं करना है और न ही परम्परागत मृत-संस्कार भी करने हैं । इस प्रकार का प्रवचन करते हुए गुरु जी ने प्रथम सितंबर १५७४ ई० (संवत् १६३१ भादों सुदि पूणिमा) को गोयंदवाल, ब्यास नदी के किनारे, अपने पार्थिव शरीर को त्याग दिया ।

व्यक्तित्व

गुरु अमरदास एक वय-वृद्ध, अनुभवी और सहज साधक थे । सल्ह भट्ट के अनुसार वे समाधि का कवच पहन कर ज्ञान रूपी घोड़े पर सवार थे

1. आदि ग्रंथ, पृ० १४१३ (सलोक वारा ते वधीक, म० ३)

और उन्होंने धर्म-धनुष को पकड़ कर भक्त वाले शील के तीर से रण ठान रखा था। निर्भय अटल परमात्मा के भय को मन में बसा कर गुरु-शब्द रूपी भाले को गाड़ कर कामादिक पाँच वासनाओं को उन्होंने विखंडित कर दिया था।[1] सत्ता तथा बलवंड नामक डोमों की दृष्टि में उन्होंने सहज के घोड़े पर संयम की काठी डल कर सत्य के धनुष का चिला चाढ़या हुआ था और उस पर यश का बाण लगा रखा था। वस्तुत: कलियुग के निविड़ अंधकार को छिन्न-भिन्न करने के लिए वे सूर्य के समान उदय हुए थे।[2] उन के चरित में अवतारत्व का आरोप करते हुए कीर्त भट्ट ने अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त किए हैं —

> आपि नराइण कला धारि जग महि परवरियउ।
> निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ।
> जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ।
> जिह सिखह संगहिओ ततु हरि चरण मिलायउ।
> नानक कुलि निंमलु अवतरिउ अंगद लहणे संगि हुअ।
> गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ।[3]

उक्त भट्ट-भणंत से एक बात भली-भाँति स्पष्ट है कि उस युग में सांसारिकता में ग्रस्त मानवता के लिए गुरु अमरदास जीवन दान देने वाले मसीहा के रूप में प्रकट हुए थे। वैष्णव भक्ति उन को बपौती के रूप में मिलने के कारण बाल्यकाल से ही उनका पारिवारिक वातावरण पूर्णतया आध्यात्मिकता वाला था। व्यापार और खेती में सत्यता का पालन करते हुए तीर्थ-यात्राएँ करना उनका धार्मिक कर्म था। परन्तु वे संकीर्ण अथवा अंध-विश्वासी रुचियों वाले साधक नहीं थे। वे हर प्रकार की नयी विचारधारा अथवा साधना-विधि को ग्रहण करने के लिए सदैव तत्पर रहते, यदि उससे मानवता का और उनका अपना कल्याण संभव हो सके। इसीलिए उन्होंने ब्रह्मचारी साधक से 'निगुरा' होने की बात सुनकर गुरु को प्राप्त करने के लिए एकदम मन बना लिया और तब तक चैन से नहीं बैठे जब तक उनको गुरु अंगद देव के रूप में एक निपुण्य मार्गदर्शक न मिल गया।

साधना के मार्ग में उन के लिए सांसारिक नातेदारी और आयु की औपचारिकता कोई अर्थ नहीं रखती थी। सेवा उनकी साधना की आधारशिला थी, जो उनके साधक को विकट परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होने देती

1. आदि ग्रंथ, पृ० १३९६
2. वही, पृ० ९६८
3. वही, पृ० १३९५

थी। सेवा के बल पर ही उन्होंने नानकत्व को प्राप्त किया था। प्रवृत्तिमार्गी होते हुए भी उन्होंने अपने आप को 'गृहस्थ में उदास' रखा था। गृहस्थी का उत्तरदायित्व निभाना वे खूब जानते थे, श्रेष्ठ पति और पिता के साथ-साथ वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वावलंबी थे। उनका परम्परागत व्यापार ही उन की आजीविका का एक-मात्र साधन था। गुरु-पद ग्रहण करने के पश्चात् भी लंगर से घर के लिए कोई वस्तु प्राप्त करना वे अनुचित समझते थे।

उनकी कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। वे स्वयं महान् साधक थे और अपने अनुयायिओं से सत्य साधना की अपेक्षा रखते थे। वर्णाश्रम-व्यवस्था में उनका विश्वास नहीं था, इसलिए पारिवारिक स्तर से ले कर साधना के क्षेत्र तक उनकी सारी व्यवस्था जाति-भेद भाव और पारिव्राज्य की मान्यताओं से मुक्त थी। ब्राह्मण हो या शूद्र, सन्यासी हो या गृहस्थी, सम्राट् हो या फ़कीर, गुरु जी के दर्शन करने से पूर्व उसको लंगर की पंगत में बैठ कर भोजन ग्रहण करना होता था। 'पहले पंगत पाछै संगत' के सिद्धांत को अपनाने से सभी का अहंभाव छूट जाता था।

गुरु जी अपूर्व सुधारवादी थे। उनका सुधारवाद धर्म के क्षेत्र से समाज के क्षेत्र तक व्यापक था। इस सुधारवाद में लोक-हित और कल्याण की भावना निहित थी। सती प्रथा को रोकने, अंतर्जातीय विवाह, विधवा-विवाह आदि को स्वीकृति देनें में उनका सुधारवाद निखर कर सामने आया था। धर्म के क्षेत्र में उन्होंने तीर्थ-यात्रा के चक्कर में पड़ी मानवता को आत्मतीर्थ में स्नान करने के लिए प्रेरित किया और कर्मकांडीय तथा वैधी साधना-पद्धतियों को त्याग कर प्रेम द्वारा सम्पन्न होने वाली भक्ति को अपनाने के लिए प्रेरणा दी।

वे एक सुयोग्य प्रबन्धक और कुशल व्यवस्थापक थे। गुरु-पद ग्रहण करने के पश्चात् सिख-जिज्ञासुओं को एक माला में पिरोए रखने के लिए उन्होंने २२ मंजियों की स्थापना की और वार्षिक समागमों की व्यवस्था के द्वारा उन सभी का केन्द्रीय संस्था से संपर्क बनाए रखा।

बावली और गुरु-चक का निर्माण करवा कर सिख साधकों के लिए महान् धर्म-धामों की स्थापना की। धर्म को उन्होंने संकीर्णता के परिवेश से निकाल कर सर्वथा लोक-हित एवं आध्यात्मिक उन्नति की भाव-भूमि पर स्थापित किया।

उनका व्यक्तित्व एक महान् तेजस्वी का व्यक्तित्व था जिस के प्रभाव से बड़े-बड़े उद्दंड व्यक्ति भी नतमस्तक होते देखे गए। साधना की उस

शिखर पर वे सहज ही पहुँच चुके थे, जहाँ पहुँच कर आपा-पर-का भेद मिट जाता है और सर्वत्र अद्वैतता का शांत वातावरण दिखाई पड़ता है। उन के महान् व्यक्तित्व के कारण उनमें देवत्व की कल्पना की जाने लगी और अनेक प्रकार की चमत्कार प्रधान घटनाएँ उनके जीवन-चरित से जोड़ दी गई। वस्तुत: उनका व्यक्तित्व श्रेष्ठ और अद्वितीय था, इसलिए भल्ल नामक भट्ट का निम्नांकित कथन अक्षरश: सत्य है—

भले अमरदास गुण तेरे,
तेरी उपमा तोहि बनि आवै[1]।

कृतित्व

गुरु अमरदास ने गुरु-गद्दी पर आसीन होने के पश्चात् अपनी रहस्यानुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए वाणी की रचना की। यह रचना १७ रागों में संगीत-बद्ध की गई है और बिहागड़ा राग में कतिपय श्लोकों की रचना भी हुई हैं। रागक्रमानुसार गुरु अमरदास की वाणी का ब्योरा इस प्रकार है—

१.	सिरी राग	:	३१ पदे—१ त्रिपदा (चौतुका), २६ चउपदे (१६ त्रितुके, १० चौतुके), ४ पंचपदे (१ दुतका, ३ चौतुके); ८ पदियाँ—७ अष्टपदियाँ (२ दुतुकी, ५ त्रितुकी), १ दसपदी (त्रितुकी); ३३ श्लोक (२ से ११ पंक्तियों तक)।
२.	माझ राग	:	३२ पदियाँ[2]—३१ अष्टपदियाँ (त्रितुकी), १ नौपदी (त्रितुकी); ३ श्लोक (२ से ४ पंक्तियों तक)।
३.	गउड़ी राग	:	१८ चउपदे (३ दुतुके, ५ त्रितुके, १० चौतुके); ९ अष्टपदियाँ, (२ दुतुकी, ६ त्रितुकी, १ चौतुकी); ५ छंत (प्रत्येक में चार छेतुके पदे); ७ श्लोक (३ जे ८ पंक्तियों तक)।
४.	आसा राग	:	१३ पदे—११ चउपदे (१ दुतुका, १० चौतुके), २ पंचपदे (चौतुके); १५ अष्टपदियाँ (१३ दुतुकी, १

1. आदि ग्रंथ, पृ० १३९६
2. प्रत्येक पदी की प्रथम और द्वितीय पंक्तियाँ एक-समान और तीसरी इन दोनों जितने आकार की है और अंत में दीर्घ स्वर वाला कोई शब्द रहता है।

त्रितुकी, १ चौतुकी), १ पटी (१८ दुतुकी पउड़ियाँ); २ छंत (एक में ४ और दूसरे में १० छेतुके पदे)।

५. गूजरी राग : ७ पदे—५ चउपदे (दुतुके), २ पंचपदे (दुतुके); १ दसपदी (दुतुकी); ४३ श्लोक (२ से ११ पंक्तियों तक); २२ पउड़ियाँ (पंच तुकी)।

६. बिहागड़ा राग : ३३ श्लोक (२ से ११ पंक्तियों तक)।

७. वडहंस राग : ९ पदे—८ चउपदे (दुतुके), १ नौपदा (दुतुका); २ अष्टपदियाँ (दुतुकी); ६ छंत (प्रत्येक में ४ छेतुके पदे); ४ अलाहणियाँ (प्रत्येक में ४ छेतुके पदे); ४० श्लोक (२ से १० पंक्तियों तक)।

८. सोरठ राग : १२ चउपदे (५ दुतुके, ६ त्रितुके, १ चौतुका); ३ अष्टपदियाँ (२ दुतुकी, १ त्रितुकी); ४८ श्लोक (२ से १० पंक्तियों तक)।

९. धनासरी राग : ९ पदे—१ त्रिपदा (दुतुका), ८ चउपदे (चौतुके)।

१०. सूही राग : ४ पदियां—३ अष्टपदियां (१ दुतुकी, १ त्रितुकी, १ चौतुकी), १ ३४-पदी (दुतुकी); ७ छंत (प्रत्येक में ४ छ:तुके पदे), १५ श्लोक (२ से ८ पंक्तियों तक), २० पउड़ियां (पंच-तुकी)।

११. बिलावल राग : ६ पदे—५ चउपदे (२ दुतुके, १ त्रितुका, २ चौतुके), १ पंचपदा (चौतुका); १ अष्टपदी (त्रितुकी); २ २ सतवारा (प्रत्येक में १० छ:तुके पदे); २४ श्लोक (३ से १० पंक्तियों तक)।

१२. रामकली राग : १ छ:पदा (चौतुका); ५ पदियाँ—१ १२-पदी (दुतुकी), २ २१-पदी (इकतुकी), १ २७-पदी (इकतुकी); १ ३०-पदी (इकतुकी); १ अनंदु (५ से ६ पंक्तियों की ४० पउड़ियाँ); २४ श्लोक (२ से १० पंक्तियों तक); २१ पउड़ियां (प्रत्येक पंचतुकी)।[1]

१३. मारू राग : ५ पदे—४ चउपदे (दुतुके), १ पंचपदा (दुतुका); १ दसपदी (दुतुकी); २४ सोलहे (प्रत्येक में तीन

1. प्रथम पउड़ी के साथ एक पंक्ति 'रहाउ' की भी है।

पंक्तियों[1] के १६ पदे); २३ श्लोक (२ से १० पंक्तियों तक); २२ पउड़ियाँ (प्रत्येक पंचुतुकी) ;[2]

१४. भैरउ राग : २१ पदे—१५ चउपदे (दुतुके), ४ पंचपदे (३ दुतुके, १ चौतुका), २ छ:पदे (दुतुके); २ पदियाँ—१ अष्टपदी (दुतुकी), १ ३४-पदी (चौतुकी)।

१५. बसंत राग : २० पदे—१९ चउपदे (७ दुतुके, ४ चौतुके), १ पंचपदा (चौतुका)।

१६. सारंग राग : ३ अष्टदियाँ (दुतुकी)[3]; २३ श्लोक (२ से १० पंक्तियों तक।

१७. मलार राग : १३ पदे—१० चउपदे (४ दुतुके, ३ त्रितुके, ३ चौतुके) ३ पंचपदे (१ त्रितुका, २ चौतुके); ३ अष्टपदियाँ (१ दुतुकी, १ त्रितुकी, १ चौतुकी); २७ श्लोक (२ से ११ पंक्तियों तक)।

१८. प्रभाती राग : ७ पदे—६ चउपदे (४ दुतुके, २ त्रितुके), १ पंचपदा (दुतुका); २ पदियाँ—१ अष्टपदी (दुतुकी), १ ११-पदी (दुतुकी)।

श्लोक = १) श्लोक फरीद प्रसंग[4] १३वाँ और १०४वाँ = २
२) श्लोक कबीर प्रसंग २२०वाँ = १
३) श्लोक वारा ते वधीक म० १—२८वाँ = १
४) श्लोक वारा ते वधीक म० ३ = ६४[5]

योगांक = १७२ चउपदे, ९१ अष्टपदियाँ, २० छंत, २४ सोलहे, ४११ श्लोक, ८५ पउड़ियाँ, ९४ फुटकर पद्य = ८९७

उपर्युक्त वाणी का आलोचनात्मक परिचय देने के लिए इन के आकार

1. प्रथम और द्वितीय पंक्ति एक-समान, परन्तु तीसरी इन दोनों के आकार जितनी लम्बी और अंत में दीर्घ-स्वर वाला शब्द रहता है।
2. अंतिम पउड़ी में छ: पंक्तियां हैं।
3. यहाँ 'रहाउ' की दो पंक्तियाँ प्रथम पदे से पूर्व अंकित हैं।
4. अंक ५२ वाला श्लोक रामकली राग की वार के साथ १५ अंक पर संकलित है।
5. इन श्लोकों की कुल संख्या ६७ है, किंतु इन में से पहले दो रामकली राग की वार में एक श्लोक के रूप में अंक ११ पर संगृहीत हैं और तीसरा श्लोक मारू राग की वार में १३वें श्लोक का पूर्वार्द्ध है।

एवं वर्ग को सम्मुख रखते हुए निम्नांकित क्रम से अध्ययन किया जा सकता है, यथा अनंदु, अलाहणियाँ, वार सत, पट्टी, वार काव्य, पउड़ियाँ, श्लोक, चौपदे, अष्टपदियाँ, सोलहे और छंत ।

अनंदु : इस बृहदाकार वाणी की रचना रामकली राग में हुई है। इस कृति का गुरु अमरदास विरचित वाणी में विशेष महत्त्व है। जिस प्रकार गुरु नानक देव की वाणी में 'जपु' और गुरु अर्जुनदेव की वाणी में 'सुखमनी' का विशेष स्थान है, उसी प्रकार तीसरे गुर की वाणी में प्रस्तुत कृति का विशिष्ट महत्त्व है। सिखों के सभी मांगलिक, धार्मिक एवं मृत्यु सम्बंधी संस्कारों के अवसर पर इस वाणी का गायन एवं. पठन-पाठन होता है। अमृत-संस्कार के समय इसे अमृत की पाँच वाणियों में शामिल किया जाता है। नित्य की वाणियों में भी इस का पाठ होता है। सांय-काल को सिख-साधकों के द्वारा पढ़ी जाने वाली 'रहरास' नामक वाणी में भी इस के संक्षिप्त रूप (प्रथम पाँच पद्य और अंतिम पद्य) को संमिलित किया गया है। इस रचना में कोई ऐसा अंतः-साक्ष्य उपलब्ध नहीं जिसके आधार पर इस की रचना-प्रेरणा और रचना-काल के सम्बंध में कोई तथ्याधारित बात कही जा सके। साम्प्रदायिक परम्परा के अनुसार गुरु जी ने इसकी रचना अपने पुत्र मोहरी के घर में पुत्रोत्पत्ति के अवसर पर सन् १५५४ ई० (१६११ वि०) में की थी।[1] अपने पौत्र, जिसका नाम 'आनंद' रखा गया, के जन्म की खुशी को किसी अलौकिक खुशी का आधार बना कर गुरु जी ने अद्वैत साधना के संदर्भ में 'ज्वलित जगत्' को शीतल करने की विधि का परिचय देकर वाणी-जगत् में एक स्तुत्य प्रयास किया।

इस रचना में ४० पद्य हैं जिन में से परम्परा के अनुसार ३९वाँ पद्य चौथे गुरु का और ४०वाँ पंचम गुरु का लिखा है। परन्तु यहाँ एक बात द्रष्टव्य है कि गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादन करते समय गुरु अर्जुन देव ने जो स्वरचित पद्य किसी अन्य रचयिता की वाणी में सम्मिलित किए, उन के सम्बंध में आवश्यक सूचना प्रारम्भ में ही दे दी गई, यथा मलार राग में संकलित गुरु नानक विरचित वार की २८वीं पउड़ी पंचम गुरु की लिखी है। इस सम्बंध में आरम्भ में ही संकेत कर दिया गया है, यथा—पउड़ी नवीं म० ५। इस तथ्य के प्रकाश में कहना न होगा कि 'अनंदु' के सभी पद्य गुरु अमरदास के लिखे हैं।

यह एक रूपकात्मक (allegoric) रचना है। इसमें मनुष्य एक

१. काह्न सिंह भाई; 'महानकोश', पृ० ४८

बनजारा है जिस ने संसार रूपी बीहड़ मार्ग से गुज़रना है। इस मार्ग में अनेक प्रकार की बाधक शक्तियों का जमघट है। भयभीत जिज्ञासु का उत्साहवर्धन करने के लिए गुरु का शब्द एक महत्त्वपूर्ण और विश्वस्त तत्त्व है। इस शब्द के निर्देशन में मनुष्य अपने ध्येय, अर्थात् परमानंद, की प्राप्ति करता है। इस प्रकार 'माटी का पुतला' माटी में रह कर विषय-वासनाओं का दमन करता हुआ, गुरु की वाणी में लीन रहकर लौकिकता में ही अलौकिक तत्त्व अथवा आनंद को प्राप्त कर लेता है। धरती का आकाश से, भौतिकता का आध्यात्मिकता से, आत्मा का परमात्मा से नाता जोड़ने के लिए प्रस्तुत कृति एक महत्व-पूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तव में जिज्ञासु को धरती से बैकुंठ तक पहुँचाने में सहायक रूप में प्रस्तुत होने वाली यह एक निसेनी है और यही इसकी रूपकात्मकता है। इस का प्रारम्भ बड़े उत्सुकतापूर्ण ढंग हुआ है। शुरू में ही 'आनंद भइआ मेरी माए' कह देने से जिज्ञासु एकदम से आकर्षित हो जाता है। इस कृति का अंत भी बड़ा नाटकीय है और अंतिम पद्य में इस रचना के माहात्म्य की ओर संकेत किया गया है, जिसकी सर्वप्रमुख उपलब्धि 'आनंद' है। जिज्ञासु को समझाने के लिए बड़ी कलात्मक विधि से शारीरिक अंगों, विभिन्न मत-मतांतरों के साधकों और सामान्य व्यक्ति को संबोधित किया गया है। इस प्रकार परम्परागत आनंदवादी सिद्धांत को मध्ययुग की परिस्थितियों के अनुरूप नया परिवेश प्रदान किया गया है।

सुन्दर अलंकार-योजना इस कृति के कलात्मक गौरव की सूचक है। सारी रचना रामकली राग में लिखी गई है। गुरुवाणी के अन्य पदों के समान इस में भी राग को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है, परन्तु छंद को गौण स्थान मिला है। फलस्वरूप इस कृति में छंद का आधार रागात्मक आवश्यकता है। इस में कुल ४० पउड़ियाँ (पद) हैं, जिन में से ३३ पाँच-पाँच पंक्तियों की है और शेष सात पउड़ियाँ छः-छः पंक्तियों की हैं। पंक्तियों के आकार कई प्रकार के हैं, परन्तु लय की पूर्ति सर्वत्र होती है। वाक्यांशों अथवा पंक्तियों की पुनरावृत्ति से संगीतात्मकता की उत्पत्ति में सहायता मिलती है। 'कुंडलिया' छंद की ध्वनि इन पद्यों में सुनाई पड़ती है। इन पद्यों में मात्रा-गत किसी भी नियम का पालन नहीं किया गया। यहाँ ध्वन्यात्मकता का प्राधान्य है, छंद के शास्त्रीय निर्वाह का नहीं। फिर भी यह अति सुंदर राग-बद्ध और उत्तम कविता है। वस्तुतः सुंदर भाव-विभूति को कृत्रिम परिधान की आवश्यकता ही नहीं होती।

इस रचना में सरल मन की रसात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इस की रसात्मकता के सर्वप्रथम कारण भाषा की सरलता एवं स्वच्छता हैं। इसमें

सधुक्कड़ी और ब्रज भाषा का अंश मौजूद है, परन्तु शब्द-प्रयोग में केवल वही शब्द लिए गए हैं जिन का लय और संगीत उत्पन्न करने में सहयोग रहता हो। इसमें अरबी और फ़ारसी भाषा के शब्दों का नाम-मात्र प्रयोग हुआ है। इस का भाषागत वातावरण अधिकतर भारतीय ही रहा है। भाषा के अलंकरण के लिए अनुप्रास को मुख्य साधन बनाया गया है। इसमें कठोर वृत्तियों वाले शब्दों का प्रयोग बहुत कम हुआ है, अधिकतर शब्दावली मधुर और प्रसाद-गुण सम्पन्न है। इस का कारण रचयिता-गुरु का अपना व्यक्तित्व है। वृद्धावस्था में जितना संयम और स्नेह किसी श्रेष्ठ साधक में हो सकता है, उस का आभास इस रचना से हो जाता है।

इस कृति का प्रत्येक पद्य अपने आप में स्वतंत्र भाव का विश्लेषण करता है और अपने आप में एक स्वावलंबित इकाई भी है, जो आनंदवादी भावधारा अथवा शृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाती है। इस प्रकार प्रत्येक पद्य अपने दोहरे कर्त्तव्य का निर्वाह करता है। यह रचना जहाँ एक महान् भाव का विश्लेषण कर जिज्ञासु का मार्गदर्शन करती है, वहाँ कलात्मक दृष्टि से भी एक सिद्धहस्त साधक की प्रौढ़ कृति होने का दम भरती है।

अलाहणियाँ : वडहंस राग में गुरु अमरदास विरचित चार अलाहणियाँ संकलित हैं। यद्यपि इन्हें 'अलाहणी' शीर्षक नहीं दिया गया, तथापि गुरु नानक देव विरचित अलाहणियों के प्रसंग में शामिल किए जाने के फलस्वरूप इन को 'अलाहणी' लोक-काव्य-विधा के अंतर्गत स्वीकार किया जाएगा। यह पंजाबी भाषा का एक शोकपरक लोक-गीत है। इसमें सामान्यत: मृत व्यक्ति के गुणों का दु:खित स्वर में स्तवन करते हुए स्त्रियाँ खड़े होकर मुख, वक्ष, आदि को हाथों से पीटते हुए रुदन करती हैं। पंजाबी में गुरु नानक देव ने सर्वप्रथम इस लोक-गीत को बड़ी सरलता से अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर वडहंस राग में पाँच अलाहणियों की रचना की है। ये पद्य वैराग्य से परिपूर्ण हैं, किन्तु कहीं भी निराशा अथवा उदासीनता का आभास नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु जी ने इन पद्यों में जिज्ञासु को मृत्यु के भय का निवारण करने, निर्वेदभाव उत्पन्न करने और मोहग्रस्त भौतिकता से मुक्ति प्राप्त करने का उपदेश दिया है।[1] इसी सरणी पर गुरु अमरदास ने भी चार अलाहणियों की रचना की है। डा० बलबीर सिंह दिल के अनुसार ये अलाहणियाँ भले ही गुरु नानक रचित अलाहणियों के समान शोख भावाभि-

1. सीता राम बाहरी (डा०) 'गुरु नानक का हिन्दी काव्य', (टंकित शोध-प्रबंध), पृ० २०८

व्यक्ति करने वाली नहीं, परन्तु इन में मृत्यु और पति के वियोग से सम्बद्ध वातारवण के दृश्य दिखाकर शाश्वत पति-परमात्मा के साथ एकात्मकता स्थापित करने का उपदेश अवश्य दिया गया है।[1] इस पद्यों में लौकिक रुदन के समान दुःख का कोई भाव प्रकट नहीं किया गया है, अपितु अज्ञानवश जीवात्मा का परमात्मा के साथ हुआ वियोग ही दुःख का मूल कारण बताया गया है और इस दुःख से निवृत्त होने का एक-मात्र उपाय परमात्मा का यशगान करना अथवा नाम-स्मरण करना है। इन पद्यों का विधान 'छंत' की परम्परा में हुआ है। प्रत्येक पद्य में छः-छः तुकों (पंक्तियों) के चार-चार पदे हैं। इन में किसी छंद विशेष के लक्षणों को ढूँढ निकालना कठिन है, हाँ, कुंडलिया छंद के समान वाक्यांशों की पुनरावृत्ति और कलश छंद से कतिपय मात्रागत समानता देखी जा सकती है। इन की भाषा वैराग्यमयी और गंभीर है।

वार-सत : बिलावल राग में संगृहीत गुरु अमरदास की लिखी हुई एक लघ्वाकार कृति 'वारसत' के नाम से उपलब्ध है। इस में छः-छः तुकों (पंक्तियों) के कुल दस पद्य हैं और 'रहाउ' (टेक) की दो पंक्तियाँ इनके अतिरिक्त हैं। प्रत्येक वार का उल्लेख एक-एक पदे में हुआ है, परन्तु बुधवार का चित्रण दो पद्यों में हुआ है। अंतिम दो पद्यों में गुरु जी का उपदेश-कथन है। इस कृति के पश्चात् इसी सरणी और भावभूमि पर एक और लघ्वाकार कृति संकलित है, परन्तु उसमें वारों का नामोल्लेख नहीं हुआ। पंजाबी में इस प्रकार की लोक-काव्य-विधा को 'सतवार' भी कहा जाता है। इन पद्यों मे गुरु अमरदास ने सप्ताह के सात वारों का आध्यात्मिक विश्लेषण किया है। उस युग में लोगों में अंधविश्वासों के प्रभावाधीन दिनों, वारों, तिथियों आदि के सम्बंध में कई प्रकार की रूढ़ भावनाएँ एवं भ्रामक धारणाएँ प्रचलित थीं। गुरु जी को ऐसी मान्यताएँ मान्य नहीं थीं। इस प्रकार की चिंतन-प्रणाली वालों को गुरु जी ने 'मुगध गवार' कहा है। वस्तुतः सभी वार श्रेष्ठ एवं पवित्र हैं, यदि उनमें हरि का स्मरण किया जाए। इसलिए गुरु जी ने सांसारिकता में लिप्त मनुष्यों को भ्रमों में फँसने की अपेक्षा अहंकार का त्याग कर प्रेमाभक्ति के द्वारा अपने आप को नाम में अनुरक्त करने की प्रेरणा दी है। वार और तिथियाँ आने-जाने वाली हैं, इन के भ्रामक चक्कर में न पड़ कर चिर-स्थायी प्रभु के शब्द का मनन करना विशेष लाभकारी है।

पट्टी : आसा राग में संकलित इस लघ्वाकार कृति में दो तुकों (पंक्तियों) के कुल १८ पद्य हैं। और 'रहाउ' (टेक) की दो पंक्तियाँ इनके अतिरिक्त

---

1. 'अमरकवि गुरु अमरदास', पृ० ११८

हैं। पट्टी अथवा पटिया उस तख़्ती को कहते हैं । जिस पर बालक वर्णमाला लिखना सीखते हैं । इसी परम्परा के आधार पर उस रचना को भी पंजाबी में 'पट्टी' कहा जाने लगा, जिस में वर्णमाला की यथाक्रम काव्यमयी व्याख्या प्रस्तुत की गई हो । इस प्रकार की रचनाओं को वर्ण-संख्या के आधार पर सीहर्फ़ी, चौंतीसा, पैंतीस-अखरी, बावन-अखरी, आदि नाम दिए जाते हैं। अखरावट और ककहरा भी इसी जाति की रचनाएँ हैं । पंजाबी में इस काव्य-विधा का प्रारंभ गुरु नानक देव ने किया था। गुरु अमरदास ने संभवतः उन्हीं के अनुसरण पर इस 'पट्टी' की रचना की होगी । परन्तु इन दोनों पट्टियों में अक्षर-क्रम एवं संख्या एक-समान नहीं है। गुरु नानक देव विरचित पट्टी में किंचत् भिन्न क्रम से वर्तमान गुरुमुखी लिपि के ३५ वर्णों और उनके उच्चारण का स्वरूप प्रस्तुत हो जाता है, परन्तु विचाराधीन 'पट्टी' में गुरुमुखी के दस अक्षरों (च, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, फ, य, ड़) के नामोल्लेख का अभाव है। शेष २५ अक्षरों, जिन का उच्चारण वर्तमान गुरुमुखी लिपि के अनुरूप है, की आध्यात्मिक व्याख्या के द्वारा गुरु जी ने पंडितों को व्यर्थ की शाब्दिक खिलवाड़ में न पड़कर परमात्मा की भक्ति करने की प्रेरणा दी है। क्योंकि अन्य प्रकार की लिखावटों का अध्ययन व्यर्थ है, उन से मस्तिक पर लिखा लेख नहीं मिटता। आवश्यकता तो उस लेख को मिटाने की है और उसका मिटना तभी संभव हो सकता है जब जिज्ञासु अन्य सभी सांसारिक प्रपंच से अपने आप को मुक्त कर के हरि-भक्ति में लीन कर ले। यही वास्तविक पठन-पाठन है।

वार काव्य : गूजरी, सूही, रामकली और मारू नामक रागों में विरचित गुरु अमरदास की चार वारें उपलब्ध हैं। 'वार' पंजाबी भाषा का एक लोक-काव्य रूप है। अनेक विद्वानों ने इस शब्द की विभिन्न व्युत्पत्तियाँ और विविध अर्थ बतलाने का प्रयास किया है।[1] यदि उन सभी का समीकरण किया जाए तो वार काव्य-रूप की परिभाषा इस प्रकार होगी—'वह काव्यमय उत्साह-वर्द्धक वार्ता, जिस में किसी आक्रमण अथवा संघर्ष के प्रकरण में नायक का यशोगान किया गया हो'। इस में सामान्यतः वीर रस की प्रधानता होती है और इस को गाने वाले और किसी सीमा तक रचयिता भी भाट अथवा चारण (ढाढी) होते हैं। अपने आप को प्रभु का भाट[2] घोषित करते

1. कान्ह सिंह भाई : 'महानकोश', पृ० ८१७, 'पंजाबी साहित दा इतिहास', भाषा विभाग (वीर साहित), आदि
2. हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ।
   राति दिहै कै वीर धुरहु फुरमाइआ। २७।
   (आदि ग्रंथ, पृ० १५०, वार माझ)

हुए गुरु नानक देव ने सर्वप्रथम 'वार' को वीर-रस के क्षेत्र से निकाल कर आध्यात्मिकता के शांत और सौम्य वातावरण में ला खड़ा किया। इस परिवर्तन के सम्बंध में 'पुरातन जनमसाखी' की ३२वीं साखी, जो 'आसा की वार' की अवतरणिका के रूप में लिखी गई है, विशेष उल्लेखनीय है। शेख फ़रीद शकरगंज के गद्दीदार शेख बृहम ने गोष्ठी के समय गुरु नानक देव को परमात्मा रूपी नायक के यश में एक वार उच्चारने का अनुरोध किया, जिस का आवश्यक संदर्भ इस प्रकार है—

> नानक हिक खुदाइ की वार सुणाइ, असानूं इह मकसूद है, जो वार दुहु बाझु होदी नाहीं, अते तू हिको हिकु आखदा है, देखा खुदाइ का सरीकु तू कवण करसी ? तब बाबे आखिआ, मरदानिआ रबाबु बजाइ। तां मरदाने रबाबु वजाइआ, राग आसा कीता, बाबे सलोक दिता, सलोक सतिगुरु प्रसादि। आसा दी वार महला १।

इस अवतरण से 'वार' काव्य-रूप के वीर-रसी क्षेत्र से भक्ति-रस के क्षेत्र में स्थानांतरित होने की भूमिका स्पष्ट है। ऐसे परिवर्तन से एक ओर जहाँ वार के विषय-क्षेत्र का विस्तरण हुआ है, वहाँ दूसरी ओर लोक-मानस के अत्यधिक अनुकूल काव्य-रूप को अपना कर जिज्ञासु को मोक्ष-प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी किया गया है। इस से वार के संघर्ष-पक्ष के स्वरूप को भी अधिक सूक्ष्म बनाया गया है। इन वारों में परमात्मा को सर्वशक्ति-सम्पन्न योद्धा मान कर उसका स्तवन किया गया है।

ये वारें मूल रूप में पउड़ियों (पद्यों) में लिखी गई थीं, किंतु चारण लोग वार को गाते समय विश्लेशणात्मक प्रवृत्ति के अधीन कई बार पउड़ियों के साथ कतिपय श्लोक भी जोड़ दिया करते थे। भाई वीर सिंह के मतानुसार गुरु अर्जुन देव ने 'आदि-ग्रंथ' के सम्पादन के पूर्व जो श्लोक इन वारों की पउड़ियों के साथ जुड़ चुके थे, उन्हें यथावत् रखते हुए, वार को पुन: प्रामाणिक क्रम प्रदान किया था।[1] वस्तुत: गुरु अर्जुन देव ने 'आदि-ग्रंथ' के सम्पादन के समय सैकड़ों की संख्या में उपलब्ध श्लोकों को वारों की पउड़ियों के साथ शामिल कर दिया और ऐसा करने पर भी जो श्लोक शेष रह गए उन्हें 'सलोक वारा ते वधीक' (वारों के अतिरिक्त श्लोक) शीर्षक देकर 'आदि-ग्रंथ' में संपादित कर दिया। इससे सुतरां स्पष्ट है कि वारों के पउड़ी वाले मूल रूप को श्लोक-युक्त करने का अंतिम एवं प्रामाणिक सद्प्रयास पंचम गुरु अर्जुन देव ने किया था। गुरु अमरदास विरचित इन चार वारों में से 'गूजरी की वार'

1. 'पंज ग्रंथी सटीक', पृ० ३८९

में संकलित सभी श्लोक भी गुरु अमरदास के हैं, जबकि अन्य वारों में दूसरे गुरुओं के श्लोकों को भी शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त गुरु अर्जुन ने लोक में प्रचलित कतिपय वारों के आधार पर इन में से दो वारों के लिए ध्वनियों अथवा तर्जों को भी निश्चित किया है,[1] यथा—

1. गूजरी की वार–'सिकंदर बिरहिम की वार की धुनि गाउणी'।
2. रामकली की वार–'जोधै वीरे पूरबाणी की धुनी'।

पउड़ियां : इन चार वारों में पउड़ियों की संख्या इस प्रकार है—

गूजरी की वार	२२
सूही की वार	२०
रामकली की वार	२१
मारू की वार	२२

'पउड़ी' वार के लिए प्रयुक्त होने वाला छंद-गत काव्य-रूप है, जिस को सामान्यत: 'निशानी' और 'सिरखंडी' छंदों में अंकित किया जाता है। गुरु अमरदास ने अपनी सभी वारों को निशानी छंद-प्रबंध में लिखा है। 'पउड़ी' का अर्थ है 'सीढ़ी'। जब किसी भाव विशेष का विकास उत्तरोतर तीव्रता की ओर करना इच्छित हो तो पउड़ी काव्य-रूप बड़ा उपयुक्त बैठता है। 'वार' में चूंकि भाव विशेष का विकास उत्तरोत्तर संघर्ष और शिखर की ओर बढ़ता है, इस लिए पउड़ी का उपयोग इस काव्य के लिए विशेष अनुकूल है। लगभग ये सभी पउड़ियाँ पाँच-पाँच तुकों (पंक्तियों) की हैं, केवल 'मारू राग की वार' की २२वीं पउड़ी छ: तुकों की है और रामकली राग की वार की प्रथम पउड़ी के साथ एक पंक्ति 'रहाउ' (टेक) की भी है। इन पउड़ियों की मात्राएँ एक-समान नहीं हैं, वस्तुत: इनकी मात्रा-संख्या राग द्वारा अनुशासित है। इसलिए राग की आवश्यकता के लिए पउड़ियों में यत्र-तत्र मात्रा-संख्या बढ़ती और कम होती रही है। इन पर किसी विशेष छंद के लक्षण घटित नहीं होते। इस दृष्टि से ये पिंगल के बंधन से मुक्त है। प्रतिपाद्य की दृष्टि से इन पउड़ियों में अधिकतर एकेश्वरवाद, गुरु-महिमा, नाम-स्मरण, भाव-भक्ति, रहस्यानुभूति की अभिव्यक्ति हो पाई है और इन सभी में भाव-साम्य यथेष्ट मात्रा में दृष्टिगोचर होता है।

श्लोक : गुरु अमरदास ने कुल ४११ श्लोकों की रचना की है। डा० बलवीर सिंह दिल ने यह संख्या ४१० बताई है, परन्तु इस सम्बंध में कुछ तथ्य विशेष दृष्टव्य हैं। एक यह कि 'सलोक वारा ते वधीक' संदर्भ के

1. कान्ह सिंह भाई : 'महानकोश', पृ० ५०

प्रथम तीन श्लोक अन्यत्र भी आए हैं। यथा 'रामकली की वार' का ११वां श्लोक ही प्रथम दो श्लोकों के रूप में यहाँ संकलित हुआ है और 'मारू की वार' के १३वें श्लोक की प्रथम दो पंक्तियाँ यहाँ तीसरे श्लोक के रूप में लिखी गई हैं। अतः इस संदर्भ की श्लोक-संख्या ६७ के स्थान पर ६४ रह जाती है। दूसरे यह कि संत कबीर के श्लोकों के प्रकरण में २२०वाँ श्लोक गुरु अमरदास का है। तीसरे यह कि बाबा फरीद के श्लोकों के प्रसंग में तीन श्लोक गुरु अमरदास के संकलित हैं, यथा अंक १३, ५२, १०४। इन में से ५२ अंक वाला श्लोक एक भिन्न प्रसंग (रामकली की वार श्लोक १५) में भी उसी रूप में संकलित है, शेष दो श्लोक स्वतंत्र हैं। चौथे यह कि गुरु नानक देव के 'सलोक वारा ते वधीक' संदर्भ में २८वाँ श्लोक गुरु अमरदास का है। उक्त तथ्यों के प्रकाश में गुरु अमरदास की कुल श्लोक-संख्या ४११ है। इन में से १०५ श्लोक गुरु जी की स्वरचित चार वारों में संपादित हैं और शेष श्लोकों में से २३८ सिरी, माझ, गउड़ी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठ, बिलावल, सारंग और मलार रागों के अंतर्गत अन्य गुरुओं की वारों के साथ संकलित हैं। इसके अतिरिक्त दो श्लोक फ़रीद के श्लोकों के साथ, एक कबीर के श्लोकों के साथ, एक 'सलोक वारा ते वधीक' प्रसंग में गुरु नानक देव के श्लोकों के साथ संगृहीत हैं और शेष ६४ महला ३ (गुरु अमरदास) के शीर्षकाधीन संकलित हैं।

भाई काह्न सिंह ने 'स्तुति' को श्लोक का नाम दिया है,[1] किन्तु यह कथन गुरुवाणी के सभी पद्यों के लिए भी कहा जा सकता है। श्लोक वस्तुतः संस्कृत की अनुष्टुप जाति का एक विशेष छंद है जो विकास करता हुआ मध्ययुग में 'साखी' के रूप में पहुँचा जिस पर दोहा के लक्षण पर्याप्त मात्रा में घटित होते थे और सामान्यतः इन में दो पंक्तियाँ रहती थीं। परन्तु गुरु नानक देव ने एक से २६ पंक्तियों के श्लोकों की रचना कर इसे एक नया रूप दिया जिस में पंक्तियों की कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। वस्तुतः श्लोक में किसी एक विषय को लेकर गुरु जी अपना मत प्रकट करना आरंभ करते हैं और जब तक उस मत अथवा विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हो जाती, तब तक श्लोक की रचना-प्रक्रिया चलती रहती है, चाहे वह कितनी ही पंक्तियों में विस्तृत क्यों न हो जाए। गुरु अमरदास के श्लोकों में एक से लेकर ११ पंक्तियाँ मिलती हैं। अतः श्लोक कोई निश्चित छंद नहीं, अपितु काव्य-पंक्तियों का समूह हैं जिस में एक ही भाव का प्राधान्य रहता है। फलस्वरूप

1. 'महानकोश,' पृ० ८६

श्लोक में रूपक-पक्ष की अपेक्षा विचार-पक्ष की विशेष मान्यता रहती है। इन में सरसी, हाकल, दोहा, सार, उल्लाला, चौपाई, सुगीतिका, हंस आदि छंदों के कुछ लक्षण देखे जा सकते हैं। परन्तु इन में छंद-नैपुण्य के स्थान पर राग के बंधनों को अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है। तुकांत के प्रति उपेक्षा की वृत्ति भी सक्रिय रही है। भाषा की दृष्टि से इन में पंजाबी-पन अधिक है। श्लोकों के गंभीर अध्ययन से प्रतीत होता है कि श्लोकों का विषय-क्षेत्र बहुत विशाल है। अधिकांश श्लोकों में गुरु जी की आध्यात्मिक भावनाओं और रहस्यानुभूति को अभिव्यक्ति मिली है। युग-चित्रण के अतिरिक्त कर्मकांड-प्रधान और पाखंड-पूर्ण साधना-प्रणालियों की भी बड़ी यत्र-तत्र आलोचना हुई है। गुरु जी ने अपने भक्ति-उद्‌गारों को भी बड़ी सफलता से इन में प्रकट किया है और यत्र-तत्र आध्यात्मिक कर्म करने और मानवता की सेवा करने के उपदेश भी मिल जाते हैं। ये श्लोक एक ही समय अथवा एक ही शृंखला में नहीं लिखे गए, अपितु गुरु जी के मन में यदा-कदा प्रस्फुटित होने वाले भावों अथवा जिज्ञासुओं के प्रश्नों के उत्तर रूप में प्रकट किए विचारों ने ही श्लोकों का जामा पहना है।

चौपदे : गुरु जी की वाणी में इस शीर्षकाधीन १७२ पद्यों का संकलन हुआ है। 'चौपदा' (चउपदा) किसी छंद-विशेष का नाम नहीं है, अपितु एक ऐसा छंद-विधान है जिस के अंतर्गत लगभग चार पदे संगृहीत हों। और 'पदा' अथवा 'पद' से यहाँ अभिप्राय पंक्ति अथवा पंक्ति-समूह है। प्रस्तुत प्रसंग में इन पदों की पंक्ति-संख्या दो से चार तक है। गुरु नानक देव ने सर्वप्रथम इस नए छंद-विधान का प्रचलन किया। इस से पूर्व पदों में केवल दो समतुकांत पंक्तियाँ हुआ करती थीं। ये पदे छंद-गत मात्राओं की गणना के बंधनों से मुक्त हैं और किसी छंद-विशेष के लक्षणों को स्वीकार नहीं करते। पदों की पंक्तियों (चरणों) को पंजाबी में 'तुक' कहा जाता है और प्रत्येक पदा की पंक्ति-संख्या के आधार पर इन्हें दोतुका, त्रितुका और चौतुका कहा जाता है। इसके अतिरिक्त जिस पद्य में जितने पदे होते हैं, उसी के आधार पर उसका नाम पड़ता है, यथा त्रिपदा, चौपदा, पंचपदा और छ: पदा, जिन की संख्या गुरु अमरदास की वाणी में क्रमश: २, १४७, १९ और ३ हैं। चूँकि इन में अधिकांश चौपदे हैं, इसलिए समूचे रूप में इन्हें 'चौपदा' (चउपदा) की कोटि में रखा गया है। उक्त पद्धति का अपवाद केवल वडहंस राग में देखा जा सकता है जहाँ एक पद्य में ९ पदे संगृहीत है और प्रत्येक पद्य में संकलित प्रथम पदों के पश्चात् सामान्यत: दो पंक्तियाँ 'रहाउ' (टेक) की भी रहती हैं। इनमें संपूर्ण पद्य का मूल-भाव अंकित रहता है। प्रत्येक पद्य

अपने आप में पूर्ण है और किसी धार्मिक अथवा दार्शनिक तथ्य अथवा अनुभूति को प्रस्तुत करता है। गुरु अमरदास की भक्ति और सेवा की भावना का इन पदों में बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रांकन हुआ है। इन की भाषा बड़ी सरल और प्रेरणात्मक है।

अष्टपदियाँ : इस शीर्षकाधीन गुरु अमरदास की वाणी में ९१ पद्यों का संकलन हुआ है। 'चौपदा' के समान 'अष्टपदी' भी छंद का कोई भेद-प्रभेद नहीं है। सामान्यतः उस छंद-विधान को, जिसमें आठ पदे/पदियाँ इकट्ठी संकलित हों, 'अष्टपदी' कहा जाता है। प्रत्येक पद्य में प्रथम पदा/पदी के पश्चात् साधारणतया दो पंक्तियाँ 'रहाउ' (टेक) की रहती हैं, जिन में समूचे पद्य का केन्द्रीय भाव निहित रहता है। इस प्रकार के सभी पदों में आठ पदे/पदियाँ संकलित रहें, ऐसा बंधन नहीं है। यह संख्या न्यूनाधिक हो सकती है, परंतु इनको 'अष्टपदियाँ' शीर्षकाधीन इसलिए संकलित किया गया है क्योंकि इन में प्राधान्य अष्टपदियों का है। इस दृष्टि से गुरु अमरदास ने ७९ अष्ट-पदियों, १ नवपदी, ३ दशपदियां लिखी हैं। इनके अतिरिक्त सूही (एक ३४-पदी), रामकली (एक १२-पदी, दो २१-पदी, एक २७-पदी और एक ३०-पदी), भैरउ (एक १३-पदी) प्रभाती (एक ११-पदी) आदि रागों में कुछ अधिक पदियों वाले पद्य भी, जिन्हें 'बहुपदियाँ' की संज्ञा दी जा सकती हैं, इसी शीर्षकाधीन संकलित हैं। इन पदों/पदियों में तुकों (पंक्तियों) की संख्या एक से चार तक है और इस संख्या के आधार पर इन्हें इकतुकी, दोतुकी, त्रितुकी और चौतुकी कहा जाता है। यद्यपि इस प्रकार के पदों के लिए किसी निश्चित छंद का प्रयोग नहीं हुआ, तथापि यत्र-तत्र उपमान, सार, चौपाई आदि के लक्षणों का किंचित् प्रभाव देखा जा सकता है। इन में भी गुरु अमरदास ने अपनी आध्यात्मिक साधना की अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन की भाषा सरल, सारगर्भित और विनम्र है।

सोलहे : 'सोलहा' का अर्थ है 'षोडपदी'। गुरु अमरदास विरचित २४ सोलहे मारू राग में संकलित हैं। इन से पूर्व गुरु नानक देव ने भी इसी राग में २२ सोलहे लिखे हैं। जिस प्रकार चार और आठ पदों के समूह का नाम क्रमशः 'चउपदा' और 'अष्टपदी' है, उसी प्रकार सोलह पदों के समूह का नाम 'सोलहा' है। किंतु यह आवश्यक नहीं कि सभी सोलहों में १६ पदे ही हों, इनकी संख्या न्यूनाधिक हो सकती है। इनके छंदगत लक्षण कुछ-कुछ घनकला, चित्रकला आदि छंदों से मिलते जुलते हैं, परंतु इन छंद-लक्षणों का पूर्ण रूपेण पालन कहीं नहीं मिलता। इन सोलहों के प्रत्येक पद के प्रथम और द्वितीय विश्राम पर समानुप्रास है। इन दोनों चरणों का आकार लगभग समान रहता है, परन्तु

तीसरा चरण इन से लम्बा और लगभग इन दोनों के आकार जितना होता है और अंत में सामान्यत: काफ़िआ रद़ीफ़ की परम्परा में दीर्घ स्वर वाला शब्द रहता है। इस प्रकार प्रत्येक पद में तीन-तीन पंक्तियाँ होती हैं और तीसरी पंक्ति के मध्य में विश्राम होता है। इन में गुरु अमरदास ने अपनी आध्यात्मिक साधना और रहस्यानुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान की है। भाषा की दृष्टि से ये सोलहे बड़े सुबोध और वस्तु-स्थिति के अनुरूप हैं।

छंत : गुरु अमरदास की बाणी में 'छंत' नामक २० पद्य उपलब्ध है। इन छंतों में सामान्यत: चार पदों का संकलन होता है किन्तु छंत के लिए पदों की संख्या निश्चित नहीं है, क्योंकि आसा राग में एक छंत में दस पदे संमिलित किए गए हैं। प्रत्येक पदा में छ:-छ: पंक्तियाँ रहती हैं। वडहंस राग में संकलित चार अलाहणियों का रचना-विधान भी छंतों के समान हुआ है। इन छंतों में यद्यपि किसी छंद विशेष के लक्षणों का पूरी तरह से पालन नहीं हुआ, तथापि कहीं-कहीं हरिगीतिका, ताटंक, पद्मावती, निशानी, उल्लाला आदि छंदों के कतिपय लक्षण देखने को मिल जाते हैं। अधिकांश छंतों में लोक-गीतों की परम्परा में कतिपय शब्दों अथवा पंक्तियों की पुनरावृत्ति भी हुई है। इस प्रकार की शैली में जीवात्मका रूपी नायिका के मन में व्याप्त संयोग-सुख की चाहना और रसिकता की तीव्रता का सही अनुभव कराया जा सका है।

'छंत' क्या है ? इस सम्बंध में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मत अभिव्यक्त किए हैं। भाई काह्न सिंह के मतानुसार पद्य-काव्य का नाम 'छंत' है।[1] डा० स०स० कोहली ने प्रभु-स्तवन सम्बंधी पवित्र काव्य को 'छंत' का अभिधान दिया है।[2] किन्तु गंभीरता से देखा जाए तो गुरु अमरदास की समस्त बाणी के लिए उक्त दोनों कथन प्रयुक्त किए जा सकते हैं और कतिपय पदों को विशेष रूप में छंत नाम दिए जाने की समस्या का सुचारु रूप में समाधान नहीं कर पाते। 'छंत' संस्कृत के छंदस्' शब्द का तद्भव रूप है और इससे अभिप्राय मात्रा, वर्ण, यति आदि के नियमों से युक्त वाक्य है।[3] लोक में इसका प्रयोग उन लोक गीतों के लिए होता है जो विवाह के अवसर पर दूल्हा अपनी सालियों को सुनाता है।[4] डा० बलबीर सिंह के मतानुसार गुरु साहिब ने लोक-जीवन का प्रिय काव्यभेद, उस में विलुप्त पती-पत्नी शृंगार और प्रेम-भावना सहित ग्रहण कर लिया, परन्तु उसके द्वारा शारीरिक सुख के गीत गाने की

1. 'गुर छंद दिवाकर', पृ० १८९
2. A Critical Study of Adi Granth, p. 80
3. 'बृहत् हिन्दी कोश', (संपा.) कालिका प्रसाद, पृ० ४६४
4. 'पंजाबी कोश' (भाषा विभाग), दूसरा भाग, पृ० ४३३

अपेक्षा, प्रभु-मिलन से सम्बद्ध सहज-आनन्द के गीत गाए हैं।[1] वस्तुतः आदि-ग्रंथीय 'छंत काव्य' के गंभीर अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि 'छंत' शीर्षक साधारणतः उन मांगलिक पद्यों को दिया जाता है, जिनमें जीवात्मा रूपी नायिका की विरहानुभूति, संयोग की अभिलाषा, प्रिय की प्रतीक्षा और कभी-कभी प्राप्त हुए संयोग-सुख की भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया हो। गुरु अमरदास के छंतों में उक्त लगभग सभी गुण विद्यमान हैं। इन छंतों में भक्ति अनुप्राणित शृंगार रस अथवा उज्ज्वल रस की मार्मिक एवं मर्यादित अभिव्यक्ति हुई है और रहस्यानुभूति को बड़ी तीव्रता एवं गहनता से चित्रित किया गया है।

आध्यात्मिक विचारधारा

गुरु अमरदास की आध्यात्मिक विचारधारा का मूलाधार गुरु नानक देव की आध्यात्मिक विचारधारा है। गुरु नानक अपने युग के एक अनुभवी आस्तिक साधक थे जिन्होंने पंजाब में भक्ति-आंदोलन का प्रचलन कर आध्यात्मिकता के वास्तविक मार्ग से दूर हट चुके जिज्ञासुओं को पुनः सन्मार्ग पर लाने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने ब्रह्म के प्रति अपनी भावना प्रकट करते हुए समस्त जगत् को परम-सत्ता का एक खेल मात्र माना है और इसी संदर्भ में अवतारवादी दृष्टिकोण का यत्र-तत्र खंडन किया है। पंजाब एवं भारत में गुरु नानक की आध्यात्मिक विचारधारा अध्यात्म जगत् में कोई अकस्मात घटना नहीं थी, उन से पूर्व भारत एवं सभी देशों में अनेक प्रकार की आध्यात्मिक विचारधाराएँ प्रचलित हो चुकी थी। भारत में मुसलमानों के आगमन से भारतीय एवं सामी संस्कृतियों और धार्मिक मान्यताओं के परस्पर मिलन के द्वारा एक दूसरे पर प्रभावों की क्रिया-प्रतिक्रिया हुई और इस प्रकार विचार-जगत् में सर्वप्रथम एक अद्भुत परन्तु गंभीर वातावरण उत्पन्न हो गया। ऐसे संक्रांति काल में ही गुरु नानक का अवतरण हुआ।

गुरु नानक देव अपने अतीत एवं वर्तमान के प्रति किसी प्रकार की घृणा का भाव मन में नहीं रखते थे। हाँ, इतना अवश्य है कि उन्हें वे पाखंड एवं बाह्याडंबर तथा निस्सार अनुष्ठान एवं रीतियाँ पसंद नहीं थीं जिन से मानव का वास्तविक विकास अवरुद्ध होता हो। उन्होंने सभी धर्मों के श्रेष्ठ, सृजनात्मक और मिथ्या-बंधन को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले विचारों को आत्मसात् कर और उन से अपनी चिंतन-धारा एवं अनुभूति का सामंजस्य स्थापित कर जन-कल्याण

1. 'अमरकवि गुरु अमरदास', पृ० ११५

के लिए प्रस्तुत किया। वस्तुतः गुरु नानक द्वारा प्रस्तुत किए सिद्धांतों के पीछे उनकी समूची जीवनानुभूति, गंभीर चिंतन, गहन अध्ययन और विशाल दृष्टि-कोण अपनी भूमिका निभा रहे थे। इस विशाल समन्वयवादी प्रवृत्ति की शिला पर ही गुरु नानक की आध्यात्मिक विचारधारा के भवन का निर्माण हुआ। यही विचारधारा गुरु अमरदास को बपौती के रूप में प्राप्त हुई।

परमात्मा : गुरु अमरदास ने परमसत्ता को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में देखते हुए[1] उसे अकथनीय, अगोचर अलक्ष्य, अगम और निराकार विशेषणों से सम्बोधित किया है—

तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ।
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ।[2]

यह विषवत् संसार उस प्रभु का रूप है और उसी के द्वारा हरि के स्वरूप का बोध हो रहा है। गुरु की कृपा के द्वारा ही इस रहस्य को समझा जा सकता है कि सर्वत्र एक ब्रह्म ही विद्यमान है—

एहु विसु संसारु तुम देखदे
एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ।
गुरपरसादी बुझिआ जा वेखा,
हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई।[3]

इस सृष्टि के संचालन, पालन, रक्षण एवं लय की शक्ति केवल परमात्मा के पास है।[4] वही इसको पुनः उत्पन्न करता एवं नया जीवन प्रदान करता है।[5] उस सर्वज्ञ शक्ति को गुरु अमरदास ने राम, हरि, मुरारि, मधुसूदन, बनवारी, जगदीश, जगन्नाथ, गोसाई, गोविंद, जगजीवन, नारायण, बासुदेव, गोपाल, निरंजन, मोहन आदि अभिधान दिए हैं। लगभग ये सभी अभिधान गुरु नानक वाणी में भी उपलब्ध हैं। 'सच' अथवा 'सत्य नाम' को गुरु जी ने अधिक निष्ठा एवं तल्लीनता से अपनी वाणी में प्रयुक्त किया है। बहुदेववाद और अवतारवाद का भी गुरु जी ने खंडन किया है और जिज्ञासा प्रकट की है कि विष्णु अथवा कृष्ण के समय-समय अपने अवतरण-कार्य में ही व्यस्त रहने के

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० १२८ (माझ म० ३)
2. वही, पृ० ५८५ (वडहंस म० ३)
3. वही, पृ० ९२२ (रामकली अनंदु म० ३)
4. वही, पृ० ९१२ (रामकली म० ३)
5. वही, पृ० १२५ (माझ म० ३)

कारण इस संसार का उद्धार भला कैसे संभव हो सकता है ?[1] ये देवता तो वास्तव में त्रिगुणात्मक भ्रम में ग्रस्त अपने मूल उद्देश्य को ही भुला बैठे हैं—

ब्रह्मा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ।[2]

मनुष्य : मनुष्य को गुरु अमरदास की वाणी में अन्य जीवों की अपेक्षा बहुत अधिक महत्त्व एवं गौरव प्रदान किया गया है। यही सर्वश्रेष्ठ योनि है और परमात्मा की प्राप्ति अथवा अपने मूल स्वरूप में पुनः समाई इसी योनि में संभव हो सकती है, शेष योनियाँ केवल परारब्ध कर्मों का फल भोगने के लिए बनी हैं। मनुष्य शरीर को देवताओं के शरीर से भी अधिक उत्तम माना गया है। इसी में परमात्मा का प्रकाश संभव है। यह वस्तुतः आत्मा का वाहन है। इस शरीर की विशिष्टता एवं इस के अंदर विद्यमान वस्तुओं का गुरु जी ने रुचिपूर्ण विवरण दिया है, यथा—

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ।
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ।
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ।
इसु काइआ अंदरि नव खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ।
इसु काइआ अंदरि नामु नउनिधि पाईऐ गुर कै सबदि बीचारा ।[3]

इस काया में आत्मा रूपी पक्षी का निवास है। जीव को मुक्ति तभी मिल सकती है जब वह नाम रूपी अमृत का सेवन करे। ऐसा करने से उस का गुरु-शब्द में स्थायी निवास हो जाएगा—

काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ।
अंमृतु चुगहि गुर सबदि निवासा ।
उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ।[4]

यह शरीर नश्वर है, इसमें स्थित आत्मा ही स्थायी और अनश्वर है। यह शरीर वास्तव में माया का 'पुतला' एवं त्रिगुणात्मक है। परमात्मा की कृपा से ही यह शुद्ध और सफल हो सकता है, अन्यथा इस का अशुद्ध रहना स्वाभाविक है—

१) इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ।
आवणु जाणा जंमणु मरणा मन मुखि पति गवाई ।[5]

---

1. किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा । (आदि ग्रंथ, पृ० ५५९)
2. आदि ग्रन्थ, पृ० ९०९ (रामकली म० ३)
3. वही० पृ० ७५४ (सूही म० ३)
4. वही० पृ० १०६८ (मारू म० ३)
5. वही० पृ० ३१ (सिरी म० ३)

२) इसु देही अंदरि पंच चोर वसति कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारी।
अंमृतु लूटहि मनमुख नहीं बूझहि कोई न सुणै पुकारा।[1]

३) तेरी नदरी सीझसि देहा।[2]

मन : इस शरीर में स्थित मन अत्यन्त शक्तिशाली तत्त्व हैं। गुरु नानक देव ने इसे वश में करने को जगत् वश में करने के समान माना है। मन के भी दो पहलू हैं—ज्योतिमय मन एवं अंधकारमय मन। वासनाओं के वशीभूत मन को अंधकारमय मन की संज्ञा दी जाएगी और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानने वाले मन को प्रकाशमय अथवा ज्योतिमय मन कहा जाएगा। मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में मन का विशेष योगदान है। इसके ठीक रहने पर ही मनुष्य आध्यात्मिक ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मन की स्थिति और महत्त्व को समझते हुए ही गुरु जी ने मन को संबोधन कर उसे उस की वास्तविकता से जानकार किया है और सही मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी है—

मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु।
मूलु पछाणहि ता सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई।
गुरपरसादी एको जाणहि ता दूजा भाउ न होई।
मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु।
इउ कहै नानकु मन तू जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु।[3]

यह शरीर नश्वर है, इसमें स्थित आत्मा ही स्थायी और अनश्वर है। यह शरीर वास्तव में माया का 'पुतला' एवं त्रिगुणात्मक है। परमात्मा की कृपा से ही यह शुद्ध और सफल हो सकता है, अन्यथा इस का अशुद्ध रहना स्वाभाविक है—

सृष्टि : गुरु अमरदास ने इस सृष्टि की सृजना भी परमात्मा के द्वारा मानी है।[4] इस संसार का मायावी प्रपंच भी उस प्रभु की इच्छा के अनुसार ही अस्तित्व ग्रहण करता है। सृष्टि-पूर्वावस्था का चित्रण करते हुए गुरु साहिब ने माना हैं कि तब आकाश, पाताल, तीन लोक आदि किसी

1. आदि ग्रंथ, पृ० ६०० (सोरठ म० ३)
2. वही, पृ० ११२ (माझ म० ३)
3. वही, पृ० ४४१ (आसा म० ३)
4. आपे करता स्रिसटि सिरजि जिनि गोई।
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई। (आदि ग्रंथ, पृ० २३२; गउड़ी म० ३)

की उत्पति नहीं हुई थी, उस समय मात्र निराकार ब्रह्म ही था—

तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई।
तदहु आपे आपि निरंकार है ना उपति होई।[1]

इस सृष्टि की रचना परमात्मा ने केवल एक खेल के रूप में की है। शब्द, नाम, हुक्म आदि के द्वारा इस की रचना-प्रक्रिया का आरम्भ हुआ है और इस सब की रचना कर इसका नियंत्रणाधिकार अपने पास ही रखा।[2] यह संसार पारमार्थिक दृष्टि से मिथ्या है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह संसार सत्य है क्योंकि व्यवहार में इसके अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।

माया : इस संसार में प्राणियों को भ्रमित करने के लिए प्रभु ने स्वयं माया की रचना की है। इस माया के प्रपंच में फंस कर मनुष्य अपने वास्तविक मार्ग से हट जाता है और अपने आध्यात्मिक भविष्य को पूर्णत: नष्ट कर लेता है। इससे बचना ही श्रेयस्कर है—

माइआ मोहु मेरे प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए।
मनमुखि करम करहि नही बूझहि विरथा जनमु गवाए।[3]

इस माया का प्रभाव उन्हीं व्यक्तियों पर पड़ता है जो परमात्मा अथवा गुरु को भुला कर वासनाओं के जाल में फंस जाते हैं। परन्तु भक्त-साधकों के प्रति वह दयाभाव से रह कर उनकी सेवा में संलग्न रहती है—

माइआ दासी भगता की कार कमावै।[4]

मुक्ति : जागतिक प्रपंच से बचना वास्तव में अपने शुद्ध रूप में विलीनता है। यही अवस्था मुक्ति की अवस्था है। इसको गुरु अमरदास ने 'जोती जोति मिलाई' का नाम दिया है। इस के लिए जिज्ञासु को कौन सा साधन अपनाना चाहिए, तत्सम्बंधी गुरु अरमदास वाणी में सविस्तार विचार हुआ है। स्मरण रहे कि गुरु जी ने साधना की किसी भी प्राचीन पद्धति का खंडन नहीं किया, खंडन केवल उन के रूढ़ रूप का है, उनके सहजीकृत रूप को ग्रहण करने में गुरु जी को कोई संकोच नहीं है। ज्ञान, कर्म, योग और भक्ति के भावीकृत रूप को ग्रहण करने के अतिरिक्त गुरु जी ने प्रेमाभक्ति को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। कलियुग में भवसागर से तिरने का यही

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० ५०९ (गूजरी म० ३)
2. प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता। (आदि ग्रंथ, पृ० ५१० गूजरी म० ३)
3. आदि ग्रंथ, पृ० ६७, (सिरी राग म० ३)
4. वही, पृ० २३१ (गउड़ी म० ३)

मात्र उपाय है। इस सम्बंध में किंचित् अधिक विस्तार के साथ विचार करना अपेक्षित है।

साधना का स्वरूप

गुरु अमरदास का सम्पूर्ण जीवन सत्य-प्राप्ति की साधना में व्यतीत हुआ, अतः वे साधना के सभी मार्गों से भली भाँति परिचित थे। उनकी वाणी में ज्ञान अथवा आत्मज्ञान की स्थान-स्थान पर चर्चा हुई है। वास्तव में साधना के क्षेत्र में ज्ञान की अत्यधिक आवश्यकता है। दीपक के समान अपने आध्यात्मिक विषयों को प्रकाशित करने में यह बहुत सहायक सिद्ध होता है। भारतीय धर्म-साधना के इतिहास में इस का विशेष स्थान है। गुरु अमरदास कोरे अथवा वाचिक ज्ञान में किसी प्रकार का विश्वास नहीं रखते थे। उनके मतानुसार ऐसा ज्ञान भ्रांतियों का जनक है।[1] इससे किसी प्रकार की आत्मिक शांति की उपलब्धि नहीं हो पाती।[2] वास्तविक ज्ञान तो आत्मज्ञान है। अपने आप को पहचानना ही सच्चा ज्ञान अथवा विवेक है।[3] इससे मन निर्मल होता है और जीन्मुक्तावस्था की प्राप्ति होती है।[4] इस के अभाव में व्यक्ति व्यर्थ में भ्रम-पाश में फंसा रहता है। वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति गुरु के द्वारा संभव है जिससे अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश होता।[5] यह ज्ञान सहज भाव से की जाने वाली नाम-साधना पर आधारित है।[6] इस ज्ञान से वंचित व्यक्ति साधना के क्षेत्र में असफल रहते हैं, वे पति द्वारा परित्यक्त स्त्री के समान वास्तविक प्रेम को प्राप्त नहीं कर पाते और अज्ञान के कारण उन की तृप्ति नहीं हो पाती, जो प्रियतम के दर्शन मात्र से ही संभव है—

---

1. 'पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ।'
   –आदि ग्रंथ, पृ० ६८ (सिरी म० ३)
2. 'पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई।'
   –'आदि ग्रन्थ, पृ० ५७० (वडहंस म० ३)
3. 'अंतरि बिबेकु सदा आपु बीचारे गुरसबदी गुण गावणिआ।'
   –आदि ग्रन्थ, पृ० १२८ (माझ म० ३)
4. 'आपु पछाणै मनु निरमुलु होइ।
   जीवन मुक्ति हरि पावै सोइ।' –आदि ग्रंथ, पृ० १६१ (गउड़ी म० ३)
5. 'गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ।'
   –आदि ग्रंथ, पृ० २९ (सिरी म० ३)
6. गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु।'
   –आदि ग्रंथ, पृ० ६८ (सिरी म० ३)

गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ।
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ।[1]

स्पष्ट है कि गुरु अमरदास गुरु द्वारा प्राप्त होने वाले आत्मज्ञान अथवा सहज-ज्ञान में विश्वास रखते थे जिसकी साधनात्मक प्रक्रिया नाम-स्मरण है। ज्ञान-हीनता की अवस्था मनुष्य के लिए विनाशकारी है।

भारतीय साधना में कर्ममार्ग का भी विशेष स्थान एवं महत्त्व है। वस्तुत: कर्म करने की प्रवृत्ति मनुष्य के जन्म से ही प्रचलित हो गई थी। इसलिए यह अधिक प्राचीन साधना-मार्ग कहा जा सकता है। लगभग सभी धर्मों और देशों की सिद्धांत-प्रणालियों में कर्मवाद को स्थान प्राप्त हुआ है। व्यक्ति जैसा करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है। कर्मफल को समाप्त नहीं किया जा सकता—

ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ।
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछु न जाइ ।[2]

गुरु अमरदास ने किए हुए कर्मों को 'किरत' कर्म कहा है जिन का फल अवश्य भोगना पड़ता है और जिनके प्रभाव को कोई भी मिटा नहीं सकता।[3] 'किरत', वस्तुत: संस्कृत के 'कृत', शब्द का तद्भव रूप है और गुरुवाणी में जीव के लिंग शरीर की इस शब्द के द्वारा अभिव्यक्ति हुई है, क्योंकि लिंग शरीर का सम्बंध कर्मफलों से है। इसकी उत्पत्ति जीव के कारण शरीर से होती है और स्थूल शरीर के माध्यम से कर्मफलों का भोग किया जाता है। ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति तक लिंग-शरीर के रूप में पूर्व-जन्म के संस्कारों के बने रहने के कारण जीव उनके अनुरूप जन्म ग्रहण करता रहता है। आवागमन का चक्कर परमात्मा की कृपा के द्वारा अध्यात्म-कर्म करने पर ही समाप्त हो पाता है। अध्यात्म-कर्म भी दो प्रकार के होते हैं—कर्म-कांड प्रधान कर्म और निष्काम कर्म। कर्म-कांड से भाव साधना-सम्बंधी वे बाह्य क्रियाएँ हैं जो शनैः-शनैः धर्म के वास्तविक स्वरूप को पीछे हटा कर अपनी प्रधानता स्थापित कर लेती हैं। प्रेम-भावना से शून्य सभी कर्म व्यर्थ के यत्न है। इनका रूढ़ रूप ही कर्मकांड है, भले ही इनका सम्बंध किसी भी धर्म से क्यों न हो। इन्हें परिणामी कर्म भी कहा जा सकता है। गुरु अमरदास की वाणी में सर्वाधिक विरोध कर्म-कांड प्रधान कर्मों का हुआ है। मध्ययुग के

1. आदि ग्रंथ, पृ० ३८ (सिरी म० ३)
2. वही, पृ० ७५५ (सूही म० ३)
3. 'पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार'।
-आदि ग्रंथ, पृ० ७५६ (सूही म० ३)

सभी संत देख चुके थे कि कर्मकांड ही मानवता को वास्तविक मार्ग से बहुत दूर ले जा रहे थे। इनकी स्थापना सभी धर्मों को निःसार बना चुकी थी और धार्मिक और सामाजिक जीवन में अमर्यादा और विशृंखलता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। अतः इन से मानवता को विमुख करने की भावना के स्वर ने संतों की वाणी में प्रमुख स्थान प्राप्त किया। गुरु नानक की वाणी में इन कर्मों की निःसारता का सविस्तार उल्लेख एवं खंडन हुआ है। गुरु अमरदास ने भी उन्हीं की सरणी पर कर्मकांड प्रधान कर्मों का खंडन किया है। कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं—

१) करम कांड बहु करहि अचार।
बिनु नावै धृगु धृगु अहंकार।[1]

२) अनेक तीरथ जे जतन करै, तां अंतर की हउमै कदे न जाइ।[2]

३) इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई।[3]

वस्तुतः कर्मकांड अथवा बाह्याचारों की निःसारता का स्वर उपनिषदों में ही ध्वनित होने लग गया था। वैदिक देवता को प्रसन्न करने के लिए यज्ञादि कर्मों का विधान जब क्रमशः रूढ़ और भावना-हीन कर्मकांड का रूप धारण कर गया, तो इसकी प्रतिक्रिया भी होने लग गई। इसी कारण उपनिषदों में कर्मकांड की कठोर आलोचना की गई। वास्तव में गीता (३/१९) के अनुसार अनासक्त भाव से किए गए कर्म ही मनुष्य को सर्वोच्च अवस्था तक पहुँचा सकते हैं। इन्हीं अनासक्ति भाव वाले कर्मों को अध्यात्म-कर्म की संज्ञा दी जा सकती है। गुरु अमरदास ने अपनी वाणी के अनेक संदर्भों में अध्यात्म-कर्म करने पर बल दिया है। कामादिक वासनाओं को मारना, परमात्मा, गुरु और गुरु-शब्द में दृढ़ विश्वास रखना, सत्संगति में हरिनाम का स्मरण करना, परमात्मा के हुक्म एवं रज़ा को मानना, जाति भेद-भाव से ऊँचे उठ कर सभी के साथ समभाव से व्यवहार करना, आदि। इन अध्यात्म कर्मों की सीमा निश्चित नहीं की जा सकती।

गुरुवाणी में प्रचलित साधना-मार्गों में से अधिक आलोचना योग-मार्ग और उसके अंगोपांगों की हुई है। रामकली राग में संकलित वाणी का एकमात्र प्रतिपाद्य योगमत के वास्तविक स्वरूप का विश्लेषण और रूढ़ रूप का खंडन है। इसका कारण मध्ययुग में इस साधना-पद्धति के द्वारा अनुचित ढंगों को अपनाना

1. आदि ग्रन्थ, पृ० १६२ (गउड़ी म० ३)
2. वही, पृ० ४९१ (गूजरी म० ३)
3. वही, पृ० १२८५ (वार मलार म० ३)

था जिनके फलस्वरूप मानवता के विकास के स्थान पर विनाश अधिक हो रहा था। गुरु नानक की वाणी में योग और विशेषत: हठयोग और इस साधना-प्रणाली के सभी उपकरणों का खंडन हुआ है। गुरु अमरदास भी इस सम्बन्ध में गुरु नानक की भावना को ही आगे विकसित करते हैं, यथा—

१) जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि।
नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि।[1]

२) सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ।
मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ।[2]

३) रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ।[3]

गुरु अमरदास ने योगियों को सम्बोधित कर उन्हें वास्तविक योग समझाने का प्रयास भी किया हैं। गुरु जी ने योग के उपकरणों को भावीकृत रूप में प्रस्तुत करते हुए परमात्मा के हुक्म का पालन करने का आदेश दिया है। निम्नांकित पद्य से गुरु जी का मन्तव्य स्पष्ट हो जाता है—

सरमै दीआ मुंद्रा कनी पाइ जोगी, किंथा करि तू दइआ।
आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी, ता तीनि भवण जिणि लइआ। १।
ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी।
जितु किंगुरी अनहद वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ। १। रहाउ।
सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी, अंमृत नामु भुगति पाई।
धिआन का करि डंडा जोगी, सिंङी सुरति वजाई। २।......
हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ, एकस सिउ चितु लाए।
सहसा तूटै निरमलु होवै, जोग जुगति इव पाए। ६।
हरि का नामु अउखधु है जोगी, जिस नो मंनि वसाए।
गुरमुखि होवै सोई बूझै, जोग जुगति सो पाए। १०।[4]

भक्ति-मार्ग : गुरु अमरदास ने सभी साधना मार्गों में से भक्ति मार्ग को विशेष महत्त्व दिया है। उनकी वाणी में भक्ति और उस के उपकरणों का स्वरूप-चित्रण ही प्रमुख प्रतिपाद्य रहा है। गुरु जी का अपना जीवन एक भक्त-साधक का था। उन्होंने भक्ति के बल पर ही आध्यात्मिका के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। भक्ति वस्तुत: मध्ययुग की परिस्थितियों के

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० १४२०-२१ (सलोक वारा ते वधीक)
2. वही, पृ० ५५८ (वडहंस म० ३)
3. वही, पृ० ५९३ (वडहंस वार म० ३)
4. वही, पृ० ९०८-९ (रामकली म० ३)

अनुरूप साधना-मार्ग था। इन में परमात्मा को शीघ्रातिशीघ्र द्रवित कर सकने की समर्थकता है। इस में ऊँच-नीच सब के लिए समान फल की प्राप्ति संभव है। गृहस्थियों के लिए भी यह अनुकूल पद्धति थी। परन्तु गुरु अमरदास ने भक्ति-मार्ग के परम्परागत अथवा वैधी रूप को स्वीकार नहीं किया, अपितु यत्र-तत्र ऐसी भक्ति को अनुचित सिद्ध करते हुए इस को हरि-प्राप्ति का सही पथ मानने से इन्कार किया है, यथा—

नचि नचि टपहि बहुतु दुख पावहि।
नचिऐ टपिऐ भगति न होइ।[1]

वस्तुतः गुरु अमरदास ने निराकार की प्रेम-भाव से की जाने वाली निष्काम भक्ति को सर्वोत्तम समझा है, क्योंकि इस में किसी प्रकार की औपचारिकता का अभाव रहता है। ऊँच-नीच की भावना के अभाव के कारण इसमें समाजिक समन्वय की भावना कहीं अधिक होती है और इसको अपनाने से समाज मानवतावाद के समस्त तत्वों को अंतर्हित करता हुआ आध्यात्मिक कल्याण के मार्ग पर बड़ी दृढ़ता, साहस एवं विश्वास से सरलतया बढ़ पाता है। इसके अतिरिक्त परमात्मा को शीघ्रातिशीघ्र द्रवित करने की जो शक्ति भक्ति में है, वह अन्य किसी साधना-मार्ग में कल्पना भी नहीं की जा सकती। युगीन परिस्थितियाँ भी एतादृश साधन के विकास में अनुकूल थीं। इसी लिए ऐसी भक्ति को प्रयत्न-साध्य न मान कर सहज भक्ति[2] नाम दिया गया है। प्रेम इस भक्ति का आधार तत्व है। इस सम्बंध में गुरु अमरदास की स्पष्ट स्थापना है—

१) बिनु प्रीती भगति न होवई,
बिनु सबदै थाइ न पाइ।[3]
२) भाइ भगति तेरै मनि भाए।[4]
३) गोबिद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ,
वेखु जैसी भगति बनी।[5]

इस भक्ति के लिए गुरु साहिब ने भय को विशेष महत्त्व दिया। इसके बिना

1. आदि ग्रन्थ, पृ० १५९ (गउड़ी म० ३)
2. 'गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ।'
—आदि ग्रंथ, पृ० ११० (माझ म० ३)
3. आदि ग्रंथ, पृ० ६७ (सिरी म० ३)
4. वही, पृ० १११ (माझ म० ३)
5. वही, पृ० ४९० (गूजरी म० ३)

यह भक्ति सम्पन्न हो ही नहीं पाती । गुरु नानक देव ने तो मात्र उन्हीं के मन में प्रेम का अस्तित्व स्वीकार किया है, जिनके मन में परमात्म-भय हो ।[1] गुरु अमरदास के मतानुसार भय-युक्त भाव-भक्ति करते हुए दिन-रात प्रभु को सदैव अपने सम्मुख विद्यमान मानना चाहिए—

भै भाइ भगति करहि दिनु राती, हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ।[2]
अन दिनु सदा रहै भै अंदरि, भै मारि भरमु चुकावणिआ ।[3]

इस भक्ति के लिए पाखंड, अहंकार तथा इस प्रकार की अन्य दुष्वृत्तियों के त्याग पर भी गुरु साहिब ने बहुत बल दिया है, क्योंकि ये दोनों इस भक्ति के उचित विकास में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ प्रस्तुत करने में समर्थ हैं, यथा—

१) पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ।[4]
२) अनदिनु भगति करहि दिनु राति, हउमै मोहु चुकाइआ ।[5]

भक्ति के द्वारा ही मुक्ति संभव है[6] और इसके बिना जगत् में आना व्यर्थ है ।[7] यह भक्ति परमात्मा के प्रति ही नहीं, इष्ट-गुरु के प्रति भी हो, क्योंकि गुरु-भक्ति परमात्म-भक्ति की आधार-शिला है । इसी के द्वारा परमात्मा को सहज भाव से मन में बसाया जा सकता है—

हरि सचा गुर भगति पाइऐ, सहजे मंनि वसावणिआ ।[8]

इस भक्ति में नवधा-भक्ति के कतिपय भेदों के भावीकृत रूपों के दर्शन भी हो जाते हैं, यथा श्रवण, कीर्तन, स्मरण, दास्य, आत्मसमर्पण । इन भेदों का भावीकरण गुरु नानक वाणी में भी हुआ मिलता है । वस्तुतः सिख गुरु मध्ययुग के अन्य निर्गुणियों के समान सारग्राही महात्मा थे, उनको मानव कल्याण और आध्यात्मिक सुधार के लिए जहाँ से भी जो अच्छा मिला, उसे निस्संकोच भाव से ग्रहण कर लिया । परन्तु गुरुओं की विशिष्टता 'हुकम रजाई चलना' के सिद्धांत में देखी जा सकती है ।

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० ४६५ (आसा वार म० १)
2. वही, पृ० ३४ (सिरी म० ३)
3. वही, पृ० ११४ (माझ म० ३)
4. वही, पृ० २८ (सिरी म० ३)
5. वही, पृ० ६५ (सिरी म० ३)
6. 'हरि भगती राते मोख दुआरु ।' -आदि ग्रंथ, पृ० ४२३ (आसा म० ३)
7. 'भाई रे भगति हीणु काहे जगि आइआ ।' वही, पृ० ३२ (सिरी म० ३)
8. आदि ग्रंथ, पृ० ११६ (माझ म० ३)

हुकम/रज़ा की पालना : सिख-साधना मार्ग में 'हुक्म रज़ाई चलना' भाव की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम गुरु नानक देव की सुप्रसिद्ध रचना 'जपु' में हुई है ('हुक्म रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि)।' वस्तुतः इस मार्ग पर चलने से ही प्रभु के द्वार पर स्वीकृति प्राप्त होती है ('हुक्म रजाई जो चलै सो पवै खजाने)'। इस सिद्धांत की वास्तविकता को समझने के लिए इन शब्दों के अर्थों और तात्त्विक रूप में इन से साम्य रखने वाले 'भाणा' शब्द को समझ लेना परमापेक्षित है।

अरबी भाषा के 'हुक्म' शब्द का अर्थ है 'फ़रमान'। कुरानिक साहित्य में इसका प्रयोग शाही अथवा इलाही आदेश के लिए हुआ है। मध्ययुग के साधकों में गुरु नानक देव ने इसका सर्वप्रथम प्रयोग किया और आस्था तथा भक्ति भावना की अमृतधारा से सींच कर इस को एक सर्वथा नवीन और मौलिक अर्थ प्रदान किया। इस प्रकार यह शब्द-प्रयोग नई भाव-भूमि पर हुआ। फलतः गुरुवाणी में रुचि रखने वाले विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या की। किसी ने सृष्टि-विधान (यूनिवर्सल आर्डर) कहा, तो किसी ने ईश्वरीय इच्छा (डिवाइन विल) का सूचक बताया। इसी प्रकार परमात्मा का समूचा विधान (ओवर आल आर्डर आफ़ दा लार्ड), ईश्वरीय नियम-समूह (ए सेट आफ दा लॉ आफ गॉड), निर्देशक सिद्धांत और नैयंत्रिक नियम गाइडिंग प्रिंसिपल एंड कंट्रोलिंग लॉ आफ यूनिवर्स), ईश्वरीय शक्ति, आदि अर्थ किए गए। वास्तव में 'हुक्म' 'हुक्मी का प्रतीक है। दोनों की विशिष्टताएँ एक समान हैं। 'जपु' के अनुसार 'हुक्म' अनिर्वचनीय है-'हुक्म न कहिआ जाइ'। इस के सामने सभी मनुष्यों को आत्म-समर्पण करना चाहिए और जो ऐसा करता है, वह सदाचारी (सचिआर) की अवस्था को प्राप्त होता है।

'हुक्म' शब्द के साथ 'रज़ा' शब्द का प्रयोग भी हुआ है। यह भी अरबी का शब्द है और इस का अर्थ है—प्रसन्नता, रज़ामन्दी। सूफ़ियों की शब्दावली में ईश्वरीय उदारता सहित जो वारिद हो अथवा परमात्मा की ओर से प्राप्त हो, उस पर राज़ी होना, उस में प्रसन्न रहना 'रज़ा' है। 'कशफुल मजजूब' में सूफ़ी साधक के दो विशेष गुण बतलाए गए हैं—रज़ा और सबर। वहाँ रज़ा को तपस्या से उत्तम सिद्ध किया गया है क्योंकि तपस्या सकाम होती है परन्तु रज़ा के मानने से सभी इच्छाएँ स्वयमेव पूर्ण हो जाती हैं। अनेक सूफ़ी ग्रंथों में इसकी महत्त्व-स्थापना हुई है। गुरु नानक देव ने भी इस शब्द की भाव-गंभीरता से प्रेरित एवं प्रभावित हो कर गुरुवाणी में इस का सर्वप्रथम प्रयोग किया। स्मरण रहे कि गुरुवाणी में 'रज़ा' के साथ-साथ 'भाणा' शब्द

का प्रयोग भी हुआ है। 'भाणा' का अर्थ भी ईश्वरीय हुक्म, परमात्मा की इच्छा अथवा मरज़ी किया जाता है। संभवत: संस्कृत के 'भावना' शब्द से व्युत्पन्न इस शब्द का प्रयोग भी हुक्म, रज़ा के अर्थों में होता है। सिख धर्म-ग्रन्थों और गुरुबाणी के व्याख्यात्मक साहित्य में रज़ा और भाणा को समानार्थक लिखा गया है।

वास्तव में हुक्म, रज़ा और भाणा इन तीनों शब्दों का सम्बंध परम-सत्ता से है। इन तीनों में तात्त्विक रूप में कोई अंतर नहीं हैं। हुक्म के पीछे ईश्वरीय इच्छा विद्यमान है, इच्छा के न होने से हुक्म का उपादान कारण ही नहीं रहता। यदि इन तीनों में कोई अंतर है तो केवल प्रकिया का। रज़ा अथवा भाणा परमसत्ता की सहज-वृत्ति है। जब तक यह वृत्ति अपनी सहजावस्था को त्याग कर अथवा उसकी सीमा का उल्लंघन कर क्रियात्मक रूप धारण करती है, तो 'हुक्म' बन जाती है। फलस्वरूप रज़ा अथवा भाणा का दार्शनिक शैली में हुक्म के साथ कारण-कार्य सम्बंध है। जैसे जल (कारण) और जल-तरंग (कार्य) में कोई तात्त्विक अंतर नहीं, वैसे रज़ा अथवा भाणा (कारण) और हुक्म (कार्य) में भी कोई अंतर नहीं। परन्तु जिस प्रकार जल और जल-तरंग में व्यावहारिक रूप में अंतर है, उसी प्रकार हुक्म और रज़ा अथवा भाणा में व्यावहारिक अंतर अवश्य है। अत: हुक्म ईश्वरीय भाणा अथवा रज़ा को क्रियात्मक रूप प्रदान करने वाला अनुशासनिक विधान है। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हुक्म, भाणा और रज़ा के अनुरूप जीवन-यापन करने का विशेष महत्त्व है। इस से भय के भाव का विकास होता है, अहंकार की भावना का विनाश होता है, साधक के व्यक्तित्व में दैन्य, नम्रता आदि वृत्तियों का संचार होता है और वह परमात्मा की शरण में जाकर पूर्ण-रूपेण आत्म-समर्पण कर देता है।[1]

यद्यपि इन तीनों शब्दों का प्रयोग गुरु नानक वाणी में मिल जाता है, तथापि इन पारिभाषिक शब्दों का जितना विस्तृत और निष्ठापूर्वक प्रयोग परवर्ती गुरुओं की वाणियों में हुआ है, उतना अन्यत्र नहीं। गुरु अमरदास ने हुक्म के द्वारा इस संसार का समस्त कार्य-व्यापार संचालित माना है। यह हुक्म न टाला जा सकता है और न मिटाया जा सकता है—

१) हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ।
हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ।

1. गुरशरण कौर जग्गी, डा० 'गुरु नानक वाणी दा सिद्धांतिक विश्लेषण', पृ० २५७

हुकमे हरि हरि मन वसै हुकमे सचि समाउ ।[1]

२) सो किछु करै जु चिति न होई ।
तिसदा हुक्मु मेटि न सकै कोई ।
हुक्मे वरतै अंमृत वाणी,
हुक्मे अंमृतु पीआवणिआ ।[2]

गुरु अमरदास ने 'हुकम' शब्द के समान 'भाणा' शब्द का भी खुल कर प्रयोग किया है । जिस प्रकार ईश्वरीय हुक्म के बिना इस संसार की गतिविधि चल नहीं पाती, उसी प्रकार ईश्वरीय 'भाणा' के बिना संसार का कोई कार्य, व्यवस्था आदि सम्पन्न नहीं हो पाती—

१) हरि के भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ।
गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ।[3]

२) जो तुधु करणा सो करि पाइआ ।
भाणै विचि को बिरला आइआ ।
भाणा मंने सो सुखु पाए,
भाणै विचि सुखु पाइदा । १ ।

गुरमुखि तेरा भाणा भावै ।
सहजे ही सुखु सचु कमावै ।
भाणे नो लोचै बहुतेरी,
आपणा भाणा आपि मनाइदा । २ ।

तेरा भाणा मंने सु मिले तुधु आए ।
जिस भाणा भावै सो तुझहि समाए ।
भाणे विचि वडी वडिआई,
भाणा किसहि कराइदा । ३ ।[4]

इसी सरणी पर गुरु अमरदास ने 'रज़ा' शब्द का प्रयोग भी किया है । उन्होंने तो नामाराधना भी उसी व्यक्ति के द्वारा संभव मानी है, जिस पर ईश्वर अपनी इच्छा से कृपा-दृष्टि करता है—

हरि हरि नामु धिआइऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ।[5]

1. आदि ग्रन्थ, पृ० ६६ (सिरी म० ३)
2. वही, पृ० ११८ (माझ म० ३)
3. वही, पृ० ३६५ (आसा म० ३)
4. वही, पृ० १०६३ (मारू म० ३)
5. वही, पृ० २८ (सिरी म० ३)

नाम–साधना और सत्संगति : गुरु अमरदास ने नाम-साधना और सत्संगति पर भी बहुत बल दिया है । इस में सन्देह नहीं कि मध्ययुग के साधकों की वाणियों में भक्ति के इन दोनों पक्षों का सविस्तार चित्रण हुआ है, परन्तु सिख-भक्ति-साधना में नाम और संगति का मेरु-दंड के समान महत्त्व है । वस्तुतः इन दोनों के बिना सिख-साधना की कल्पना तक नहीं की जा सकती । गुरु अमरदास की वाणी में यत्र-तत्र सर्वत्र इन सिद्धांतों का चित्रण हुआ है । वस्तुतः ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति में किसी एक व्यक्ति का जितना ही सहयोग तथा पथ-प्रदर्शन क्यों न रहा हो, परन्तु दूसरे संतों के संसर्ग से प्रेरणा में निरन्तर दृढ़ता, साधना के स्वरूप में निखार और आत्म ज्ञान में लगातार विस्तार होता रहा है । यह कहना असंगत न होगा कि सत्संगति आध्यात्मिक क्षेत्र का एक ऐसा आरोग्य आश्रम (सेनिटोरियम) है जिस में पहुँच कर रुग्ण जिज्ञासु को आध्यात्मिकता का स्वास्थ्य-लाभ होता है । और इस आरोग्य आश्रम में उपचार निमित यदि किसी औषध का प्रयोग किया जाता है, तो वह एक-मात्र नाम-स्मरण है । इस प्रकार सत्संगति और नाम-स्मरण परस्पर व्यवस्था और कार्य के रूप में सम्बंधित है । यहाँ पर गुरु अमरदास की कतिपय पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

१) सति संगति महि नामु हरि उपजै
जा सतिगुरु मिलै सुभाए ।[1]

२) सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ।[2]

३) पूरे गुर ते सत संगति उपजै सहजे सचि सुभाइ ।[3]

४) जिनि किनै पाइआ साध संगति पूरे भागि बैरागि ।[4]

५) नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ।[5]

६) जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु होइ ।
पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ।[6]

७) नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई,
जितु लगि पारि जन पाइ ।[7]

1. आदि ग्रंथ, पृ० ६८ (सिरी म० ३)
2. वही, पृ० ६९ (सिरी म० ३)
3. वही, पृ० ४२७ (आसा म० ३)
4. वही, पृ० २९ (सिरी म० ३)
5. वही, पृ० ४० (सिरी म० ३)
6. वही, पृ० ३३ (सिरी म० ३)
7. वही, पृ० ६०३ (सोरठि म० ३)

गुरु/सदगुरु : भक्ति-साधना में गुरु अथवा सद्गुरु का भी विशेष महत्त्व स्वीकार किया गया है। वस्तुतः प्रत्येक कार्य में किसी शिक्षक, पथ-प्रदर्शक, गुरु, उपाध्याय आदि की आवश्यकता रहती है, परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में गुरु का विशेष महत्त्व है। साधना-मार्ग में सुचारु रूप से आगे बढ़ पाने के लिए गुरु की सहायता की परमापेक्षा है। मध्य-युग के सभी साधकों ने गुरु के महत्त्व को स्वीकार किया है और इसके कार्य की भूरि-भुरि प्रशंसा की है। सिख-साधना में गुरु के महत्त्व को विशेष रूप में स्वीकृति प्रदान की गई है। यहाँ तक के इस साधन-पद्धति में दस गुरुओं की एक विशेष परम्परा भी रही है, और ब्रह्म-ज्योति एक से दूसरे गुरु में क्रमानुसार शरीरांतरित भी होती रही है। दशम गुरु ने इस परम्परा के शारीरिक विधान को समाप्त कर इस स्थान पर ग्रन्थ साहिब को गुरु-पद प्रदान किया और गुरु की सभी समर्थताओं को गुरु-शब्द में समाहित करते हुए शब्द-गुरु का स्थायी विधान किया। अतः गुरु अमरदास की वाणी में गुरु के महत्त्व, स्वरूप और सामर्थ्य का सविस्तार एवं भावनामयी शैली में चित्रण हुआ है। यह चित्रण सैद्धांतिक एवं संस्थागत दोनों रूपों में मिल जाता है। यहाँ कुछ संदर्भ यथेष्ठ होंगे—

१) सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिसनो लाए भाउ।
नाउ बीजै नाउ उगवै नामे रहै समाइ।[1]

२) गुरु सरवरु मानसरोवरु है वडभागी पुरख लहंनि।
सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि।[2]

३) सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ। १। रहाउ।
सतिगुर ते गिआन ऊपजै तां इह संसा जाइ।
सतिगुर ते हरि बूझीऐ गरभ जोनी नह पाइ।[3]

४) गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई।
हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझाई।
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई।[4]

नारी-गौरव की स्थापना : सिख-साधना की एक विशेषता यह भी रही है कि उन्होंने मध्ययुग के अन्य साधकों के विपरीत नारी की निंदा में बिल्कुल रुचि नहीं दिखाई। उस समय सामान्यतः नारी को पुरुष की आध्यात्मिकता

---

1. आदि ग्रन्थ ९४७ (रामकली वार म० ३)
2. वही, पृ० ७५६-५७ (सूही म० ३)
3. वही, पृ० १२७६ (मलार म० ३)
4. वही, पृ० २३३ (गउड़ी म० ३)

में सब से अधिक विघ्नकारी माना जाता था। इस के लिए पापमयी, नरकमयी आदि विशेषणों का प्रयोग भी किया जाता था। सार्वभौमिक शाश्वत समानता के समर्थक संतों ने इस निंदा में नारी के केवल कामिनी रूप को देखा, इसके अर्द्धांगिनी रूप को देखने के लिए संभवत: प्रयास ही नहीं किया गया। इस संदर्भ में सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक की दृष्टि सर्वथा भिन्न रही। उन्होंने अकाट्य तर्कों के द्वारा सामाजिक जीवन में नारी के स्थान और महत्त्व का प्रतिष्ठापन करते हुए[1] कामिनी रूप में भी इसे हरि-भक्ति में लीन होने का उपदेश दिया है।[2]

गुरु अमरदास ने भी नारी की महत्त्व-स्थापना वाली प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया और उसे उपदेश दिया कि सात्विक भावनाओं का शृंगार कर उसे अपने प्रियतम का ही संयोग-सुख प्राप्त करना चाहिए, इससे भिन्न भावना उसके गौरव को सही रूप में स्थापित नहीं कर पाएगी। इसके अतिरिक्त गुरु जी ने स्त्रियों के लिए पुरुष-समाज द्वारा प्रचलित की गई कठोर एवं अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया और अपने अनुयायियों को ऐसी प्रथाओं विशेषत: सत्ती-प्रथा को त्यागने के लिए आदेश दिया। इस प्रकार की जन-चेतता सजग करने के पश्चात् ही अकबर को वैधानिक ढंग से सत्ती-प्रथा को रोकने के लिए आदेश जारी करना पड़ा। गुरु जी ने वास्तविक सत्ती स्त्री का स्वरूप चित्रित करते हुए चिता पर जलने की अपेक्षा विरह की चोट से मरने का सुझाव दिया और शील तथा संतोष की पालना द्वारा पति को स्मरण करने के लिए भी प्रेरित किया—

> सतीआ ऐहि न अखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि।
> नानक सतीआ जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि। १।
> भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि।
> सेवनि साई आपणा नित उठि संमालंनि। २।[3]

जाति-भेदभाव के समान नारी को पद-दलित समझने वाली अमानवीय प्रकृति को परवर्ती सिख-गुरुओं और सिख-सम्प्रदाय ने पूर्णरूपेण त्याग दिया और नारी का गौरव सभी क्षेत्रों में पुरुष के समकक्ष स्थापित किया।

जाति-भेद का अभाव : गुरु जी ने अपनी भक्ति-साधना में जाति-गत भेद-भाव को कोई स्थान नहीं दिया। 'पहले पंगत पाछै संगत' के प्रतिबंध द्वारा

---

1. आदि ग्रन्थ, पृ० ४७३ (आसा वार म० १)
2. वही, पृ० ११८७ (वसंत म० १)
3. वही, पृ० ७८७ (सूही वार म० ३)

उन्होंने जातिगत गौरव की भावनाओं का मर्दन कर अपनी साधना की नैतिक स्थिति स्पष्ट कर दी थी। वर्णधर्म का विरोध भले ही महात्मा बुद्ध के समय से शुरू हो गया था, परंतु इस की वास्तविक निःसारता का बोध एंव भयंकर स्वरूप के दर्शन मुसलमानों के भारत में प्रवेश करने के पश्चात् होते हैं। क्योंकि डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार तब प्रथम बार भारतीय समाज को एक ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ गया जो उसकी जानी हुई नहीं थी। अब तक वर्णाश्रम व्यवस्था का कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं था, परन्तु अब इस्लाम जैसा सुसंगठित समाज सामने था जो प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जाति को अपने अंदर समान आसन देने की प्रतिज्ञा कर चुका था।[1] फलस्वरूप पद-दलित और अछूत समझे जाने वाली जातियों के लोग अत्यधिक संख्या में मुसलमान बनने लगे। जाति-भेदभाव के इस भयानक परिणाम ने भारतीय विचारकों को झंझोड़ दिया। उदार संत साधकों ने वर्णव्यवस्था के दुष्परिणामों को खत्म करने के लिए भक्ति के क्षेत्र में इसे सर्वथा अनावश्यक घोषित कर दिया। उच्चवर्गीय साधकों की अपेक्षा निम्नश्रेणियों से सम्बंधित साधकों की वाणियों में जाति-भेदभाव के विरोध का स्वर अधिक गूँजा, और कहीं-कहीं तो इसका स्वरूप किंचित् कटु भी रहा। इस प्रकार के खंडन में संत कबीर अग्रणी थे। परन्तु सिख गुरुओं की विशेषता यह थी कि कुलीन होने के बावजूद भी उन्होंने जातिगत भेदभाव की प्रवृत्ति से मानवता को मुक्ति दिलवाने का सद्प्रयास किया। गुरु अमरदास ने ब्राह्मण को सम्बोधित करते हुए जाति के सम्बंध में गर्व न करने के लिए उपदेश दिया क्योंकि इस से अनेक प्रकार के विकारों का विकास होने की संभावना है। वस्तुतः सभी पाँच तत्त्वों के द्वारा निर्मित हैं, इनमें न्यूनाधिक होने की कोई बात नहीं है---

जाति का गरबु न करीअहु कोई।
ब्रहमु बिंदे सो ब्राह्मणु होई। १।
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा।
इस गरब ते चलहि बहुतु विकारा। रहाउ।
चारे वरन आखै सभु कोई।
ब्रह्म बिंद ते सभ ओपति होई। २।
माटी एक सगल संसारा।
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा। ३।

1. 'मध्यकालीन धर्म-साधना', पृ० ९९

पंच ततु मिलि देही का आकारा ।
घटि वधि को करै बीचारा । ४ ।

कहतु नानक इहु जीउ करमबंधु होई ।
बिनु सतिगुर भेटे मुकित न होई । ५ ।[1]

परमात्मा के द्वारा पर जातिगत भेदभाव का कोई अर्थ नहीं बैठता, वहाँ तो कर्मों के अनुसार निर्णय होगा ।[2] जातिगत अहंभाव को नष्ट करने के लिए एकमात्र उपाय शब्द को पहचानना है ।[3] नाम-विहीनता ही नीच जाति की स्थिति है । भक्ति में अनुरक्त व्यक्ति ही उत्तम हैं और उनकी जाति-पांति शब्द की आराधना पर अवलंबित है —

भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ।
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होई ।[4]

सेवा की भावना : भक्ति में सेवा का अत्यधिक महत्त्व है । गुरु अमरदास स्वयं सेवा की प्रतिमूर्ति थे । उनका सारा जीवन सेवामय है । उनकी वाणी में भी सर्वत्र सेवा के महत्त्व की स्थापना हुई है । लोक-कल्याण के प्रत्येक पहलू में सेवा का महत्त्व माना गया है । ऐसी धारणा लगभग सार्व-लौकिक है और विश्व के किसी भी प्रमुख आचार-शास्त्र में इसे देखा जा सकता है ।[5] वस्तुत: यह बड़ी ऊँची साधना है । सेवा की भावना से मनुष्य का अहंभाव नष्ट होता है । अहंभाव अंधकार है और सेवा प्रकाश । अहंभाव में अपने-आप के लिए जीना है परन्तु सेवा में दूसरों के लिए जीना है । सेवा करने की रुचि प्रत्येक व्यक्ति के मन में उत्पन्न नहीं हो सकती । इसकी प्राप्ति के लिए बड़े ऊँचे आचरण की आवश्यकता है । इस में कोई संतोषी साधक ही सफल हो सकता है ।

गुरु अमरदास की वाणी में सेवा के दो रूप चित्रित किए गए है—प्रभु-

1. आदि ग्रन्थ, पृ० ११२८ (भैरउ म० ३)
2. 'आगै जाति रूपु न जाइ । तेहा होवै जेहे करम कमाइ ।'
 –आदि ग्रंथ, पृ० ३६३ (आसा म० ३)
3. 'ब्रह्म के बेते सबदु पछाणहि, हउमै जाति गवाई ।'
 –आदि ग्रंथ, पृ० ६७ (सिरी म० ३)
 'सबदि मरै ता जाति जाइ, जोती जोति मिलै भगवानु ।'
 –आदि ग्रन्थ, पृ० ४२९ (आसा म० ३)
4. आदि ग्रन्थ, पृ० ४२६ (आसा म० ३)
5. मनमोहन सहगल, डा० 'गुरु ग्रन्थ साहिब: एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण', पृ० ३७३

सेवा और गुरु-सेवा। प्रभु की सेवा से मनोवांच्छित फल की प्राप्ति होती है और प्रभु से भिन्न किसी अन्य की सेवा व्यर्थ है—

हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी।
हरि की सेवा ते मनहु चिदिआ फलु पाईऐ,
दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी।[1]

प्रभु के साथ-साथ गुरु की सेवा पर भी बल दिया गया है। गुरु वस्तुतः इस लोक में परमात्मा का साकार प्रतिनिधि है। अतः प्रभु-सेवा और गुरु-सेवा में किसी प्रकार का कोई तात्त्विक अंतर नहीं है, दोनों एक ही सत्ता के विभिन्न रूप है। गुरु की सेवा से सुख की प्राप्ति होती है और सत्संगति में बैठ कर हरिगुण गायन करने का अवसर मिलता है।[2] इस का स्वरूप स्पष्ट करते हुए आत्म-समर्पण पर बल दिया है—

हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ।
तनु मनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ।
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ।[3]

जो व्यक्ति सेवा में लग जाते हैं वे केवल एक प्रभु का ही ध्यान रखते है[4] और यदि वे उसी की इच्छा के अनुसार आचरण करते हैं तो उनका स्वरूप उसी के समान हो जाता है जिस की वे सेवा करते हैं।[5] कहने से अभिप्राय वे अद्वैतावस्था को प्राप्त कर लेते हैं। यह सेवा देखा-देखी का कोई सामान्य कृत नहीं, इसमें सफल मनोरथ होने के लिए शुद्ध हृदय की अत्यधिक आवश्यकता है—

देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ।
जित गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ।[6]

---

1. आदि ग्रन्थ, पृ० ४९० (गूजरी म० ३)
2. 'गुर की सेवा सदा सुखु पाए।
   संत संगति मिलि हरि गुण गाए।'
   –आदि ग्रंथ, पृ० ३६२ (आसा म० ३)
3. आदि ग्रन्थ, पृ० ६४७-४८ (सोरठि म० ३)
4. 'सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता'।
   –आदि ग्रंथ, पृ० ५७१ (वडहंस म० ३)
5. 'जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ।
   –आदि ग्रंथ, पृ० ५४९ (बिहागड़ा म० ३)
6. आदि ग्रंथ, पृ० २८ (सिरी म० ३)

साहित्यिकता

गुरु अमरदास ने जिज्ञासुओं को आध्यात्मिक तथ्य और धार्मिक साधना के विभिन्न पक्षों को समझाने और अपनी ब्रह्म अनुभूति से परिचित कराने के लिए काव्य को साधन बनाया। इस से भिन्न उनका कोई अन्य उद्देश्य नहीं था। वे रहस्य-साधक थे और अपनी अनुभूति के प्रकाशन के लिए ही कविता को उन्होंने माध्यम बनाया था। गुरु जी का प्रतिपाद्य बड़ा गंभीर एवं सत्याधारित था, फलस्वरूप उनकी अभिव्यक्ति भी बड़ी यथार्थ, सरल और हृदय पर सीधा प्रभाव डालने वाली थी। उसमें कथन की शक्ति के साथ-साथ भावैक्य भी था। उस में जहाँ एक ओर तीव्र प्रवाहमानता थी तो दूसरी ओर आध्यात्मिक वातावरण की सूचारु सृष्टि कर पाने की भी अपूर्व क्षमता थी।

संगीत-बद्धता : गुरु जी की समस्त वाणी संगीत-बद्ध है। मध्ययुग के अधिकांश संत एवं भक्त साधकों ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते समय संगीत को आधार बनाया था। गुरु अमरदास से पूर्व गुरु नानक ने भी अपनी बाणी को संगीत में स्वरबद्ध किया था। गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्ण वाणी राग-रागनियों के शीर्षक देकर संकलित की गई थी। गुरु अमरदास ने कुल १७ राग-रागनियों में अपनी वाणी का उच्चारण किया, यथा—सिरी, माझ, गउड़ी, आसा गूजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, सूही, बिलाबल, रामकली, मारू, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार, प्रभाती। इस के अतिरिक्त बिहागड़ा राग में गुरु जी ने ३२ श्लोकों की रचना की। गुरु जी को राग-रागनियों की भावनागत सूक्ष्मताओं का भी अधिकारी ज्ञान एवं अनुभव था। उन्होंने अपनी वाणी में यत्र-तत्र कतिपय रागों (सिरी, गउड़ी, गूजरी, वडहंस, धनासरी, सूही, बिलावल, रामकली, बसंत, मलार, केदारा) के सम्बंध में अपनी मान्यताएँ भी स्थापित की हैं, उदाहरणतः

१) **मलार**

गुरमुखि मलार रागु जो करहि इहु मनु तनु सीतलु होइ।
गुरसबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ।[1]

२) **धनासरी**

धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जा सतिगुर की कार कमाइ।[2]

केदारा राग में यद्यपि गुरु जी ने अपनी वाणी की रचना नहीं की, तथापि उसके आध्यात्मिक कर्त्तव्य के सम्बंध में वे स्पष्ट हैं—

---

1. आदि ग्रन्थ, पृ० १२८५ (मलार वार म० ३)
2. वही, पृ० १४१९ (सलोक वारा ते वधीक म० ३)

केदारा रागा   च जाणीए भाई सबदे करे पिआरु ।
सत संगति सिउ मिलदो रहे सचे धरे पिआरु ।[1]

गुरु अमरदास ने रागों का प्रयोग अपनी संगीत-शास्त्रीयता के लिए नहीं किया अपितु परमात्मा के यश-गान अथवा कीर्तन करने के लिए इनको प्रयोग में लाया । स्वामी प्रज्ञानंदन के मतानुसार कीर्तन धार्मिक भक्ति से सम्बद्ध एक गीत है, जो शास्त्रीय ताल एंव लय में परमात्मा, नायक अथवा देव की स्तुति में गाया जाता है ।[2] वस्तुत: कीर्तन गीत नहीं, स्तुति-परक पदों का संगीत के संदर्भ में गायन है । अत: इस का स्वरूप प्रक्रियात्मक है, वस्तु-परक नहीं । गुरु अमरदास ने पदों की इसी संगीतिक प्रक्रिया पर सर्वत्र बल दिया है—

१) आवहु सिख सतिगुरु के पिआरिहो गावहु सची बाणी ।
बाणी त गावहु गुरु केरी बाणीआ सिरि बाणी ।[3]

२) अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ।
सबदु गुरु का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ।[4]

शान्त-रस: आध्यात्मिक प्रतिपाद्य होने के कारण गुरु अमरदास की बाणी में शांत-रस का प्राधान्य है । गुरु जी वृद्धावस्था में गुरु-गद्दी पर आसीन हुए थे; इसलिए उनकी वाणी में वैराग्य का स्वर कुछ अधिक मुखर रहा । परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि यह वैराग्य पाखंड-मात्र नहीं होना चाहिए । वैराग्य और वैरागी का स्वरूप-परिचय देते हुए गुरु जी ने कहा है—

मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ।
हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरिगुण गावहि ।
करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ।
जलि थलि महीअलि एक सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ।
जिनि हुकमु पछाता हरि केरा सोई सरब सुख पावए ।
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए । २ ।[5]

गुरु अमरदास के साधना-मार्ग में भक्ति का प्राधान्य होने के कारण उनकी वाणी में भक्ति-रस के भी दर्शन हो जाते हैं । संयोग-वियोग की भाव-

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० १०८७ (मारू वार म० ३)
2. Prajnananda Swami, 'Historical Development of Indian Music', p. 259.
3. आदि ग्रंथ, पृ० ९२० (रामकली अनंदु म० ३)
4. वही पृ० ५९३ (वडहंस वार म० ३)
5. वही पृ० ४४० (आसा म० ३)

नाओं से सम्बंधित अनेक अवतरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। उदाहरणार्थ—

१) मैं कामणि मेरा कंतु करतारु।
जेहा कराए तेहा करी सीगारु। १।
जां तिसु भावै तां करे भोगु।
तनु मनु साचे साहिब जोगु। १। रहाउ।[1]

२) मिलु मेरे प्रीतम जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी।
मैं नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी।
पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ।
गुरु आगै करउ बिनती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ।
आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए।
नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए।[2]

शांत-रस तथा भक्ति-रस के अतिरिक्त कहीं-कहीं कतिपय अन्य रसों का आभास भी होता है, किंतु उन रसों की पूर्ण निष्पत्ति नहीं हो पाई।

प्रतीक विधान: अपनी आध्यात्मिक साधना को सरल ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए संत साधकों ने प्रतीकों का खुल कर प्रयोग किया है। वास्तव में आध्यात्मिक साहित्य की रहस्यानुभूति प्रतीक योजना के बिना स्पष्ट हो ही नहीं सकती, क्योंकि यह अंतर की साधना है, अत: साधारण भाषा इसे अभिव्यक्त करने में असमर्थ है। यही कारण है कि गुरु अमरदास ने भी लौकिक जीवन के उन्हीं रूपों और चित्रों, वस्तुओं तथा सम्बधों का प्रतीक रूप में प्रयोग किया है जिससे उनकी अनुभूति की समानता थी और जो साधारण रूप में परंपरा से लोक-चेतना के साथ जुड़े हुए थे। गुरु अमरदास ने अपनी वाणी में परमात्मा, जीवात्मा के परस्पर सम्बंध, माया, मन, शरीर, आदि को लेकर भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतीकों का प्रयोग किया हैं। इन में से कतिपय प्रतीक परम्परागत हैं और कुछ गुरु जी के भाव-जगत् की सृष्टि हैं। उनकी अनुभूति का मुख्य आधार परमात्मा और जीवात्मा का परस्पर सम्बंध है। इस बात को उन्होंने पति-पत्नी सम्बंध वाले दाम्पतिक प्रतीकों के द्वारा अभिव्यक्त किया है। जिन प्रतीकों के द्वारा उनकी प्रेमा-भक्ति के मधुर रूप को निखार प्राप्त हुआ है। दाम्पतिक प्रतीकों के भी आगे दो वर्ग है। एक वे जिन में गुरु जी ने आप पत्नी का अभिनय किया है। ऐसे प्रसंगों में गुरु जी ने वियोग और मिलन-सुख प्राप्त करने की लालसा के अनेक हृदय-स्पर्शी चित्र

1. आदि ग्रंथ, पृ० ११२८ (भैरउ म० ३)
2. वही, पृ० २४४-४५ (गउड़ी म० ३)

पेश किए हैं। ध्यातव्य बात यह है कि गुरु जी ने अपना सारा प्रेम-सम्बंध भारतीय मर्यादाधीन वैध रूप में प्रस्तुत किया है, यहाँ सूफ़ीमत की प्रेमी-प्रेमिका सम्बंध वाली कल्पना नहीं है। यही कारण है कि ऐसे चित्रण में बड़ी पवित्र, सात्विक और वासना-रहित प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति हो पाई है। गुरु जी ने दूसरे दाम्पतिक प्रतीकों का प्रयोग तब किया था जब भक्ति-भावना को प्रकट करने के लिए आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को परमात्मा के साथ प्रेम करने और उसकी समीपता की भावना प्रकट करने का अवसर मिला। कतिपय उदाहरण देखिए—

१) भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ।
   तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करे।[1]
२) सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु।
   आपणा पिरु राखै सदा उरधारि।[2]
३) बिन पिर कामणि करे सीगारु।
   दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु।[3]

इन प्रतीकों की एक विशेषता यह है कि ये जन-जीवन से लिए गए हैं और गुरु जी की मानसिक स्थिति और आत्मिक भावों की अभिव्यक्ति बड़े सुन्दर ढंग से कर पाए हैं। इनसे गुरु जी ने पथ-भ्रष्ट व्यक्तियों को सन्मार्ग पर डालने का प्रयास किया है, यथा—

१) मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाई।[4]
२) मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।[5]

गुरु जी ने चातक और स्वातिबून्द के प्रतीकों का भी बड़ी रुचि से प्रयोग किया है और इनके द्वारा अपने मन की अभिलाषा और निष्ठा का परिचय दिया है—

१) चात्रिक तू न जाणही किआ तुधु विचि
         तिखा है कितु पीतै तिख जाइ।
   दूजै भाइ भरंमिआ अंमृत जलु पलै न पाइ।[6]
२) बबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलधि प्रेम पिआरि।[7]

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० ७८८ (सूही म० ३)
2. वही, पृ० ३६३ (आसा म० ३)
3. वही, पृ० १२७७ (मलार म० ३)
4. वही, पृ० ६३८ (सोरठि म० ३)
5. वही, पृ० ४४१ (आसा म० ३)
6. वही, पृ० १२८४ (मलार म० ३)
7. वही, पृ० १४१९ (सलोक वारा ते वधीक म० ३)

अलंकार-योजना : संत साधकों की वाणी में अलंकार-विधान को परखना उचित नहीं है। काव्य की सृजना उन का जीवनोद्देश्य नहीं था। गुरु अमरदास की वाणी में भी अलंकार-विधान में कोई विशेष रुचि दिखाई नहीं पड़ती। कहीं-कहीं कतिपय सरल अलंकार प्रयोग दिखाई पड़ते हैं। अधिकतर उपमा, रूपक और दृष्टांत अलंकार प्रयुक्त हुए मिलते हैं। गुरु नानक वाणी की अपेक्षा गुरु अमरदास की वाणी में अलंकार बहुत कम हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि तीसरे गुरु की वाणी का स्वरूप न इतना सैद्धांतिक है और न ही विश्लेषणात्मक, इसमें तो भावों की निरन्तर धारा की प्रवाहमानता है। उन्होंने अपने विशाल जीवन अनुभव के प्रकाश में ही अपना उपदेश देना योग्य समझा है, किसी प्रकार की औपचारिक अभिव्यक्ति उनकी वाणी में नहीं मिलती। गुरु जी ने जिन अलंकारों का प्रयोग किया हैं, उनका उपमान-क्षेत्र साधारण जन-जीवन है। वस्तुत: गुरु जी का कार्य सामान्य मनुष्य को आध्यात्मिकता का बोध कराना था। यही कारण है उन्होंने उपमान चुनते समय सामान्य जीवन से नाता तोड़ा नहीं। कतिपय उपमा अलंकार के उदाहरण देखिए—

१) फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दिसै जमकालु।[1]

२) हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अमृंतु
जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ।[2]

३) माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ।[3]

उक्त पंक्तियों में 'जमकाल', 'बिरखु' (वृक्ष) और 'नागनी' (नागिन) सामान्य जीवन के उपमान है। गुरु अमरदास ने उपमा की अपेक्षा रूपकों का अधिक प्रयोग किया है। वस्तुत: सभी गुरु अद्वैतवादी साधक थे। इसलिए उपमा वाली द्वैत बुद्धि से हटकर उन्होंने अभेदता वाले रूपक अलंकारों को अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व दिया है। ऐसा करने से उनकी रहस्यानुभूति की मूर्त पदार्थों के द्वारा सुंदर और उचित अभिव्यक्ति हुई है। गुरु जी ने अपनी प्रेमा-भक्ति की गंभीरता एवं तल्लीनता को स्पष्टत: दर्शाने के लिए दाम्पतिक रूपकों को अधिक प्रयोग में लाया है। इस सम्बंध में पीछे प्रतीकों के प्रसंग में प्रकाश डाला गया है। दाम्पतिक रूपकों के अतिरिक्त गुरु जी ने सामान्य जीवन के अन्य क्षेत्रों से भी बहुत रूपक लिए हैं। इनके द्वारा उन की अनुभूति

---

1. आदि ग्रन्थ, पृ० १२७९ (मलार म० ३)
2. वही, पृ० ११४ (माझ म० ३)
3. वही, पृ० ५१० (गूजरी म० ३)

अधिक स्पष्ट हो पाई है । उदाहरणत:

१) इहु जग वाड़ी मेरा प्रभ माली ।
सदा सभाले को नहीं खाली ।
जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ।[1]

२) अंदरहु त्रिसनां अगनि बूझी हरि अंमृसरि नाता ।[2]

३) जग कऊआ मुखि चंच गिआनु ।[3]

४) सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ।[4]

५) इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ।[5]

सांसारिक प्रपंच में उलझने से जिज्ञासुओं को सचेत करने और माया के बंधनों से बचने के लिए गुरु अमरदास ने समानांतर स्थितियों का चित्रण कर उनके कुप्रभावों से जानकार किया है । इस चित्रण-विधि में दृष्टांत और उदाहरण अलंकारों का विशेष योगदान रहा है । यथा—

१) दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ।
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारोवार ।[6]

२) जो सतिगुरु ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ।
जिउ छुटड़ि परिघरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ।[7]

बिम्ब : गुरु अमरदास के जीवन के विशाल एवं सुदीर्घ अनुभव का परिचय उनके बिम्ब-विधान में देखा जा सकता है । ये बिम्ब-रूप, नाद, स्पर्श, रस और गंध-सभी इन्द्रियों के सम्बंधित है । इनमें अलंकार और रस बिम्ब भी हैं । इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक, पौराणिक और प्राकृतिक बिम्ब भी यथेष्ट मात्रा में मिल जाते हैं, उदाहरणत:—

१) कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ।[8]

२) बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ।

---

1. आदि ग्रंथ, ११८ (माझ म० ३)
2. वही, पृ० पृ० ५१० (गूजरी म० ३)
3. वही, पृ० ८३२ (बिलावल म० ३)
4. वही, पृ० ६६४ (धनासरी म० ३)
5. वही, पृ० १०४८ (मारू म० ३)
6. वही, पृ० ८५ (सिरी म० ३)
7. वही, पृ० ६४५ (सोरठि वार म० ३)
8. वही, पृ० २८ (सिरी म० ३)

बिनु पिर देखे नींद पाइ पाइ ।[1]

३) बाजीगरि इक बाजी पाइ ।[2]

४) बिगसै कमलु किरणि परगासै परगट करि देखाइआ ।[3]

५) इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ।[4]

भाषा : गुरु अमरदास की वाणी में भले ही पुरानी हिन्दी सधुक्कड़ी का यथेष्ट अंश विद्यमान है, पर उन की भाषा का कलेवर मुलत: पंजाबी है। पुरानी हिन्दी का अंश भी बहुत क्लिष्ट नहीं, सामान्य जन-जीवन में समझे जा सकने वाला है। यह अंश पदों (अष्टपदियों तथा चौपदों) में अधिक है, परन्तु वारों में कम है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि जहाँ काव्यगत अथवा शैली-गत रूप हिन्दी परम्परा वाला है, वहाँ सधुक्कड़ी की बहुलता है और जहाँ पंजाबी काव्य-रूप 'वार' का प्रयोग हुआ है, वहाँ सधुक्कड़ी का अंश अधिकतर दब गया है। पंजाबीपन का स्वरूप केन्द्रीय पंजाबी से दूर तक समानता रखता है। इस भाषा को जन-साधारण की भाषा भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस में काव्य-भाषा वाले सभी गुण विद्यमान हैं। आध्यात्मिक प्रतिपाद्य होने के फलस्वरूप यह शब्दावली आवश्यक गांभीर्य लिए हुए है। यही कारण है कि कहीं-कहीं भाषा का बौद्धिक स्तर पर्याप्त ऊँचा हो गया है। इस भाषा का स्वरूप संयोगात्मक भी है। इसमें संस्कृत, अपभ्रंश की विभक्तियाँ तथा उकारांत और इकारांत प्रयोग विशेष रूप में मिल जाते हैं जिनका अधिकतर आधार कारकी प्रत्यय रहा है।

गुरु अमरदास की वाणी का शब्द-कोश बहुत समृद्ध है, परन्तु गुरु जी ने तत्सम शब्दों के प्रयोग में बहुत कम रुचि दिखाई है। संस्कृत के केवल उन्हीं शब्दों को तत्सम रूप में प्रयोग में लाया गया है जो जन-जीवन में तत्सम रूप में ही ग्रहण कर लिए गए थे, परन्तु अन्य शब्दों को तद्भव रूप में ही व्यवहार में लाया गया है। अरबी फ़ारसी के शब्द अधिकतर तद्भव रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं। विदेशी भाषाएँ होने के कारण इनसे बहुत कम शब्द लिए गए हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र से सम्बंधित होने के कारण शब्दावली का स्वरूप साधारण साहित्यिक भाषा से कुछ भिन्न एवं गंभीर है। प्राचीन धर्मों की पारिभाषिक

---

1. आदि ग्रंथ, पृ० १२६२ (मलार म० ३)
2. वही, पृ० १०६१ (मारू म० ३)
3. वही, पृ० १०६८ (मारू म० ३)
4. वही, पृ० १२६ (माझ म० ३)

शब्दावली भी यत्र-तत्र मिल जाती है। समूचे रूप में गुरु जी की बाणी बड़ी सशक्त और विषय-प्रतिपादन में सफल कही जा सकती है। इस में प्रेष्णीयता के साथ-साथ भाव तथा विचार अनुकूलता का गुण भी विद्यमान है।

. . . .

नोट : निम्नांकित पंक्तियाँ बाणी-पाठ में शामिल होने से रह गई हैं :

पृष्ठ 74—अंतिम पंक्ति के बाद—

'गुर परसादी मिलै हरि सोई'।

पृष्ठ 89—अंतिम दो पंक्तियों के बाद—

'निरभउ दाता सदा मनि होइ।
सची बाणी पाए भागि कोइ। १।

पृष्ठ 158—अंतिम पंक्ति से पहले वाली पंक्ति के आरम्भ में—

'जिन कंउ'

पृष्ठ 229—नौवें पद्य में प्रथम दो पंक्तियों के बाद—

'तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ
हुकमि मंनिऐ पाईए।

१ओ सतिगुर प्रसादि

सिरी रागु

चउपदे घरु १

हउ[1] सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ[2] ।
सतिगुरु मन कामना तीरथु[3] है जिसनो देह बुझाइ ।
मन चिंदिआ[4] वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ।
नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामै सहजि समाइ । १ ।
मन मेरे हरि रसु चाखु तिख[5] जाइ ।
जिनी गुरमुखि[6] चाखिआ सहजे रहे समाइ । १ । रहाउ[7] ।
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ।
अंतरि हरि रसु रवि रहिआ[8] चूका मनि अभिमानु ।
हिरदै कमलु प्रगासिआ[9] लागा सहजि धिआनु ।
मन निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि[10] मानु । २ ।
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ।
हउमै[11] ममता मारि कै हरि राखिआ उरधारि ।
हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ।
सेई सुखीए चहु जुगी[12] जिना नामु अखुटु[13] अपारु । ३ ।
गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ।
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ।
जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ।
नानक नदरी[14] पाईऐ सचु नामु गुणतासु[15] । ४ । १ ।

---

1) मैं 2) प्रेम पूर्वक 3) मन की कामनाओं को पूर्ण करने वाला तीर्थ (यहाँ नैमिषारण्य वन में स्थित तीर्थस्थान की ओर संकेत भी संभव है) 4) मन का इच्छित फल अभीष्ट फल, 5) तृषा, प्यास 6) गुरु के उपदेश का अनुसरण करने वाला साधक 7) टेक 8) रमा हुआ, व्याप्त, सिंचित 9) प्रकट हुआ है, विकसित है 10) प्रभु के दरबार में 11) अहंभाव, अहंकार, खुदी 12) चार युगों में 13) न समाप्त होने वाला 14) कृपा दृष्टि 15) गुणों का संग्रह, गुण-निधि

वहु भेख करि भरमाईऐ[1] मनि हिरदै कपटु कमाइ ।
हरि का महलु[2] न पावई मरि विसटा[3] माहि समाइ । १ ।
मन रे गृह ही माहि उदासु ।
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु[4] । १ । रहाउ ।
गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ।
हरि का नामु धिआईऐ सति संगति मेलि मिलाइ । २ ।
जे लख इसतरीआ भोग करहि नवखंड राजु कमाहि ।
बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि । ३ ।
हरि हारु[5] कंठि जिनी पहिरिआ गुरचरणी चितु लाइ ।
तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ[6] । ४ ।
जो प्रभ भावै सो थीऐ[7] अवरु न करणा जाइ ।
जनु नानक जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ । ५ । २ ।

जिस ही की सिरकार[8] है तिस ही का सभु कोइ ।
गुरमुखि[9] कार कमावणी सचु घटि[10] परगटु होइ ।
अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ।
सचि मिले से न बिछुड़हि[11] तिन निजघरि वासा होइ । १ ।
मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ।
सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ । १ । रहाउ ।
सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए[12] मिलाइ ।
दूजै[13] भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ।
सभ महि इकु वरतदा[14] एको रहिआ समाइ ।
जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ । २ ।
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी[15] वाद करहि बीचारु ।
मति बुधि भवी[16] न बुझही अंतरि लोभ विकारु ।
लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ।

---

1) भ्रमण करना 2) निवास-स्थान, दरबार; संयोग सुख 3) मल, पाखाना 4) गुरु के उपदेश द्वारा जिसे ज्ञान का प्रकाश हो जाए 5) हरि के नाम का हार 6) उन्हें तिल मात्र भी चाहना नहीं है 7) होता है 8) सरकार, राज्य 9) गुरु के उपदेश अनुरूप 10) शरीर रूपी घट में ही 11) बिछुड़ते नहीं, वियुक्त नहीं होते 12) स्वयं परमात्मा 13) द्वैत भाव 14) व्याप्त है 15) ज्योतिषी 16) उनकी बुद्धि और सूझ भ्रष्ट हो गई है

पूरबि लिखिग्रा[1] कमावणा कोइ न मेटणहारु । ३ ।
सतगुर की सेवा गाखड़ी[2] सिरु दीजै आपु[3] गवाइ ।
सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ[4] ।
पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ[5] ।
जिन कउ पूरबि लिखिग्रा तिन सतगुरु मिलिआ ग्राइ । ४ ।
मन भुखा भुखा[6] मत करहि मत तू करहि पुकार ।
लख चउरासीह जिनी सिरी[7] सभसै देइ ग्रधारु ।
निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा[8] सार ।
नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोखदुग्रारु । ५ । ३ ।

जिनी सुणि कै मंनिग्रा तिना निजघरि वासु ।
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइग्रा गुणतासु[9] ।
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ।
हिरदै जिन के हरि वसै तितु घटि है परगासु[10] । १ ।
मन मेरे हरि हरि निरमलु धिग्राइ ।
धुरि[11] मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि[12] रहे लिव लाइ । १ । रहाउ ।
हरि संतहु देखहु नदरि[13] करि निकटि वसै भरपूरि ।
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि[14] ।
जिन गुण तिन सद मनि वसै ग्रउगुणवंतिग्रा दूरि[15] ।
मनमुख[16] गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि । २ ।
जिन सबदि गुरु सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ।
अनदिनु भगती रतिआ[17] मनु तनु निरमलु होई ।
कूड़ा[18] रंगु कसुंम का बिनसि जाइ दुखु रोइ ।
जिसु ग्रंदरि नाम प्रगासु है ग्रोहु सदा सदा थिरु[19] होइ । ३ ।
इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरिनामु न चेतै लिव लाइ ।
पगि खिसिऐ रहणा नही ग्रागै ठउरु[20] न पाइ ।

---

1) प्रारब्ध कर्म, भाग्य 2) कठिन 3) अपनेपन की भावना 4) समस्त सेवा फलीभूत होती है 5) ग्रात्मा का परमात्मा में समाना 6) 'मैं भूखा हूं, मैं भूखा हूं 7) सर्जना की है 8) देख-भाल करता है 9) गुणों का संग्रह, गुण-निधि 10) प्रकाश, ज्ञान 11) प्रभु के द्वार से 12) गुरु के उपदेश अनुरूप 13) कृपा-दृष्टि 14) हजूर, अपने सामने 15) गुणहीनों से दूर बसता है 16) मन अनुसार चलने वाले नीच पुरुष 17) अनुरक्त 18) झूठा, नाशमान् 19) स्थिर 20) स्थान, ठिकाना

ओहु वेला हथि न आवई[1] अंति गइआ पछुताइ ।
जिसु नदरि[2] करे सो उबरै[3] हरि सेती लिव लाइ । ४ ।
देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ।
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ[4] ।
हरिगुण गावहि हरि नित पड़हि हरिगुण गाइ समाइ ।
नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ । ५ । ४ ।

जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ।
तिन के मुख सद उजले[5] तितु सचै दरबारि ।
ओइ अमृतु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि । १ ।
भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ[6] ।
हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ । १ । रहाउ ।
मनमुख नामु न जाणनी[7] विणु नावै पति जाइ ।
सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ[8] ।
विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ । २ ।
तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ[9] ।
कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ[10] ।
हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ[11] । ३ ।
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ[12] ।
ओइ अंदरहु बाहरउ निरमले सचे सचि समाइ ।
नानक आए से परवाणु हहि[13] जिन गुरमती हरि धिआइ । ४ । ५ ।

हरि भगता हरिधनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ।
हरिनामु सलाहनि[14] सदा सदा वखरु[15] हरिनामु अधारु ।
गुरि पूरै हरिनामु दृड़ाइआ हरि भगता अतुटु[16] भंडारु । १ ।
भाई रे इसु मन कउ समझाइ ।
ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ । १ । रहाउ ।

---

1) वह समय हाथ नहीं आएगा 2) कृपा-दृष्टि 3) उद्धृत किया हुआ 4) उन की सेवा सफल होगी 5) सदैव उज्ज्वल होंगे 6) प्रतिष्ठित होते हैं 7) नहीं जानते 8) द्वैत भाव में लीन हैं 9) भावना या इच्छा 10) उन की जननी धन्य है 11) इच्छा-पूर्वक 12) अपने मन से अपने-पन की भावना को नष्ट करते हैं 13) प्रमाणित हैं 14) सराहना करते हैं 15) वस्तु, सौदा 16)अक्षुण, न ख़त्म होने वाला

हरिभगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ।
पाखंडि भगति न होवई दुविधा बोलु खुआरु ।
सो जनु रलाइआ न रलै[1] जिसु अंतरि बिबेक बीचारु । २ ।
सो सेवकु हरि आखीऐ[2] जो हरि राखै उरि धारि ।
मनु तनु सउपे[3] आगै धरे हउमै विचहु मारि[4] ।
धनु गुरमुखि सो परवाणु[5] है जि कदे[6] न आवै हारि । ३ ।
करमि[7] मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ।
लख चउरासीह तरसदे[8] जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ।
नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरिनामि समाइ । ४ । ६ ।

सुख सागरु हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ।
अनदिनु[9] नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ।
अंदरु रचै[10] हरि सच सिउ रसना हरिगुण गाइ । १ ।
भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ[11] ।
गुर सरणाई सुखु लहहि[12] अनदिनु नामु धिआइ । १ । रहाउ ।
साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ।
गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अमृत नामि समाइ ।
गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ[13] अगिआनु अंधेरा जाइ । २ ।
मनमुख मैले मलु भरे हउमै तृसना विकारु ।
बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जंमहि होइ खुआरु ।
धातुरबाजी पलचि रहे[14] ना उरवारु न पारु[15] । ३ ।
गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ।
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ।
नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु । ४ । ७ ।

मनमुखु मोहि विआपिआ[16] वैरागु उदासी न होइ ।
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ[17] ।

---

1) वह व्यक्ति दूसरे में मिलाने से भी नहीं मिलते, विशिष्ट रहते हैं 2) कहला सकते हैं 3) समर्पित करते हैं 4) अपने अंतर से अहंभाव को खत्म करके 5) प्रमाणित है 6) कभी भी 7) कृपा-पूर्वक 8) लालायित 9) नित्य 10) अनुरक्त 11) द्वैत-भाव 12) प्राप्त होता है 13) प्रज्वलित किया है 14) नष्ट प्राय खेल में फंसे हुए हैं 15) न इस लोक के हैं, न उस लोक के 16) व्याप्त है 17) प्रतिष्ठा खो बैठते है

हउमै गुरमुखि खोईऐ[1] नामि रते[2] सुखु होइ । १ ।
मेरे मन अहिनिसि[3] पूरि रही नित आसा ।
सतगुरु सेवि मोहु परजलै[4] घर ही माहि उदासा । १ । रहाउ ।
गुरमुखि करम कमावै बिगसै[5] हरि वैरागु अनंदु ।
अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु[6] ।
वडै भागि[7] सतिसंगति पाई हरि पाइआ सहिज अनंदु । २ ।
सो साधू वैरागी सोई हिरदे नामु वसाए[8] ।
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु[9] आपु गवाए ।
नामु निधानु सतगुरु दिखालिआ हरिरसु पीआ अघाए । ३ ।
जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ।
मनमुख[10] फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि[11] ।
नानक सबदि रते[12] हरिनामि रंगाए बिनु भै केही लागि । ४ । ८ ।

घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु[13] होइ ।
खिनु खिनु नामु समालिऐ[14] गुरमुखि पावै कोइ ।
नामु निधानु अखुटु[15] है वडभागि[16] परापति होइ । १ ।
मेरे मनि तजि निंदा हउमै अहंकारु ।
हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु । १ । रहाउ ।
गुरमुखा के मुख उजले गुरसबदी बीचारि ।
हलति पलति[17] सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ।
घर ही विचि महलु[18] पाइआ गुरसबदी वीचारि । २ ।
सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले[19] ।
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जमजाले ।
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले । ३ ।
सभना का दाता एकु है आपे बखस[20] करेइ ।
कहणा किछू न जावई[21] जिस भावै तिस देइ ।

1) गुरु के उपदेश से अहंभाव का नाश होता है 2) अनुरक्त 3) रात दिन 4) मोह जल जाता है 5) विकसित होता है 6) अहं-भाव को मार कर निश्चित हो जाता है 7) बड़े भाग्य के कारण 8) बसाता है 9) अंतर से 10) मन के अनुसार चलने वाला दुष्ट पुरुष 11) उनके अंदर अहंभाव की लाग लगी हुई है 12) अनुरक्त 13) वस्तु 14) स्मरण किया जाए 15) अक्षुण, न खत्म होने वाला 16) बड़े भाग्य के फलस्वरूप 17) लोक परलोक में 18) अपने ही हृदय में महाधाम की प्राप्ति हो जाती है 19) उनके मस्तक काले हैं 20) कृपा 21) कुछ भी कहा नहीं जा सकता

नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ[1] ।४।९।

सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई[2] देइ ।
गुर परसादी मनि वसै हउमै[3] दूरि करेइ ।
इहु मनु धावतु[4] ता रहै जा आपे नदरि करेइ ।१।
भाई रे गुरमुखि हरिनामु धिआइ ।
नामु निधानु सद मनि वसै महली[5] पावै थाउ[6] ।१। रहाउ ।
मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ[7] ।
बहु जोनी भउदा[8] फिरै जिउ सुंञै घरि काउ[9] ।
गुरमति घटि चानणा[10] सबदि मिलै हरिनाउ ।२।
त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ।
लोभी अन[11] कउ सेवदे पड़ि वेदा करहि पुकार ।
बिखिआ अंदरि पचि मुए[12] ना उरवारु न पारु ।३।
माइआ मोहि विसारिआ[13] जगत पिता प्रतिपालि ।
बाझहु गुरु अचेतु है सभ बधी जमकालि ।
नानक गुरमति उबरे सचा नाम समालि[14] ।४।१०।

त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ।
करि किरपा मेलाइअनु हरिनामु वसिआ[15] मनि आइ ।
पोतै जिन के पुंनु है[16] तिन सतसंगति मेलाइ ।१।
भाई रे गुरमति साचि रहाउ ।
साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ।१। रहाउ ।
जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ[17] ।
आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ।
लाहा[18] हरि हरि नामु मिलै सहजै नामि समाइ ।२।
बिनु गुर महलु[19] न पाईऐ नामु न परापति होइ ।
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु[20] जिदू[21] पाईऐ सचु सोइ ।

---

1) वह प्रभु ही जानता है 2) प्रतिष्ठा 3) अहंभाव 4) परमधाम 5) इधर उधर भागने से 6) स्थान 7) कोई ठिकाना नहीं है 8) भ्रमित 9) जैसे शून्य घर में कौआ होता है 10) प्रकाश 11) दूसरे को 12) खप खप कर मरते हैं 13) भुला दिया है 14) स्मरण कर 15) बस गया 16) जिन के भाग्य में पुण्य है 17) उन पर न्योछावर होता हूं 18) लाभ 19) परमधाम 20) ढूंढ ले 21) जिस से

असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ । ३ ।
जेहा सतिगुरु करि जाणिआ[1] तेहो जेहा सुखु होइ ।
एहु सहसा मूले नाही[2] भाउ[3] लाए जनु कोइ ।
नानक एक जोति दुइ[4] मूरती सबदि मिलावा होइ । ४ । ११ ।

अंमृतु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी[5] ।
आपणा धरम गवावहि बूझहि नाहीं[6] अनदिनु दुखि विहाणी ।
मनमुख अंधु न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी । १ ।
मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ।
गुर का शबद अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई[7] । १ । रहाउ ।
इहु[8] सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई[9] ।
आवणु जाणा[10] जंमणु मरणा मनमुखि पति[11] गवाई ।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई[12] । २ ।
सतगुर की सेवा अति सुखाली[13] जो इछे सो फलु पाए ।
जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए[14] ।
सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए । ३ ।
जो सतगुर की सरणागति हउ तिन कै बलि जाउ[15] ।
दरि सचै सची वडिआई[16] सहजे सचि समाउ ।
नानक नदरी[17] पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ । ४ । १२ ।

मनमुख करम कमावणे[18] जिउ दोहागणि तनि सीगारु ।
सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ।
पिर का महलु[19] न पावई ना दीसै घरु बारु । १ ।
भाई रे इक मनि नामु धिआइ ।
संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ।
मिठा बोलहि निवि चलहि[20] सेजै रवै[21] भतारु ।

---

1) जैसी सद्गुरु के प्रति निष्ठा है 2) इस में कोई संदेह नहीं 3) प्रेम 4) दो 5) बेगानी, अन्य की 6) वास्तविकता को समझता नहीं 7) भुलाया नहीं जा सकता 8) यह 9) अहंभाव ने (इस) में नीच भावना भरी हुई है 10) आना जाना 11) प्रतिष्ठा 12) आत्मा-परमात्मा का मिलाप हो जाता है 13) सुखदायक 14) मन में बसाने से 15) न्योछावर होता हूं 16) बड़ाई, प्रतिष्ठा 17) कृपा-दृष्टि 18) कर्म करना 19) परम-धाम 20) मधुर बोले और नम्रभाव से चले 21) रमण करे

सोभावंती[1] सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु[2] । २ ।
पूरै भागि सतिगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ[3] ।
अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ।
गुर कै भाणै[4] जो चलै दुखु न पावै कोइ । ३ ।
गुर के भाणे विचि[5] अमृतु है सहजे पावै कोइ ।
जिना परापति तिन पीआं हउमै विचहु खोइ[6] ।
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ । ४ । १३ ।

जा पिरु जाणै आपणा[7] तनु मनु अगै धरेइ[8] ।
सोहागणी करम कमावदीआ[9] सेई करम करेइ ।
सहजे साच मिलावड़ा[10] साचु वडाई देइ । १ ।
भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ।
बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै[11] सभु कोइ । १ । रहाउ ।
लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ[12] ।
बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ[13] ।
बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा[14] जनमु गवाइ । २ ।
हउ हउ करती जगु फिरी न धनु संपै नालि[15] ।
अंधी[16] नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ।
सतगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरिनामा रिदै समालि[17] । ३ ।
नामि रते[18] से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ[19] ।
मनु तनु राता रंग सिउ[20] रसना रसन रसाइ[21] ।
नानक रंग न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ[22] । ४ । १४ ।

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ।
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमल होवै सोई ।
हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई । १ ।
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ।

---

1) शोभा-युक्त, शोभिनी 2) अत्यधिक प्रेम 3) जब भाग्य उदय होता है 4) इच्छानुसार, भावना में 5) भावना में, इच्छा में 6) अंतर से अहं भाव का त्याग करके 7) अपना 8) आगे रख दे 9) कर्म करती हैं 10) मिलन, संयोग 11) इच्छा करे, चाहे 12) द्वैत-भाव के फलस्वरूप 13) व्यतीत होती है 14) व्यर्थ 15) धन-सम्पत्ति साथ न गई 16) अज्ञानी व्यक्ति 17) स्मरण करो 18) अनुरक्त 19) सहज-भाव से 20) परमात्मा के प्रेम में अनुरक्त है 21) जिह्वा हरि-रस का स्वादन प्राप्त करने वाली हो गई है 22) जो हरि ने परमधाम से लगा दिया है

पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा[1] जनमु गवाइआ । १ । रहाउ ।
आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए[2] ।
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए[3] ।
गुरमुखि आपे देइ बडाई[4] आपे सेव कराए । २ ।
देखि कुटंब मोहि लोभाणा[5] चलदिआ नालि न जाई[6] ।
सतगुरु सेवि गुणनिधानु[7] पाइआ तिस दी कीम[8] न पाई ।
हरिप्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई । ३ ।
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु[9] न जाई ।
हरि जीउ दाता भगतिवछलु है करि किरपा मंनि वसाई ।
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई[10] । ४ । १५ ।

धनु जननी जिनि जाइआ[11] धंनु पिता परधानु ।
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु[12] गइआ गुमानु ।
दरि सेवनि संतजन खड़े पाइनि[13] गुणी निधानु । १ ।
मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ ।
गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ । १ । रहाउ ।
करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ।
गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ[14] ।
सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ । २ ।
जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ।
चिरी विछुंने[15] मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ[16] ।
आपे कार कराइसी[17] अवरु न करणा जाइ । ३ ।
मनु तनु रता[18] रंग सिउ हउमै[19] तजि विकार ।
अहिनिसि हिरदै रवि रहै[20] निरभउ नामु निरंकार ।
नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार । ४ । १६ ।

गोबिदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ।

---

1) व्यर्थ 2) कृपा-पूर्वक मिला लेगा 3) कह और सुना सकते हैं 4) बड़ाई, प्रतिष्ठा 5) लुब्ध हो गया 6) कुटुंब आदि अंत काल में साथ नहीं चलते 7) परमात्मा 8) का मूल्य 9) अपनेपन की भावना, अहंभाव 10) बड़ाई, प्रतिष्ठा 11) जन्म दिया 12) अंतर से 13) प्राप्त करते हैं 14) सहज भाव से अनुरक्त होकर 15) वियुक्त, बिछड़े हुए 16) अपने खाते में डाल लिए हैं 17) कराएगा 18) अनुरक्त 19) अहंभाव 20) रमण करता रहता है

कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ[1] ।
सतगुरि मिलिए सद भै रचै[2] आपि बसै मनि आइ । १ ।
भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ।
बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ । १ । रहाउ ।
जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ।
अमृतु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ।
पीवत हू परवाणु भइआ[3] पूरै सबदि समाइ । २ ।
आपे देइ त पाईऐ होरु[4] करणा किछू न जाइ ।
देवणवाले कै हथि दाति है गुरु दुआरै आइ ।
जेहा कीतोनु[5] तेहा होआ जेहे करम कमाइ । ३ ।
जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ।
पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ।
नानक सहजे ही रंगि वरतदा[6] हरिगुण पावै सोइ । ४ । १७ ।

कांइआ साधै उरध तप करै विचहु हउमै न जाइ[7] ।
अधिआतम करम जे करे नामु न कबही पाइ ।
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरिनामु वसै मनि आइ । १ ।
सुणि मनु मेरे भजु सतगुर सरणा[8] ।
गुरपरसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा । १ । रहाउ ।
त्रै गुण सभा धातु[9] है दूजा भाउ[10] विकारु ।
पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ।
सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु । २ ।
गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ।
सबदि मरै ता उधरै पाए मोखदुआरु ।
गुरपरसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु । ३ ।
इहु मनूआ अति सबल है छडे[11] न कितै उपाइ ।

---

1) अहं-भाव के जाने पर 2) लीन रहे 3) प्रामाणिक हो गया 4) अन्य 5) जैसा कर्म किया है 6) प्रेम में मगन रहता है 7) अंतर से अहं-भाव नहीं जाता 8) सद्गुरु की शरण में भाग कर जाओ 9) नष्ट होने वाले 10) द्वैत-भाव 11) छोड़ता नहीं

दूजै भाइ[1] दुखु लाइदा बहुती[2] देइ सजाइ ।
नानक नामि लगे से उबरे हउमै[3] सबदि गवाइ । ४ । १८ ।

किरपा करे गुरु पाईऐ हरिनामो देइ दृड़ाइ ।
बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ।
मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ । १ ।
मन रे दूजा भाउ चुकाइ[4] ।
अंतरि तेरे हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ । १ । रहाउ ।
सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ।
हरि का नामु मनि वसै हउमै[5] क्रोधु निवारि ।
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोखदुआरु । २ ।
हउमै विचि जगु बिनसदा[6] मरि जंमै आवै जाइ ।
मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति[7] गवाइ ।
गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ । ३ ।
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ[8] ।
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ।
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ । ४ । १९ ।

जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ।
घरि होदा[9] पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ।
सतगुरु किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ।
सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु । १ ।
मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि[10] ।
जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि । १ । रहाउ ।
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ।
सची कार कमावणी सचे नालि[11] पिआरु ।
सचा साहु वरतदा[12] कोइ न मेटणहारु[13] ।

---

1) द्वैत-भाव 2) बहुत, अधिक 3) अहं-भाव 4) द्वैत-भाव का नाश कर दे 5) अहंभाव 6) अहंकार के कारण ही जगत् का विनाश होता है 7) प्रतिष्ठा 8) अंतर से अपनेपन की भावना का नाश 9) घर में होता हुआ 10) अपने पास ही देखो 11) साथ, से 12) सच्चे स्वामी परमात्मा का आदेश ही सर्वत्र व्याप्त है 13) मिटाने वाला

मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर[1] । २ ।
हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ।
माइआ मोहि विसारिआ[2] सुखदाता दातारु ।
सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उरधारि ।
किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि । ३ ।
सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै[3] तजि विकार ।
आपु छोडि[4] जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ।
धंधा धावत रहि गए[5] लागा साचि पिआरु ।
सचि रते[6] मुख उजले तितु साचै दरबारि । ४ ।
सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ।
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु[7] ।
हरि जीउ आपणी कृपा करे ता लागै नाम पिआरु ।
नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि । ५ । २० ।

किसु हउ सेवि किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ।
सतगुर का भाणा[8] मंनि लई विचहु आपु गवाइ[9] ।
एहा[10] सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ।
नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ[11] । १ ।
मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ।
आपणी खेती राखि लै कूंज[12] पड़ैगी खेति । १ । रहाउ ।
मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपुरि ।
भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि[13] ।
सचै सबदि सदा मनु राता[14] भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ।
निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणीगहीरु[15] । २ ।
जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ[16] ।
सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाई[17] ।

---

1) मन के अनुसार कार्य करने वाले व्यक्ति परमधाम को प्राप्त नहीं कर पाते, वे झूठे झूठ के द्वारा ठगे हुए हैं 2) भुला दिया है 3) अहंभाव 4) अपनेपन का त्याग करके 5) सांसारिक वासनाओं की भाग दौड़ समाप्त हो गई 6) अनुरक्त 7) द्वैत-भाव के फलस्वरूप ख्वार होना है 8) भावना, इच्छा 9) अंतर से अपनेपन की भावना का विनाश करके 10) यही 11) सुशोभित 12) मृत्यु-रूपी क्रौंच पक्षी 13) सदैव अपने सामने देखे 14) अनुरक्त 15) गुणों के फलस्वरूप गंभीर परमात्मा 16) लुट गए 17) व्यतीत हो गया

सुञ्ञे घर का पाहुणा[1] जिउ आइआ तिउ जाइ ।
मनमुख[2] जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ[3] । ३ ।
सभु किछु आपे आपि है हउमै विचि[4] कहनु न जाइ ।
गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ[5] ।
सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ।
नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ । ४ । २१ ।

जे वेला वखतु[6] वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ।
अनदिनु नामे रतिआ[7] सचे सची सोइ ।
इकु तिलु पिआरा विसरै[8] भगति किनेही होइ ।
मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा[9] कोइ । १ ।
मेरे मन हरि का नामु धिआइ ।
साची भगति ता थीऐ[10] जा हरि वसै[11] मनि आइ । १ । रहाउ ।
सहजे खेती राहीऐ[12] सचु नामु बीजु पाइ ।
खेती जंमी अगली[13] मनूआ रजा सहजि सुभाइ ।
गुर का सबदु अंमृतु है जितु पीतै तिख जाइ ।
इहु[14] मनु साचा सचि रता[15] सचे रहिआ समाइ । २ ।
आखणु वेखणु[16] बोलणा सबदे रहिआ समाइ ।
बाणी वजी[17] चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ।
हउमै मेरा रहि गइआ[18] सचै लइआ मिलाइ ।
तिन कउ महलु हदूरि[19] है जो सचि रहे लिव लाइ । ३ ।
नदरी[20] नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ।
पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ।
अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु[21] जाइ ।
नानक सबदि मिलावड़ा[22] नामे नामि समाइ । ४ । २२ ।

---

1) शून्य घर का अतिथि 2) मन के अनुसार चलने वाला 3) क्या मुंह दिखाएगा 4) अहंभाव में 5) अहंभाव का दुख अन्तर से चला जाता है 6) समय 7) अनुरक्त 8) भूल जाए 9) व्यर्थ 10) तब होगी 11) बस जाए 12) बीजी जाए 13) पर्याप्त खेती उत्पन्न हुई 14) यह 15) अनु-रक्त 16) कहना और देखना 17) वाणी का एकमात्र बोलबाला हो गया 18) अहंभाव और मेरेपन की भावना खत्म हो गई 19) परमधाम सामने है 20) कृपा-दृष्टि 21) अंतर से 22) संयोग संभव है

आपणा भउ तिन पाइओनु[1] जिन गुर का सबदु बीचारि ।
सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ।
दुविधा मैलु चुकाईअनु[2] हरि राखिआ उरधारि ।
सची बाणी सचु मनि सचे नालि[3] पिआरु । १ ।
मन मेरे हउमै मैलु भर नालि[4] ।
हरि निरमलु सदा सोहणा[5] सबदि सवारणहारु[6] । १ । रहाउ ।
सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ।
अनदिनु नामे रतिआ[7] जोती जोति समाइ[8] ।
जोती हू प्रभु जापदा[9] बिनु सतगुर बूझ न पाइ ।
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ । २ ।
विणु नावै सभ डुमणी[10] दूजै भाइ खुआइ[11] ।
तिसु बिनु घड़ी न जीवदी[12] दुखी रैणि विहाइ ।
भरमि भुलाणा[13] अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ।
नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ । ३ ।
सभु किछु सुणदा वेखदा[14] किउ मुकरि पइआ जाइ[15] ।
पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ।
सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि[16] बूझि न पाइ[17] ।
जिसु वेखाले सोई वेखै[18] नानक गुरमुखि पाइ । ४ । २३ ।

बिनु गुर रोगु न तुटई[19] हउमै[20] पीड़ न जाइ ।
गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ।
गुरसबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ । १ ।
मन रे निजघरि वासा होइ ।
रामनामु सालाहि तू फिरि आवणजाणु न होइ । १ । रहाउ ।
हरि इको दाता वरतदा[21] दूजा अवरु न कोइ ।
सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ।

1) परमात्मा स्वयं उनके मन में अपने भय का भाव उत्पन्न करता है 2) द्वैत-भाव के मैल को नष्ट कर देते हैं 3) से, साथ 4) अहं-भाव के मैल से लिप्त है 5) सुन्दर 6) संवारने वाला 7) अनुरक्त होने से 8) आत्मा परमात्मा में समाहित हो जाती है 9) प्रतीत होता है 10) द्वैत-भाव वाली 11) द्वैत-भाव के कारण नष्ट हो रही है 12) जीवित रहना 13) भूला हुआ 14) देखता है 15) इनकार कैसे किया जा सकता है 16) दुष्ट पुरुष 17) समझ नहीं पाता 18) जिसको दिखाता है, वही देख पाता है 19) समाप्त नहीं होता 20) अहंभाव 21) व्याप्त है

सभ नदरी[1] अंदरि वेखदा[2] जै भावै तै देइ । २ ।
हउमै सभा गणत[3] है गणतै[4] नउ सुखु नाहि ।
बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ।
बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि । ३ ।
जीउ पिंडु सभु तिस दा[5] तिसै दा आधारु ।
गुर परसादी[6] बुझीऐ ता पाए मोखदुआरु ।
नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु । ४ । २४ ।

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ।
गुरसबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ।
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ।
किरपा करि कै आपणी दितोनु[7] भगति भंडारु । १ ।
मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ।
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ । १ । रहाउ ।
सची भगती मनु लालु थीआ[8] रता[9] सहजि सुभाइ ।
गुरसबदी मनु मोहिआ कहणा कछु न जाइ ।
जिहवा रती[10] सबदि सचै अंमृतु पीयै रसि गुण गाइ ।
गुरमुखि[11] एहु रंगु पाईऐ जिसनो किरपा करे रजाइ[12] । २ ।
संसा[13] इहु[14] संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ[15] ।
इकि आपणै भाणै कढि लइअनु[16] आपे लइओनु मिलाइ ।
आपे ही आपि मनि वसिआ[17] माइआ मोहु चुकाइ ।
आपि वडाई दितीअनु[18] गुरमुखि देइ बुझाइ । ३ ।
सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ।
इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ[19] ।
गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ[20] ।
अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ । ४ । २५ ।

---

1) दृष्टि 2) देखता है 3) अहं-भाव के फलस्वरूप सभी चिंता है 4) चिंतित व्यक्ति को 5) जीव और शरीर सब उसी का है 6) गुरु की कृपा द्वारा 7) प्रदान कर दिए हैं 8) हुआ है 9) अनुरक्त 10) लीन, अनुरक्त 11) गुरु के उपदेश के अनुरूप चलने वाले 12) रज़ा, इच्छा 13) संशय, संदेह 14) यह 15) सोये हुए जीवन रूपी रात्री व्यतीत हो जाती है 16) एक ऐसे हैं जिनको अपनी इच्छा से निकाल लेता है 17) बसा हुआ है 18) आप बड़ाई देता है 19) एक ऐसे हैं जिन को उस ने आप द्वैत-भाव में लगा कर नष्ट कर दिया है 20) आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाता है

गुणवंती[1] सचु पाइआ तृसना तजि विकार ।
गुरसबदी मनु रंगिआ[2] रसना प्रेमपिआरि ।
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु[3] मनि वीचारु ।
मनमुख[4] मैलु न उतरै जिचरु गुरसबदि न करे पिआरु । १ ।
मन मेरे सतिगुर कै भाणै[5] चलु ।
निजघरि वसहि अंमृतु पीवहि ता सुख लहहि महलु[6] । १ । रहाउ ।
अउगुणवंती[7] गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि[8] ।
मनमुखि सबदु न जाणई[9] अवगणि सो प्रभु दूरि ।
जिनी सचु पछाणिआ सचु रते[10] भरपूरि ।
गुरसबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि[11] । २ ।
आपे रंगणि रंगिओनु[12] सबदे लइओनु मिलाइ[13] ।
सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ।
चारे कुंडा भवि थके[14] मनमुख बूझ न पाइ ।
जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ । ३ ।
मित्र घणेरे[15] करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ।
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ।
सचु खटणा[16] सचु रासि है सचे सची सोइ ।
सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ । ४ । २६ ।

आपे कारणु करता करे सृसटि देखै आपि उपाइ ।
सभ एको इकु वरतदा[17] अलखु न लखिआ जाइ ।
आपे प्रभु दइआलु है आपे देइ बुझाइ ।
गुरमती सद मनि वसिआ[18] सचि रहे लिव लाइ । १ ।
मन मेरे गुर की मनि लै रजाइ[19] ।
मनु तनु सीतलु सभु थीऐ[20] नामु वसै मनि आइ । १ । रहाउ ।
जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ।

---

1) गुणवान साधकों ने 2) अनुरक्त हो गया है 3) देख लो 4) मन के अनुसार कार्य करने वाला 5) भावना, इच्छा 6) परमधाम 7) गुणों से वंचित 8) परमात्मा के पास बैठना नहीं मिलता 9) नहीं जानते 10) अनुरक्त 11) अपने पास ही 12) प्रेम में अनुरक्त हो गए 13) मिला लिए जाते हैं 14) चारों दिशाएँ घूम चुका हूं 15) बहुत अधिक 16) कमाना 17) व्याप्त 18) बसा हुआ है 19) रज़ा, इच्छा 20) हो जाए

गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपेद नदरि[1] करेइ ।
से जन सबदे सोहणे[2] तितु सचै दरबारि ।
गुरमुखि सचै सबदि रते[3] आपि मेले करतारि । २ ।
गुरमती सचु सलाहणा जिस दा[4] अंतु न पारावारु ।
घटि घटि आपे हुकमि वसै[5] हुकमे करे बीचारु ।
गुरसबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ[6] ।
साधन[7] नावै बाहरी अवगणवंती रोइ । ३ ।
सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ[8] तृपति होइ ।
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ[9] ।
आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा[10] न होइ ।
नानक गुरु सालाही आपणा जिदू[11] पाई प्रभु सोइ । ४ । २७ ।

सुणि सुणि काम गहेलीए[12] किआ चलहि बाह लुडाइ[13] ।
आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ[14] ।
जिनी सखी कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ।
तिन ही जैसी थी रहा[15] सतसंगति मेलि मिलाइ । १ ।
मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि[16] । पिरु प्रभु साचा सोहणा[17] पाईऐ गुर बीचारि । १ ।
मनमुखि[18] कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ । रहाउ ।
गरबि अटीआ[19] तृसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ[20] ।
सबदि रतिआ[21] सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ[22] ।
सदा पिरु रावहि[23] आपणा तिना सुखु सुखि विहाइ । २ ।
गिआन विहूणी[24] पिर मुतीआ[25] पिरमु न पाइआ जाइ ।
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ।
आवहु मिलहु सहेलीहो[26] मै पिरु देहु मिलाइ ।
पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ । ३ ।
से सहीआ[27] सोहागणी जिन कउ नदरि[28] करेइ ।

1) कृपा-दृष्टि 2) सुन्दर, शोभायमान 3) अनुरक्त 4) जिसका 5) अपने हुकम से ही प्रत्येक शरीर में बसता है 6) अंतर से अहंभाव को नष्ट कर देता है 7) साधक रूपी स्त्री 8) नाम 9) अवगुणों को धोकर बाहर निकालती हूं 10) वियोग 11) जिस के द्वारा 12) काम में लीन स्त्री (व्यक्ति) 13) निश्चित होकर चलती है 14) जाकर क्या मुंह दिखाऊंगी 15) हो जाऊं 16) मुग्ध स्त्री, तू झूठ से लुटी हुई झूठी है 17) सुंदर 18) दुष्ट व्यक्ति 19) अहंकार से पूर्ण हैं 20) द्वैत-भाव 21) अनुरक्त 22) अंतर से अहंभाव चला जाता है 23) रमण करती है 24) वंचित 25) परित्यक्त 26) सखियो 27) सखियां 28) कृपा-दृष्टि

खसमु[1] पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ।
घरि वरु पाइआ आपणा हउमै[2] दूरि करेइ ।
नानक सोभावंतीआ[3] सोहागणी अनदिनु भगति करेइ । ४ । २८ ।

इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ।
सतिगुरु सेवि भाउ[4] करि मै पिरु देहु मिलाइ ।
सभु उपाए आपे वेखै[5] किसु नेड़ै[6] किसु दूरि ।
जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे[7] सदा हदूरि[8] । १ ।
मुंधे[9] तू चलु गुर कै भाइ ।
अनदिनु रावहि[10] पिरु आपणा सहजे सचि समाइ । १ । रहाउ ।
सबदि रतीआ[11] सोहागणी सचै सबदि सीगारि ।
हरिवरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ।
सेज सुहावी हरि रंगि[12] रवै भगति भरे भंडार ।
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु । २ ।
पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ।
मनु तनु अरपी सिरु देई तिनकै लागा पाइ ।
जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ[13] ।
गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ । ३ । २९ ।

हरि जी सचा सचु तू सभ किछु तेरै चीरै[14] ।
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ।
हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ।
गुर परसादी[15] सेव करी सचु गहिर गंभीर । १ ।
मन मेरे नामि रते[16] सुखु होइ ।
गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा[17] अवरु न कोइ । १ । रहाउ ।
धरमराइ नो हुकमु[18] है बहि[19] सचा धरमु बीचारि ।
दूजै भाइ[20] दुसटु आतमा ओहु[21] तेरी सरकार ।

1) पति परमात्मा 2) अहं-भाव 3) शोभाशाली 4) प्रेम 5) देखता है 6) समीप 7) रमण करे 8) पास में 9) मुग्ध स्त्री 10) रमण करो 11) अनुरक्त 12) प्रेम रंग 13) द्वैत-भाव को समाप्त कर दिया 14) पास है 15) गुरु की कृपा से 16) अनुरक्त 17) दूसरा 18) आदेश 19) बैठ कर 20) द्वैत-भाव 21) उन पर भी (तुम्हारा राज्य है)

अधिआतमी हरि गुणतासु[1] मनि जपहि एकु मुरारि ।
तिनकी सेवा धरमराइ करै धंनु सवारणहारु[2] । २ ।
मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ।
आतमारामु पछाणिआ[3] सहजे नामि समानु[4] ।
बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु[5] ।
सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु । ३ ।
सभु किछु आपे आपि है दूजा[6] अवरु न कोइ ।
जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ।
गुरमुखि बाणी ब्रहमु है[7] सबदि मिलावा होइ ।
नानक नामु समालि[8] तू जितु सेवीऐ सुख होइ । ४ । ३० ।

जगि हउमै[9] मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ[10] ।
मलु हउमै धोती किवै[11] न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ।
बहुबिधि करम कमावदे दूणी[12] मलु लागी आइ ।
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ । १ ।
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ।
मनमुख[13] हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ । १ । रहाउ ।
मनि मैले भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ।
मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ[14] ।
गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ[15] ।
जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ[16] तिउ गुरगिआनि अगिआनु तजाइ । २ ।
हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ।
करणैवाला विसरिआ[17] दूजै भाइ[18] पिआरु ।
माइआ जेवडु[19] दुखु नही सभि भवि थके संसारु ।
गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उरधारि । ३ ।
जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ।
ए मन भगती रतिआ[20] सचु बाणी निजथाउ[21] ।

---

1) गुणनिधि 2) धन्य है संवारने वाला परमात्मा 3) पहचान लिया 4) सहज भाव से नाम में समाहित हो गए 5) दुष्ट पुरुष पागल होकर फिर रहे हैं 6) दूसरा 7) गुरमुख की वाणी में ब्रह्म बसता है 8) स्मरण कर 9) अहंभाव 10) द्वैत-भाव 11) किसी प्रकार भी 12) दुगनी 13) दुष्ट मनुष्य 14) अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करके जाएंगे 15) अहंभाव का मैल दूर हो जाता है 16) जलाया जाए 17) भूल गया 18) द्वैत-भाव 19) जितना बड़ा 20) अनुरक्त 21) अपना वास्तविक ठिकाना

मनि रते[1] जिह्वा रती हरिगुण सचे गाउ ।
नानक नामु न वीसरै[2] सचे माहि समाउ । ४ । ३१ । (आदि ग्रंथ, पृष्ठ २६-३९)

सिरी रागु घरु १

असटपदीआ

गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ।
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ।
हरि जिउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ । १ ।
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ।
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा[3] जनमु गवाइआ । १ । रहाउ ।
आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि[4] मिलाए ।
जीअ जंत ए किआ वेचारे[5] किआ को आखि सुणाए[6] ।
गुरमुखि आपे दे वडिआई[7] आपे सेव कराए । २ ।
देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाइ[8] ।
सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम[9] न पाई ।
प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई[10] । ३ ।
पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई[11] ।
बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ।
हरिसुखदाता मनि नही वसिआ[12] अंति गइआ पछुताई । ४ ।
पेईअड़ै[13] जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ।
अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै[14] मोहु चुकाइआ ।
जिसु सिउ राता[15] तैसो होवै सचे सचि समाइआ । ५ ।
आपे नदरि[16] करे भाउ लाए गुरसबदी बीचारि ।
सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै तृसना मारि ।

---

1) प्रेम में लीन 2) भूलना नहीं चाहिए 3) व्यर्थ 4) कृपा-पूर्वक 5) बिचारे 6) क्या कह कर सुनाया जाए 7) बड़ाई, प्रतिष्ठा 8) अंत काल में चलते समय साथ नहीं चलेगा 9) कीमत, मूल्य 10) सहायक 11) मायके घर में ही जगत् को जीवन प्रदान करने वाला निवास करता है, परन्तु दुष्ट व्यक्ति ने यह तथ्य जान कर अपनी प्रतिष्ठा नष्ट कर ली है 12) नहीं बसा है 13) मायके घर में 14) अहंभाव 15) अनुरक्त हुआ है 16) कृपा-दृष्टि

हरि गुणदाता सद[1] मनि वसै सचु रखिग्रा उरधारि । ६ ।
प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइग्रा जाइ ।
नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै[2] दुखु सभु जाइ ।
सतिगुरि सबदु सुणाइआ[3] हउ सद बलिहारै जाउ । ७ ।
ग्रापणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ।
हरि जीउ भगति वछलु[4] सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ।
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिग्राई[5] । ८ । १ ।
हउमै[6] करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ।
जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ । १ ।
मन रे गुरमुखि नामु धिग्राइ ।
धुरि पूरबि करतै लिखिग्रा[7] तिना गुरमति नामि समाइ । १ । रहाउ ।
विणु सतिगुर परतीति न ग्रावई नामि न लागो भाउ ।
सुपनै सुखु न पावई दुख मंहि सवै समाइ[8] । २ ।
जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिग्रा जाइ[9] ।
हरि का भाणा[10] भगती मंनिग्रा से भगत पए दरि थाइ । ३ ।
गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ[11] बिनु किरपा लइआ न जाइ ।
जे सउ ग्रंमृतु नीरीऐ[12] भी बिखु फलु लागै धाइ । ४ ।
से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि[13] पिआरु ।
सतिगुर का भाणा कमावदे[14] बिखु हउमै[15] तजि विकारु । ५ ।
मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिमृति सासत्र सोधहु जाइ ।
मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ । ६ ।
हरि का नामु निधानु है जिसु ग्रंतु न पारावारु ।
गुरमुखि सेई सोहदे[16] जिन किरपा करे करतारु । ७ ।
नानक दाता एकु है दूजा[17] ग्रउरु न कोइ ।
गुरपरसादी पाईऐ करमि परापति होइ । ८ । २ ।

---

1) सदैव 2) ग्रहंभाव 3) सुनाया है 4) भक्त-वत्सल 5) बड़ाई, प्रतिष्ठा 6) ग्रहंकार, ग्रहंभाव 7) परमात्मा ने पूर्व-काल में ही लिख दिया है 8) सो कर समाहित हो जाता है 9) यदि उनसे हरि-स्मरण कराना इच्छित हो, तो भी उनके किए हुए कर्मों का फल नष्ट नहीं हो सकता 10) भावना, इच्छा 11) प्रेम-पूर्वक 12) सिंचित किया जाए 13) से, साथ 14) इच्छा के अनुसार चलते है 15) ग्रहंभाव 16) शोभायमान 17) दूसरा

पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ[1] ।
हरिरसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ[2] ।
निजघरि वासा[3] पाइआ हरि हरि नामि समाइ । १ ।
मन रे गुर की कार कमाइ ।
गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि[4] हरिनाइ । १ । रहाउ ।
पंखी बिरख सुहावड़े[5] ऊडहि[6] चहु दिसि जाहि ।
जेता ऊडहि[6] दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि[7] ।
बिनु गुर महलु न जापई[8] ना अंमृत फल पाहि । २ ।
गुरमुखि ब्रहमु हरिआवला[9] साचै सहजि सुभाइ ।
साखा तीनि निवारीआ[10] एक सबदि लिव लाइ ।
अंमृत फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ । ३ ।
मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिना छाउ[11] ।
तिना पासि न बैसीऐ[12] ओना घरु न गिराउ[13] ।
कटीअहि तै नित जालीअहि ओन्हा सबदु न नाउ । ४ ।
हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ[14] ।
हुकमे[15] दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ।
हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ । ५ ।
हुकमु न जाणहि बपुड़े[16] भूले फिरहि गवार ।
मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ।
अंतर सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु । ६ ।
गुरमुखीआ[17] मुह सोहणे[18] गुर कै हेति पिआरि ।
सची भगती सचि रते[19] दरि सचै सचिआर ।
आए से परवाणु[20] हहि सभ कुल का करहि उधारु । ७ ।
सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ।
जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ।

---

1) वही जीव रूप पक्षी शरीर रूप वृक्ष पर शोभायमान है, जो गुरु के प्रेम में सच का चोगा चुगता है 2) न उड़ता है और न ही आवागमन में पड़ता है 3) निवास 4) मग्न हो जाए 5) सुखदायक 6) उड़ते हैं, उड़ कर 7) जलते और विलाप करते हैं 8) परमधाम प्रतीत नहीं होता 9) हरा-भरा 10) तीन गुण रूप शाखाओं को दूर किया 11) वृक्ष रूप दुष्ट व्यक्ति खड़े खड़े सूख गए हैं, न उनकी छाया है और न ही फल 12) बैठना चाहिए 13) गाँव 14) कर्मचक्र में पड़ते हैं 15) ईश्वरीय आदेश 16) बेचारे 17) गुरु के उपदेश अनुरूप चलने वाले 18) सुंदर 19) अनुरक्त 20) प्रामाणिक हैं

नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ । ८ । ३ ।

गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ[1] ।
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ[2] मनि आइ ।
सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ । १ ।
भाई रे दासनिदासा[3] होइ ।
गुर की सेवा गुरभगति है विरला पाए कोइ । १ । रहाउ ।
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ।
सदा पिरु निहचलु[4] पाईऐ ना ओहु[5] मरै न जाइ ।
सबदि मिली ना वीछुड़ै[6] पिर कै अंकि समाइ[7] । २ ।
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ।
पाठु पड़ै ना बूझई[8] भेखी भरमि भुलाइ ।
गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ । ३ ।
माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि समाइ ।
बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा[9] नो गई खाइ ।
सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ । ४ ।
माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ।
तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ।
बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा[10] माइआ जाइ । ५ ।
माइआ किस नो आखीऐ[11] किआ माइआ करम कमाइ ।
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै[12] करम कमाइ ।
बिनु सबदै भरमु न चूकई[13] ना विचहु हउमै जाइ[14] । ६ ।
बिनु प्रीती भगति न होवई[15] बिनु सबदै थाइ[16] न पाइ ।
सबदे हउमै[17] मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ।
नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ । ७ ।

---

1) समझ नहीं पाते 2) बस गया है 3) दासानुदास, दासों का दास 4) निश्चल, स्थायी 5) वह 6) वियुक्त नहीं होते 7) प्रियतम की गोद में समाहित हो जाते हैं 8) समझा नहीं जा सकता 9) दुष्ट व्यक्ति 10) द्वैत-भाव 11) कहा जाए 12) अहंभाव, अहंकार 13) समाप्त नहीं होता 14) न ही द्वैत-भाव मन से जाता है 15) नहीं होती 16) स्थान, परमधाम 17) अहंभाव

बिनु गुर गुण न जापनी[1] बिनु गुण भगति न होइ ।
भगति वछलु[2] हरि मनि वसिग्रा[3] सहजि मिलिग्रा प्रभु सोइ ।
नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ । ८ । ४ ।

माइग्रा मोहु मेरै प्रभि कीना[4] आपे भरमि भुलाए ।
मनमुखि करम करहि नही बूझहि[5] बिरथा[6] जनमु गवाए ।
गुरबाणी इसु जग महि चानणु[7] करमि[8] वसै मनि आए । १ ।
मन रे नामु जपहु सुखु होइ ।
गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ । १ । रहाउ ।
भरमु गईग्रा भउ भागिग्रा[9] हरि चरणी चितु लाइ ।
गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि ग्राइ ।
घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ । २ ।
नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ।
ब्रहम के बेते[10] सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई[11] ।
सुरिनर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाइ । ३ ।
दैत पुतु[12] करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै[13] ।
सतिगुर भेटिऐ निरमलु होग्रा अनदिनु नामु वखाणै[14] ।
एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा[15] अवरु न जाणै । ४ ।
खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ।
सतिगुर सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ।
सची बाणी सिउ चितु लागै ग्रावणु जाणु रहाए[16] । ५ ।
पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि[17] बिनु गुर भरमि भुलाए ।
लख चउरासीह फेरु पइग्रा बिनु सबदै मुकति न पाए ।
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुर मेलि मिलाए । ६ ।
सत संगति महि नामु हरि उपजै[18] जा सतिगुरु मिलै सुभाए ।

---

1) प्रतीत नहीं होते 2) भक्त-वत्सल 3) बसा हुग्रा है 4) किया है, रचना की है 5) समझ नहीं पाता 6) व्यर्थ 7) प्रकाश 8) कृपा-पूर्वक 9) भय भाग गया 10) ब्रह्म-वेता 11) अहं-भाव को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं 12) दैत्य-पुत्र, हिरण्यकशिपु दैत्य का पुत्र प्रह्लाद 13) दूसरे भाव (द्वैत-भाव) को नहीं जानता 14) बखान करे 15) दूसरा 16) आवागमन समाप्त हो जाता है 17) बखान करते हैं 18) उत्पन्न होता है, पैदा होता है

मनु तनु अरपी[1] आपु गवाई चला सतिगुर भाए ।
सद[2] बलिहारी गुर अपुने विटहु[3] जि हरि सेती चितु लाए । ७ ।
सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे[4] हरि सेती रंगि राता[5] ।
प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता[6] ।
नानक नामु मिलै वडिआई[7] गुर कै सबदि पछाता । ८ । ५ ।

सहजै नो सभ लोचदी[8] बिनु गुर पाइआ न जाइ ।
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी[9] थके भेखी भरमि भुलाइ ।
गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ[10]। १ ।
भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ।
सबदै ही ते सहजु ऊपजै[11] हरि पाइआ सचु सोइ । १ । रहाउ ।
सहजे गाविआ थाइ पवै[12] बिनु सहजै कथनी बादि[13] ।
सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ।
सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि[14] । २ ।
सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ।
सहजे ही गुण ऊचरै[15] भगति करे लिव लाइ ।
सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरिरसु खाइ । ३ ।
सहजे कालु विडारिआ[16] सच सरणाई पाइ ।
सहजे हरिनामु मनि वसिआ सची कार[17] कमाइ ।
से वडभागी[18] जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ । ४ ।
माइआ विचि[19] सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ[20] ।
मनमुख[21] करम कमावणे हउमै[22] जलै जलाइ ।
जंमणु मरणु न चूकई[23] फिरि फिरि आवै जाइ । ५ ।
त्रिहु गुणा विचि[24] सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ।
पड़ीऐ गुणीऐ[25] किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ[26] ।
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ।६ ।

---

1) अर्पित करके 2) सदा, सदैव 3) के ऊपर से 4) पहचाने 5) प्रेम में अनुरक्त 6) जाना है 7) बड़ाई 8) समस्त संसार इच्छा करता है 9) ज्योतिषी 10) रज़ा, इच्छा 11) पैदा होता है 12) सफल मनोरथ 13) व्यर्थ 14) जीवन व्यर्थ है 15) उच्चारण किया जाता है 16) भगा दिया, उड़ा दिया है 17) शुभ कर्म 18) बड़े भागों वाले 19) में 20) द्वैतभाव 21) दुष्ट व्यक्ति 22) अहं-भाव 23) जन्म लेना और मरना समाप्त नहीं होता 24) तीन गुणों में 25) विचार किया जाए 26) जब मूल से ही ग़लत मार्ग पर पड़ गया है

निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ[1]।
गुणवंती[2] सालाहीग्रा सचे सची सोइ।
भुलिग्रा सहजि मिलाइसी[3] सबदि मिलावा होइ। ७।
बिनु सहजै सभु ग्रंधु है माइग्रा मोहु गुबारु।
सहजे ही सोझी पई[4] सचै सबदि ग्रपारि।
ग्रापे बखसि[5] मिलाइग्रनु पूरे गुर करतारि। ८।
सहजे अदिसदु[6] पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु।
सभना जीग्रा[7] का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु।
पूरै सबदि सलाहीऐ जिसदा[8] अंतु न पारावारु। ९।
गिग्रानीग्रा का धनु नामु है सहजि करहि वापारु।
ग्रनदिनु लाहा[9] हरिनामु लैनि ग्रखुट[10] भरे भंडार।
नानक तोटि[11] न ग्रावई दीए देवणुहारि। १०। ६।

सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै[12] जनम मरण दुखु जाइ।
पूरै सबदि सभ सोझी[13] होई हरिनामै रहै समाइ। १।
मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ।
निरमलु नामु सद नवतनी[14] ग्रापि वसै मनि आइ। १। रहाउ।
हरि जीउ राखहु ग्रपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा[15]।
गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा। २।
वडै[16] भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई।
ग्रापे मनि वसिग्रा प्रभु करता सहजे रहिग्रा समाई। ३।
इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइग्रा।
लख चउरासीह फिरि फिरि ग्रावै बिरथा[17] जनमु गवाइग्रा। ४।
भगता मनि ग्रानंदु है सचै सबदि रंगि राते[18]।
ग्रनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते। ५।
गुरमुखि अंमृत बाणी बोलहि सभ आतमारामु पछाणी[19]।

---

1) बोध हो जाता है 2) गुणवान 3) भूले हुए को सहज से मिला देगा 4) बोध हो गया 5) कृपा पूर्वक 6) अदृष्ट 7) जीवों का 8) जिस का 9) लाभ 10) न ख़त्म होने वाला 11) समाप्ति, ख़ात्मा 12) आवागमन नहीं होता 13) सब बोध हो गया 14) नूतन, नया 15) रहना है 16) बड़े 17) व्यर्थ 18) प्रेम में ग्रनुरक्त 19) पहचान ली है

एको सेवनि[1] एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी । ६ ।
सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ।
सदा रंगि राते[2] सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ । ७ ।
आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ[3] देइ जगाइ ।
आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ । ८ । ७ ।

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ।
मनि आनंदु सदासुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु[4] ।
सची संगति बैसणा[5] सचि नामि मनु धीर[6] । १ ।
मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ।
सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु[7] । १ । रहाउ ।
सचै सबदि पति[8] ऊपजै सचे सचा नाउ ।
जिनी हउमै[9] मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ।
मनमुख[10] सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ[11] । २ ।
सचु खाणा सचु पैनणा[12] सचे ही विचि[13] वासु ।
सदा सचा सलाहना सचै सबदि निवासु ।
सभु आतमरामु पछाणिआ गुरमती निजघरि वासु । ३ ।
सचु वेखणु[14] सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ।
सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ।
जिनी सचु विसारिआ[15] से दुखीए चले रोइ । ४ ।
सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ।
जम दरि बधे मारीअहि कूक[16] न सुणै पूकार ।
बिरथा[17] जनमु गवाइआ मरि जंमहि वारो वार[18] । ५ ।
एहु जगु जलता देखि कै भजि[19] पए सतिगुर सरणा ।
सतिगुरि सचु दिड़ाइआ[20] सदा सचि संजमि रहणा ।
सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा । ६ ।

---

1) एक की ही सेवा करते हैं 2) प्रेम भाव में अनुरक्त 3) सोए हुए को 4) गहर गभीर परमात्मा 5) में बैठना 6) मन में धैर्य 7) कीड़ा 8) प्रतिष्ठा 9) अहं-भाव 10) दुष्ट 11) कहीं भी स्थान नहीं है 12) पहनना 13) में 14) देखना 15) भुला दिया है 16) चीख़ 17) व्यर्थ 18) बार-बार 19) भाग कर 20) दृढ़ कर दिया

लख चउरासीह फिरदे रहे[1] बिनु सतिगुर मुकति न होई ।
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई[2] ।
सतिगुरि सबदु सुणाइग्रा बिनु सचे अवरु न कोई । ७ ।
जो सचे लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि[3] ।
तिना निजघरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि[4] ।
नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि[5] । ८ । ८ ।

(ग्रादि ग्रंथ, पृष्ठ 64-70)

सलोक*

रागा विचि[6] स्री रागु है जे सचि धरे पिग्रारु ।
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति ग्रपारु ।
रतनु ग्रमोलकु पाइआ गुरु का सबदु बीचारु ।
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ।
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु । १ । (१)§

होरु बिरहा सभ धातु[7] है जबलगु साहिब प्रीति न होइ ।
इहु[8] मनु माइग्रा मोहिआ वेखणु सुनणु[9] न होइ ।
सह[10] देखे बिनु प्रीति न ऊपजै[11] ग्रंधा किआ करेइ ।
नानक जिनि अखी लीतीआ[12] सोई[13] सचा देइ । २ । (१)

गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै[14] ना दूरि ।
नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि[15] । ३ । (४)

कलउ मसाजनी किग्रा सदाईऐ[16] हिरदै ही लिखि लेहु ।
सदा साहिब कै रंगि[17] रहै कबहूं न तूटसि नेहु[18] ।
कलउ मसाजनी जाइसी लिखिग्रा भी नाले जाइ[19] ।
नानक सह प्रीति न जाइसी[20] जो धुरि छोडी सचै पाइ[21] । ४ । (५)

---

1) फिरते रहे 2) द्वैत-भाव के फलस्वरूप प्रतिष्ठा नष्ट कर दी 3) करते हैं 4) परम-धाम में रहते हैं 5) लीन है; मगन हैं *ये श्लोक 'सिरी राग की वार म. ४' में से लिए गए हैं §कोष्ठकों में लिखे ग्रंक संबंधित पौड़ी-पदों के हैं 6) सभी रागों में से 7) नाशमान 8) यह 9) देखना और सुनना 10) प्रियतम 11) पैदा नहीं होती 12) ज्ञान चक्षु ले लिए हैं 13) वही 14) समीप 15) सामने, पास में 16) लेखनी ग्रौर दवात को क्या मंगवाना है 17) प्रेम में 18) स्नेह नहीं टूटेगा 19) लेखनी ग्रौर दवात नष्ट हो जाएंगी और उनसे लिखा हुआ भी नष्ट हो जाएगा 20) नहीं जाएगी 21) जो परमात्मा ने आदि से ही प्रदान कर दी है

नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ[1] ।
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ।
नानक सबदी सचु है करमी[2] पलै पाइ । ५ । (५)

कलम जलउ सणु मसवाणीऐ[3] कागदु भी जलि जाउ ।
लिखण वाला जलि बलउ[4] जिनि लिखिआ दूजा भाउ[5] ।
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ । ६ । (६)

होरु कूड़ु[6] पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि[7] पिआरु ।
नानक विणु नावै को थिरु[8] नही पड़ि पड़ि होई खुआरु । ७ । (६)

हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि[9] ।
दूजै भाइ[10] दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि[11] ।
नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि । ८ । (७)

हुकमु न जाणै बहुता[12] रोवै ।
अंदरि धोखा नीद न सोवै ।
जे धन खसमै चलै रजाई[13] ।
दरि घरि सोभा महलि[14] बुलाई ।
नानक करमी इह मति पाई ।
गुर परसादी सचि समाई । ९ । (८)

मनमुख नाम विहूणिआ[15] रंगु कसुंभा देखि न भुलु[16] ।
इस का रंगु दिन थोड़िआ[17] छोछा इस दा मुलु[18] ।
दूजे[19] लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ।
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार[20] ।
नानक नाम रते[21] से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ।
भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ । १० । (८)

---

1) दृष्टिगत संसार साथ नहीं चलता, कोई निर्णय करके भली प्रकार देख ले 2) कृपा-पूर्वक 3) दवात सहित लेखनी जल जाएगी 4) जलकर नष्ट हो जाएगा 5) द्वैत-भाव 6) झूठ 7) से, साथ 8) स्थिर 9) सम्पत्ति किसी के साथ नहीं जाती 10) द्वैत-भाव 11) यमकाल ने सब देख ली है, अर्थात् मारने के लिए तैयार है 12) बहुत, अधिक 13) यदि जीव रूप स्त्री पति परमात्मा की इच्छा के अनुसार चले 14) परम-धाम 15) वंचित 16) न भूल 17) थोड़े, कम दिनों के लिए 18) इसका मूल्य भी बहुत कम है 19) द्वैत भाव 20) बार-बार 21) अनुरक्त

पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि[1] माइग्रा मोह सुआइ[2] ।
दूजै भाइ[3] हरिनामु विसारिआ[4] मन मूरख मिलै सजाइ ।
जिनि जीउ पिंडु दिता[5] तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि[6] ।
जम का फाहा[7] गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ।
मन मुखि[8] किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ।
पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुख दाता नामु वसै मनि आइ ।
सुख माणहि सुखु पैनणा[9] सुखे सुखि विहाइ[10] ।
नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ[11] जितु दरि सचै सोभा पाइ । ११ । (९)

सतिगुरु सेवि सुखु पाइग्रा सचु नामु गुणतासु[12] ।
गुरमती ग्रापु पछाणिआ राम नाम परगासु[13] ।
सची सचु कमावणा वडिग्राई वडै पासि[14] ।
जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे ग्ररदासि[15] ।
सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ।
जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु[16] ।
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु[17] ।
जिउ भावै[18] तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु । १२ । (९)

पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा[19] माइग्रा मोहि पिग्रारु ।
ग्रंतरि ब्रहमु न चीनई[20] मनि मूरखु गावारु ।
दूजै भाइ जगतु परबोधदा[21] ना बुझै बीचारु ।
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारोवार[22] । १३ । (१६)

जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइग्रा बूझहु करि बीचारु ।
सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार[23] ।
आपै नो ग्रापु खाइ[24] मनु निरमलु होवै गुरसबदी वीचारु ।
नानक सबदि रते[25] से मुकतु है हरि जीउ हेति पिग्रारु । १४ । (१०)

---

1) बखान करता है 2) प्रयोजन से 3) द्वैत-भाव 4) भुला दिया 5) प्रदान किया है 6) जो जीविका पहुंचा देता हैं 7) फंदा 8) दुष्ट पुरुष 9) सुख को ही पहन कर 10) व्यतीत होती है 11) नहीं भुलाना चाहिए 12) गुण-निधि 13) प्रकाशित हो जाता है 14) बड़ाई उस बड़े के पास हैं 15) प्रार्थना 16) जीना, जीवित रहना 17) दुष्ट पुरुष मोह ग्रस्त हो कर नष्ट हो जाते हैं 18) जैसा अच्छा लगे 19) चीखता है 20) पहचानता नहीं 21) द्वैत-भाव में संसार को उपदेश देता है 22) बार-बार 23) चीख-पुकार 24) अहंभाव को स्वयं शुद्ध मन नष्ट कर देता है 25) अनुरक्त

नानक सो सूरा वरीआमु[1] जिनि विचहु[2] दुसटु अहंकरणु[3] मारिआ ।
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ।
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ।
सोहनि[4] सचि दुआरि नामु पिआरिआ ।
मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ[5] ।
सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ[6] ।
आपहु दूजै[8] लगि खसमु विसारिआ[9] ।
नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ । १५ । (११)

गुरि पूरै हरिनामु दिड़ाइआ तिनि विचहु[10] भरमु चुकाइआ ।
रामनामु हरि कीरति गाई करि चानणु[11] मगु दिखाइआ ।
हउमै[12] मारि इक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ।
गुरमती जमु जोहि न साकै[13] साचै नामि समाइआ ।
सभु आपे आपि वरतै[14] करता जो भावै सो नाइ लाइआ ।
जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ । १६ । (११)

आतमा देउ[15] पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ।
आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा[16] पाइ ।
आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ।
गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु[17] जाइ ।
खिनु पलु हरिनामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ।
सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ[18] ।
धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ।
मनमुख[19] करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ।
नानक मैला ऊजल ता थीऐ[20] जा सतिगुर माहि समाइ । १७ । (१२)

---

1) शूरवीर, बलवान 2) अंतर से 3) अहंकार 4) शोभायमान 5) उन्होंने अपना मरना बिगाड़ लिया है 6) सर्वत्र हुक्म ही व्याप्त है 7) बेचारे 8) द्वैत-भाव 9) भुला दिया 10) अंतर से 11) प्रकाश करके 12) अहंभाव 13) यम देख नहीं सकता 14) व्याप्त है 15) पूज्य परमात्मा 16) परिचय, पहचान 17) अंतर से 18) द्वैत-भाव 19) दुष्ट पुरुष 20) होगा

मनमुख लोकु समझाईऐ कदहु[1] समझाइआ जाइ ।
मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ[2] ।
लिव धातु दुइ राह[3] है हुकमी कार कमाइ ।
गुरमुखि आपणा मनु मारआ सबदि कसवटी[4] लाइ ।
मन ही नालि[5] भगड़ा मन ही नाली सथ[6] मन ही मंझि[7] समाइ ।
मनु जो इछे सो लहै[8] सचै सबदि सुभाय ।
अंमृत नामु सद भुंचीऐ[9] गुरमुखि कार कमाइ ।
विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ[10] ।
मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ[11] ।
गुर परसादी मनु जिणै[12] हरि सेती लिव लाइ ।
नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ । १८ । (१२)

सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ[13] ।
विचहु[14] आपु गावइ कै रहिन सचि लिव लाइ ।
सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा[15] जनमु गवाइ ।
नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछु न जाइ । १९ । (१३)
मनु वेकारी वेड़िआ[16] वेकारा करम कमाइ ।
दूजै भाइ[17] अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ।
आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ।
जपु तपु संजमु भाणा[18] सतिगुरु का करमी[19] पलै पाइ ।
नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ[20] । २० । (१३)

सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो[21] वीचारु ।
अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ।
लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जंमै होइ खुआरु ।
सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ।
सतिगुर विचि[22] नामु निधानु है करमि[23] परापति होइ ।

1) कब, कैसे 2) कर्म-चक्र में पड़ा रहता है 3) लिवलीन होना और इधर उधर भटकना ये दो ही मार्ग हैं 4) कसौटी 5) साथ 6) समझौता 7) में 8) प्राप्त कर लेता है 9) खाइए 10) बिना परमात्मा का नाम माने यदि दूसरों के साथ झगड़ा किया जाए तो जन्म व्यर्थ में नष्ट हो जाता है 11) झूठ और असत्य कमाते हैं 12) जीत जाता है 13) स्वीकृत होता है 14) अंतर से 15) व्यर्थ 16) विकारों से घिरा हुआ है 17) द्वैतभाव 18) इच्छा 19) अच्छे कर्मों के कारण 20) वही उचित स्थान प्राप्त करता है 21) न किया 22) में 23) कृपापूर्वक

सचि रते[1] गुरसबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ।
नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ । २१ । (१४)

सो भगउती जो भगवंतै जाणै[2] ।
गुर परसादी आपु पछाणै ।
धावतु राखै इकतु घरि आणै[3] ।
जीवतु मरै हरिनामु वखाणै ।
ऐसा भगउती उतमु होइ ।
नानक सचि समावै सोइ । २२ । (१४)

अंतरि कपटु भगउती कहाए ।
पाखंडि पार ब्रहमु कदे न पाए[4] ।
पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ।
बाहरि मलु धोवे मन की जूठि न जाए ।
सत संगति सिउ बादु रचाए[5] ।
अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ[6] रचाए ।
हरिनामु न चेते बहु[7] करम कमाए ।
पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ।
नानक बिनु सतिगुरु सेवे मोखु न पाए । २३ । (१४)

वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि[8] ।
पिर कै भाणै[9] ना चलै हुकमु करे गावारि ।
गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ।
लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि[10] लिखिआ करतारि ।
मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ।
बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदे बीचारि ।
नानक सा सुआलिओ[11] सुलखणी जि रावी[12] सिरजनहारि । २४ । (१६)

---

1) अनुरक्त 2) जाने 3) इधर उधर भटकते मन को अपने निजघर में टिकाए 4) कभी नहीं पाया जा सकता 5) विवाद खड़ा करता है 6) द्वैत-भाव 7) बड़े 8) कुरूप और कुलक्षण जीव रूप स्त्री मन से खोटी और झूठी है, परन्तु फिर भी सुन्दर वस्त्र धारण करती और सोहागिन के समान सजित होती है 9) इच्छा 10) प्रारंभ काल से 11) सुन्दर 12) रमण किया है

माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु[1] ।
मनमुख[2] अगिआनी महा दुखु पाइदे[3] डुबे हरिनामु विसारि[4] ।
भलके[5] उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ[6] पिआरु ।
सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु[7] उतरे पारि ।
नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नाम उरधारि । २५ । (१६)

मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ।
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि[8] पिआरु ।
तृसना कदे[9] न चुकई जलदी करे पुकार ।
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी[10] परहरि छोडी भतारि । २६ । (१७)

सबदि रती[11] सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ।
सदा रावे[12] पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ।
अति सुआलिउ[13] सुन्दरी सोभावंती नारि ।
नानक नामि सोहागणी मेली मेलणाहारि । २७ । (१७)

सतिगुर कै भाणै[14] जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ[15] ।
हरि का नामु उतमु मनि वसै[16] मेटि न सकै कोइ ।
किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ।
नानक कारणु करते वसि[17] है गुरमुखि बुझै कोइ । २८ । (१८)

नानक हरिनामु जिनी अराधिआ अनदिनु हरि लिवतार ।
माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ।
पूरै पूरा करि छोडिआ[18] हुकमि सवारणहार ।
गुर परसादी जिनि बुझिया तिनि पाइआ मोखदुआरु ।
मनमुख हुकमु न जाणनी[19] तिन मारे जम जंदारु[20] ।
गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ[21] भउजलु संसारु ।
सभि अउगण[22] गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु[23] । २९ । (१८)

---

1) उस के इस और उस पार के किनारे दिखाई नहीं पड़ते 2) दुष्ट पुरुष 3) पाते हैं 4) भुला कर 5) प्रातः काल 6) द्वैत-भाव 7) संसार 8) से, साथ 9) कभी 10) सुन्दरता रहित 11) अनुरक्त 12) रमण करे 13) सुन्दर 14) इच्छा 15) उस की बहुत अधिक प्रतिष्ठा होती है 16) बसता है 17) बस में 18) छोड़ दिया 19) नहीं जानते 20) अत्याचारी यम 21) तैर कर पार कर लिया 22) अवगुण 23) कृपा करने वाला है

आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि।
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि।
नानक जिसु नदरि[1] करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि। ३०। (१९)

गुर सेवा ते हरि पाईऐ जाकउ नदरि करेइ।
माणस[2] ते देवते भए धिआइआ नामु हरे।
हउमै[3] मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे।
नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रपा करे। ३१। (१९)

जीउ[4] पिंडु समु तिस का सभसै देइ अधारु।
नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु।
हउ बलिहारी तिन कउ जिनी धिआइआ हरि नरंकारु।
ओना के मुख सद उजले ओना नो समु जगतु करे नमसकारु। ३२। २१।

सतिगुर मिलिऐ उलटी भई[5] नव निधि खरचिउ खाउ।
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निजघरि वसै निज थाइ[6]।
अनहद धुनी सद वजदे[7] उनमनि हरि लिव लाइ।
नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि[8] पाइ।
। ३३। (२१)

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ८३-९१)

1) कृपा-दृष्टि 2) मनुष्य 3) अहंभाव 4) जीव 5) मन सांसारिक आकर्षणों से हट गया 6) स्थान 7) सदा बजते रहते हैं उन्मनी अवस्था में 8) आरम्भ से ही, आदि काल से ही

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु माझ घरु १

असटपदीआ

करमु[1] होवै सतिगुरु मिलाए। सेवा सुरति सबदि चितु लाए।
हउमै[2] मारि सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकवाणिआ[3]। १।
हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ।
गुरमती परगासु[4] होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ। १। रहाउ।
तनु मनु खोजे ता नाउ पाए। धावतु राखै ठाकि रहाए[5]।
गुर की वाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ। २।
इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा। गुरमुखि सचु मिलै ता वेखा[6]।
नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ। ३।
सचा साहिबु सची नाई[7]। गुरपरसादी मंनि वसाई[8]।
अनदिनु सदा रहै रंगि राता[9] दरि सचै सोझी पावणिआ। ४।
पाप पुंन की सार न जाणी। दूजै[10] लागी भरमि भुलाणी।
अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ[11]। ५।
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ। हउमै मेरा ठाकि रहाइआ[12]।
गुरसाखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ। ६।
हउमै मारि मंनि वसाइआ[13]। गुरचरणी सदा चितु लाइआ।
गुरकिरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ। ७।
जीवणु मरणा सभु तुधै ताई[14]। जिसु बखसे[15] तिसु दे वडिआई[16]।
नानक नामु धिआइ सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ। ८। १।

---

1) भाग्य; प्रभु-कृपा 2) अहंभाव 3) समाप्त करने वाला 4) प्रकाश 5) इधर उधर भागने से मन को मोड़े और रोक कर रखे 6) देखूं 7) नाम 8) बसाया है 9) प्रेम में अनुरक्त 10) द्वैत-भाव 11) आता जाता है 12) अहंकार और मेरे-पन की भावनाओं को रोका है 13) बसा लिया 14) तुम्हारे ही वश में है 15) कृपा करे 16) बड़ाई

मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा। बिनु तकड़ी तोलै संसारा।
गुरमुखि होवै सोइ बूझै गुण कहि गुणी[1] समावणिआ। १।
हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ[2]।
जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ[3]। १। रहाउ।
आपि सुणै तै आपे वेखै[4]। जिस नो नदरि[5] करे सोई जनु लेखै।
आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ। २।
जिसु आपि भुलाए सु किथै पाए[6]। पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए।
जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी[7] पूरै करमि मिलावणिआ। ३।
पेईअड़ै धन अनदिनु सुती[8]। कंति विसारी अवगणि मुती[9]।
अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ। ४।
पेईअड़ै सुखदाता जाता[10]। हउमै[11] मारि गुरसबदि पछाता।
सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु[12] बणावणिआ। ५।
लख चउरसीह जीअ[13] उपाए। जिस नो नदरि[14] करे तिसु गुरु मिलाए।
किलबिख[15] काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ[16]। ६।
लेखा मागै ता किनि दीऐ। सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ[17]।
आपे बखसि[18] लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ। ७।
आपि करे तै आपि कराए। पूरे गुर कै सबदि मिलाए।
नानक नामु मिलै वडिआई[19] आपे मेलि मिलावणिआ। ८। २।

इको आपि फिरै परछंना[20]। गुरमुखि वेखा[21] ता इहु मनु भिना[22]।
तृसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ। १।
हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ।
गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि[23] रंगावणिआ। १। रहाउ।
इहु जगु भूला तै आपि भुलाइआ। इकु बिसारि दूजै[24] लोभाइआ।
अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ। २।

---

1) गुणों का स्वामी परमात्मा 2) बसाने वाला है 3) पाने वाला है 4) देखे 5) कृपा-दृष्टि 6) किस का आश्रय ग्रहण करे 7) बड़े भाग्य वाले 8) मायके घर में मनुष्य रूप स्त्री प्रतिदिन सोई रही 9) त्याग दी 10) मायके में सुखदायक प्रभु को जान लिया 11) अहंभाव 12) शृंगार 13) जीव 14) कृपा-दृष्टि 15) पाप 16) नाम द्वारा सुशोभित होने वाले 17) लेखा देने में 18) कृपा करे 19) बड़ाई 20) ढका हुआ, गुप्त 21) देखने पर 22) भीग जाता है 23) प्रेम 24) दूसरे

जो रंगि राते करम बिधाते[1] । गुर सेवा ते जुग चारे जाते[2] ।
जिसनो आपि देइ वडिआई[3] हरि कै नामि समावणिआ । ३ ।
माइआ मोहि हरि चेतै नाही[4] । जमपुरि बधा दुख सहाहीं ।
अंना बोला किछु नदरि न आवै[5] मनमुख पापि पचावणिआ । ४ ।
इकि रंगि राते जो तुधु[6] आपि लिव लाए भाइ भगति[7] तेरै मनि भाए ।
सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ[8] । ५ ।
हरि जीउ तेरी सदा सरणाई । आपे बखसिहि[9] दे वडिआई ।
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै[10] जो हरि हरि नामु धिआवणिआ । ६ ।
अनदिनु राते[11] जो हरि भाए । मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ।
सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ । ७ ।
जिन सचु जाता[12] से सचि समाणे । हरिगुण गावहि सचु वखाणे[13] ।
नानक नामि रते बैरागी निजघरि ताड़ी लावणिआ । ८ । ३ ।

सबदि मरै सु मुआ जापै[14] । कालु न चापै दुखु न संतापै ।
जोती विचि[15] मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ[16] सोभा पावणिआ ।
सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ । १ । रहाउ ।
काइआ कची कचा चीरु हंढाए[17] । दूजै लागी महलु न पाए[18] ।
अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ । २ ।
देही जाति न आगै जाए । जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै[19] सचु कमाए ।
सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै[20] नामि समावणिआ । ३ ।
भै भाइ सीगारु बणाए[21] । गुर परसादी महलु घरु पाए[22] ।
अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ । ४ ।
सभना पिरु वसै सदा नाले[23] । गुरपरसादी को नदरि[24] निहाले ।
मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ । ५ ।

---

1) जो कर्मों के रचयिता प्रभु के प्रेम में अनुरक्त हैं 2) जाने गए हैं 3) बड़ाई 4) स्मरण नहीं है 5) अंधे और बहरे को कुछ नज़र नहीं आता 6) तुमने 7) भाव-भक्ति, प्रेम-भक्ति 8) पूर्ण करने वाला है 9) कृपा-पूर्वक 10) समीप नहीं आता 11) अनुरक्त 12) पहचान लिया 13) बखान करते हैं 14) वही वास्तव में मरा हुआ है 15) में, अंदर 16) नाम 17) नाश-मान वस्त्र धारण करती है 18) द्वैत-भाव के फलस्वरूप परम-धाम को प्राप्त नहीं कर पाती 19) जहाँ लेखा मांगा जाता है, वहीं रह जाते हैं 20) यहाँ और वहाँ, इस लोक तथा परलोक में 21) पति के भय और प्रेम का शृंगार बनाए 22) परम-धाम प्राप्त करे 23) साथ 24) कृपा-दृष्टि

माइया मोहि इहु जगु सुता[1] नामु विसारि अंति विगुता[2] ।
जिस ते सुता[3] सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ । ६ ।
अपिउ[4] पीऐ सो भरमु गवाए । गुर परसादि मुकति गति पाए ।
भगती रता[5] सदा बैरागी आपु[6] मारि मिलावणिआ । ७ ।
आपि उपाए धंधै लाए । लख चउरासी रिजकु[7] आपि अपड़ाए[8] ।
नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ । ८ । ४ ।

अंदरि हीरा लालु बणाइआ । गुर कै सबदि परखि परखाइआ ।
जिन सचु पलै सचु बखाणहि[9] सच कसवटी लावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ।
अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ । १ । रहाउ ।
इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा[10] नामु निरंजनु अति अगम अपारा ।
गुरमुखि होवै[11] सोई पाए आपे बखसि[12] मिलावणिआ । २ ।
मेरा ठाकुरु सचु दृड़ाए । गुरपरसादी सचि चितु लाए ।
सचो सचु वरतै सभनी थाई[13] सचे सचि समावणिआ । ३ ।
वेपरवाहु[14] सचु मेरा पिआरा । किलबिख[15] अवगण काटणहारा ।
प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ[16] भगति दृड़ावाणिआ । ४ ।
तेरी भगति सची जे भावै । आपे देइ न पछोतावै ।
सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ । ५ ।
हरि तुधु बाझहु[17] मै कोई नाही । हरि तुधै[18] सेवी तै तुधु सालाही ।
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि[19] तूं[20] पावणिआ । ६ ।
मै होरु न कोई तुधै जेहा[21] । तेरी नदरी सीझसि देहा[22] ।
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ । ७ ।
तुधु जेवडु मै होरु न कोइ[23] । तुधु आपे सिरजी आपे गोई[24] ।
तूं आपे ही घड़ि मंनि[25] सवारहि नानक नामि सुहावणिआ । ८ । ५ ।

---

1) सोया हुआ 2) नष्ट हुआ 3) जिस प्रभु के द्वारा सुलाया गया है 4) नाम रूप अमृत 5) अनुरक्त 6) अपने-पन की भावना 7) आजीविका 8) पहुंचाता है 9) बखान करता है 10) प्रसार 11) होता है 12) कृपा-पूर्वक 13) सभी स्थानों पर व्याप्त है 14) परवाह न करने वाला 15) पाप 16) भय और भाव 17) तुम्हारे बिना 18) तुम्हें 19) भाग्य 20) तुम 21) मुझे तुम्हारे जैसा और कोई दूसरा नहीं है 22) तुम्हारी कृपा-दृष्टि से देह सफल मनोरथ होती है 23) तुम्हारे जैसा मेरे लिए और कोई महान् नहीं है 24) तुम ने स्वयं ही सारी सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही उसे लय किया है 25) बनाना और फोड़ना

सभ घट आपे भोगणहारा । अलखु वरतै[1] अगम अपारा ।
गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गुरसबदु मंनि वसावणिआ ।
सबदु सूझै[2] ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ[3] । १ । रहाउ ।
पंच दूत मुहहि संसारा । मनमुख अंधे सुधि न सारा[4] ।
गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ । २ ।
इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते[5] । सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते[6] ।
मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ । ३ ।
एकम इकै आपु उपाइआ[7] । दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ[8] ।
चउथी पउड़ी[9] गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ । ४ ।
सभु है सचा जे सचे भावै । जिनि सचु जाता[10] सो सहजि समावै ।
गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ । ५ ।
सचे बाझहु[11] को अवरु न दूआ[12] । दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ।
गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ । ६ ।
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी । आपे धरि देखहि कची पकी सारी[13] ।
अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ । ७ ।
तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि[14] । सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ।
नानक आपे आपि वरतै[15] गुरमुखि सोझी पावणिआ । ८ । ६ ।

अंमृत बाणी गुर की मीठी । गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ।
अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ।
सतिगुरु है अंमृतसरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ[16] । १ । रहाउ ।
तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ । गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ।
तुधु सालाहि न रजा कबहूं[17] सचे नावै की भुख लावणिआ[18] । २ ।

---

1) व्याप्त है 2) झगड़ा करे 3) मन की इच्छाओं को मार कर परमात्मा में समा जाए 4) ख़बर अथवा सूचना और ज्ञान नहीं है 5) प्रेम में अनुरक्त 6) मगन 7) उत्पन्न किया 8) द्वैत-भाव और त्रिगुणात्मक माया उत्पन्न की 9) सीढ़ी 10) पहचान लिया 11) बिना 12) दूसरा 13) शतरंज की गोटी 14) अपने पास ही देखता है 15) व्याप्त है 16) मन के स्नान करने से मैल नष्ट हो जाता है 17) तुम्हारी सराहना करते करते कभी तृप्त न हो पाऊं 18) भूख लगाने वाले

एको वेखा अवरु न बीआ[1] । गुरपरसादी अंमृतु पीआ ।
गुर कै सबदि तिखा[2] निवारी सहजे सूखि समावणिया । ३ ।
रतनु पदारथु पलरि[3] तिआगै । मनमुखु अंधा दूजै भाइ[4] लागै ।
जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ । ४ ।
अपनी किरपा करे सोई जनु पाए । गुर का सबदु मंनि वसाए[5] ।
अनदिनु[6] सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ । ५ ।
भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ । गुर परसादि परम पदु पाइआ ।
अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरिगुण सहजे गावणिआ । ६ ।
सिमृति सासत[7] बेद वखाणै[8] । भरमे भूला ततु न जाणै ।
बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ । ७ ।
आपि करे किसु आखै कोई[9] । आखणि[10] जाईऐ जे भूला होई ।
नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ । ८ । ७ ।

आपे रंगे सहजि सुभाए । गुर कै सबदि हरिरंगु[11] चड़ाए ।
मनु तनु रता[12] रसना रंगि चलूली[13] भै भाइ[14] रंगु चड़ावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ।
गुरकिरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ । १ । रहाउ ।
मनमुख मुगध करहि चतुराई । नाता धोता थाइ[15] न पाई ।
जेहा आइआ तेहा जासी[16] करि अवगण पछोतावणिआ । २ ।
मनमुख अंधे किछु न सूझै । मरणु लिखाइ आए नही बूझै ।
मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ । ३ ।
सचु करणी सबदु है सारु । पूरै गुरि पाईऐ मोखदुआरु ।
अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते[17] रंगि रंगावणिआ । ४ ।
रसना हरि रसि राती रंगु लाए । मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ।
सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहिज मिलावणिआ । ५ ।

---

1) एक को ही देखूं दूसरे को नहीं 2) तृषा, प्यास 3) पयाल के समान 4) द्वैत-भाव 5) बसाए 6) प्रति-दिन 7) शास्त्र 8) बखान करते हैं 9) कौन कह सकता है 10) कहने के लिए 11) हरि का प्रेम 12) अनुरक्त 13) प्रेम का गहरा रंग चढ़ गया 14) भय और प्रेम 15) स्थान 16) जैसा आया है वैसा ही वापिस जाएगा 17) अनुरक्त

जिसु अंदरि रंगु[1] सोई गुण गावै । गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ।
हउ बलिहारी सदा तिन विटहु[2] गुर सेवा चितु लावणिआ । ६ ।
सचा सचो सचि पतीजै[3] । गुर परसादी अंदरु भीजै ।
बैसि सुथानि[4] हरिगुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ । ७ ।
जिस नो नदरि[5] करे सो पाए । गुरपरसादी हउमै[6] जाए ।
नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ । ८ । ८ ।

सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई[7] । हरि जी अचितु वसै मनि आई ।
हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अंमृतु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ[8] । १ ।
हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ।
हरि सत संगति आपे मेलै गुरसबदी हरिगुण गावणिआ । १ । रहाउ ।
सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ । जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ[9] ।
हरि निरमलु हउमै[10] मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ । २ ।
बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ । सिध साधिक रहे बिललाइ[11] ।
बिनु गुर सेवे सुखु न होवी[12] पूरै भागि गुरु पावणिआ । ३ ।
इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै[13] । मोरचा[14] न लागै जा हउमै सोखै[15] ।
अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुरसबदी सचि समावणिआ । ४ ।
बिनु सतिगुर किहु[16] न देखिआ जाइ । गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ।[17]
आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ । ५ ।
गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए । दूजा[18] भरमु गुरसबदि जलाए ।
काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ । ६ ।
गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु । गुरमुखि पाए मोखदुआरु ।
अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि[19] बुलावणिआ । ७ ।
सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ । पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ।
नानक नामु मिलै वडिआई[20] हरि सचे के गुण गावणिआ । ८ । ९ ।

---

1) प्रेम 2) उन पर, उन के ऊपर 3) पतियाता है 4) सुंदर स्थान 5) कृपा-दृष्टि 6) अहं-भाव 7) बहुत बड़ाई मिलती है 8) प्यास खत्म हो जाती है 9) बसाया है 10) अहं-भाव 11) विलाप करते हैं 12) नहीं होता 13) देखता है 14) जंग 15) खुश्क कर देता है, प्रभाव समाप्त कर देता है 16) कुछ भी; किसी प्रकार 17) दिखा दिया है 18) दूसरा 19) परमधाम 20) बड़ाई

आपु वञाए[1] ता सभ किछु पाए । गुरसबदी सची लिव लाए ।
सचु वणंजहि सचु संघरहि[2] सचु वापारु करावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हरिगुण अनदिनु[3] गावणिआ ।
हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई[4] देवणिआ । १ । रहाउ ।
वेला वखत सभि सुहाइआ । जितु[5] सचा मेरे मनि भाइआ[6] ।
सचे सेविऐ सचु वडिआई[7] गुर किरपा ते[8] सचु पावणिआ । २ ।
भाउ[9] भोजनु सतिगुरि तुठै[10] पाए । अनरसु[11] चूकै हरिरसु मंनि वसाए।
सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ । ३ ।
सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा । फिरि ओइ किथहु[12] पाइनि मोखदुआरा ।
मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ । ४ ।
सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि । निरमल बाणी सबदि वखाणहि[13] ।
सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउनिधि नामु मंनि वसावणिआ । ५ ।
सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ । सत संगति बहि हरि गुण गाइआ ।
अनदिनु[14] हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ । ६ ।
मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा[15] । कूड़ु[16] कमावनि दुखु लागै भारा ।
भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ । ७ ।
सचा साहिबु मै अति पिआरा । पूरे गुर कै सबदि अधारा ।
नानक नामि मिलै वडिआई[17] दुखु सुखु सम करि जावणिआ । ८ । १० ।

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी । बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी[18] ।
गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ।
हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ । १ । रहाउ ।
सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए । जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ।
सतिगुर दाता सभना वथू[19] का पूरै भागि मिलावणिआ । २ ।

---

1) अपने-पन की भावना को खोने पर 2) सत्य का वाणिज्य करे और सत्य का ही संग्रह करे 3) प्रतिदिन 4) बड़ाई 5) जिस में, जिस से 6) अच्छा लगा 7) बड़ाई 8) के फलस्वरूप 9) भाव, प्रेम 10) प्रसन्न होने पर 11) अन्य रस, अर्थात् द्वैत-भाव 12) वे कहाँ से 13) बखान करे 14) प्रति-दिन 15) प्रसार 16) झूठ 17) प्रतिष्ठा, बढ़ाई 18) भुलाने वाली है 19) सभी वस्तुओं का

इहु मनु मैला इकु[1] न धिआए । अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए[2] ।
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै[3] मलु लावणिआ । ३ ।
सतिगुरु सेवे ता मलु जाए । जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ।
हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ । ४ ।
बाझु[4] गुरु है अंध गुबारा । अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ।
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ । ५ ।
मुकते सेवे मुकता होवै । हउमै[5] ममता सबदे खोवै ।
अनदिनु[6] हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरू पावणिआ । ६ ।
आपे बखसे[7] मेलि मिलाए । पूरे गुर ते नामु निधि पाए ।
सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ । ७ ।
सदा हजूरि[8] दूरि न जाणहु । गुरसबदी हरि अंतरि पछाणहु ।
नानक नामि मिलै वडिआई[9] पूरे गुर ते पावणिआ । ८ । ११ ।

ऐथै[10] साचे सु आगै साचे । मनु सचा सचै सबदि राचे[11] ।
सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ।
सचे सेवहि सच समावहि सचे के गुण गावणिआ । १ । रहाउ ।
पंडित पड़हि सादु न पावहि । दूजै भाइ[12] माइआ मनु भरमावहि ।
माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ । २ ।
सतिगुरू मिलै त ततु पाए । हरि का नामु मंनि वसाए ।
सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ । ३ ।
किलविख[13] काटै क्रोधु निवारे । गुर का सबदु रखै उरधारे ।
सचि रते[14] सदा बैरागी हउमै[15] मारि मिलावणिआ । ४ ।
अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ । त्रिबिधि मनसा त्रिबिध माइआ ।
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ । ५ ।

---

1) एक परमात्मा 2) द्वैत-भाव के कारण 3) और अधिक अहं-भाव 4) बिना 5) अहंभाव 6) प्रति-दिन 7) कृपा करे 8) पास में, समीप 9) बड़ाई, प्रतिष्ठा 10) यहाँ, इस लोक में 11) लीन, मगन 12) द्वैत-भाव 13) पाप 14) अनुरक्त 15) अहंकार.

आपे रंगे रंगु[1] चड़ाए । से जन राते गुर सबदि रंगाए ।
हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ । ६ ।
गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई । गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ।
गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ । ७ ।
गुरमुखि थापे थापि उथापे[2] । गुरमुखि जाति पति[3] सभु आपे ।
नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ । ८ । १२ ।

उतपति परलउ[4] सबदे होवै । सबदे ही फिरि ओपति[5] होवै ।
गुरमुखि वरतै[6] सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ[7] समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ।
गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी[8] समावणिआ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी । गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी[9] ।
सो निगुरा जो मरि मरि जंमै निगुरे आवण जावणिआ[10] । २ ।
तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ । काइआ सरीरै विचि[11] सभु किछु पाइआ ।
सबदि भेदि कोई महलु[12] पाए महले महलि बुलावणिआ । ३ ।
सचा साहु सचे वणजारे । सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ।
सचु विहाझहि[13] सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ । ४ ।
बिनु रासी[14] को वथु[15] किउ पाए । मनमुख भूले लोक सबाए ।
बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ । ५ ।
इकि सचु वणंजहि गुरसबदि पिआरे । आपि तरहि सगले कुल तारे ।
आए से परवाणु[16] होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ । ६ ।
अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले[17] । मनमुख अंधे फिरहि बेताले[18] ।
जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै[19] मनमुख भरमि भुलावणिआ । ७ ।
आपे देवे सबदि बुलाए । महली[20] महलि[21] सहज सुखु पाए ।
नानक नामि मिलै वडिआई[22] आपे सुणि सुणि धिआवणिआ । ८ । १३ ।

---

1) प्रेम का रंग 2) गुरमुख व्यक्ति के अनुसार परमात्मा ही इस सृष्टि की स्थापना और विलय करने वाला 3) प्रतिष्ठा, बड़ाई 4) प्रलय 5) उत्पत्ति 6) व्याप्त है 7) उत्पन्न करके 8) गुण-निधान परमात्मा 9) विचित्र, अद्भुत 10) आवागमन में पड़ता है 11) में, बीच, अंदर 12) परमधाम 13) वाणिज्य करना 14) राशि, धन, 15) वस्तु 16) प्रामाणिक 17) ढूंढता है. 18) प्रेत के समान 19) जहाँ वास्तव में वस्तु होती है, वहाँ से कोई नहीं प्राप्त करता 20) महिला, स्त्री 21) परमधाम 22) बड़ाई, प्रतिष्ठा

सतिगुर साची सिख[1] सुणाई । हरि चेतहु अंति होइ सखाई[2] ।
हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ[3] पावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ।
आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ । १ । रहाउ ।
पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ । सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ।
बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ । २ ।
गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे । गुर कै तकीऐ[4] नामि अधारे ।
गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो[5] आपे खपि दुखु पावणिआ । ३ ।
मनमुखि[6] अंधे सुधि न काई । आतमघाती है जगत कसाई ।
निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी[7] भारु पहुचावणिआ । ४ ।
इहु जगु वाड़ी[8] मेरा प्रभु माली । सदा समाले[9] को नाही खाली ।
जेही[10] वासना पाए तेही वरतै[11] वासु वासु[12] जणावणिआ । ५ ।
मनमुखु रोगी है संसारा । सुखदाता विसरिआ[13] अगम अपारा ।
दुखीए निति फिरहि बिललादे[14] बिनु गुर सांति न पावणिआ । ६ ।
जिनि कीते[15] सोई बिधि जाणै । आपि करे ता हुकमि पछाणै ।
जेहा[16] अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ । ७ ।
तिसु बाझहु[17] सचे मै होरु[18] न कोई । जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ।
नानक नामु वसै[19] घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ । ८ । १४ ।

अंमृत नामु मंनि वसाए । हउमै मेरा[20] सभु दुखु गवाए ।
अंमृत बाणी सदा सलाहे अंमृति अंमृतु पावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी अंमृत बाणी मंनि वसावणिआ ।
अंमृत बाणी मंनि वसाए अंमृतु नामु धिआवणिआ । १ । रहाउ ।
अंमृतु बोलै सदा मुखि वैणी[21] । अंमृतु वेखै[22] परखै सदा नैणी[23] ।
अंमृतु कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ । २ ।

---

1) सीख, शिक्षा 2) मित्र, सहायक 3) प्रेम 4) गुरु के आश्रम अथवा निवास स्थान 5) गुरमुख व्यक्ति के साथ ज्यादती करने से किसी को क्या लाभ हो सकता है 6) दुष्ट व्यक्ति 7) मजदूरी 8) वाटिका 9) संभाल करता है 10) जैसी 11) व्याप्त होती है 12) गंध 13) भूल गया है 14) विलाप करते हैं 15) किए हैं, बनाए हैं, सब सर्जना की है 16) जैसा 17) बिना 18) अन्य 1) बसता है 20) अहंकार और मेरे-पन का भाव 21) बैन, बोल 22) देखे 23) नयनों से

अंमृतु रंगि रता[1] लिव लाए । अंमृतु गुरपरसादी पाए ।
अंमृतु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अंमृतु पीआवणिआ । ३ ।
सो किछु करे जु चिति न होई । तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ।
हुकमै वरतै[2] अंमृत बाणी हुकमे अंमृतु पीआवणिआ । ४ ।
अजब कंम[3] करते हरि केरे । इहु मनु भूला जांदा फेरे[4] ।
अंमृत बाणी सिउ चितु लाए अंमृत सबदि वजावणिआ । ५ ।
खोटे खरे तुधु आपि उपाए[5] । तुधु[6] आपे परखे लोक सबाए ।
खरै परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ । ६ ।
किउकरि वेखा[7] किउ सालाही । गुर परसादी सबदि सलाही ।
तेरे भाणै विचि अंमृतु वसै[8] तूं भाणै अंमृतु पीआवणिआ । ७ ।
अंमृत सबदु अंमृत हरि बाणी । सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ।
नानक अमृत नामु सदा सुखदाता पी अंमृतु सभ भुख लहि[9] जावणिआ । ८ । १५ ।

अंमृतु वरसै सहजि सुभाए । गुरुमुखि विरला कोई जनु पाए ।
अंमृतु पी सदा तृपतासे[10] करि किरपा तृसना बुझावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अंमृतु पीआवणिआ ।
रसन रसु चाखि[11] सदा रहै रंगि राती सहजे हरिगुण गावणिआ । १ । रहाउ ।
गुरपरसादी सहजु को पाए । दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ।
नदरि[12] करे ता हरिगुण गावै नदरी[13] सचि समावणिआ । २ ।
सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी । किसै थोड़ी किसै है घणेरी ।
तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ । ३ ।
गुरमुखि ततु है बीचारा[14] ; अंमृति भरे तेरे भंडारा ।
बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ । ४ ।
सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै । अंमृत नामि अंतरु मनु मोहै ।
अंमृति मनु तनु बाणी रता[15] अंमृतु सहजि सुणावणिआ । ५ ।

---

1) प्रेम रंग में अनुरक्त 2) व्याप्त होती है 3) काम 4) भटकता फिर रहा है 5) तुम ने स्वयं पैदा किए हैं 6) तुम ने 7) देखूं 8) तुम्हारी इच्छा के अधीन अंमृत की वर्षा होती है 9) सब भूख मिट जाती है 10) तृप्त होते हैं 11) चखकर 12) कृपा-दृष्टि 13) कृपा-दृष्टि करने वाला 14) विचार किया है 15) अनुरक्त है

मनमुखु मूला दूजै भाइ[1] खुआए । नामु न लेवै मरै बिखु खाए ।
अनदिनु[2] सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ । ६ ।
अंमृतु पीवै जिसनो आपि पीआए । गुरपरसादी सहजि लिव लाए ।
पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी[3] आवणिआ । ७ ।
आपे आपि निरंजनु सोई । जिनि सिरजी तिनि आपे गोई[4] ।
नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ । ८ । १६ ।
से सचि लागे जो तुधु भाए[5] । सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ।
सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ।
सचु धिआइनि से सचि राते[6] सचे सचि समावणिआ । १ । रहाउ ।
जह देखा सचु सभनी थाई[7] । गुरपरसादी मंनि वसाई ।
तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ[8] । २ ।
मनसा मारि सचि समाणी । इनि मनि डीठी[9] सभ आवण जाणी[10] ।
सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु[11] निजघरि वासा पावणिआ । ३ ।
गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ । माइआ मोहु सबदि जलाइआ ।
सचो सचा वेखि[12] सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ । ४ ।
जो सचि राते तिन सची लिव लागी । हरिनामु समालहि से वडभागी[13] ।
सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ । ५ ।
लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि[14] होवै । ओहु[15] अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ।
अनदिनु[16] सच सबदि सालाही होरु[17] कोइ न कीमति पावणिआ । ६ ।
पड़ि पड़ि थाके सांति न आई । तृसना जाले सुधि न काई ।
बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु[18] बोलि बिखु खावणिआ । ७ ।
गुर परसादी एको जाणा । दूजा[19] मारि मनु सचि समाणा ।
नानक एको नामु वरतै[20] मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ । ८ । १७ ।

---

1) द्वैत-भाव 2) प्रतिदिन 3) कृपा-दृष्टि करने वाला 4) विलय किया 5) जो तुझे अच्छे लगें 6) अनुरक्त हैं 7) सभी जगहों में 8) बखान करना 9) देखी है 10) आने जाने वाली, आवागमन वाली 11) निश्चल, शांत, स्थिर 12) देखकर 13) बड़े भाग्य वाले 14) में, अंदर 15) वह 16) प्रतिदिन 17) अन्य 18) झूठ 19) द्वैत-भाव 20) व्याप्त है

वरन रूप वरतहि[1] सभ तेरे। मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणेरे[2]।
तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ। १।
हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ।
तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ। १। रहाउ।
सभ एका जोति जाणै जे कोई। सतिगुरु सेविऐ परगटु होई।
गुपतु परगटु वरतै सभ थाई[3] जोती जोति[4] मिलावणिआ। २।
तिसना अगनि जलै संसारा। लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा।
मरि मरि जनमै पति[5] गवाए अपणी बिरथा[6] जनमु गवावणिआ। ३।
गुर का सबदु को विरला बूझै। आप मारे ता त्रिभवणु सूझै।
फिरि ओहु[7] मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ। ४।
माइआ महि फिरि चितु न लाए। गुर कै सबदि सद रहै समाए।
सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ[8]। ५।
सचु सालाही सदा हजूरे[9]। गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे।
गुर परसादी सचु नदरी[10] आवै सचे ही सुखु पावणिआ। ६।
सचु मन अंदरि रहिआ समाइ। सदा सचु निहचलु आवै न जाइ।
सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ। ७।
सचु सालाही अवरु न कोई। जितु सेविऐ सदा सुखु होई।
नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ। ८। १८।

निरमलु सबदु निरमल है बाणी। निरमल जोति सभ माहि समाणी।
निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ। १।
हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ।
हरि निरमलु गुर सबदि सालाही सबदो सुणि तिसा[11] मिटावणिआ। १। रहाउ।
निरमल नामु वसिआ[12] मनि आए। मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए।
निरमल गुण गावे नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ। २।

---

1) व्याप्त हो रहे हैं 2) बहुत अधिक चक्र पड़ते हैं 3) सभी स्थानों में 4) आत्मा परमात्मा का मिलन 5) प्रतिष्ठा 6) व्यर्थ 7) वह 8) शोभायमान है 9) पास में, सामने 10) दृष्टिगोचर होता है 11) तृषा 12) बस गया है

निरमल अंमृतु गुर ते पाइआ । विचहु आपु मुआ[1] तिथै[2] मोहु न माइआ ।
निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ । ३ ।
जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै । हउमै[3] मैलु गुर सबदे धोवै ।
निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा[4] पावणिआ । ४ ।
निरमल ते सभ निरमल होवै । निरमलु मंनूआ हरि सबदि परोवै[5] ।
निरमल नामि लगे बडभागी[6] निरमलु नामि सुहावणिआ[7] । ५ ।
सो निरमलु जो सबदे सोहै । निरमल नामि मनु तनु मोहै ।
सचि नामि मलु कदे न[8] लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ । ६ ।
मनु मैला है दूजै भाइ[9] । मैला चउका मैलै थाइ[10] ।
मैला खाइ फिरि मैलु वधाए[11] मनमुख मैलु दुखु पावणिआ । ७ ।
मैले निरमल सभि हुकमि सबाए । से निरमल जो हरि साचे भाए ।
नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ । ८ । १९ ।

गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा[12] । मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ।
मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी गोबिद गुण गावणिआ ।
गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ । १ । रहाउ ।
गोविंदु गावहि सहजि सुभाए । गुर कै भै ऊजल हउमै[13] मलु जाए ।
सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ । २ ।
मनूआ नाचै भगति दृड़ाए । गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ।
सचा तालु पूरे[14] माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ । ३ ।
ऊचा कूके[15] तनहि पछाड़े[16] । माइआ मोहि जोहिआ जमकाले[17] ।
माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ । ४ ।

---

1) अंतर से अहंभाव समाप्त हो गया 2) वहाँ 3) अहंकार 4) शोभा 5) पिरोया जाता है 6) बड़े भाग्य वाले 7) सुंदर, शोभायमान लगते है 8) कभी नहीं 9) द्वैत-भाव 10) स्थान 11) वृद्धि करता फिरे 12) जीवात्मा, गुरमुख व्यक्ति 13) अंहभाव 14) ताल पूरता है 15) चिलाता है 16) शरीर को पृथ्वी पर पछाड़ता है 17) यमकाल ने देख लिया है

गुरमुखि भगति जा आपि कराए । तनु मनु राता सहजि सुभाए ।
बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ[1] पावणिआ । ५ ।
बहु ताल पूरे वाजे वजाए । ना को सुणे न मंनि वसाए ।
माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ[2] दुखु पावणिआ । ६ ।
जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता । इंद्री वसि सचि संजमि जुगता[3] ।
गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा[4] भगति हरि भावणिआ[5] । ७ ।
गुरमुखि भगति जुग चारे होई । होरतु[6] भगति न पाए कोई ।
नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ । ८ । २० ।

सचा सेवी सचु सालाही । सचै नाइ दुखु कबही नाहीं ।
सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ।
जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ । १ । रहाउ ।
सभु को तेरा भगतु कहाए । सेई भगत तेरै मनि भाए ।
सचु बाणी तुधै[7] सालाहनि रंगि राते[8] भगति करावणिआ । २ ।
सभु को सचे हरि जीउ तेरा । गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ।
जा तुधु भावै[9] ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ । ३ ।
गुरमती हरि मंनि वसाइआ । हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ।
इकसु सिउ लिव लागी सदही[10] हरिनामु मंनि वसावणिआ । ४ ।
भगत रंगि राते सदा तेरै चाए[11] । नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ।
पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ । ५ ।
तूं दइआलु सदा सुखदाता । तूं आपे मेलहि गुरमुखि जाता[12] ।
तूं आपे देवहि नामु वडाई[13] नामि रते सुखु पावणिआ । ६ ।
सदा सदा साचे तुधु[14] सालाही । गुरमुखि जाता दूजा[15] को नाही ।
एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ । ७ ।
गुरमुखि होवै सो सालाहे । साचे ठाकुर वेपरवाहे ।
नानक नामु वसै मनि अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ । ८ । २१ ।

1) स्थान 2) द्वैत-भाव 3) संयम-युक्त 4) यही 5) अच्छी लगती है 6) अन्य स्थान से 7) तुम्हें 8) प्रेम रंग में रंगे हुए 9) अच्छा लगे 10) हमेशा, सदा 11) उमंग 12) जान लिया है, पहचान लिया है 13) बड़ाई, प्रतिष्ठा 14) तुम्हें 15) दूसरा

तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे । गुर कै सबदि नामि सवारे ।
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी[1] समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ।
हरि जीउ साचा ऊचो ऊचा हउमै[2] मारि मिलावणिआ । १ । रहाउ ।
हरि जीउ साचा साची नाई[3] । गुरपरसादी किसै मिलाई ।
गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ । २ ।
तुझते बाहरि कछू न होइ । तूं करि करि वेखहि[4] जाणहि सोइ ।
आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ । ३ ।
कामणि गुणवंती हरि पाए । भै भाइ सीगारु बणाए ।
सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ । ४ ।
सबदु विसारनि[5] तिना ठउरु न ठाउ । भ्रमि भूले जिउ सुंञै[6] घरि काउ ।
हलतु पलतु[7] तिनी दोवे गवाए दुखे दुखि विहावणिआ[8] । ५ ।
लिखदिआ लिखदिआ[9] कागद मसु खोइ । दूजै भाइ[10] सुखु पाए न कोई ।
कूड़[11] लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ । ६ ।
गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु । से जन सचे पावहि मोखदुआरु ।
सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ । ७ ।
मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै[12] । गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ।
नानक नामु मिलै वडिआई[13] पूरे गुर ते पावणिआ । ८ । २२ ।

आतमराम परगासु[14] गुर ते होवै । हउमै[15] मैलु लागी गुर सबदी खोवै ।
मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ।
तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरिगुण गावणिआ । १ ।
। रहाउ ।
आपे करता कारणु कराए । जितु भावै तितु कारै लाए[16] ।
पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ । २ ।

1) गुण-निधि, परमात्मा 2) अहंकार 3) नाम 4) देखता है 5) भुला देते हैं 6) शून्य 7) लोक-परलोक 8) व्यतीत करता है 9) लिखते-लिखते 10) द्वैत-भाव 11) झूठ 12) देखता है 13) प्रतिष्ठा 14) प्रकाश 15) अहंकार 16) जैसा उसे अच्छा लगता है, उसी काम में लगाता है

मरि मरि जीवै ता किछु पाए । गुरपरसादी हरि मंनि वसाए ।
सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ । ३ ।
बहु करम कमावै मुकति न पाए । देसंतरु[1] भवै दूजै भाइ[2] खुआए ।
बिरथा[3] जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ । ४ ।
धावतु राखै ठाकि रहाए । गुर परसादी परम पदु पाए ।
सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ । ५ ।
इकि कूड़ि[4] लागे कूड़े फल पाए । दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ।
आपि डुबे सगले कुल डोबे कूडु बोलि बिखु खावणिआ । ६ ।
इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै । भाइ भगति[5] जा हउमै सोखै[6] ।
सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ । ७ ।
आपि कराए करता सोई । होरु कि करे कीतै[7] किआ होई ।
नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ । ८ । २३ ।

इसु गुफा महि अखुट भंडारा[8] । तिसु विचि[9] वसै हरि अलख अपारा ।
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वञावणिआ[10] । १ ।
हउ वारी जीउ वारी अंमृत नामु मंनि वसावणिआ ।
अंमृत नामु महारसु मीठा गुरमती अंमृतु पीआवणिआ । १ । रहाउ ।
हउमै[11] मारि बजर कपाट खुल्हाइआ । नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ।
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिया । २ ।
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ । अंतरि चानणु[12] अगिआनु अंधेरु गवाइआ ।
जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ । ३ ।
सरीरहु भालणि[13] को बाहरि जाए । नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ।
मनमुख[14] अंधे सूझै नाही फिरि घिरि[15] आइ गुरमुखि वथु[16] पावणिआ । ४ ।
गुर परसादी सचा हरि पाए । मनि तनि वेखै[17] हउमै मैलु जाए ।
बैसि सुथानि[18] सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ । ५ ।

---

1) देश-देशांतर 2) द्वैत-भाव 3) व्यर्थ 4) झूठ 5) भाव भक्ति, प्रेम-भक्ति 6) अहंभाव को खत्म करे 7) करने से 8) इस शरीर में न खत्म होने वाला भंडार है 9) उस में 10) अपने-पन की भावना को खत्म करने वाले हैं 11) अहंभाव 12) प्रकाश 13) ढूँढने के लिए 14) दुष्ट पुरुष 15) फिर फिरा कर 16) वस्तु 17) देखे 18) श्रेष्ठ स्थान पर बैठ कर

नउ दर ठाके धावतु[1] रहाए[2] । दसवै निजघरि वासा पाए ।
ओथै[3] अनहद सबद बजहि[4] दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ । ६ ।
बिनुसबदै अंतरि आनेरा[5] । न वसतु लहै[6] न चूकै फेरा ।
सतिगुर हथि[7] कुंजी होरतु[8] दरु खुल्है नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ । ७ ।
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई[9] । गुरपरसादी मिलि सोझी[10] पाई ।
नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ । ८ । २४ ।

गुरमुखि मिलै मिलाए आपे । कालु न जोहै[11] दुखु न संतापे ।
हउमै[12] मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ[13] । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ।
गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि जीवै मरै परवाणु[14] । आरजा न छीजै[15] सबदु पछाणु ।
गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि नामि सुहावणिआ । २ ।
गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए । गुरमुखि विचहु[16] आपु गवाए ।
आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ । ३ ।
गुरमुखि दुखु कदे[17] न लगै सरीरि । गुरमुखि हउमै चूकै पीर ।
गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैल न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ । ४ ।
गुरमुखि नामु मिलै वडिआई[18] । गुरमुखि गुण गावै सोभा पाइ ।
सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ । ५ ।
गुरमुखि अनदिनु सबदे राता[19] । गुरमुखि जुग चारे है जाता[20] ।
गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ । ६ ।
बाझु गुरू है अंध अंधारा । जमकालि गरठे[21] करहि पुकारा ।
अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ । ७ ।
गुरमुखि आपे करे कराए । गुरमुखि हिरदै वुठा[22] आपि आए ।
नानक नामि मिलै वडिआई[23] पूरे गुर ते पावणिआ । ८ । २५ ।

---

1) इधर उधर भागने से 2) रोके 3) वहाँ 4) बजाते हैं 5) अंधकार-युक्त 6) प्राप्त करता है 7) हाथ 8) अन्य स्थान पर 9) सभी स्थानों पर 10) समझ, बोध 11) देखो 12) अहंकार 13) सुंदर, शोभायमान 14) प्रमाणित 15) घटती नहीं 16) अंतर से 17) कभी 18) बड़ाई 19) लीन, मगन 20) जाना जाता है 21) ग्रस्त किया हुआ 22) प्रसन्न होकर बस गया है 23) बड़ाई, प्रतिष्ठा

एका जोति जोति है सरीरा । सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ।
आपे फरकु कीतोनु[1] घटि अंतरि आपे बणत बणावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ।
बाझु[2] गुरु को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ । १ । रहाउ ।
तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि । तूं आपे नदरी[3] जगतु परोवहि[4] ।
तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ । २ ।
आपे करता करे कराए । आपे सबदु गुर मंनि वसाए ।
सबदे उपजै अंमृत बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ । ३ ।
आपे करता आपे भुगता[5] । बंधन तोड़े सदा है मुकता ।
सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ । ४ ।
आपे माइआ आपे छाइआ । आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ।
आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि[6] सुणावणिआ । ५ ।
आपे करे कराए आपे । आपे थापि उथापे आपे[7] ।
तुझ[8] ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै[9] लावणिआ । ६ ।
आपे मारे आपि जीवाए । आपे मेले मेलि मिलाए ।
सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ । ७ ।
आपे ऊचा ऊचो होई । जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई[10] ।
नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ[11] । ८ । २६ ।

मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई[12] । गुर परसादी घर ही महि पाई ।
सदा सरेवी[13] इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी जग जीवनु मंनि वसावणिआ ।
हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ । १ । रहाउ ।
घर महि धरती धउलु पाताला । घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ।
सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ । २ ।

---

1) उसने किया है 2) बिना 3) अपनी कृपा-दृष्टि में 4) पिरोता है 5) भोक्ता 6) कह कर 7) स्वयं ही उत्पन्न करता है और स्वंय ही विलय करता है 8) तुम से 9) काम पर लगने वाला है 10) जिसे स्वंय दिखलाआ है, वही देख पाता है 11) स्वयं देख कर दिखलाने वाला है 12) स्थानों में 13) सेवा करो

काइआ अंदरि हउमै[1] मेरा । जंमण मरणु न चूकै फेरा ।
गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ । ३ ।
काइआ अंदरि पाप पुंनु दुइ[2] भाई । दुही मिलि[3] कै स्रिसटि उपाई[4] ।
दोवै[5] मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ । ४ ।
घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा[6] । चानणु[7] होवै छोडै हउमै मेरा[8] ।
परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ । ५ ।
अंतरि जोति परगटु पासारा । गुर साखी मिटिआ अंधिआरा[9] ।
कमलु बिगासि[10] सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ । ६ ।
अंदरि महल रतनि भरे भंडारा । गुरमुखि पाए नामु अपारा ।
गुरमुखि वणजे[11] सदा वापारी लाहा[12] नामु सद पावणिआ । ७ ।
आपे वथु[13] राखै आपे देइ । गुरमुखि वणजहि केई केइ[14] ।
नानक जिसु नदरि[15] करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ[16] । ८ । २७ ।

हरि आपे मेले सेव कराए । गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए[17] ।
हरि निरमलु सदा गुणदाता हरिगुण महि आपि समावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ।
सचा नामु सदा है निरमलु गुरसबदी मंनि वसावणिआ । १ । रहाउ ।
आपे गुरुदाता करमि बिधाता । सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता[18] ।
अम्रित नामि सदा जन सोहहि[19] गुरमति हरिरसु पावणिआ । २ ।
इसु गुफा[20] महि इकु थानु सुहाइआ[21] । पूरै गुरि हउमै[22] भरमु चुकाइआ ।
अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ । ३ ।
गुर कै सबदि इहु[23] गुफा वीचारे । नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ।
हरिगुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ । ४ ।
जमु जागाती[24] दूजै भाइ[25] करु लाए । नावहु भूले देइ सजाए ।
घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ[26] । ५ ।

---

1) अहं-भाव 2) दोनों 3) दोनों ने मिलकर 4) उत्पन्न की 5) दोनों को 6) द्वैत-भाव के कारण अंधकार है 7) प्रकाश 8) अहंकार और अपनेपन की भावना 9) अज्ञान का अंधकार समाप्त हो गया 10) विकसित होने पर 11) वाणिज्य करता है 12) लाभ 13) वस्तु 14) कोई-कोई 15) कृपा-दृष्टि 16) बसाने वाला है 17) द्वैत-भाव चला जाता है 18) जान लिया है 19) शोभायमान है 20) शरीर 21) स्थान सुशोभित है 22) अहंभाव 23) यह 24) कर लगाने अथवा प्राप्त करने वाला यम 25) द्वैत-भाव 26) निकाल लेता है, लेखा पूरा कर लेता है

पेईअड़ै पिरु चेते नाही[1] । दूजै मुठी रोवै धाही[2] ।
खरी कुआलिओ[3] कुरूपि कुलखणि सुपनै पिरु नही पावणिआ । ६ ।
पेईअड़ै[4] पिरु मंनि वसाइआ । पूरै गुरि हदूरि[5] दिखाइआ ।
कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै[6] सेज सुहावणिआ । ७ ।
आपे देवै सदि बुलाए । आपणा नाउ मंनि वसाए ।
नानक नामु मिलै वडिआई[7] अनदिनु[8] सदा गुण गावणिआ । ८ । २८ ।

ऊतम जनमु सुथानि[9] है वासा[10] । सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ।
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते[11] हरि रसि मनु तृपतावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ।
गुरमुखि पड़हि हरिनामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ । १ । रहाउ ।
अलख अमेउ[12] हरि रहिआ समाए । उपाए न किती[13] पाइआ जाए ।
किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी[14] मेलि मिलावणिआ । २ ।
दूजै भाइ[15] पड़ै नही बूझै । त्रिविधि माइआ कारणि लूझै ।
त्रिविधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ । ३ ।
इहु[16] मनु चंचलु वसि[17] न आवै । दुविधा[18] लागै दहदिसि धावै ।
बिखु का कीड़ा बिखु महि राता[19] बिखु ही माहि पचावणिआ । ४ ।
हउ हउ करे तै आपु जणाए[20] । बहु करम करै किछु थाइ[21] न पाए ।
तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे[22] सबदि सुहावणिआ । ५ ।
उपजै पचै हरि बूझै नाही । अनदिनु दूजै भाइ[23] फिराही ।
मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ । ६ ।
पिरु परदेसि सिगारु[24] बणाए । मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ।
हलति न सोभा पलति न ढोई[25] बिरथा जनमु गवावणिआ । ७ ।
हरि का नामु किनै विरलै जाता । पूरे गुर कै सबदि पछाता[26] ।
अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ । ८ ।

---

1) मायके घर में प्रियतम याद नहीं 2) द्वैत-भाव में ठगे जाने के फलस्वरुप ढाड़ मार कर रो रही है 3) बहुत नीच कुटुंब से सम्बंधित 4) मायके 5) पास ही, सामने 6) रमण करती है 7) बड़ाई 8) प्रतिदिन 9) सुस्थान 10) निवास 11) प्रेम में अनुरक्त 12) जिसका भेद न पाया जा सके 13) किसी 14) कृपा-दृष्टि 15) द्वैत-भाव 16) यह 17) काबू, वश 18) द्विविधा 19) लीन 20) अहंकार में ग्रस्त होता है 21) स्थान 22) कृपा करे 23) द्वैत-भाव 24) श्रृंगार 25) आश्रय 26) पहचाना है

सभ महि बरतै[1] एको सोई । गुरमुखि विरला बूझै कोई ।
नानक नामि रते[2] जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ । ९ । २९ ।

मनमुख पड़हि पंडित कहावहि । दूजै भाइ[3] महा दुखु पावहि ।
बिखिआ माते[4] किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी हउमै[5] मारि मिलावणिआ ।
गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ । १ । रहाउ ।
वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ । वादु वखाणहि[6] मोहे माइआ ।
अगिआन मती[7] सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ । २ ।
अकथो कथीऐ[8] सबदि सुहावै गुरमति मनि सचो भावै[9] ।
सचो सचु रवहि दिनु राती इहु[10] मनु सचि रंगावणिआ । ३ ।
जो सचि रते[11] तिन सचो भावै । आपे देइ न पछोतावै ।
गुर कै सबदि सदा सचु जाता[12] मिलि सचे सुखु पावणिआ । ४ ।
कूड़ु कुसतु[13] तिना मैलु न लागै । गुर परसादी अनदिनु जागै ।
निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ । ५ ।
त्रैगुण पड़हि हरि ततु न जाणहि । मूलहु भुले[14] गुर सबदु न पछाणहि ।
मोह बिआपे किछु सूझै नाहि गुर सबदी हरि पावणिआ । ६ ।
वेदु पुकारे त्रिबिधि माइआ । मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ[15] ।
त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि । बिनु बूझे दुखु पावणिआ । ७ ।
जा तिसु भावै ता आपि मिलाए । गुर सबदी सहसा[16] दूखु चुकाए ।
नानक नावै की सची वडिआई[17] नामो मंनि सुखु पावणिआ । ८ । ३० ।

निरगुणु सरगुणु आपे सोई । ततु पछाणै सो पंडितु होई ।
आपि तरै सगले कुल तारै हरिनामु मंनि वसावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी जीउ वारी हरिरसु चखि सादु[18] पावणिआ ।
हरिरसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ । १ । रहाउ ।

---

1) व्याप्त हैं 2) लीन, अनुरक्त 3) द्वैत-भाव 4) लीन, मस्त 5) अहंभाव 6) वाद-विवाद का बखान करते हैं 7) बुद्धि 8) अकथनीय का कथन किया जाए 9) अच्छा लगे 10) यह 11) अनुरक्त 12) जाना जाता है 13) झूठ एवं असत्य 14) भूले हुए 15) द्वैत-भाव के फलस्वरूप 16) संशय, संदेह 17) वड़ाई 18) स्वादन

सो निहकरमी[1] जो सबदु बीचारे । अंतरि ततु गिआनि हउमै[2] मारे ।
नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ । २ ।
हउमै करै निहकरमी न होवै । गुर परसादी हउमै खोवै ।
अंतरि बिबेकु सदा आपु बीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ । ३ ।
हरि सरु सागरु निरमलु सोई । संत[3] चुगहि नित गुरमुखि होई ।
इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ । ४ ।
निरमल हंसा[4] प्रेम पिआरि । हरि सरि[5] वसै हउमै मारि ।
अहिनिसि[6] प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ । ५ ।
मनमुखु सदा बगु[7] मैला हउमै[8] मलु लाई । इसनानु करै पर मैलु न जाई ।
जीवतु मरै गुरसबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ । ६ ।
रतनु पदारथु घर ते पाइआ । पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ।
गुरपरसादि मिटिआ अंधिआरा घटि[9] चानणु[10] आपु पछानणिआ[11] । ७ ।
आपि उपाए तै आपे वेखै[12] । सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ।
नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ । ८ । ३१ ।

माइआ मोहु जगतु सबाइआ[13] । त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ।
गुरपरसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ । १ ।
हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ।
माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली[14] सोभा
पावणिआ । १ । रहाउ ।
देवी देवा मूलु है माइआ । सिंमृति सासत जिनि उपाइआ[15] ।
कामु क्रोधु पसरिआ[16] संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ । २ ।
तिसु विचि[17] गिआन रतनु इकु पाइआ । गुर परसादि मंनि वसाइआ ।
जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ । ३ ।
पेईअड़ै[18] धन भरमि भुलाणी[19] । दूजै[20] लागी फिरि पछोताणी ।
हलतु पलतु[21] दोवै गावाए सुपनै सुखु न पावणिआ । ४ ।

---

1) कर्म-बंधन से मुक्त 2) अहंभाव 3) संत रूप हंस व्यक्ति 4) निर्मल साधु व्यक्ति अथवा साधक 5) हरि रूप सरोवर 6) दिन-रात 7) बगला 8) अहंभाव 9) शरीर 10) प्रकाश 11) पहचाना है 12) देखता है 13) समस्त 14) परमधाम 15) पैदा किए हैं 16) फैला हुआ है 17) उस में 18) मायके घर 19) भूली हुई 20) द्वैत-भाव 21) लोक तथा परलोक

पेईअड़ै धन कंतु समाले[1] । गुर परसादी वेखै नाले[2] ।
पिरे कै सहजि रहै रंगि राती[3] सबदि सिंगारु बणाणिआ[4] । ५ ।
सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ । दूजा भाउ[5] गुर सबदि जलाइआ ।
एको रवि रहिआ[6] घट अंतरि मिली सत संगति हरिगुण गावणिआ । ६ ।
सतिगुरु न सेवे सो काहे आइआ[7] ध्रिगु जीवणु[8] बिरथा जनमु गवाइआ ।
मनमुखि नाम चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ । ७ ।
जिनि सिसटि[9] साजी सोई जाणै । आपे मिलै सबदि पछाणै ।
नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि[10] मसतकि लेखु लिखावणिआ ।
। ८ । १ । ३२ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ११०-१२९)

सलोक*

कलि कीरति[11] परगटु चानणु[12] संसारि ।
गुरमुखि[13] कोई उतरै पारि ।
जिस नो नदरि[14] करे तिसु देवै ।
नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै । १ । (१६)§

भै विचि जंमै[15] भै मरै भी भउ[16] मन महि होइ ।
नानक भै विचि[17] जे मरै सहिला[18] आइआ सोइ । २ । (२५)

भै विणु[19] जीवे बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ।
नानक भै विणु जे मरै मुहि काले उठि जाए[20] । ३ । (२५)

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ १४५, १४९)

---

1) मायके में स्त्री रूप साधक पति-परमात्मा का स्मरण करता है 2) अपने साथ देखता है 3) प्रेम में अनुरक्त 4) बनाने वाला है 5) द्वैत-भाव 6) व्याप्त है 7) संसार में किस लिए आया है 8) ऐसे जीवन को धिक्कार है 9) सृष्टि 10) परमात्मा के द्वार से ही *ये श्लोक माझ की वार म. १ से लिए गए हैं 11) कीर्ति, यश 12) प्रकाश 13) आध्यात्मिक साधक 14) कृपा-दृष्टि §कोष्ठकों में लिखे अंक सम्बंधित पौड़ी-पदों के हैं 15) जो परमात्मा के भय में ही जन्म लेता है 16) भय 17) में, अन्दर 18) सफल 19) बिना 20) वह इस संसार से मुँह काला कर के विदा होता है

१ ओ सतिगुर प्रसादि

रागु गउड़ी

चउपदे गउड़ी गुआरेरी

गुरि मिलिऐ हरि मेला[1] होई ।
आपे मेलि मिलावै सोई ।
मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै[2] ।
हुकमे मेले सबदि पछाणै । १ ।
सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ[3] ।
भै राचै[4] सच रंगि समाइ । १ । रहाउ ।
गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ।
मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ।
सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ।
मेरा प्रभु बखसे[5] बखसणहारु[6] । २ ।
गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ।
मनि निरमलि वसै[7] सचु सोइ ।
साचि वसिऐ साची सभ कार[8] ।
उतम करणी सबद बीचार । ३ ।
गुर ते साची सेवा होइ ।
गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ।
जीवै दाता देवणहारु[9] ।
नानक हरिनामे लगै पिआरु । ४ । १ ।

---

1) मिलाप, मिलन 2) स्वयं जानता है 3) सद्‌गुरु के भय के द्वारा सांसारिक भ्रम नष्ट होता है 4) मगन होना 5) कृपा करता है 6) कृपालु 7) बसता है 8) काम, कर्म 9) देने वाला, प्रदाता

गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ।
गुर ते बूझै सीझै[1] सोइ ।
गुर ते सहजु साचु बीचारु ।
गुर ते पाए मुकति दुआरु । १ ।
पूरै भागि मिलै गुरु आइ ।
साचै सहजि साचि समाइ[2] । १ । रहाउ ।
गुरि मिलिऐ तृसना अगनि बुझाए ।
गुर ते सांति वसै मनि आए[3] ।
गुर ते पवित पावन सुचि[4] होइ ।
गुर ते सबदि मिलावा होइ । २ ।
बाझु गुर सभ भरमि भुलाई ।
बिनु नावै बहुता दुखु पाई ।
गुरमुखि[5] होवै सु नामु धिआई ।
दरसनि सचै सची पति[6] होई । ३ ।
किस नो कहीए दाता इकु[7] सोई ।
किरपा करे सबदि मिलावा होई ।
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ।
नानक साचे साचि समावा । ४ । २ ।

सु थाउ[8] सचु मनु निरमलु होइ ।
सचि निवासु करे सचु सोइ ।
सची बाणी जुग चारे जापै[9] ।
सभु किछु साचा आपे आपै । १ ।
करमु[10] होवै सतसंगि मिलाए ।
हरिगुण गावै बैसि सु थाए[11] । १ । रहाउ ।

---

1) सफल मनोरथ होता है 2) समाहित होता है 3) शांति मन में बस जाती है 4) पवित्रता 5) गुरु के उपदेश के अनुसार चलने वाला 6) प्रतिष्ठा 7) एक 8) वह स्थान, अर्थात् सत्संगति 9) प्रतीत होती है, जानी जाती है 10) भाग्य 11) अच्छे स्थान पर बैठ कर, अर्थात् सत्-संगति में

जलउ इह जिहवा दूजै भाइ[1] ।
हरि रसु न चाखै फीका आलाइ[2] ।
बिनु बूझै तनु मनु फीका होइ ।
बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ । २ ।
रसना हरिरसु चाखिआ सहजि सुभाइ ।
गुर किरपा ते सचि समाइ ।
साचे राती[3] गुर सबदु वीचार ।
अंमृत पीवै निरमल धार[4] । ३ ।
नामि समावै जो भांडा होइ[5] ।
ऊंधै भांडे[6] टिकै न कोइ ।
गुरसबदी मनि नामि निवासु ।
नानक सचु भांडा[7] जिसु सबद पिआस । ४ । ३ ।

इकि[8] गावत रहे मनि सादु न पाइ ।
हउमै विचि[9] गावहि बिरथा जाइ ।
गावणि गावहि[10] जिन नाम पिआरु ।
साची बाणी सबद बीचारु । १ ।
गावत रहै जे सतिगुर भावै[11] ।
मनु तनु राता[12] नामि सुहावै[13] । १ । रहाउ ।
इकि गावहि इकि भगति करेहि ।
नामु न पावहि बिनु असनेह[14] ।
सची भगति गुर सबद पिआरि ।
अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि । २ ।
भगति करहि मूरख आपु जणावहि[15] ।
नचि नचि टपहि[16] बहुतु दुखु पावहि ।

---

1) द्वैत-भाव 2) फीका बोलती है 3) अनुरक्त 4) निर्मल धारा वाला 5) जो उचित पात्र (अर्थात् शुद्ध हृदय वाला) होता है, वही नाम में समाहित होता है 6) उलटा पात्र, अर्थात् मनमुख (दुष्ट) व्यक्ति 7) पात्र 8) एक 9) अहंभाव में 10) वही यशगान कर सकता है 11) अच्छा 12) अनुरक्त 13) सुशोभित है 14) स्नेह, प्रेम 15) अपने आप का प्रदर्शन करता है 16) नाच नाच कर उछलता है

नचिऐ टपिऐ[1] भगति न होइ ।
सबदि मरै भगति पाए जनु सोइ । ३ ।
भगति वछलु[2] भगति कराए सोइ ।
सची भगति विचहु आपु खोइ[3] ।
मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै[4] ।
नानक बखसे[5] नामु पछाणै । ४ । ४ ।

मनु मारे धातु[6] मरि जाइ ।
बिनु मूए कैसे हरि पाइ ।
मनु मरै दारु[7] जाणै कोइ ।
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ । १ ।
जिस नो बखसे दे वडिआई[8] ।
गुर परसादि हरि वसै मनि आई । १ । रहाउ ।

गुरमुखि करणी कार कमावै ।
ता इसु मन की सोझी पावै ।
मनु मै मतु मैगल मिकदारा[9] ।
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा[10] । २ ।
मनु असाधु[11] साधै जनु कोइ ।
अचरु चरै[12] त निरमलु होइ ।
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ।
हउमै विचहु तजे विकार[13] । ३ ।
जो धुरि[14] राखिअनु मेलि मिलाइ ।
कदे[15] न विछुड़हि सबदि समाइ ।
आपणी कला आपे ही जाणै ।
नानक गुरमुखि नामु पछाणै । ४ । ५ ।

हउमै विचि[16] सभु जगु बउराना[17] ।
दूजै भाइ[18] भरमि भुलाना ।

---

1) नाचने और उछलने से 2) परमात्मा 3) सच्ची भक्ति साधक के मन से अपने-पन की भावना को समाप्त कर देती है 4) जानता है 5) कृपा करे 6) इधर उधर भागने की रुचि, चंचलता 7) दवाई; उपचार 8) जिस पर कृपा करता है, उसी को बड़ाई देता है 9) मन मद-मस्त हाथी के समान है 10) जीवत करने वाला है 11) न साधा जा सकने वाला 12) न चरी जा सकने वाली वस्तु (विषय) को चरे, अर्थात् नष्ट करे 13) अंहभाव और विकार को हृदय में से त्याग दे 14) प्रभु द्वार से 15) कभी 16) अंहभाव में 17) पागल 18) द्वैत-भाव

बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ।
धंधा करतिआ अनदिनु विहाना । १ ।
हिरदै रामु रमहु[1] मेरे भाई ।
गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई[2] । १ । रहाउ ।
गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ।
कृपा करे प्रभ करम बिधाता । २ ।
से जन सचे जो गुरसबदि मिलाए ।
धावत बरजे ठाकि रहाए[3] ।
नामु नव निधि गुर ते पाए ।
हरि किरपा ते हरि वसै[4] मनि आए । ३ ।
राम राम करतिआ[5] सुख सांति सरीर ।
अंतरि वसै न लागै जम पीर ।
आपे साहिबु आपि वजीरु ।
नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर[6] । ४ । ६ ।

सो किउ विसरै[7] जिस के जीअ पराना ।
सो किउ विसरै सभ माहि समाना[8] ।
जितु सेविऐ दरगह पति परवाना[9] । १ ।
हरि के नाम विटहु[10] बलि जाउ ।
तूं विसरहि तदि[11] ही मरि जाउ । १ । रहाउ ।
तिन तूं विसरहि जि तुधु[12] आपि भुलाए ।
तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए[13] ।
मन मुख आगिआनी जोनी पाए । २ ।
जिन इक मनि तुठा[14] से सतिगुर सेवा लाए ।
जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ।
गुरमती हरि नामि समाए । ३ ।

---

1) स्मरण करो 2) हरि-नाम में रस-लीन हो गई 3) इधर उधर भागने से मन को रोक कर हरि-भक्ति में स्थित किया जाता है 4) बस जाता है 5) जाप करने से 6) गंभीर गुणों वाला, परमात्मा 7) भूले, भूला जाए 8) समाया हुआ है 9) परमधाम में प्रतिष्ठा और प्रामाणिकता प्राप्त हो 10) ऊपर से 11) तभी 12) तुम ने 13) द्वैत-भाव 14) प्रसन्न हुआ

जिना पोतै[1] पुंनु से गिग्रान बीचारी ।
जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी[2] ।
नानक जो नामि रते[3] तिन कउ बलिहारी । ४ । ७ ।

तूं अकथु[4] किउ कथिग्रा जाहि ।
गुर सबदु मारणु[5] मन माहि समाहि ।
तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि । १ ।
जिस की बाणी तिसु माहि समाणी[6] ।
तेरी अकथ कथा गुर सबदि बखाणी[7] । १ । रहाउ ।
जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ।
जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ।
जह सतिगुरु तहा हउमै[8] सबदि जलाई । २ ।
गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए[9] ।
गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ।
गुरमुखि भगति हरि नामि समाए । ३ ।
आपे दाति करे दातारु ।
पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ।
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु । ४ । ८ ।

एकसु ते सभि रूप हहि रंगा[10] ।
पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा[11] ।
भिन भिन वेखै[12] हरिप्रभु रंगा । १ ।
एकु अचरजु[13] एको है सोई ।
गुरमुखि वीचारे विरला कोई । १ । रहाउ ।
सहजि भवै प्रभु सभनी थाई[14] ।
कहा गुपतु प्रगटु बणत बणाई[15] ।
आपे सुतिआ[16] देह जगाई । २ ।

---

1) खजाने में, भाग्य में 2) अहंभाव का विनाश कर दिया 3) लीन, अनुरक्त 4) अकथनीय, अवर्णनीय 5) मन की दुर्भावना को नष्ट करने वाली वस्तु अथवा मसाला 6) समाहित है 7) बखान की है 8) अहं-भाव 9) परम-धाम में स्थान प्राप्त होता है 10) अनेक प्रकार के जीव 11) साथ जुड़े हुए परस्पर सम्बन्धित 12) देखे 13) आश्चर्य 14) स्थान 15) सृष्टि की रचना कर रखी है 16) सोए हुए को

तिस की कीमति किनै न होई[1] ।
कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ।
गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई । ३ ।
सुणि सुणि वेखै[2] सबदि मिलाए ।
वडी वडिआई[3] गुर सेवा ते पाए ।
नानक नामि रते[4] हरि नामि समाए । ४ । ९ ।

मन मुखि सूता[5] माइआ मोहि पिआरि ।
गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ।
से जन जागे जिन नाम पिआरि । १ ।
सहजे जागै सवै न कोइ[6] ।
पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ । १ । रहाउ ।
असंतु अनाड़ी कदे न बूझै[7]।
कथनी करे तै माइआ नालि लूझै[8] ।
अंधु अगिआनी कदे न सीझै[9] । २ ।
इसु जुग महि रामनामि निसतारो ।
विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ।
आपि तरै सगले कुल उधारा । ३ ।
इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ।
कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ।
नानक नाम बिना को मुकति न होई । ४ । १० ।

सचा अमरु सचा पातिसाहु ।
मनि साचै राते[10] हरि वेपरवाहु ।
सचै महलि[11] सचि नामि समाहु । १ ।
सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ।
राम जपहु भवजलु[12] उतरहु पारि । १ । रहाउ ।

---

1) उस का किसी द्वारा मूल्यांकन नहीं हो पाता 2) देखता है 3) बहुत प्रतिष्ठा 4) लीन, अनुरक्त 5) सोया हुआ 6) फिर कोई सो नहीं पाता 7) कभी समझ नहीं पाता 8) के साथ झगड़ा करता है, उसके प्रभाव में रहता है 9) सफल मनोरथ 10) अनुरक्त 11) परमधाम 12) भवसागर

भरमे[1] आवै भरमे जाइ ।
इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ[2] ।
मनमुखि न चेतै आवै जाइ । २ ।
आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ।
इहु जीउ विडाणी चाकरी[3] लाइआ ।
महा दुखु खटे[4] बिरथा जनमु गवाइआ । ३ ।
किरपा करि सतिगुरु मिलाए ।
एको नामु चेते विचहु[5] भरमु चुकाए ।
नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए । ४ । ११ ।

जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ।
गुर सेवा ते मनु पतीआइ[6] ।
से धनवंत[7] हरि नामु कमाइ ।
पूरे गुर ते सोझी पाइ । १ ।
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ।
गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई[8] । १ । रहाउ ।
आपु पछाणे मनु निरमलु होइ ।
जीवन मुकति हरि पावै सोइ ।
हरिगुण गावै मति ऊतम होइ ।
सहजे सहजि समावै सोइ । २ ।
दूजै भाइ[9] न सेविआ जाइ ।
हउमै[10] माइआ महा बिखु खाइ ।
पुति[11] कुटंबि गृहि मोहिआ माइ[12] ।
मनमुखि[13] अंधा आवै जाइ । ३ ।
हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ।
अनदिनु[14] भगति गुर सबदी होइ ।

1) भ्रम में 2) द्वैत-भाव 3) दूसरे (अन्य) की नौकरी में लगाया है 4) कमाता है 5) अंतर से 6) पतियाता है, विश्वास करता है 7) धनवान् हैं 8) साधना सफल मनोरथ होती है 9) द्वैत-भाव 10) अहंभाव 11) पुत्र 12) माया 13) दुष्ट व्यक्ति 14) प्रतिदिन

गुरमति विरला बूझै कोइ ।
नानक नामि समावै सोइ । ४ । १२ ।

गुर सेवा जुग चारे होइ ।
पूरा जनु कार[1] कमावै कोई ।
अखुटु[2] नाम धनु हरि तोटि[3] न होई ।
ऐथे[4] सदा सुखु दरि[5] सोभा होई । १ ।
ए मन मेरे भरमु न कीजै ।
गुरमुखि सेवा अंमृत रसु पीजै । १ । रहाउ ।
सतिगुरु सेवहि से महा पुरख संसारे ।
आपि उधरे कुल सगल निसतारे ।
हरि का नामु रखहि उरधारे ।
नामि रते[6] भउजल उतरहि पारे । २ ।
सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ।
हउमै मारि कमलु परगासा[7] ।
अनहदु वाजै निजघरि वासा ।
नामि रते घरि माहि उदासा । ३ ।
सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ।
जुगु जुगु भगति आखि वखाणी[8] ।
अनदिनु[9] जपहि हरि सारंगपाणी[10] ।
नानक नामि रते निहकेवल[11] निरवाणी[12] । ४ । १३ ।

सतिगुरु मिलै वडभागि[13] संजोग ।
हिरदै नामु नित हरि रस भोग । १ ।
गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ।
जनमु जीति लाहा[14] नामु पाइ । १ । रहाउ ।
गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ।
गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा[15] । २ ।

---

1) कर्म, शुभ कार्य 2) न समाप्त होने वाला 3) कमी 4) यहां 5) परमधाम में 6) अनुरक्त 7) अहंभाव को मारने से हृदय रूप कमल विकसित हो जाता है 8) कह कर बखान की जाती है 9) प्रतिदिन 10) परमात्मा 11) निष्केवल, निर्लिप्त 12) निर्वाण त्यागी, 13) बड़े भाग्य के कारण 14) लाभ 15) चख कर देखा है

करम कांड बहु करहि अचार ।
बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार । ३ ।
बंधन बाधिओ माइआ फास ।
जन नानक छूटै गुरु परगास । ४ । १४ ।

गउड़ी बैरागणि

जैसी धरती ऊपरि मेघुला[1] बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ।
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ[2] बिनु पगा[3] बरसत फिराही । १ ।
बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ।
जो किछु करतु है सोइ कोई है रे तैसे जाइ समाही । १ । रहाउ ।
इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ[4] करम कमाही ।
नाना रूप सदा हहि तेरे तुझही माहि समाही । २ ।
इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ।
जा का कारजु सोइ परुजाणै[5] जे गुर कै सबदि समाही । ३ ।
तेरा सबदु तूंहै[6] हहि आपे भरमु कहा ही ।
नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि[7] जनमि न आही । ४ । १ । १५ ।

सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ[8] ।
हउमै[9] करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाई । १ ।
मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ।
गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह[10] लए छडाइ । १ । रहाउ ।
लख चउरासीह भरमदे मन हठि आवै जाइ ।
गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ । २ ।
गुरमुखि आपु पछाणिआ हरिनामु वसिआ मनि आइ ।
अनदिनु[11] भगती रतिआ हरिनामे सुखि समाइ । ३ ।
मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ।
जन नानक करमी पाईअनि हरिनामा भगति भंडार । ४ । २ । १६ ।

पेईअड़ै[12] दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ।
सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ।
पेवकड़ै[13] गुण संमलै[14] साहुरै वासु पाइआ ।
गुरमुखि सहजि समाणीआ[15] हरि हरि मनि भाइआ । १ ।

---

1) मेघ, बादल 2) प्रकट हैं 3) बिना पैरों के, बिना आधार के 4) वे 5) भली भांति जानता है 6) तुम ही 7) पुन:, फिर 8) द्वैत-भाव 9) अहंभाव 10) दरगाह में, धर्मराज की कचहरी से 11) प्रतिदिन 12) मायके 13) मायके 14) स्मरण करे 15) समाहित हो गई

ससुरै पेईऐ[1] पिरु वसे कहु कितु बिधि पाईऐ ।
आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ । १ । रहाउ ।
आपे ही प्रभु देहि मति हरिनामु धिआईऐ ।
वडभागी[2] सतिगुरु मिलै मुखि अंमृतु पाईऐ ।
हउमै दुबिधा बिनसि[3] जाइ सहजे सुखि समाईऐ ।
सभु आपे आपि वरतदा[4] आपे नाइ[5] लाईऐ । २ ।
मनमुखि[6] गरबि न पाइओ अगिआन इआणे[7] ।
सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ।
गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे[8] ।
मेरे करते एवै भावदा[9] मनमुख भरमाणे[10] । ३ ।
मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि[11] मसतकि पूरा ।
हरि हरि प्रभि लेखु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ।
मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा[12] ।
हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा[13] । ४ । ३ । १७ ।
सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ।
मति मलीण[14] परगटु भई जपि नामु मुरारा ।
सिवि[15] सकति[16] मिटाईआ चूका अंधिआरा ।
धुरि[17] मसतकि जन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा । १ ।
हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ।
हरि बिनु चसा[18] न जीवती गुर मेलिहु हरिरसु पीवा । १ । रहाउ ।
हउ हरिगण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति[19] कीनी ।
हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी[20] ।
धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ।
जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी । २ ।
गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ।
पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ।

---

1) ससुराल और मायके में, अर्थात् लोक परलोक में 2) श्रेष्ठ भाग्य वाले 3) अहंभाव और द्विविधा नष्ट हो जाती हैं 4) व्याप्त हैं 5) नाम 6) दुष्ट व्यक्ति 7) ना-समझ 8) गल जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं 9) इसी प्रकार अच्छा लगता है 10) भ्रमग्रस्त हैं 11) आदि से ही, परमधाम से ही 12) भाई 13) कीड़ा, कीट 14) मलिन, मलीन 15) परमात्मा 16) माया 17) आदिकाल से, परमधाम से 18) क्षण भर 19) मुक्तावस्था 20) लीन हो गया है

तूं[1] गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ।
हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे । ३ ।
सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ।
सजणु हरिप्रभु पाइआ घरि सोहिला[2] गाइआ ।
हरि दइया धारि प्रभ बेनती[3] हरि हरि चेतइआ ।
जन नानकु मंगै धूड़ि[4] तिन जिन सतिगुरु पाइआ । ४ । ४ । १८ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १५७-१६३)

गुआरेरी असटपदीआ गउड़ी

मन का सूतकु दूजा भाउ[5] ।
भरमे भूले आवउ जाउ । १ ।
मनमुखि[6] सूतकु कबहि न जाइ ।
जिचरु[7] सबदि न भीजै हरि क नाइ[8] । १ । रहाउ ।
सभो सूतकु जेता[9] मोहु आकारु ।
मरि मरि जंमै वारो वार[10] । २ ।
सूतकु अगनि पउणै[11] पाणी माहि ।
सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि । ३ ।
सूतकि करम न पूजा होइ ।
नामि रते[12] मनु निरमलु होइ । ४ ।
सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ।
मरै न जनमै कालु न खाइ । ५ ।
सासत सिमृति सोधि देखहु कोइ ।
विणु नावै को मुकति न होइ । ६ ।

1) तुम 2) खुशी का गीत, हरि-कीर्ति 3) विनय 4) चरणधूलि 5) द्वैत-भाव 6) दुष्ट व्यक्ति 7) जब तक 8) हरि के नाम में कैसे लग सकता है 9) जितना 10) बार-बार 11) पवन, वायु 12) अनुरक्त, लीन

जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ।
कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि । ७ ।
साचा मरै न आवै जाए ।
नानक गुरमुखि रहै समाइ । ८ । १ ।
गुरमुखि[1] सेवा प्रान अधारा ।
हरि जीउ राखहु हिरदै उरधारा ।
गुरमुखि सोभा साच दुआरा । १ ।
पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ।
गुरमुखि भउजलु[2] उतरहु पारा । १ । रहाउ ।
गुरमुखि विचहु हउमै जाइ[3] ।
गुरमुखि मैलु न लागै आइ ।
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ । २ ।
गुरमुखि करम धरम सचि होई ।
गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई[4] ।
गुरमुखि नामि रते[5] सुखु होई । ३ ।
आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ।
लोक समझावहु सुणे न कोई ।
गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई । ४ ।
मनमुखि डंफु[6] बहुतु चतुराई ।
जो किछु कमावै सु थाइ न पाइ[7] ।
आवै जावै ठउर न काई । ५ ।
मनमुख करम करे बहुत अभिमाना ।
बग[8] जिउ लाइ बहै नित धिआना ।
जमि पकड़िआ तब ही पछुताना । ६ ।
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ।

1) गुरु के उपदेश अनुसार आचरण करने वाला व्यक्ति 2) संसार सागर 3) भीतर से अहंभाव नष्ट हो जाता है 4) द्वैत-भाव 5) अनुरक्त 6) दंभ, पाखंड, दिखावा 7) सफल नहीं होता 8) बगला

गुर दाता जुग चारे होई । ७ ।
गुरमुखि जाति पति[1] नामे वडिआई[2] ।
साइर की पुत्री बिदारि गवाई[3] ।
नानक बिनु नावै झूठी चतुराई । ८ । २ ।

इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ।
पूरै गुरि सभ सोझी[4] पाई ।
ऐथै अगै[5] हरिनामु सखाई[6] । १ ।
राम पड़हु मनि करहु बीचारु ।
गुरपरसादी मैलु उतारु । १ । रहाउ ।
वादि विरोधि न पाइआ जाइ ।
मनु तनु फीका दूजै भाइ[7] ।
गुर कै सबदि सचि लिव लाइ । २ ।
हउमै[8] मैला इहु[9] संसारा ।
नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ।
बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा । ३ ।
सो जनु साचा जि हउमै मारै ।
गुर कै सबदि पंच संघारै[10] ।
आपि तरै सगले कुल तारै । ४ ।
माइआ मोहि नटि बाजी[11] पाई ।
मनमुख[12] अंध रहे लपटाई ।
गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई । ५ ।
बहुते भेख करै भेखधारी ।
अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ।
आपु न चीनै बाजी हारी । ६ ।

---

1) प्रतिष्ठा 2) बड़ाई 3) समुद्र की पुत्री माया को मार कर भगा दिया है, अर्थात् माया के प्रभाव से मुक्त हो गया है 4) सूझ, समझ 5) यहाँ और वहाँ, लोक परलोक में 6) मित्र, सहायक 7) द्वैत-भाव 8) अहंभाव 9) यह 10) कामादिक पाँच विकारों को मार दे 11) नट के खेल के समान 12) दुष्ट व्यक्ति

कापड़[1] पहिरि करे चतुराई ।
माइआ मोहि अति भरमि भुलाइ ।
बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई । ७ ।
नामि रते[2] सदा बैरागी ।
ग्रिही अंतरि साचि लिव लागी ।
नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी[3] । ८ । ३ ।

ब्रह्मा मूलु वेद अभिआसा ।
तिस से उपजे देव मोह पिआसा ।
त्रै गुण भरमै नाही निजघरि वासा । १ ।
हम हरि राखे सतिगुरु मिलाइआ ।
अनदिनु[4] भगति हरिनामु दृड़ाइआ । १ । रहाउ ।
त्रैगुण बाणी ब्रहम जंजाला ।
पड़ि वादु वखाणहि[5] सिरि मारे जमकाला ।
ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला[6] । २ ।
मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ।
हरिनामु विसारिआ[7] बहु करम दृड़ाए ।
भवजलि डूबे दूजै भाए[8] । ३ ।
माइआ का मुहताजु[9] पंडितु कहावै ।
बिखिआ राता[10] बहुतु दुखु पावै ।
जम का गलि जेवड़ा[11] नित कालु संतावै । ४ ।
गुरमुखि जमकालु नेड़ि[12] न आवै ।
हउमै दूजा[13] सबदि जलावै ।
नामे राते हरिगुण गावै । ५ ।
माइआ दासी भगता की कार कमावै ।
चरणी लागै ता महलु[14] पावै ।
सद ही निरमलु सहजि समावै । ६ ।

1) वस्त्र, वेश 2) अनुरक्त 3) श्रेष्ठ भाग्य वाला 4) प्रतिदिन 5) बखान करता है 6) धान के फूस की गट्ठरी 7) भुलाकर 8) द्वैत-भाव 9) वशीभूत 10) लीन, मगन 11) रस्सा, फंदा 12) समीप 13) अहं एवं द्वैत-भाव 14) परमधाम

हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि[1] जुग माही ।
तिन कउ सभि निवहि[2] अनदिनु[3] पूज कराही ।
सहजे गुण रवहि[4] साचे मन माही । ७ ।
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ।
त्रैगुण मेटे चउथै चितु लाइआ ।
नानक हउमै[5] मारि ब्रह्म मिलाइआ । ८ । ४ ।

गउड़ी

ब्रह्मा वेदु पड़ै वादु वखाणै[6] ।
अंतरि तामसु आपु न पछाणै ।
ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै[7] । १ ।
गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ।
मनमुख खाधे दूजै भाइ[8] । १ । रहाउ ।
गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे[9] ।
गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे[10] ।
मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे[11] । २ ।
सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ।
मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ।
हरिगुण गावहि सहजि सुभाए[12] । ३ ।
बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ।
मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ।
जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए । ४ ।
जमूआ न जोहै[13] हरि की सरणाई ।
हउमै[14] मारि सचि लिव लाई ।
सदा रहै हरिनामि लिव लाई । ५ ।
सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता[15] ।
मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ।

---

1) धनवान दिखाई पड़ते हैं 2) प्रणाम करते हैं 3) प्रतिदिन 4) उच्चारण करते हैं 5) अहंभाव 6) वाद-विवाद का बखान करता है 7) बखान करे 8) द्वैत-भाव 9) पापियों को भी ठीक करता है 10) प्रसन्न हो गए 11) पावनता प्राप्त होती है 12) सहज भाव से 13) यम देख नहीं सकता 14) अहं-भाव 15) पवित्र

इन विधि कुसलु तेरै मेरे मीता । ६ ।
सतिगुरु सेवे सो फलु पाए ।
हिरदै नामु विचहु आपु गवाए[1] ।
अनहद बाणी सबदु वजाए । ७ ।
सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो[2] मेरे भाई ।
भगती सीधे दरि सोभा पाई ।
नानक रामनामि वडिआई[3] । ८ । ५ ।

त्रै गुण वखाणै[4] भरमु न जाइ ।
बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ।
मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि । १ ।
गुरमुखि[5] प्राणी भरमु गवाइ ।
सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ । १ । रहाउ ।
त्रै गुण कालै की सिरि कारा[6] ।
नामु न चेतहि उपावणहारा[7] ।
मरि जंमहि फिरि वारो वारा[8] । २ ।
अंधे गुरु ते भरमु न जाई ।
मूलु छाडि लागे दूजै भाई[9] ।
बिखु का माता बिखु माहि समाई । ३ ।
माइआ करि मूलु जंत्र[10] भरमाए ।
हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए[11] ।
जिसु नदरि[12] करे सो परम गति पाए । ४ ।
अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए[13] ।
साचु न छपै जे को रखै छपाए ।
गिआनी बूझहि सहजि सुभाए । ५ ।
गुरमुखि साचि रहिआ लिवलाए ।

---

1) अंतर से अंहभाव नाश कर देता है 2) पवित्र नहीं हुआ 3) बड़ाई 4) बखान करने से 5) गुरु के उपदेश के अनुसार आचरण करने वाला 6) सिर पर कार (कार्य) है 7) उत्पन्न करने वाला, परमात्मा 8) बार बार 9) द्वैत-भाव 10) जीव-जंतु 11) द्वैत-भाव के फलस्वरूप परमात्मा भुला दिया गया 12) कृपा-दृष्टि 13) व्याप्त होता है

हउमै[1] माइआ सबदि जलाए ।
मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए । ६ ।
सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ।
धावतु राखै ठाकि रहाए[2] ।
पूरे गुर ते सोझी पाए । ७ ।
आपे करता सृसटि सिरजि जिनि गोई[3] ।
तिसु बिनु दूजा[4] अवरु न कोई ।
नानक गुरमुखि बूझै कोई । ८ । ६ ।

नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ।
नामो सेवे नामि सहजि समावै ।
अंमृतु नामु रसना नित गावै ।
जिस नो कृपा करे सो हरि रसु पावै । १ ।
अनदिनु[5] हिरदै जपउ जगदीसा ।
गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा[6] । १ । रहाउ ।
हिरदै सूखु भइआ परगासु[7] ।
गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु[8] ।
दासनिदास[9] नित होवहि दासु ।
गृह कुटंब महि सदा उदासु । २ ।
जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ।
परम पदारथु पावै सोई ।
त्रै गुण मेटे निरमलु होई ।
सहजे साचि मिलै प्रभु सोई । ३ ।
मोह कुटंब सिउ प्रीति न होइ ।
जा हिरदै वसिआ[10] सचु सोइ ।
गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु[11] होइ ।

---

1) अहं-भाव 2) मन को इधर-उधर भागने से रोक कर एक स्थान पर स्थित करता है 3) विलय कर ली 4) दूसरा 5) प्रतिदिन 6) सुख, आनंद 7) प्रकट 8) गुण-निधि, परमात्मा 9) दासानुदास, दासों का दास 10) बस जाता है 11) स्थिर

हुकमु पछाणै[1] बूझै सचु सोइ । ४ ।
तू[2] करता मै अवरु न कोइ ।
तुझु सेवी तुझ ते पति[3] होइ ।
किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ।
नाम रतनु सभ जग महि लोइ[4] । ५ ।
गुरमुखि बाणी मीठी लागी ।
अंतरु बिगसै[5] अनदिनु[6] लिव लागी ।
सहजे सचु मिलिआ परसादी[7] ।
सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी[8] । ६ ।
हउमै[9] ममता दुरमति दुख नासु ।
जब हिरदै राम नाम गुणतासु[10] ।
गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु[11] ।
जब हिरदै रविआ[12] चरण निवासु । ७ ।
जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ।
गुरमुखि मेले आपु गवाए ।
हिरदे साचा नामु वसाए[13] ।
नानक सहजे साचि समाए । ८ । ७ ।

मन ही मनु सवारिआ भै सहजि सुभाइ ।
सबदि मनु रंगिआ[14] लिव लाइ ।
निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ[15] । १ ।
सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ।
गोविंदु पाईऐ गुणीनिधानु[16] । १ । रहाउ ।
मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ[17] ।
मेरा प्रभु निरमला सभतै रहिआ समाइ ।
गुर किरपा ते मिलै मिलाइ । २ ।

---

1) परमात्मा की आज्ञा को जो पहचानता है 2) तुम 3) प्रतिष्ठा 4) ज्योति, प्रकाश 5) हृदय कमल विकसित हो जाता है 6) प्रतिदिन 7) कृपा-पूर्वक 8) श्रेष्ठ भाग्य वाला 9) अहंभाव 10) गुण-निधि, परमात्मा 11) यश, कीर्ति 12) रमण करने लग गया 13) बसाए 14) लीन हो गया 15) इच्छा 16) गुणों का खज़ाना, प्रभु 17) जब शब्द के द्वारा परमात्मा का भय मानने लगा

हरि दासन को दासु सुखु पाए ।
मेरा हरिप्रभु इन बिधि पाइआ जाए ।
हरि किरपा ते राम गुण गाए । ३ ।
धृगु बहु जीवणु[1] जित हरि नामि न लगै पिआरु ।
धृगु सेज सुखाली[2] कामणि मोह गुबारु[3] ।
तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु । ४ ।
धृगु धृगु गृहु कुटंबु जितु हरि प्रीति न होइ ।
सोई हमारा मीतु जो हरिगुण गावै सोइ ।
हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ । ५ ।
सतिगुर ते हम गति पति[4] पाई ।
हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ।
सदा अनंदु हरि नामि लिव लाई[5] । ६ ।
गुर मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ।
हउमै[6] तृसना सभ अगनि बुझई ।
विनसे क्रोध खिमा गहि लई । ७ ।
हरि आपे कृपा करे नामु देवै ।
गुरमुखि[7] रतनु को विरला लेवै ।
नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै[8] । ८ । ८ ।

गउड़ी बैरागणि

सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुखि[9] बुरे दिसंनि ।
अनदिनु[10] बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि[11] । १ ।
हरि हरि राखहु कृपा धारि ।
सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि । १ । रहाउ ।
से भगत हरि भावदे[12] जो गुरमुखि भाइ[13] चलंनि ।
आपु[14] छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि[15] । २ ।

---

1) बहुत जीवन जीने को धिक्कार है 2) सुखदायक 3) अंधकार-युक्त है 4) मुक्ति और प्रतिष्ठा 5) लगाई 6) अहंभाव 7) गुरु के मुख से उच्चरित किया हुआ उपदेश 8) जिस का भेद न पाया जा सके 9) दुष्ट 10) प्रतिदिन 11) मनुष्य जन्म का पुनः अवसर प्राप्त नहीं होता 12) अच्छे लगते हैं 13) भावना में 14) अपने-पन की भावना 15) रहते हैं

जिस दा पिंडु[1] पराण है तिस की सिरि कार[2] ।
ओहु[3] किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि । ३ ।
नामि मिलिऐ पति[4] पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ।
सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ । ४ ।
सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओह भ्रमदे ना टिकंनि[5] ।
धरति असमानु न झलई[6] विचि[7] विसटा पए पचंनि[8] । ५ ।
इहु[9] जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली[10] पाइ ।
जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ[11] । ६ ।
सतिगुरु सेवनि सो सोहणे[12] हउमै[13] मैलु गवाइ ।
सबदि रते[14] से निरमले चलहि सतिगुर भाइ । ७ ।
हरि प्रभ दाता एकु तूं[15] तूं आपे बखसि मिलाइ ।
जनु नानकु सरणागती जिउ भावै[16] तिवै छडाइ । ८ । ९ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ २२९-२३४)

गउड़ी पूरबी

छंत

साधन[17] बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे[18] ।
खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ।
बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु[19] न पाईऐ ।
जो गुरु कहै सोई परु कीजै[20] तिसना अगनि बुझाइऐ ।
हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ।
नानक साधन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए । १ ।
धन रैणि सुहेलड़ीए[21] जीउ हरि सिउ चितु लाए ।
सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए[22] ।
विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ[23] ।
सुणि सखी सहेली जीअ की मेली[24] गुर कै सबदि समाओ ।

1) जिस का शरीर 2) सिर पर कार्य-भार है 3) उस को, परमात्मा को 4) प्रतिष्ठा 5) स्थिर नहीं होते 6) कोई संभालता नहीं 7) में, अंदर 8) नष्ट होते हैं 9) यह 10) ठगमूरी 11) उन के समीप माया फटकती नहीं 12) सुंदर 13) अहंभाव 14) अनुरक्त 15) तुम 16) अच्छा लगे 17) साधक रूप स्त्री 18) स्मरण करती है 19) परमधाम 20) भली-भाँति किया जाए 21) साधक रूप स्त्री की जीवन रूप रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत होती है 22) अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट कर दे 23) प्रेम 24) हृदय से मिली हुई, अत्यधिक प्रिय

हरि गुण सारी[1] ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ।
नानक कामणि नाहु[2] पिआरी रामनामु गलि हारो । २ ।
धन एकलड़ी[3] जीउ बिनु नाह पिआरे ।
दूजै भाइ[4] मुठी जीउ बिनु गुरसबद करारे[5] ।
बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु[6] तारे माइआ मोहि खुआई[7] ।
कूड़ि विगुती ता पिरि मुती साधन महलु न पाई[8] ।
गुरसबदे राती सहजे माती[9] अनदिनु रहै समाए ।
नानक कामणि सदा रंगि राति[10] हरि जीउ आपि मिलाए । ३ ।
ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ।
बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ।
गुरु भरमु चुकाए इउ[11] मिलीऐ माए ता साधन सुखु पाए ।
गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ।
कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ।
नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे । ४ । १ ।

गउड़ी

पिर बिनु खरी निमाणी[12] जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ।
पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु[13] तनि न सुहाई ।
कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ।
सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ।
गुर सबदै मेला ता पिरु रावी[14] लाहा[15] नामु संसारे ।
नानक कामणि नाहु[16] पिआरी जा हरि के गुण सारे । १ ।
साधन रंगु माणे जीउ आपणे नालि[17] पिआरे ।
अहिनिसि[18] रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ।
गुर सबदु वीचारे हउमै[19] मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ।
साधन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ।
अपुने गुर मिलि रहीऐ अंमृतु गहीऐ[20] दुबिधा मारि निवारे ।

1) स्मरण करो 2) परमात्मा रूप पति 3) अकेली 4) द्वैत-भाव 5) प्रभावशाली 6) दुस्तर, न पार किया सकने वाला 7) नष्ट हुई 8) झूट के कारण बिगड़ गई और तब परमात्मा रूप पति ने त्याग दिया, फिर वह स्त्री परमधाम को प्राप्त न हो पाई 9) मस्त, लीन, मगन 10) प्रेम में अनुरक्त 11) इस प्रकार 12) अत्याधिक मानहीन 13) वस्त्र 14) रमण करता है 15) लाभ 16) परमात्मा रूप पति, राजा 17) साथ 18) दिन-रात 19) अहंभाव 20) प्राप्त किया जाए

नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दुख विसारे[1] । २ ।
कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ।
झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे[2] ।
कूडु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ।
गुरु सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे[3] ।
हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ।
नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो । ३ ।
मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी[4] ।
मै नैणी नींद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ।
पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै[5] बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ।
गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै[6] जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ।
आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ।
नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए । ४ । २ ।

कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ।
मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ।
दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए[7] ।
इहु सरीरु कूड़ि कुसति[8] भरिआ गल ताई[9] पाप कमाए ।
गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ।
नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए[10] । १ ।
कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ।
रैणी सुखि सुती[11] जीउ अंतरि उरि धारे ।
अंतरि उरिधारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु[12] दुखु निवारे ।
अंतरि महलु[13] पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ।
अंमृतु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ।
नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे । २ ।

---

1) भुला दिए 2) झूठी झूठ के द्वारा ही ठगी गई 3) अंतर से अहंभाव नष्ट कर दे 4) अत्यधिक मानहीन 5) पति वियोग में 6) अच्छा लगे 7) प्रेम पड़ता है 8) झूठा और असत्य 9) गले तक 10) अंतर से अपने-पन की भावना नष्ट करने पर 11) सोई 12) प्रतिदिन 13) अंतर रूप परमधाम

आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ।
कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे[1] ।
सचि सबदि सीगारे हउमै[2] मारे गुरमुखि कारज सवारे ।
जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ।
मनमुखि[3] कामि विआपी[4] मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ।
नानक मनमुखि थाउ[5] न पाए बिनु गुर अति पिआरे । ३ ।
मुंध इआणी[6] भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ।
आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा[7] ।
अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ।
प्रेम प्रीति भाइ भगती[8] पाइऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ।
सदा अनंदि रहै दिनु राती अनदिनु[9] रहै लिव लाई ।
नानक सहजे हरि वरु पाइआ साधन नउनिधि पाई । ४ । ३ ।
माइआ सरु सबलु[10] वरतै जीउ किउ करि दुतरु[11] तरिआ जाइ ।
राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि[12] पाइ ।
सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए[13] इन बिधि दुतरु तरीऐ ।
गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ[14] मरीऐ ।
खिन महि राम नामि किलविख[15] काटे भए पवितु सरीरा ।
नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा[16] । १ ।
इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी[17] ।
मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ।
डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे[18] ।
जो आइआ सो सभु को जासी[19] उबरे गुर वीचारे ।
गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै[20] आपि तरै कुल तारे ।
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे । २ ।

---

1) श्रृंगार करती है 2) अहंभाव 3) दुष्ट व्यक्ति रूप स्त्री 4) काम में लीन है 5) स्थान 6) नासमझ 7) कृपालु 8) भाव भक्ति, प्रेम भक्ति 9) प्रतिदिन 10) बलयुक्त सरोवर 11) दुस्तर 12) में 13) पार उतारता है 14) इस प्रकार 15) पाप 16) लोहे का मैल, घटिया लोहा 17) जानी नहीं 18) अहंभाव के कारण संसार में भटकते फिरते है 19) जाएगा 20) बखान करता है

राम नाम बिनु को थिरु[1] नाही जीउ बाजी[2] है संसारा।
दृड़ु भगति सची जीउ नामु वापारा।
राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ।
सेवा सुरति भगति इह साची विचहु[3] आपु गवाईऐ।
हम मतिहीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए।
नानक गुरमुखि सबदि सुहावै[4] अनदिनु[5] हरि गुण गाए। ३।
आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे।
आपे सतिगुरु आपि जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे।
जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपि भगती लाए।
आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए।
आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए।
नानक सद बलिहारी सचे विटहु[6] आपे करे कराए। ४। ४।
गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए।
मंञहु[7] दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए।
घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए।
गुर की सेवा खरी सुखाली[8] जिस नो आपि कराए।
नामो बीजे नामो जंमै[9] नामो मंनि वसाए।
नानक सचि नामि वडिआई[10] पूरबि लिखिआ पाए। १।
हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए।
रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए।
सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए।
नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए।
नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए।
नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए[11]। २।
एह विडाणी चाकरी[12] पिरा जीउ धन[13] छोडि परदेसि सिधाए।

---

1) स्थिर 2) खेल 3) अंतर से 4) सुशोभित है 5) प्रतिदिन 6) ऊपर से 7) मुझ से 8) अत्यधिक सुखदायक 9) उत्पन्न होती है 10) बड़ाई 11) स्वयं ही लगा लेता है 12) यह दूसरों की नौकरी 13) स्त्री

दूजै[1] किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए।
बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु[2] किउ करि सुखु पाए।
चाकरी विडाणी खरी दुखाली[3] आपु वेचि[4] धरमु गवाए।
माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु संताए।
नानक माइआ का दुखु तदे[5] चूकै जा गुर सबदी चितु लाए। ३।
मनमुख[6] मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए।
माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए।
किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए[7]।
हरि के चाकर सदा सुहेले[8] गुर चरणी चितु लाए।
जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए।
नानक नामु रतनु जगि लाहा[9] गुरमुखि आपि बुझाए। ४। ५।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ २४३-२४७)

सलोक*

गउड़ी रागि सुलखणी[10] जे खसमै[11] चिति करेइ।
भाणै[12] चलै सतिगुरु कै ऐसा सीगारु करेइ।
सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ[13]।
जिउ उबली[14] मजीठै रंगु गहगहा[15] तिउ सचे नो जीउ देइ।
रंगि चलूलै अति रती[16] सचै सिउ लगा नेहु[17]।
कूड़ु[18] ठगी गुझी[19] ना रहै कूड़ु मुलंमा पलेटि[20] धरेहु।
कूड़ी करनि वडाईआ[21] कूड़े सिउ लगा नेहु।
नानक सचा आपि है आपे नदरि[22] करेइ। १। (२०)§

हउमै[23] जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार।
सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर।
नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु। २। (२०)

---

1) द्वैत-भाव के कारण 2) वह 3) दूसरों की नौकरी बहुत दुख:दायक है 4) बेच कर 5) तभी 6) दुष्ट 7) अपना महत्व स्थापन करता है 8) सुखी, आनंदित 9) लाभ *ये श्लोक 'गउड़ी की वारु म. ४' में से लिए गए हैं 10) सुलक्षणा 11) पति-परमात्मा 12) भावना, इच्छा 13) रमण करना चाहिए 14) उबालने से 15) अत्यधिक गंभीर 16) अत्यधिक लाल रंग में रंगी हुई 17) प्रेम 18) झूठ 19) गुप्त 20) लपेट कर §कोष्ठकों में लिखे अंक सम्बंधित पोड़ी-पदों के हैं 21) बड़ाइयाँ 22) कृपा-दृष्टि 23) अहंभाव

माइआधारी अति अंना बोला[1] ।
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला[2] ।
गुरमुखि जापै सबदि लिव लाइ ।
हरि नाम सुणि मंने हरि नामि समाइ ।
जो तिसु भावै[3] सु करे कराइआ ।
नानक वजदा जंतु वजाइआ[4] । ३ ।(२४)

मनमुखु अहंकारी महलु[5] न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ।
सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै[6] ।
सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ।
आपणी क्रिपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि[7] । ४ । (२५)

जिनि गुरु गोपिआ[8] आपणा तिसु ठउर न ठाउ ।
हलतु पलतु[9] दोवै गए दरगह नाहि थाउ[10] ।
ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ।
सतिगुर की गणतै घुसीऐ[11] दुखे दुखि विहाइ ।
सतिगुर पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ।
नानक दरसनु जिना वेखालिओनु[12] तिना दरगह लए छडाइ । ५ । (२६)

मनमुखु[13] अगिआनु दुरमति अहंकारी अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ।
कूड़ु[14] कुसतु ओहु पाप कमावै । किआ ओहु सुणै किआ आखि[15] सुणावै ।
अंना बोला खुइ उझड़ि पाइ[16] । मनमुखु अंधा आवै जाइ ।
बिनु सतिगुर भेटे थाइ[17] न पाइ नानक पूरबि लिखिआ कमाइ । ६ । (२६)

गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ । हरिगुण गावै हिरदै हारु परोइ ।
पवितु पावनु परम बीचारी । जि ओसु[18] मिलै तिसु पारि उतारी ।
अंतरि हरिनामु बासना[19] समाणी । हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ।
जि पुरखु सुणै सो होइ निहालु । नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ।
। ७ । (३३)

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ३११-१४, ३१७)

---

1) बहरा 2) अत्याधिक शोर-गुल 3) अच्छा लागे 4) जीव रूप बाजा परमात्मा द्वारा बजाए जाने पर ही बजता है 5) परमधाम 6) प्रभु के दरबार में सफल मनोरथ हो 7) (कुमार्ग) से मोड़ ले 8) गुप्त रखा है 9) लोक-परलोक 10) स्थान 11) सद्गुरु के लेखे में पड़ने से चूक गए 12) दिखाया है 13) दुष्ट 14) झूठ 15) कह कर 16) अंधा और बहरा चूक कर उजाड़ में भटकता है 17) स्थान 18) उसको 19) सुवास, सुगंधि

१ ओ सतिगुर प्रसादि

रागु आसा घरु २

चउपदे

हरि दरसनु पावै वडभागि[1] ।
गुर कै सबदि बैरागि ।
खटु दरसन वरतै वरतारा[2] ।
गुर का दरसनु अगम अपारा । १ ।
गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ।
साचा आपि वसै[3] मनि सोइ । १ । रहाउ ।
गुर दरसनि उधरै संसारा ।
जे को लाए भाउ पिआरा[4] ।
भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ।
गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ । २ ।
गुर कै दरसनि मोख दुआरु ।
सतिगुरु सेवै परवार साधारु[5] ।
निगुरे कउ गति काई[6] नाही ।
अवगणि मुठे[7] चोटा खाही । ३ ।
गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ।
गुरमुखि[8] ता कउ लगै न पीर[9] ।
जम कालु तिसु नेड़ि[10] न आवै ।
नानक गुरमुखि साचि समावै । ४ । १ ।

सबदि मुआ विचहु[11] आपु गवाइ ।
सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ[12] । १ ।

---

1) श्रेष्ठ भाग्य के फलस्वरूप 2) व्यवहार में लाए जाते हैं 3) बसता है 4) प्रेम प्यार पूर्वक 5) संपूर्ण परिवार आधार युक्त हो जाता है, अर्थात् अपने मन्तव्य में सफल हो जाता है 6) कोई 7) लूटे हुए 8) गुरु के उपदेश का अनुसरण करने वाला 9) दु:ख 10) समीप 11) अंतर से 12) तिल मात्र लालच नहीं

गुण संग्रहु विचहु[1] अउगुण जाहि ।
पूरे गुर कै सबदि समाहि । १ । रहाउ ।
गुणा का गाहकु होवै सा गुण जाणै ।
अंमृत सबदि नामु वखाणै[2] ।
साची बाणी सूचा[3] होइ ।
गुण ते नामु परापति होइ । २ ।
गुण अमोलक[4] पाए न जाह ।
मनि निरमल साचै सबदि समाहि ।
से वडभागी[5] जिन्ह नामु धिआइआ ।
सदा गुणदाता मंनि वसाइआ । ३ ।
जो गुण संग्रहै तिन्ह नामु बलिहारै जाउ ।
दरि साचै साचे गुण गाउ ।
आपे देवै सहजि सुभाइ ।
नानक कीमति कहणु न जाइ । ४ । २ ।

सतिगुर विचि वडी वडिआई[6] ।
चिरी विछुने[7] मेलि मिलाई ।
आपे मेले मेलि मिलाए ।
आपणी कीमति आपे पाए । १ ।
हरि की कीमति किन बिधि होइ ।
हरि अपरंपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ।
विरले करमि परापति होइ ।
ऊची बाणी ऊचा होइ ।
गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ[8] । २ ।
विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ।
सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर[9] ।

1) बीच में से 2) बखान करता है 3) पवित्र 4) अत्यधिक मूल्यवान 5) श्रेष्ठ भाग्य वाला 6) सद्गुरु में बड़ी श्रेष्ठता है 7) चिरकाल से वियुक्त 8) कोई ही बखान करता है 9) पीड़ा, दु:ख

बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ।
मनमुखि बहुती मिलै सजाइ[1] । ३ ।
हरि का नामु मीठा अति रसु[2] होइ ।
पीवत रहै पीआए सोइ ।
गुर किरपा ते हरिरसु पाए ।
नानक नामि रते[3] गति पाए । ४ । ३ ।

मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीरु ।
सेवत ही सुखु सांति सरीर ।
सबदि तरे जन सहजि सुभाइ[4] ।
तिन कै हम सद[5] लागह पाइ । १ ।
जो मन राते हरि रंगु लाइ ।
तिन का जनम मरण दुखु लाथा[6] ते हरि दरगह[7] मिले सुभाइ । १ । रहाउ ।
सबदु चाखै साचा सादु पाए ।
हरि का नामु मंनि वसाए ।
हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ।
आपे नेड़ै[8] आपे दूरि । २ ।
आखणि आखै थकै सभु कोइ[9] ।
आपे बखसि[10] मिलाए सोइ ।
कहणै कथनि[11] न पाइआ जाइ ।
गुरपरसादि वसै मनि आइ । ३ ।
गुरमुखि विचहु[12] आपु गवाइ ।
हरि रंगि राते[13] मोहु चुकाइ ।
अति निरमलु गुरसबद वीचार ।
नानक नामि सवारणहार । ४ । ४ ।

दूजै भाइ[14] लगै दुखु पाइआ ।
बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ।
सतिगुर सेवै सोझी होइ[15] ।
दूजै भाइ न लागै कोइ । १ ।

1) दंड 2) अति रसदायक 3) अनुरक्त होने पर 4) सहज भाव से, स्वाभाविक 5) सदा 6) उतर गया 7) परमात्मा के द्वार पर 8) समीप 9) बातें तो सभी बनाते हैं और कथन भी करते हैं 10) कृपा करके 11) कहने और कथन करने से 12) अंतर से 13) प्रेम में अनुरक्त 14) द्वैतभाव 15) सूझ प्राप्त होती है

मूलि[1] लागे से जन परवाणु ।
अनदिनु[2] राम नामु जपि हिरदै गुरसबदी हरि एको जाणु । १ । रहाउ ।
डाली लागै निहफलु जाइ ।
अंधीं कंमि अंध सजाइ[3] ।
मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ।
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ । २ ।
गुर की सेवा सदा सुखु पाए ।
संत संगति मिलि हरि गुण गाए ।
नामे नामि करे वीचारु ।
आपि तरै कुल उधरणहारु । ३ ।
गुर की बाणी नामि वजाए[4] ।
नानक महलु[5] सबदि घरु पाए ।
गुरमति सतसरि[6] हरि जलि नाइआ[7] ।
दुरमति मैलु सभु दुरतु[8] गवाइआ । ४ । ५ ।

मनमुखु मरहि मरि मरण विगाड़हि[9] ।
दूजै भाइ[10] आतम संघारहि ।
मेरा मेरा करि करि विगूता[11] ।
आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता[12] । १ ।
मरु मुइआ[13] सबदे मरि जाइ ।
उसतति निंदा गुरि सम जाणाई[14] इसु जुग महि लाहा[15] हरि जपि लै जाइ
नाम बिहूण[16] गरभ गलि जाइ । । १ । रहाउ ।
विरथा जनमु दूजै[17] लोभाइ ।
नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ।
सतिगुरि पूरै बूझ बूझाई । २ ।
मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ।
एथहु छुड़किआ[18] ठउर न पाइ ।
गरभ जोनि विसटा का वासु ।
तितु घरि मनमुखु[19] करे निवासु । ३ ।

---

1) आदिशक्ति, परमात्मा 2) प्रतिदिन 3) अज्ञानपूर्ण कर्मों के फल-स्वरूप अज्ञानियों वाला दंड मिलता है 4) नाम के द्वारा स्वरित होती है 5) परमधाम 6) सत्संगति रूप सरोवर 7) स्नान किया 8) पाप 9) बिगाड़ देता है 10) द्वैत-भाव 11) नष्ट हुआ, दुःखी हुआ 12) भ्रम में सोया हुआ है 13) वास्तविक रूप में मरा है 14) समझा दी है 15) लाभ 16) वंचित 17) द्वैतभाव 18) यहाँ से उखड़ा हुआ 19) दुष्ट

अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ।
गुरमुखि जोती जोति[1] मिलाई ।
निरमल वाणी निज घरि वासा ।
नानक हउमै[2] मारे सदा उदासा । ४ । ६ ।

लालै[3] आपणी जाति गवाई ।
तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ।
हिरदै नामु वडी वडिआई[4] ।
सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई[5] । १ ।
सो लाला जीवतु मरै ।
सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै । १ । रहाउ ।
करणी कार धुरहु फुरमाई[6] ।
बिनु सबदै को थाइ[7] न पाई ।
करणी कीरति[8] नामु वसाई ।
आपे देवै ढिल[9] न पाई । २ ।
मनमुखि भरमि भुलै संसारु ।
बिनु रासी कूड़ा करे वापारु[10] ।
विणु रासी वखरु[11] पलै न पाइ ।
मनमुखि भुला जनमु गवाइ । ३ ।
सतिगुरु सेवे सु लाला[12] होइ ।
ऊतम जाती ऊतमु सोइ ।
गुर पउड़ी सभदू[13] ऊचा होइ ।
नानक नामि वडाई[14] होइ । ४ । ७ ।

मनमुखि झूठा झूठु कमावै ।
खसमै का महलु[15] कदे[16] न पावै ।
दूजै[17] लगी भरमि भुलावै ।
ममता बाधा आवै जावै । १ ।

---

1) आतम-ज्योति परम-ज्योति में मिला दी जाती है 2) अहंभाव 3) सेवक ने 4) बड़ी प्रतिष्ठा है 5) मित्र, सहायक 6) सेवक ने वही कार्य करना है जिस का प्रभु ने अपने द्वार से आदेश दिया है 7) स्थान 8) हरियश रूप करनी 9) देर 10) बिना मूलधन के झूठा व्यापार करता है 11) वस्तु, सौदा 12) सेवक 13) सब से अधिक 14) बड़ाई 15) प्रभु का परमधाम 16) कभी 17) द्वैत-भाव

दोहागणी कामन देखु सीगारु[1]।
पुत्र कलति[2] धनि माइग्रा चितु लाए झुठु मोहु पाखंड विकारु। १। रहाउ।
सदा सोहागणि जो प्रभ भावै[3]।
गुर सबदी सीगारु बणवै[4]।
सेज सुखाली[5] अनदिनु हरि रावै[6]।
मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै। २।
सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु।
श्रपणा पिरु राखै सदा उरधारि।
नेड़ै वेखै सदा हदूरि[7]।
मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि। ३।
श्रागै जाति रूपु न जाइ।
तेहा होवै जेहे करम कमाइ।
सबदे ऊचो ऊचा होइ।
नानक साचि समावै सोइ। ४। ८।

भगति रता[8] जनु सहजि सुभाइ।
गुर कै भै साचै साचि समाइ।
बिनु गुर पूरे भगति न होइ।
मनमुख रुंने[9] अपनी पति[10] खोइ। १।
मेरे मन हरि जपि सदा धिग्राइ।
सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै[11] सोई फलु पाइ। १। रहाउ।
गुर पूरे ते पूरा पाए।
हिरदै सबदु सचु नामु वसाए।
अंतरु निरमलु अंमृतसरि नाए[12]।
सदा सूचे[13] साचि समाए। २।
हरि प्रभु वेखै[14] सदा हजूरि[15]।
गुर परसादि रहिआ भरपूरि।
जहा जाउ तह वेखा[16] सोइ।
गुर बिनु दाता अवरु न कोइ। ३।

---

1) श्रृंगार 2) पत्नी 3) अच्छी लगै 4) श्रृंगार बनाए 5) सुखदायक 6) रमण करे 7) परमात्मा को सदा अपने समीप और सामने देखे 8) लीन, अनुरक्त 9) रो कर 10) प्रतिष्ठा 11) इच्छा करे 12) स्नान करे 13) पवित्र 14) देखे 15) पास 16) देखूं

गुरु सागरु पूरा भंडार ।
ऊतम रतन जवाहर अपार ।
गुर परसादी देवणहारु ।
नानक बखसे बखसणहारु[1] । ४ । ९ ।

गुरु साइरु[2] सतिगुरु सचु सोइ ।
पूरै भागि गुर सेवा होइ ।
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ।
गुर परसादी सेव कराए । १ ।
गिआन रतनि सभ सोझी होइ ।
गुरपरसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु[3] जागै वेखै[4] सचु सोइ । १ । रहाउ ।
मोहु गुमानु गुरसबदि जलाए ।
पूरे गुर ते सोझी पाए ।
अंतरि महलु[5] गुरसबदि पछाणै ।
आवण जाणु रहै थिरु[6] नामि समाणै । २ ।
जंमणु मरणा[7] है संसारु ।
मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ।
पर निंदा बहु कूड़ु[8] कमावै ।
विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै । ३ ।
सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ।
गुर का सबदु हरि भगति दृड़ाए ।
भाणा मंने[9] सदा सुखु होइ ।
नानक सचि समावै सोइ । ४ । १० ।

पंचपदे

सबदि मरै तिसु सदा अनंद । सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ।
ना फिरि मरै न आवै जाइ । पूरे गुर ते साचि समाइ । १ ।

---

1) कृपालु परमात्मा कृपा करता है 2) सरोवर 3) प्रतिदिन
4) देखे 5) हृदय रूप परमधाम (जहाँ प्रभु निवास करता है) 6) स्थिर
7) जन्म लेना और मर जाना 8) झूठ 9) प्रभु की इच्छा अनुसार कर्म करे

जिन कउ नामु लिखिआ धुरि[1] लेखु ।
ते अनदिनु[2] नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु । १ । रहाउ ।
जिन कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ।
तिन्ह की गहण[3] गति कही न जाइ ।
पूरै सतिगुर दिती वडिआई[4] ।
ऊतम पदवी हरि नामि समाई । २ ।
जो किछु करे सु आपे आपि ।
एक घड़ी महि थापि उथापि[5] ।
कहि कहि कहणा आखि[6] सुणाए ।
जे सउ घाले थाइ न पाए[7] । ३ ।
जिन्ह कै पोतै[8] पुंनु तिन्हा गुरु मिलाए ।
सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ।
जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ।
गिआनि रतनि साचै सहजि समाए । ४ ।
नावै जेवडु होरु[9] धनु नाही कोइ ।
जिस नो बखसे[10] साचा सोइ ।
पूरै सबदि मंनि वसाए ।
नानक नामि रते[11] सुखु पाए । ५ । ११ ।
निरति[12] करे बहु वाजे वजाए ।
इहु मनु अंधा बोला[13] है किसु आखि[14] सुणाए ।
अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ[15] ।
दीवा बलै न[16] सोझी पाइ । १ ।
गुरमुखि भगति घटि चानणु[17] होइ ।
आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ[18] ।
पूरे ताल विचहु आपु गवाइ[19] ।

---

1) परमत्मा के धाम से 2) प्रतिदिन 3) गहन गंभीर, महत्वपूर्ण 4) बड़ाई प्रदान की है 5) सर्जन करता और नष्ट करता है 6) कह कर 7) सौ प्रकार की साधना करने पर भी उचित स्थान (परमधाम) की प्राप्ति नहीं होती 8) खजाने में, भाग्य में 9) नाम के समान बड़ा और कोई धन नहीं है 10) कृपा करे 11) मगन, लीन 12) नृत्य 13) बहरा 14) कह कर 15) हृदय में लोभ और भ्रम की अग्नि और वायु है 16) ज्ञान का दीपक नहीं जलता 17) प्रकाश 18) प्रेम 19) अपने-पन की भावना को अंतर से निकालना ही ताल पूरना है

मेरा प्रभु साचा आपे जाणु[1] ।
गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु । २ ।
गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ।
गुर का सबदु सहजि बीचारु ।
गुरमुखि भगति जुगति[2] सचु सोइ ।
पाखंडि भगति निरति दुखु होइ । ३ ।
एहा भगति जनु जीवत मरै ।
गुरपरसादी भवजलु तरै ।
गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ[3] ।
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ । ४ ।
हरि क्रिपा करे सतिगुरु मिलाए ।
निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ।
भगति रते[4] तिह सची सोइ ।
नानक नामि रते सुखु होइ । ५ । १२ ।

आसा घरु ८ काफी

हरि कै भाणै[5] सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ।
गुरपरसादी मनि वसै हरि बूझै सोई । १ ।
मै सहु[6] दाता एकु है अवरु नाही कोई ।
गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई । १ । रहाउ ।
इसु जुग महि निरभउ[7] हरिनामु है पाईऐ गुर बीचारि ।
बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि । २ ।
हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ।
हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई । ३ ।
हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ।
नानक नामु सलाहि तूं[8] गुरमुखि[9] गति होई । ४ । १३ ।

(आदि ग्रन्थ, पृष्ठ ३६०-३६५)

---

1) जानता है 2) युक्ति, ढंग 3) सफल मनोरथ होती है 4) अनुरक्त 5) भावना से, इच्छा से 6) स्वामी, पति 7) निर्भय, भयातीत 8) तुम 9) गुरु के उपदेश अनुसार आचरण करने वाला साधक

आसा घरु २

असटपदीआ

सासतु[1] बेदु सिमृति सरु तेरा[2] सुरसरी चरण समाणी ।
साखा तीनि मूलु मति रावै[3] तूं तां सरब विडाणी[4] । १ ।
ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अंमृत बाणी । १ । रहाउ ।
तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ।
ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि[5] वीचारी । २ ।
तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ।
करमु होवै ता परमपदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी[6] । ३ ।
तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ।
जा कउ नदरि[7] करहि तूं अपणी साई सचि समाणी । ४ ।
नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी[8] ।
जा तुधु भावै[9] ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी[10] । ५ ।
चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ।
ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी । ६ ।
जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ।
तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी । ७ ।
तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि ता साचु वखाणी[11] ।
जा कउ सचु बुझावहि आपणा सहजे नामि समाणी । ८ । १ ।

सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ।
हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ।
सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ । १ ।
सुणि मन मेरे ततु गिआनु ।
देवण वाला[12] सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु । १ । रहाउ ।

---

1) शास्त्र 2) तुम्हारा नाम रूप सरोवर 3) मनुष्य बुद्धि की बात है 4) तुम तो सर्व-श्रेष्ठ हो 5) कह कर 6) अकथनीय कहानी का कथन किया जाए 7) कृपा-दृष्टि 8) जितनी सृष्टि है सब आने जाने वाली है, अर्थात् अस्थिर है 9) जब तुझे अच्छा लगे 10) ना-समझ 11) बखान किया जाए 12) देने वाला, प्रदाता

सतिगुर भेटे की वडिग्राई[1] ।
जिनि ममता अगनि तृसना बुझाई ।
सहजे माता[2] हरिगुण गाई । २ ।
विणु गुर पूरे कोइ न जाणी[3] ।
माइआ मोहि दूजै[4] लोभाणी ।
गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी । ३ ।
गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु[5] ।
हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ।
दरि साचै दीसै सचिआरु । ४ ।
गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ।
आपु पछाणि हरि पावै सोइ ।
साची बाणी महलु[6] परापति होइ । ५ ।
गुर सेवा ते सब कुल उधारे ।
निरमल नामु रखै उरिधारे ।
साची सोभा साचि दुग्रारै । ६ ।
से वडभागी[7] जि गुरि सेवा लाए ।
ग्रनदिनु[8] भगति सचु नामु दृड़ाए ।
नामे उधरे कुल सबाए । ७ ।
नानकु साचु कहै वीचारु ।
हरि का नामु रखहु उरधारि ।
हरि भगति राते[9] मोख दुग्रारु । ८ । २ ।

आसा आस करे सभु कोई ।
हुकमै बूझै निरासा होई ।
ग्रासा विचि सुते कई लोई[10] ।
सो जागै जागावै सोई । १ ।

---

1) बड़ाई 2) लीन, मस्त, मगन 3) कोई नहीं जानता 4) द्वैत-भाव 5) सब तपों में श्रेष्ठ तप है 6) परमधाम 7) श्रेष्ठ भाग्य वाले 8) प्रतिदिन 9) ग्रनुरक्त 10) ग्राशा में कितने ही लोक सोए पड़े हैं

सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु[1] नावै भुख न जाइ ।
नामे तृसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई[2] । १ । रहाउ ।
कलि कीरति[3] सबदु पछानु ।
एहा[4] भगति चूकै अभिमानु ।
सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ।
जिनि आसा कीती[5] तिस नो जानु । २ ।
तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ।
करि किरपा नामु मंनि वसाए ।
इहु[6] सिरु दीजै आपु गवाए ।
हुकमै[7] बूझे सदा सुखु पाए । ३ ।
आपि करे तै आपि कराए ।
आपे गुरमुखि नामु वसाए ।
आपि भुलावै आपि मारगि पाए ।
सचै सबदि सचि समाए । ४ ।
सचा सबदु सची है बाणी ।
गुरमुखि जुगि जुगि आखि बखाणी[8] ।
मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी[9] ।
बिनु नावै सभ फिरै बउराणी[10] । ५ ।
तीनि भवन महि एका माइआ ।
मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ[11] दृड़ाइआ ।
बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ । ६ ।
अंमृत मीठा सबदु वीचारि ।
अनदिनु भोगे हउमै[12] मारि ।
सहजि अनंदि किरपा धारि ।
नामि रते[13] सदा सचि पिआरि । ७ ।

---

1) बिना 2) उसी की इच्छा है 3) हरियश 4) यही 5) उत्पन्न की है 6) यह 7) प्रभु आज्ञा 8) कह कर बखान की है 9) भूला हुआ है 10) दीवाना, पागल 11) द्वैत-भाव 12) अहंभाव 13) अनुरक्त

हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु बीचारि ।
हरि जपि पड़ीऐ हउमै[1] मारि ।
हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि[2] ।
नानक नामु गुरमति उर धारि । ८ । ३ ।

घरु ८ काफी

गुर ते सांति ऊपजै जिनि तृसना अगनि बुझाई ।
गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई[3] । १ ।
एको नामु चेति मेरे भाई ।
जगतु जलंदा[4] देखि कै भजि[5] पए सरणाई । १ । रहाउ ।
गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ।
गुर ते घरु दरु पाइआ भगति भरे भंडारा । २ ।
गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ।
गुरमुखि भगति सलाह[6] है अंतरि सबदु अपारा । ३ ।
गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे[7] न होई ।
गुरमुखि हउमै[8] मारीऐ मनु निरमलु होई । ४ ।
सतिगुरि मिलिआ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ।
निरमल जोति पसरि रही जोती जोति[9] मिलाई । ५ ।
पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ।
अंतर सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई । ६ ।
पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि[10] करेई ।
किलविख[11] पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई । ७ ।
आपणै हथि वडिआईआ[12] दे नामे लाए ।
नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई[13] पाए । ८ । ४ ।

सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ।
अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई । १ ।

---

1) अहंभाव 2) भय और सच्चे प्रेम के साथ परमात्मा के नाम का जप करना चाहिए 3) श्रेष्ठ प्रतिष्ठा 4) जलता हुआ 5) भाग कर 6) सराहना 7) कभी 8) अहंभाव 9) आत्म-ज्योति परमात्मा ज्योति से 10) कृपा-दृष्टि 11) गुनाह, पाप 12) उसके अपने हाथ में सभी प्रतिष्ठाएँ हैं 13) बड़ाई

एको नामु धिआइ तूं[1] सुखु पावहि मेरे भाई ।
हउमै दूजा[2] दूरि करि वडी वडिआई[3] । १ । रहाउ ।
इसु भगती नो सुरिनर मुनिजन लोचदे विणु[4] सतिगुर पाई न जाई ।
पंडित पड़दे जोतिकी[5] तिन बूझ न पाई । २ ।
आपै थै[6] सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ।
आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई । ३ ।
जीअ जंत सभि तिस दे[7] सभना का सोई ।
मंदा किसनो आखीऐ[8] जे दूजा[9] होई । ४ ।
इको हुकमु वरतदा[10] एका सिरिकारा[11] ।
आपि भवाली[12] दितीअनु अंतरि लोभु विकारा । ५ ।
इक आपे गुरमुखि कीतिअनु[13] बूझनि वीचारा ।
भगति भी ओना नो बखसीअनु[14] अंतरि भंडारा । ६ ।
गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ।
ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही[15] सचु जाणनि सोई । ७ ।
घर महि पंच[16] वरतदे पंचे वीचारी ।
नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही[17] नामि हउमै[18] मारी । ८ । ५ ।

घरै अंदरि सभु वथु[19] है बाहरि किछु नाही ।
गुरपरसादी पाईऐ अंतरि कपट[20] खुलाही । १ ।
सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ।
अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई । १ । रहाउ ।
हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ।
अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा । २ ।
अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा[21] ।
मन चिंदिआ[22] फलु पाइसी[23] फिरि होइ न फेरा । ३ ।
पारखीआ वथु समालि[24] लई गुर सोझी होई ।
नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई । ४ ।

---

1) तुम 2) अहंभाव, द्वैतभाव 3) बहुत बड़ाई 4) बिना 5) ज्योतिषी 6) अपने ही हाथ से 7) उसके 8) कहा जाए 9) दूसरा, अन्य 10) व्याप्त है 11) कर्त्तव्य का उत्तरदायित्व 12) भुलावा, भ्रम 13) कर दिए है 14) उन्हीं को प्रदान करता है 15) वे किसी के भुलावे से नहीं भूलते 16) कामादिक विकार 17) नहीं आते 18) अहंभाव 19) वस्तु 20) द्वार, कपाट 21) बसेरा, निवास 22) मन को अच्छा लगने वाला 23) पाएगा 24) परख करने वालों ने वस्तु को संभाल लिया

बाहरु भाले[1] सु किआ लहै वथु[2] घरै अंदरि भाई।
भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति[3] गवाई। ५।
घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई।
चोरै वांगू[4] पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई। ६।
जिन्ही घरु जाता[5] आपणा से सुखीए भाई।
अंतरि ब्रहमु पछताणिआ गुर की वडिआई[6]। ७।
आपे दानु करे किसु आखिऐ[7] आपे देइ बुझाई।
नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई। ८। ६।

आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई।
हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई[8]। १।
हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा।
गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा। १। रहाउ।
बिनु सबदै आपु न जापई[9] सभ अंधी भाई।
गुरमति घटि चानणा[10] नामु अति सखाई[11]। २।
नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा।
अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा। ३।
नामु सुणीऐ नामु वडिआई[12]।
नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु[13] पाई। ४।
नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई।
नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई। ५।
बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति[14] गवाई।
जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई। ६।
नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई।
नामहु ही नामु मंनिऐ नामे वडआई। ७।
जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई।
नानक सभ किछु नावै कै वसि है[15] पूरे भागि को पाई। ८। ७।

---

1) ढूंढे 2) वस्तु 3) प्रतिष्ठा 4) चोर के समान 5) जान लिया पहचान लिया 6) बड़ाई 7) कहा जाए 8) सत्य स्वरूप परमात्मा अच्छा लगता है 9) प्रतीत नहीं होता 10) प्रकाश 11) सखा, मित्र 12) बड़ाई 13) परमधाम 14) प्रतिष्ठा 15) बस में है

दोहागणी महलु न पाइन्ही[1] न जाणनि पिर का सुआउ[2] ।
फिका बोलहि ना निवहि[3] दूजा भाउ[4] सुआउ । १ ।
इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ।
गुरपरसादी ठाकीऐ[5] गिआन मती घरि आवै । १ । रहाउ ।
सोहागणी आपि सवारीओनु[6] लाइ प्रेम पिआरु ।
सतिगुर कै भाणै चलदीआ[7] नामे सहजि सीगारु[8] । २ ।
सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ[9] ।
पिर कै प्रेमि मोहीआ[10] मिलि प्रीतम सुखु पाइ । ३ ।
गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ।
सा सभराई[11] सुंदरी पिर कै हेति पिआरि । ४ ।
सोहागणी विचि रंगु रखिओनु[12] सचै अलखि अपारि ।
सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ[13] पिआरि । ५ ।
सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ।
प्रेम पिरमलु[14] तनि लावणा[15] अंतरि रतनु वीचारु । ६ ।
भगति रते[16] से ऊतमा जित पति[17] सबदे होइ ।
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ । ७ ।
हउ हउ करदी[18] सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ।
नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ । ८ । ८ ।

सचे रते[19] से निरमले सदा सची सोइ ।
ऐथै[20] घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ । १ ।
ए मन रूढ़े[21] रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ।
रूड़ी बाणी जे रपै[22] ना इहु रंगु लहै न जाइ । १ । रहाउ ।
हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ[23] विकार ।
गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार । २ ।
बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चढ़ाउ ।
गुर कै भै भाइ[24] जो रते सिफती सचि समाउ । ३ ।

---

1) परमधाम प्राप्त नहीं कर पाती 2) स्वाद 3) झुकते नहीं 4) द्वैत-भाव 5) रोकिए 6) सँवारती हैं 7) इच्छा अनुसार चलती हैं 8) शृंगार 9) स्वाभाविक ढंग से 10) मोहित होई हैं 11) मर्यादा-सम्पन्न 12) सोहागण स्त्री में परमात्मा ने प्रेम की भावना भर दी हैं 13) भाव 14) सुगंधित वस्तु, कुमकुम 15) लगाती है 16) अनुरक्त 17) प्रतिष्ठा 18) करती हुई 19) अनुरक्त 20) यहाँ पर, इस लोक में 21) सुंदर 22) अनुरक्त हो जाए, रंग में रंगा जाए 23) द्वैत-भाव 24) भय और प्रेम

भै बिनु लागि न लगई[1] न मनु निरमलु होइ ।
बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ[2] न कोइ । ४ ।
जिसनो आपे रंगे सु रपसी[3] सतसंगति मिलाइ ।
पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ[4] । ५ ।
बिनु संगति सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ।
जिन्हि कीते तिसै न जाणही[5] बिनु नावै सभि चोर । ६ ।
इकि गुण विहाझहि[6] अउगण विकणहि[7] गुर कै सहजि सुभाइ ।
गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ[8] । ७ ।
सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ।
नानक नामे लाइ सवारिअनु[9] सबदे लए मिलाइ । ८ । ९ ।

सभ नावै नो लोचदी[10] जिसु कृपा करे सो पाए ।
बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए । १ ।
तूं बेअंतु[11] दइआलु है तेरी सरणाई । गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई[12] । १ । रहाउ ।
अंतरि बाहरि एकु है बहुबिधि सृसटि उपाई ।
हुकमे कार कराइदा[13] दूजा[14] किसु कहीऐ भाई । २ ।
बुझणा अबुझणा तुधु कीआ[15] इह तेरी सिरिकार[16] ।
इकना बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर[17] । ३ ।
इकि धुरि[18] पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ।
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए । ४ ।
इकि कुचल कुचील विखलीपते[19] नावहु आपि खुआए ।
ना ओन[20] सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए[21] । ५ ।
नदरि[22] करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ।
सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए । ६ ।
लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ।
गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ । ७ ।

---

1) खार अथवा सज्जी नहीं लगती 2) स्थान 3) रंगा जाएगा 4) स्वाभाविक ही 5) जिस ने इस संसार की सृष्टि की है, उसे नहीं जानता 6) खरीद करते हैं 7) बेचते हैं 8) अंतर में निवास करता है 9) संवारा जाता है 10) सारी सृष्टि नाम की चाहना करती है 11) तुम अनंत हो 12) बड़ाई 13) अपने आदेश से ही कार्य कराता है 14) दूसरा, अन्य 15) ज्ञान और अज्ञान तुम ने ही किए हैं 16) कर्त्तव्य पालन का उत्तरदायित्व 17) मार कर निकाल दिया गया है 18) परमात्मा की दरगाह से 19) बुरी चाल वाले, गंदे और दुराचारी हैं 20) उन को न 21) विचलित, उखड़े हुए 22) कृपा-दृष्टि करने से

इहु[1] मनु देसी सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ।
नानक इसु देही विचि[2] नाम निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि । ८ । १० ।

सचि रतीआ[3] सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि[4] ।
घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि । १ ।
अवगण गुणी बखसाइआ[5] हरि सिउ लिव लाई ।
हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई । १ । रहाउ ।
इकि पिरु हदूरि न जाणही[6] दूजै[7] भरमि भुलाइ ।
किउ पाइन्हि डोहागणी[8] दुखी रैणि विहाइ । २ ।
जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ।
अनदिनु[9] सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ । ३ ।
दोहागणी भरमि भुलाइआ कूड़ु[10] बोलि बिखु खाहि ।
पिरु न जाणनि आपणा सुञी[11] सेज दुखु पाहि । ४ ।
सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ।
गुर पुछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि । ५ ।
सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै[12] आपु गवाइ ।
पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ । ६ ।
मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ।
महलु[13] नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ । ७ ।
सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिवलाइ ।
नानक जे सुखु लोड़हि[14] कामणी हरि का नामु मंनि वसाई । ८ । ११ ।

अंमृत जिन्हा चखाइओनु[15] रसु आइआ सहजि सुभाइ ।
सचा वेपरवाहु है तिसनो तिलु न तमाइ[16] । १ ।
अंमृत सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ।
मनु सदा हरीआवला[17] सहजे हरि गुण गाइ । १ । रहाउ ।
मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ।
जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि[18] लिखिआ सो कमाहि । २ ।

---

1) यह 2) में, अंदर 3) अनुरक्त 4) श्रृंगार 5) क्षमा करवाए 6) पास नहीं समझते 7) द्वैत-भाव 8) दोहागिन 9) प्रतिदिन 10) झूठ 11) शून्य 12) अहंभाव 13) परमधाम 14) चाहे 15) स्वादन कराया है 16) तिल मात्र लालच नहीं है 17) हरा-भरा, प्रसन्न 18) परमात्मा की दरगाह से

गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ।
जो इतु लाहै लाइअनु[1] भगती देइ भंडार । ३ ।
गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि[2] ।
अनदिनु[3] रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उरधारि । ४ ।
जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु[4] बलि जाउ ।
सदा पिर कै संगि रहहि विचहु[5] आपु गवाइ । ५ ।
तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ।
सेज सुखाली पिरु रवै हउमै[6] तृसना मारि । ६ ।
करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ।
वरु पाइआ सोहागणी केवल एक मुरारि । ७ ।
सभे गुनह बखसाइ लइओनु[7] मेले मेलणहारि ।
नानक आखणु आखीऐ[8] जे सुणि धरे पिआरु । ८ । १२ ।

सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ।
सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ । १ ।
ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि[9] ।
सद सुणदा सद वेखदा[10] सबदि रहिआ भरपूरि । १ । रहाउ ।
गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ।
सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ । २ ।
ए मन तेरा को नही करि वेखु[11] सबदि वीचारु ।
हरि सरणाई भजि पउ[12] पाइहि मोख दुआरु । ३
सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ।
सबदे हउमै[13] मारीऐ सचै महलि[14] सुखु पाइ । ४ ।
इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ।
इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ[15] । ५ ।
जिनी नामु विसारिआ[16] से मुए मरि जाहि ।
हरिरस सादु[17] न आइओ बिसटा माहि समाहि । ६ ।

---

1) जो इस लाभ में लगाए जाते हैं 2) शृंगार 3) प्रतिदिन 4) ऊपर से 5) अंतर से 6) अहंभाव 7) सभी पाप क्षमा करा लिए 8) कहने की बात कही जा सकती है 9) सदैव पास में देखो 10) सदैव सुनता और देखता है 11) देख ले 12) भाग कर पड़ जाओ 13) अहंभाव 14) परम-धाम 15) चार दिन के लिए, क्षण भंगुर है, इसे जाते देर नहीं लगती 16) भुला दिया है 17) स्वादन

इकि आपे बखसि[1] मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ।
सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि । ७ ।
बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंना[2] भरमाइ ।
बिनु नामै दुखु पाइसी[3] नामु मिलै तिसै रजाइ[4] । ८ ।
जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु[5] ।
नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै[6] से दरि सचे जाणु । ९ । १३ ।

सबदी ही भगत जापदे[7] जिन्ह की बाणी सची होइ ।
विचहु आपु गइआ[8] नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ । १ ।
हरि हरि नामु जन की पति[9] होइ ।
सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ । १ । रहाउ ।
हउमै मेरा[10] जाति है अति क्रोधु अभिमानु ।
सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति[11] मिलै भगवानु । २ ।
पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ।
नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट[12] भंडारा । ३ ।
आवहि इसु रासी[13] के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ।
गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा । ४ ।
भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी[14] ।
धुरहु[15] आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी । ५ ।
बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ।
प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि[16] । ६ ।
जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ।
हिरदै एको नामु वसै हउमै[17] दुबिधा मारि । ७ ।
भगता की जाति पति[18] एको नामु है आपे लए सवारि ।
सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि । ८ ।

---

1) कृपा करके, अथवा क्षमा करके 2) बहरा और अंधा 3) पाएगा 4) इच्छा, मरज़ी 5) स्वीकृत, प्रामणिक 6) उन को नाम कभी नहीं भूलता 7) प्रतीत होते हैं, जाने जाते हैं 8) अंतर से अपने-पन से भावना समाप्त हो जाती है 9) प्रतिष्ठा 10) अहंभाव और ममता 11) आत्मा-ज्योति में परमात्मा-ज्योति मिल जाती है 12) अक्षुण्ण, न समाप्त होने वाला 13) वस्तु समूह, अथवा मूलधन 14) दुष्ट अहंकारी व्यक्ति भक्ति की वास्तविकता को जान नहीं पाते 15) परमात्मा की दरगाह से 16) धैर्य 17) अहंभाव 18) प्रतिष्ठा

भगति निराली अलाह दी[1] जापै गुर वीचारि ।
नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि । ९ । १४ ।

अनरस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ।
सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ । १ ।
ए मन मेरे बावले हरिरसु चखि सादु पाइ ।
अनरसि[3] लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ । १ । रहाउ ।
इसु जगु महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिवलाइ ।
विणु[4] करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ । २ ।
आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ।
गुर सरणाई भजि पए[5] बखसे बखसणहार[6] । ३ ।
बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु[7] जाइ ।
इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ[8] दूजै भरमि भुलाइ । ४ ।
दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु[9] ।
अनदिनु[10] सदा जलदीआ फिरहि[11] सेजै रवै न भतारु । ५ ।
सोहागणी महलु[12] पाइआ विचहु आपु गवाइ[13] ।
गुर सबदी सीगारीआ[14] अपणे सहि[15] लईआ मिलाइ । ६ ।
मरणा मनहु विसारिआ[16] माइआ मोहु गुबारु ।
मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जमदरि होहि खुआरु । ७ ।
आपि मिलाइअनु[17] से मिले गुर सबदि वीचारि ।
नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि । ८ । १५ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ४२२-४३०)

पटी[18]

अयो अंङै[19] सभु जगु आइया काखै घंङै कालु भइआ ।
रीरी लली[19] पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ[20] । १ ।

---

1) परमात्मा की 2) प्रतीत होती है, जानी जाती है 3) दूसरे रस में, अर्थात् द्वैतभाव में 4) बिना 5) भाग कर पड़ जाओ 6) क्षमा करने वाला क्षमा कर देता है 7) अंतर से 8) व्याप्त है, मगन है 9) शृंगार 10) प्रतिदिन 11) वियोग में जलती फिरती हैं 12) परमधाम 13) अंतर से अपनेपन की भावना को दूर करने से 14) सुसज्जित हैं 15) पति-परमात्मा 16) भुलाया हुआ है 17) जिन्हें परमात्मा स्वयं मिलाता है 18) वर्णमाला आधारित काव्य-रचना 19) वर्ण सूचक शब्द (संदर्भ में इनका कोई अर्थ नहीं होता है 20) भूल गया

मन ऐसा लेखा तूं[1] की पड़िआ। लेखा देणा[2] तेरै सिरि रहिआ। १। रहाउ।
सिध ङाइऐ[3] सिमरहि नाही ननै ना तुधु[4] नामु लइआ।
छछै छीजहि[5] अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ। २।
बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ।
अणहोदा नाउ धराइओ पाधा[6] अवरा का भारु तुधु लइआ। ३।
जजै जोति हिरि[7] लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा।
एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी[8] आवहिगा। ४।
तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ[9]।
पहिला फाहा[10] पइआ पाधे पिछो दे[11] गलि चाटड़िआ[12]। ५।
ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ[13]।
साई[14] पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै[15] तेरा जनम गइआ। ६।
मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै[16] वडा[17] रोगु पाइआ।
अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइआ। ७।
ककै कामि क्रोधि भरमिओहु[18] मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ[19]।
पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु[20] बूझे तूं डूबि मुआ। ८।
ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ[21]।
घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ। ९।
पपै पारि न पवहि[22] मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ।
सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ। १०।
भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ[23]।
गुरपरसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ। ११।
ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ।
एह वेला न लहसहि[24] मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ। १२।
झझै कदे[25] न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा[26]।

---

1) तुम 2) देना 3) वर्ण-सूचक शब्द (संदर्भ में इनका कोई अर्थ नहीं है), यथा ननै, छछै, बबै, जजै, ससै, मंमै, ककै, ततै, पपै, भभै, ववै, झझै, घघै, गगै, हाहे, रारै आदि 4) तुम ने 5) जर्जित 6) बिना किसी, विशिष्टता के तुम ने अपना नाम उपाध्याय (पाधा) रखा हुआ है 7) हरली नष्ट कर दी 8) योनि 9) विषवत शिक्षा मत दो 10) फंदा 11) बाद में 12) चेले, शिष्य 13) अनुचित स्थान से लिया हैं 14) जैसी 15) खाने से 16) अहंभाव 17) बड़ा 18) भ्रमित हो 19) भूल गया है 20) बिना 21) स्थान भ्रष्ट हो गया है 22) पार नहीं हो पाता 23) माया में मगन हो गया है 24) फिर समय हाथ नहीं आएगा 25) कभी 26) तुम सुन और देख लो

सतिगुर बाझहु[1] गुर नही कोई निगुरे काहै नाउ बुरा। १३।
धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइया।
गुरमुखि होवहि ता हरिरसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ। १४।
गगै गोबिंदु चिति करे मूड़े गली किनै न पाइआ।
गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह[2] सभ बखसि[3] लइआ। १५।
हाहै हरि कथा बूझु तू मूड़े ता सदा सुखु होई।
मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु[4] सतिगुर मुकति न होई। १६।
रारै रामु चिति करि मूड़ हिरदै जिनकै रवि रहिआ।
गुर परसादी जिनी रामु पछाता[5] निरगुण रामु तिनी बूझि लहिआ[6]। १७।
तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथ[7] न जाई हरि कथिआ।
नानक जिन्ह कउ सतिगुर मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ[8]। १८।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ४३४-३५)

आसा घरु १
छंत

हम घरे साचा सोहिला[9] साचै सबदि सुहाइआ[10] राम।
धन[11] पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम।
प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती[12]।
गुर सबदि सीगारी[13] सचि सवारी सदा रावे रंगि राती[14]।
आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ।
कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सवाइआ। १।
दूजड़े[15] कामणि भरमि भुली[16] हरि वरु न पाए राम।
कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम।
बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी[17] अउगणवंती झूरे।
आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिर मिलिआ हदूरे[18]।
देखि पिरु विगसी[19] अंदरहु सरसी[20] सचै सबदि सुभाए।
नानक विणु[21] नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए। २।

1) बिना 2) गुनाह, पाप 3) क्षमा कर दिए 4) बिना 5) पहचान लिया 6) समझ लिया है 7) अकथनीय 8) निपट गया है, समाप्त हो गया है 9) खुशी का गीत 10) सुशोभित है 11) स्त्री और पति 12) मस्त, मगन हो गई 1) सुसज्जित है 14) प्रेम में अनुरक्त 15) द्वैत-भाव 16) भूल गई 17) ना-समझ 18) पास ही, समीप ही 19) विकसित हुई, आनंदित हुई 20) रसलीन हुई, प्रसन्न हुई 21) बिना

पिरु संगि कामणि जाणिआ[1] गुरि मेलि मिलाई राम ।
अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ।
सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरिरस चाखिआ ।
मिली प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे[2] सचै सबदि सुभाखिआ[3] ।
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ।
नानक बिनु भगती जगु बउराना[4] सचै सबदि मिलाई । ३ ।
साधन मनि अनदु भइआ[5] हरि जीउ मेलि पिआरे राम ।
साधन हरि कै रसि रसी[6] गुर कै सबदि अपारे राम ।
सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ।
सेज सुहावी[7] जा पिरि रावी[8] मिलि प्रीतम अवगण नसे[9] ।
जिसु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ।
नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे । ४ । १ ।

घरु ३

साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह[10] की भगति करे हो ।
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो[11] ।
भगति करहु तुम सहै[12] केरी जो सह पिआरे भावए[13] ।
आपणा भाणा[14] तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ।
भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा[15] गुर-दुआरै को पावए ।
कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगति चितु लावए । १ ।
मेरे मन बैरागीआ तूं[16] बैरागु करि किसु दिखावहि ।
हरि सोहिला[17] तिन्ह सद सदा जो हरिगुण गावहि ।
करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ।
जलि थलि महीअलि एक सोई गुरमुखि हुकमु[18] पछाणए ।
जिनि हुकमु पछाता[19] हरी केरा सोई सरब सुख पावए ।
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु[20] हरि लिव लावए । २ ।

---

1) जान लिया है 2) प्रेम का आनंद प्राप्त किया है 3) सुंदर ढंग से कहा है 4) पागल, दीवाना 5) आनंद हो गया है 6) रसलीन हो गई 7) सुंदर, सुखदायक 8) रमण करे 9) नष्ट हो जाते हैं 10) पति-परमात्मा 11) लो, प्राप्त करो 12) पति-परमात्मा की 13) अच्छा लगे 14) इच्छा, मनमरज़ी 15) कठिन 16) तुम 17) आनंदमय-गीत 18) आदेश, आज्ञा 19) पहचान लिया 20) प्रति-दिन

जह जह मन तूं धावदा[1] तह तह हरि तेरै नाले[2] ।
मन सिआणप[3] छोडीए गुर का सबदु समाले[4] ।
साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ।
जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ।
साचे नालि तेरा गंढु[5] लागै गुरमुखि सदा समाले ।
इउ[6] कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले । ३ ।

सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ[7] निजघरि वसिआ आए ।
नामु विहाझे[8] नामु लए नामि रहे समाए ।
धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ।
तिथै[9] अंमृत भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ।
तह अकेक वाजे सदा अनहदु है सचे रहिआ समाए ।
इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए । ४ ।

मन तूं जोति सरूपु है आपणा[10] मूलु पछाणु ।
मन हरि जी तेरै नालि[11] है गुरमती रंगु माणु[12] ।
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ।
गुरपरसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ[13] न होई ।
मनि सांति आई वजी वधाई[14] तां होआ परवाणु[15] ।
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु । ५ ।

मन तूं गारबि अटिआ[16] गारबि लदिआ जाहि ।
माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि[17] ।
गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ।
अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ।
मनमुख मुगध चेतहि नाहि अगै गइआ पछुतावए ।
इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे । ६ ।

---

1) भागता फिरता है 2) साथ हैं 3) समझदारी, चतुराई 4) स्मरण करो 5) मेल, सम्बंध 6) इस प्रकार 7) थाम लिया, रोक लिया 8) व्यापार करना, वाणिज्य करना 9) वहाँ 10) अपना 11) साथ 12) आनंद मनाओ 13) द्वैत-भाव 14) बधावा बजने लगा, खुशियाँ मनाई जाने लगीं 15) स्वीकृत, प्रामाणिक 16) गर्व से भरपूर है 17) भ्रमण करता है

मन तूं मत माणु करहि[1] जि हउ किछु जाणदा[2] गुरमुखि[3] निमाणा होहु ।
अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ।
होहु निमाणा सतिगुरु अगै मत किछु आपु लखावहे[4] ।
आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ।
सतिगुर कै भाणै[5] करहि कार[6] सतिगुर कै भाणै लागि रहु ।
इउ कहै नानकु आपु छडि[7] सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु । ७ ।

धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ।
महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ।
सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे[8] ।
जा तिसु भाणा[9] गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ।
से जन परवाणु[10] होए जिनी इकु नामु दिड़िआ[11] दुतीआ भाउ चुकाइआ ।
इउ कहै नानकु धंनु सुवेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ । ८ ।

इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि[12] आपि भुलाए ।
दूजै भाइ[13] फिरहि हउमै[14] करम कमाए ।
तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई[15] ।
तिनकी गति अविगति तूं है जाणहि जिनि इह रचन रचाई ।
हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ।
इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए । ९ ।

सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई[16] ।
तूं पार-ब्रहमु बेअंतु[17] सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई[18] ।
सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु[19] मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ।
तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचै सिउ चितु लावहे ।
जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ।
इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई । १० । २ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ४३९-४४२)

---

1) मान करना, अहंकार करना 2) जानता हूँ 3) गुरु के उपदेश के द्वारा 4) अपने अहंभाव को प्रकट करना 5) इच्छा के अनुसार 6) कर्म 7) अपने-पन की भावना को त्याग 8) भुला दिए, नष्ट कर दिए 9) अच्छा लगता है 10) प्रामाणिक स्वीकृत 11) दृढ़ किया 12) पति-परमात्मा 13) द्वैत-भाव 14) अहंभाव 15) उनका कोई बस नहीं चलता 16) बड़ाई 17) अनंत 18) तुम्हारी शक्ति (समर्थता) का वर्णन नहीं किया जा सकता 19) तुमने

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु गूजरी

घरु १ चउपदे

धृगु इवेहा जीवणा[1] जितु हरि प्रीति न पाइ ।
जितु कंमि हरि वीसरै[2] दूजै[3] लगै जाइ । १ ।
ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना ।
जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि[4] सभ जाइ ।
हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ[5] न होवई जीवन पदवी पाइ । १ । रहाउ ।
गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु[6] जैसी भगति बनी ।
आप सेती आपु खाइआ[7] ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समाई[8] । २ ।
बिनु भागा[9] ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै[10] सभु कोइ ।
कूड़ै की पालि विचहु निकलै[11] ता सदा सुखु होइ । ३ ।
नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ।
सतिगुर का भाणा[12] चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ । ४ । १ ।

हरि की तुम सेवा करहु दूजी[13] सेवा करहु न कोइ जी ।
हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ[14] फलु पाईऐ,
दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी । १ ।
हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ।
गुरप्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ । १ । रहाउ ।
हरि मेरा सिमृति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ।
हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु तृपते ।
हरि मेरा साकु[15] अंति होई सखाई । २ ।
हरि बिनु होर रासि कूड़ी[16] है चलदिआ नालि न जाई[17] ।
हरि मेरा धनु मेरे साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई । ३ ।
सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ।
कहै नानकु हरि का भाणा[18] होआ कहणा कछु न जाई । ४ । २ ।

---

1) ऐसे जीने को धिक्कार है 2) कर्म, कार्य करने से हरि-नाम भूल जाए 3) द्वैत-भाव 4) और सब भूल जाए 5) वृद्धावस्था का भय 6) देखो 7) स्वयं ही अपने-पन की भावना नष्ट कर दी 8) आत्म-ज्योति परमात्मा-ज्योति में लीन हो गई 9) भाग्य 10) इच्छा करे, चाहे 11) झूठ का परदा जब अंतर में नष्ट हो जाता है 12) इच्छा, मरजी 13) दूसरी, अन्य की 14) मन की इच्छा के अनुसार 15) सम्बंधी 16) झूठी 17) चलते समय साथ नहीं जाती 18) इच्छा, मरजी

जुग माहि नामु दुलंभु[1] है गुरमुखि पाइआ जाइ ।
बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ[2] । १ ।
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ।
सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ । १ । रहाउ ।
जां भउ पाए आपणा[3] बैरागु उपजै मनि आइ ।
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ । २ ।
सेइ[4] मुकत जि तनु जिणहि[5] फिरि धातु[6] न लागै आइ ।
दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ । ३ ।
नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ[7] ।
इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ[8] । ४ । ३ ।

राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ।
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ । १ ।
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ।
हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति । १ । रहाउ ।
हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ।
तृसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि । २ ।
अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ[9] ।
जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरमराइ तिसु देइ सजाइ[10] । ३ ।
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ।
नानक विचहु हउमै मारे[11] तां हरि भेटै सोई । ४ । ४ ।

तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ।
सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए । १ ।
हरि चेति अचेत मना जो इछहि[12] सो फलु होई ।
गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई । १ । रहाउ ।
सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ।

---

1) दुर्लभ, दुष्प्राप्य 2) अन्य उपाय कर के देख लो 3) परमात्मा आपना भय उत्पन्न कर देता है 4) वही 5) काबू कर लेते हैं 6) चंचल करने वाली माया 7) प्रभु की अद्‌भुत इच्छा को देखो 8) आत्म-ज्योति को परमात्म-ज्योति में समाहित कर देता है 9) हृदय का अहंभाव कभी नहीं जाता 10) दंड 11) अंतर से अहंभाव को नष्ट करे 12) इच्छा करे

जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिग्रा[1] देवै साचु बुझाए । २ ।
विणु[2] पारसै पूज न होवई विणु मन परचे[3] अवरा समझाए ।
गुरु सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए । ३ ।
नानक विणु नदरी किछु न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ।
गुर परसादी दे वडिआई[4] अपणा सबदु वरताए । ४ । ५ ।

पंचपदे

ना कासी[5] मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ।
सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ । १ ।
हरि कथा तू सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ।
इह मति तेरी थिरु[6] रहै तां भरमु विचहु[7] जाइ । १ । रहाउ ।
हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख[8] होवहि नासु ।
पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु । २ ।
मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ ।
हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ । ३ ।
इहु मनु कासी सभि तीरथ सिमृति सतिगुर दीआ बुझाइ ।
अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाई । ४ ।
नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ।
जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ । ५ । ६ ।

एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ।
दूजै भाइ[9] जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई । १ ।
हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ।
हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई । १ । रहाउ ।
सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ[10] ता फिरि तृसना भूख न होइ ।
नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ । २ ।
कथनी बदनी[11] जे करे मनमुखि बूझ न होइ ।
गुरमती घटि चानणा[12] हरि नामु पावै सोइ । ३ ।

---

1) दीक्षा 2) बिना 3) परिचय प्राप्त किए, निश्चय किए, वास्तविकता का भेद जाने बिना 4) बड़ाई 5) काशी, वाराणसी 6) स्थिर 7) अंतर से 8) पाप 9) द्वैत-भाव 10) संतुष्ट होता है 11) मौखिक बात 12) प्रकाश

सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार[1]।
सो मूरखु जो आपु न पछाणई[2] सचि न धरे पिआरु।४।
सचै जगतु डहकाइया[3] कहणा कछू न जाइ।
नानक जो तिसु भावै[4] सो करे जिउ तिस की रजाइ[5]।५।७।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ४९०-४९२)

असटपदीआ घरु १

निरति[6] करी इहु मनु नचाई। गुरपरसादी आपु गवाई।
चितु थिरु[7] राखै सो मुकति होवै जो इछी[8] सोई फलु पाई।१।
नाचु रे मन गुर कै आगै।
गुर कै भाणै[9] नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ[10] भागै।१। रहाउ।
आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए।
आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधै कउ मारगि पाए।२।
अनदिनु[11] नाचै सकति निवारै[12] सिव घरि नीद न होई[13]।
सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई।३।
सुरिनर विरतिपखि[14] करमी नाचै मुनिजन गिआन बीचारी।
सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी।४।
खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी।
जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी[15]।५।
जो तुधु भावहि सेइ नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए।
से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु[16] मनाए।६।
एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई।
जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई।७।
माइआ कै अरथि[17] बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी।
गुरपरसादी सोई जनु पाए जिन कउ कृपा तुमारी।८।

---

1) द्वार-द्वार घूमता फिरता है 2) अपने आप को नहीं पहचानता 3) भ्रमित किया है 4) अच्छा लगे 5) इच्छा, मरज़ी 6) नृत्य 7) स्थिर 8) इच्छा की 9) भावना, इच्छा 10) भय, डर 11) प्रतिदिन 12) माया के प्रभाव को नष्ट करे 13) परमात्मा के घर (परमधाम) को प्राप्त कर चुकने के पश्चात अज्ञान की निद्रा के वशीभूत नहीं होता 14) त्यागी, वैरागी 15) चार प्रकार के उत्पत्ति भेद 16) आदेश, आज्ञा 17) कारण

इकु दमु[1] साचा वीसरे[2] सा वेला बिरथा जाइ ।
साहि साहि[3] समालिए आपे बखसे करे रजाइ[4] । ९ ।
सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ।
कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि[5] तुमारी । १० । १ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५०६)

गूजरी की वार

सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी*

सलोकु

इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ।
गुर कै भाणै[6] जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ।
उई[7] सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ।
नानक नदरी[8] मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि । १ । १ ।

अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार[9] ।
दूजै भाइ सुते[10] कबहि न जागहि पाइआ मोह पिआर ।
नामु न चेतहि सबदु न बीचारहि इहु मनमुख का आचारु ।
हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ,.
नानक जमु मारि करे खुआर । २ । २ ।

पउड़ी

आपणा आपु उपाइओनु[11] तदहु होरु न कोई[12] ।
मता मसूरति[13] आपि करे जो करे सु होई ।
तदहु[14] आकासु न पातालु है ना त्रै लोई[15] ।
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति[16] होई ।
जिउ तिसु भावै[17] तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई । १ ।

सलोकु

साहिबु मेरा सदा है दिसै[18] सबदु कमाइ ।
ओहु अउहाणि[19] कदे नाहि ना आवै ना जाइ ।

---

1) एक क्षण 2) भूल जाए 3) श्वास-श्वास 4) इच्छा पूर्वक कृपा करता है 5) कृपा-दृष्टि *तर्ज़ विशेष, जिस के अंदाज़ में इस वार को गाया जाना है 6) इच्छा, मरज़ी 7) वे 8) कृपा 9) धंधों की मार सहन करता है 10) द्वैत-भाव में सोये रहने के कारण 11) उत्पन्न किया 12) तब अन्य कोई नहीं था 13) विचार-विमर्श, सलाह 14) तब 15) तीन लोक 16) उत्पत्ति 17) अच्छा लगे 18) दिखाई पड़ता है 19) वह जन्म मरण से परे है

सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ।
अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ।
निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु[1] न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ।
नानक एव न जापई[2] करता केती देइ सजाइ । १ । ३ ।

सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ।
नानक हुकमु बुझि परवाणु होई[3] ता फलु पावै सचु ।
कथनी बदनी करता फिरै हुकमै न बुझई अंधा कचु निकचु[4] । २ । ४ ।

पउड़ी

संजोगु विजोगु उपाइओनु[5] सृसटी का मूलु रचाइआ ।
हुकमी[6] सृसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ।
जोती हूं सभु चानणा[7] सतिगुरि सबदु सुणाइआ ।
ब्रह्मा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ।
माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ । २ ।

सलोकु

सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै[8] । सतिगुर कै भाणै वडिआई[9] पावै ।
नानक आपु छोडि गुर माहि समावै । १ । ५ ।

गुर की सिख को विरला लेवै । नानक जिसु आपि वडिआई[10] देवै । २ । ६ ।

पउड़ी

माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ।
पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी[11] ।
अनदिनु भगती रतिआ[12] हरि पारि उतारी ।
गुरसबदी मनु निरमला हउमै[13] छडि विकारी ।
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी । ३ ।

सलोकु

नानक मुकति दुआरा अति नीका[14] नाना[15] होइ सु जाइ ।
हउमै मनु असथूलु है किउकरि विचु दे[16] जाइ ।
सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ।
इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ । २ । ७ ।

---

1) स्वामी, पति 2) अनुमान नहीं लगाया जा सकता 3) आज्ञा मान कर प्रामाणिक हो जाओ 4) बहुत अधिक कच्चा 5) उत्पन्न किया है 6) आज्ञा के अनुसार 7) प्रकाश 8) अच्छा लगे 9) बड़ाई 10) प्रतिष्ठा 11) संसार सागर से कैसे पार उतरा जाए 12) अनुरक्त 13) अहंभाव 14) तंग, छोटा 15) नन्हा सा 16) बीच में से

पउड़ी

प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता[1] । गणतै[2] प्रभु न पाईऐ दूजै भरमीता[3] ।
सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता[4] ।
सबदे हउमै[5] खोईऐ हरि मेलि मिलीता ।
सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता[6] । ४ ।

सलोकु

सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ।
ध्रिगु इवेहा जीविआ[7] किआ जुग महि पाइआ आइ ।
माइआ खोटी रासि[8] है एक चसे महि पाजु लहि जाइ[9] ।
हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ।
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन सुखु वसिआ मनि आइ ।
हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरिनामि रहे लिव लाइ ।
नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ।
रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ[10] । १ । ८ ।
माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ।
इस की सेवा जो करे तिसही कउ फिरि खाइ ।
गुरमुखि कोइ गारड़ू[11] तिनि मलिदलि[12] लाई पाइ ।
नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ । २ । ९ ।

पउड़ी

ढाढी[13] करे पुकार प्रभु सुणाइसी[14] । अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी[15] ।
जो धुरि[16] लिखिआ लेखु से करम कमाइसी[17] ।
जा होवै खसमु[18] दइआलु ता महलु घरु पाइसी[19] ।
सो प्रभु मेरा अति वडा[20] गुरमुखि मेलाइसी । ५ ।

सलोकु

सभना का सहु एकु है सदही रहै हजूरि[21] ।
नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ।
हुकमु भी तिना मनाइसी जिन कउ नदरि[22] करेइ ।
हुकमु[23] मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ । १ । १० ।

1) अपने वश में रखा है 2) चतुराई, चालाकी 3) द्वैत-भाव में भ्रमित है 4) समा जाता है 5) अहंभाव 6) विकसित होता है 7) ऐसे जीने को धिक्कार है 8) झूठा धन है 9) रहस्य खुल जाता है 10) उसको अधिक प्रेम रंग चढ़ता है और उसमें पूरी तरह रंग जाता है 11) सर्प मंत्र जानने वाला 12) मसाल कर 13) भाट 14) सुनाएगा 15) पाएगा 16) परमधाम से 17) कमाएगा 18) पति-परमात्मा 19) परम-धाम प्राप्त करेगा 20) बड़ा 21) पास, समीप 22) कृपा-दृष्टि 23) आज्ञा

रैणि सबाई जलि मुई[1] कंत न लाइओ भाउ[2] ।

नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन पिआरा पुरखु हरि राउ । २ । ११ ।

पउड़ी

सभु जगु फिरि मै देखिआ[3] हरि इको दाता ।

उपाइ कितै न पाईऐ हरि करम बिधाता ।

गुरसबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता[4] ।

अंदरहु तृसना अगनि बुझी हरि अंमृतसरि नाता[5] ।

वडी वडीआई वडे की गुरमुखि बोलाता । ६ ।

सलोकु

काइआ हंस[6] किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ।

एसनो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ[7] ।

काइआ मिटी अंधु[8] है पउणै[9] पुछहु जाई ।

हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ।

नानक हुकमु न जातो[10] खसम का जि रहा सचि समाइ । १ । १२ ।

एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ।

इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका[11] लै जाइ ।

इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले[12] जाइ ।

पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ।

धंनु[13] वापारी नानका जिना नाम धनु खटिआ आइ[14] । २ । १३ ।

पउड़ी

मेरा साहिबु अति वडा[15] सचु गहिर गंभीरा ।

सभु जगु तिसकै वसि है सभु तिस का चीरा ।

गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा[16] ।

किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ।

गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु[17] निहचलु हरि पूरा । ७ ।

सलोकु

ध्रिगु तिना दा जीविआ[18] जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै[19] पाप कमाइ ।

मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन बूझ न काई पाइ ।

हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ।

---

1) सारी रात्रि (वियोगावस्था में) जलती रही 2) प्रेम 3) देख लिया 4) जान लिया, ज्ञान हो गया 5) स्नान किया 6) आत्मा और शरीर 7) झूठ बोल कर इस शरीर का क्यों पोषण किया जाए, जब चलती बार इसने साथ ही नहीं जाना 8) अज्ञानी 9) पवन, वायु 10) आज्ञा का पालन नहीं किया 11) ठग 12) साथ 13) धन्य 14) आकर कमाया है 15) बड़ा 16) धैर्य-वाला, स्थायी 17) स्थिर 18) उनके जीवन को धिक्कार है 19) अहंभाव

गुर परसादी को नामु धिम्राए तिसु हउमै विचहु जाइ[1] ।
नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ[2] । १ । १४ ।
मनमुखु ऊधा कउलु[3] है ना तिसु भगति न नाउ ।
सकती अंदरि वरतदा कूडु[4] तिस का है उपाउ ।
तिस का अंदरु चितु न भिजई[5] मुखि फीका आलाउ[6] ।
ओइ धरमि रलाए ना रलनि ओना अंदरि कूडु सुआउ[7] ।
नानक करतै[8] बणत बणाई[9] मनमुख कूडु[10] बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ । २ । १५ ।

पउड़ी

बिनु बूझे वडा फेरु पइआ[11] फिरि आवै जाई ।
सतिगुर की सेवा न कीतीआ[12] अंति गइआ पछुताई ।
आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई[13] ।
तृसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ।
सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई । ८ ।

सलोकु

जि सतिगुरु सेवे आपणा तिसनो पूजे सभु कोइ ।
सभना उपावा[14] सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ।
अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ।
अंमृतु खाणा अंमृतु पैनणा[15] नानक नामु वडाई[16] होइ । । १ । १६ ।
ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ।
हरि सुख दाता मनि वसै हउमै[17] जाइ गुमानु ।
नानक नदरी[18] पाईऐ ता अनदिनु[19] लागै धिआनु । २ । १७ ।

पउड़ी

सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता[20] ।
अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता[21] ।
तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता[22] ।
अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता[23] ।
सभना दाता एकु है इको हरि मिता[24] । ९ ।

---

1) अंतर से अंहभाव चला जाता है 2) आ पड़ता है 3) उलटा हुआ कमल है 4) झूठ 5) भीगता नहीं 6) आलाप 7) वे धर्म कार्यों में मिलाने पर भी नहीं मिल पाते, उनके अंतर में झूठा स्वाद है 8) परमात्मा ने 9) ऐसा विधान बनाया है 10) झूठ 11) आवागमन का बड़ा चक्र पड़ गया 12) नहीं की 13) अंतर से अपनेपन की भावना चली गई 14) उपाय 15) पहनना 16) बड़ाई 17) अहंभाव 18) कृपा-दृष्टि 19) प्रतिदिन 20) पवित्र 21) जीत लिया 22) चल गया, नष्ट हो गया 23) किया है 24) मित्र है

सलोकु

ब्रहमु बिंदे[1] सा ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ।
सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै[2] रोगु तिसु जाए ।
हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए[3] ।
इसु जुग महि को विरला ब्रहमगिआनी जि हउमै मेटि समाए ।
नानक तिसनो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरिनामु धिआए । १ । १८ ।
अंतरि कपटु मनमुखु अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ।
कपटि कीतै[4] हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाई[5] ।
दूजै भाइ[6] जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ[7] ।
इतु कमाणै[8] सदा दुखु पावै जंमै फिरि आवै जाइ ।
सहसा[9] मूलि न चुकई विचि[10] विसटा पचै पचाइ ।
जिसनो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ।
हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छड़ाइ[11] । २ । १९ ।
जिना हुकमु मनाइओनु[12] ते पूरे संसारि ।

पउड़ी

साहिबु सेवनि आपणा पूरै सबदि वीचारि ।
हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ।
हरि का महलु[13] तिनी पाइआ जिन हउमै विचहु मारि[14] ।
नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उरधारि । १० ।

सलोकु

गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ।
गुरमुखि अनदिनु[15] रहै रंगि राता[16] हरि का नामु मनि भाइआ[17] ।
गुरमुखि हरि वेखहि[18] गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ।
नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ।
जिसनो करमु होवै धुरि[19] पूरा तिनि गुरमुखि हरिनामु धिआइआ । १ । २० ।
सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ।
सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ।
फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ।

---

1) जाने, समझे 2) अहंभाव 3) आत्म-ज्योति को ब्रह्म-ज्योति से मिला दे 4) करने पर 5) स्वाभाविक ढंग से सुनता और देखता है 6) द्वैत-भाव 7) स्वाद 8) इस प्रकार की कमाई करने से 9) संशय, संदेह 10) में, अंदर 11) मुक्ति प्राप्त होती है 12) आज्ञा का पालन किया है 13) परमधाम 14) अहंभाव को अंतर से नष्ट कर दिया है 15) प्रतिदिन 16) प्रेम में अनुरक्त 17) अच्छा लगा है 18) देखता है 19) परमधाम

कूड़े[1] लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ।
नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि । २ । २१ ।

पउड़ी

भगत सचै दरि सोहदे[2] सच सबदि रहाए ।
हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए[3] ।
हरि रंगि रहिह सदा रंगि राते[4] रसना हरि रसु पिआए ।
सफलु जनमु जिनी गुरमुखि जाता[5] हरि जीउ रिदै वसाए ।
बाझु गुरु फिरै बिललादी[6] दूजै भाइ खुआए[7] । ११ ।

सलोकु

कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ[8] हरि उत्तम पदु पाइआ ।
सतिगुर सेवि हरिनामु मनि वसाइआ अनदिनु[9] नामु धिआइआ ।
विचे गृह[10] गुर बचनि उदासी हउमै[11] मोहु जलाइआ ।
आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी[12] माइआ ।
ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ।
जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु[13],
जिनि भ्रमि भुला मारगिपाइआ । १ । २२ ।
त्रै गुण माइआ वेखि[14] भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ।
पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिआ किनै किहु आणि चड़ाइआ[15] ।
दूजै भाइ[16] पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि[17] खुआइआ ।
जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा[18] अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ।
छादनु[19] भोजनु न लैहि सत[20] भिखिआ मन हठि जनमु गवाइआ ।
एतड़िआ विचहु[21] सो जनु समधा[22] जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ।
जन नानक किसनो अखि सुणाईऐ[23] जा करदे[24] सभि कराइआ । २ । २३ ।

पउड़ी

माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ।
एह जमकी सिरकार[25] है एना उपरि जम का डंडु करारा ।
मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन दूजा भाउ पिआरा ।
जमपुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ।
जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा । १२ ।

1) झूठे 2) शोभायमान हैं 3) अपनी ओर खींचता है 4) प्रेम में लीन 5) जान लिया 6) विलाप कर रही है 7) द्वैत-भाव के फलस्वरूप नष्ट हो रही है 8) कमाया है 9) प्रतिदिन 10) घर में ही 11) अहंभाव 12) उस की जननी धन्य है 13) ऊपर 14) देख कर 15) ब्राह्मण पुजारी भूल भूल कर माया की ओर देखता है कि किस ने कितना चढ़ावा भेंट किया है 16) द्वैत-भाव 17) दैव ने 18) उन्होंने 19) वस्त्र 20) अच्छी, उत्तम 21) इतनों में से 22) समृद्ध 23) कह कर सुनाऊं 24) कर्त्ता ने 25) प्रजा

हउमै[1] ममता मोहणी मनमुखा[2] नो गई खाइ ।
जो मोहि दूजै[3] चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ।
गुर कै सबदि परजालीऐ[4] ता एह विचहु[5] जाइ ।
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ।
नानक माइआ का मारणु[6] हरिनामु है गुरमुखि पाइआ जाइ । १ । २४ ।

इहु मनु केतड़िआ[7] जुग भरमिआ थिरु[8] रहै न आवै जाइ ।
हरि भाणा[9] ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ।
जा हरि बखसे[10] ता गुर मिलै असथिरु[11] रहै समाइ ।
नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ । २ । २५ ।

पउड़ी

काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी[12] ।
काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ।
आपि अतीतु अलिपतु रहै निरजोगु[13] हरि जोगी ।
जो तिसु भावै[14] सो करे हरि करे सु होगी ।
हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि[15] विजोगी । १३ ।

सलोकु

वाहु वाहु आपि अखाइदा[16] गुर सबदी सचु सोइ ।
वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ।
वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ।
नानक वाहु वाहु करतिआ[17] प्रभु पाइआ करमि परापति होइ । १ । २६ ।

वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ।
पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ।
वडभागीआ[18] वाहु वाहु मुहहु कढाई[19] ।
वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे[20] तिन कउ परजा पूजण आई ।
वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई । २ । २७ ।

पउड़ी

बजर कपाट काइआ गढ़ भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ।
भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ।

---

1) अहंकार 2) दुष्ट व्यक्तियों को 3) द्वैत-भाव में 4) अच्छी तरह से जला दिया जाए 5) अंतर से 6) गलाने वाला मसाला 7) कितने ही युग 8) स्थिर 9) इच्छा 10) कृपा करे 11) स्थिर 12) संयोगवश ही प्राप्त होता है 13) निर्युक्त 14) अच्छा लगे 15) उतर जाए 16) कहलाता है 17) करते हुए 18) श्रेष्ठ भाग्य वालों 19) निकलवाता है 20) सुंदर, श्रेष्ठ

उपाइ कितै न लभनी[1] करि भेख थके भेखवानी[2] ।
गुरसबदी खोलाईअनि[3] हरिनामु जपानी ।
हरि जीउ अंमृत बिरखु है जिन पीआ ते तृपतानी । १४ ।

सलोकु

वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ।
वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ[4] ।
वाहु वाहु करतिआ[5] हरि सिउ लिव लाइ ।
वाहु वाहु करमी[6] बोलै बोलाइ ।
वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ।
नानक वाहु वाहु सति रजाइ[7] । १ । २८ ।
वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि[8] ।
वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि[9] ।
वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि[10] ।
से वडभागी[11] नानका हरि हरि रिदै समालि । २ । २९ ।

पउड़ी

ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता[12] ।
माइआ मनसा मोहणी दहदिस[13] फिराता ।
अगै नाउ जाति न जाइसी[14] मनमुखि दुखु खाता ।
रसना हरिरसु न चखिओ फीका बोलाता ।
जिना गुरमुखि अंमृतु चाखिआ से जन तृपताता । १५ ।

सलोकु

वाहु वाहु तिसनो आखीऐ[15] जि सचा गहिर गंभीरु ।
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ।
वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ।
वाहु वाहु तिसनो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि[16] ।
नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ । १ । ३० ।
वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ।
ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ।
गुरमुखि अंमृतु पीवणा वाहु वाहु करहि लिवलाइ ।
नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ । २ । ३१ ।

---

1) मिलते नहीं 2) भेखधारी 3) कपाट खोले जाते हैं 4) माता, जननी 5) करते हुए 6) कृपा से 7) सच्ची इच्छा 8) ढूंढ कर प्राप्त की है 9) साथ 10) ढूंढ कर 11) श्रेष्ठ भाग्य वाले 12) लीन, मगन 13) दश दिशाएँ 14) जाएगा 15) कहा जाए 16) सभी को आजीविका प्रदान करता है

पउड़ी

हरि कै भाणै[1] गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै[2] ।
हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ।
हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा[3] नित लीजै ।
हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै[4] ।
हरि कै भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरु मिलीजै । १६ ।

सलोकु

वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन कउ आपे देइ बुझाइ ।
वाहु वाहु करतिआ[5] मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ[6] ।
वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मनि चिंदिआ[7] फलु पाइ ।
वाहु वाहु करहि से जन सोहणे[8] हरि तिन कै संगि मिलाइ ।
वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ।
नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन कउ देउ । १ । ३२ ।

वाहु वाहु साहिबु सचु है अंमृतु जाका[9] नाउ ।
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ।
वाहु वाहु गुणी निधानु है जिसनो देइ सु खाइ ।
वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ।
वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै[10] ।
नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जम कंकरु नेड़ि न आवै[11] । २ । ३३ ।

पउड़ी

हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ।
सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ।
अनदिनु[12] जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ।
गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुन[13] पराणी ।
बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी[14] । १७ ।

सलोकु

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु[15]अवरु न कोइ ।
वाहु वाहु अगम अथाहु[16] है वाहु वाहु सचा सोइ ।
वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ।

---

1) इच्छा से 2) बनती है, सम्पन्न होती है 3) लाभ 4) बसा जाए 5) करते हुए 6) अंतर से अहंभाव चला जाए। 7) जो मन को अच्छा लगने वाला, मनोवांछित 8) सुंदर, श्रेष्ठ 9) जिनका 10) अच्छा लगे 11) यम-दूत समीप नहीं फटकता 12) प्रतिदिन 13) पुण्य 14) ना-समझ 15) उस जितना बड़ा 16) बहुत गहरा

वाहु वाहु अंमृत नामु है गुरमुखि पावै कोइ ।
वाहु वाहु करमी पाइऐ आपि दइआ करि देइ ।
नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाइऐ अनदिनु[1] नामु लएइ । १ । ३४ ।

पउड़ी

बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ[2] ।
जे बहुतेरा[3] लोचीऐ विणु करमै[4] न पाइआ जाइ ।
जिना अंतरि लोभ विकारु है दूजे भाइ[5] खुआइ ।
जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि[6] दुखु पाइ ।
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोइ नाहि ।
तिन जम की तलब[7] न होवई ना ओइ दुख सहाहि ।
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि । २ । ३५ ।

ढाढी[8] तिसनो आखीऐ[9] जि खसमै धरे पिआरु ।
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ।
ढाढी दरु घरु पाइसी[10] सचु रखै उरधारि ।
ढाढी का महलु[11] अगला हरि कै नाइ पिआरि ।
ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि । १८ ।

सलोकु

गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ।
गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ।
जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ[12] पवै सा कुलिवंती नारि ।
सा हुकमु पछाणै कंत का जिसनो कृपा कीती[14] करतारि ।
ओह कुचजी[15] कुलखणी परहरि छोडी भतारि ।
भै पइऐ मलु कटीऐ निरमलु होवै सरीरु ।
अंतरि परगासु[16] मति ऊत्तम होवै हरि जपि गुणी गहीरु[17] ।
भै विचि[18] बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ।
ऐथै सुखु वडिआईआ[19] दरगह मोख दुआर ।
भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ।
नानक खसमै भावै[20] सा भली जिसनो आपे बखसे[21] करतारु । १ । ३६ ।

---

1) प्रतिदिन 2) दूसरा कोई स्थान नहीं है 3) बहुत अधिक 4) बिना कृपा 5) द्वैत-भाव 6) अहंभाव में 7) मांग, पूछ-ताछ 8) भाट 9) कहा जाए 10) पाएगा 11) महत्व, पदवी 12) भय 13) श्रेष्ठ कुल वाली 14) की 15) बुरे आचरण वाली 16) प्रकाश 17) गंभीर गुणों वाला 18) में 19) यहाँ पर सुख और प्रतिष्ठा है 20) अच्छी लगे 21) कृपा करे

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु बिहागड़ा

सलोक*

गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होरथै सुखु न भालि[1] ।
गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि[2] ।
नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि[3] । १ । (१)§

सिफति खजाना बखस[4] है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ।
सतिगुर बिनु हथि न आवई[5] सभ थके करम कमाइ ।
नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ । २ । (१)

नानक गिआनी जगु जीता, जगि जीता सभु कोइ[6] ।
नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ।
गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ।
भगता का हरि अंगीकारु करे[7] कारजु सुहावा[8] होइ ।
मनमुख मूलहु भुलाइअनु[9] विचि[10] लबु लोभु अहंकारु ।
झगड़ा करदिआ[11] अनदिनु[12] सबदि न करहि वीचारु ।
सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ।
दितै कितै न संतोखीअनि[13] अंतरि तृसना बहुतु अज्ञानु अंधारु ।
नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली[14] जिना माइआ मोहि पिआरु । ३ ।(२)

तिन भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ।
धुरि तिन की पैज रखदा[15] आपे रखणहारु[16] ।
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ।
नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु[17] । ४ ।(२)

---

*ये श्लोक 'बिहागड़े की वार म. ४' में से लिए गए हैं

1) अन्य किसी स्थान से सुख को मत ढूंढ़ 2) साथ 3) कृपा-दृष्टि से देख कर निहाल कर दे §कोष्ठकों में लिखे अंक सम्बन्धित पौड़ी-पद के हैं 4) कृपा-फल 5) हाथ में नहीं आता, प्राप्त नहीं होता 6) उसके बिना जगत् ने सभी को जीत लिया है 7) पक्ष पूर्ण करता है 8) अच्छा, सुंदर 9) भुलाए हुए हैं 10) में 11) करते हुए 12) व्यतीत होता है 13) तृप्त नहीं होते होते 14) दुष्ट पुरुषों से सम्बन्ध टूटा ही भला है 15) मर्यादा कायम रखता 16) रखने वाला, प्रभु 17) परखने वाला है

गुरमुखि सचै भावदे[1] दरि सचै सचिआर ।
साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ।
अंतरि सबदु वसाइआ[2] दुखु कटिआ चानणु[3] कीआ करतारि ।।
नानक रखणहारा रखसी[4] आपणी किरपा धारि । ५ ।(३)
गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ[5] ।
जेहा[6] सेवै तेहो होवै जे चले तिसै रजाइ[7] ।
नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ[8] । ६ । (३)
मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ[9] ।
सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ।
नानक आइआ सो परवाणु[10] है जिस गुरमुखि सचि समाइ । ७ ।(४)
आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए[11] ।
मुढै दी खसलति[12] न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ।
सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ[13] रहै अंकि समाए ।
अनदिनु सहसा कदे न चूकै[14] बिनु सबदै दुखु पाए ।
कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला[15] नित धंधा करत विहाए ।
चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए[16] ।
सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नवनिधि पाए ।
जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु[17] पाए ।
धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ।
गुर का सबदु समालि तू मूड़ै गतिमति सबदे पाए ।
नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए[18] । ८ ।(४)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ[19] न पाइआ ।
नानक रसना सबदि रसाइ[20] जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ । ९ ।(५)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ[21] ।
नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ[22] पिआरिआ । १० ।(५)

---

1) अच्छे लगते हैं 2) बसा लिया 3) प्रकाश 4) रक्षा करने वाला प्रभु रक्षा करेगा 5) भय-मगन हो कर कर्म करे 6) जैसा 7) इच्छा, मरज़ी 8) दूसरा स्थान 9) प्रेम 10) प्रामाणिक 11) और को कह कर दुःखित करता है 12) बचपन की आदत 13) तोड़ कर पुनः गढ़ा नहीं, अर्थात् मन की अवस्था को बदला नहीं 14) संशय कभी समाप्त नहीं होता 15) सबल, अधिक 16) चरण चलकर, हाथ काम कर के, आँखें देख कर और कान सुनकर थक गए हैं, आयु के दिन खत्म होने को हैं और अंतकाल समीप आ गया है 17) मोक्ष 18) अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट करना 19) स्वाद 20) रसलीन 21) भुला दिया 22) नाम

दरवेसी को जाणसी[1] बिरला को दरवेसु ।
जे घरि घरि हंढै मंगदा[2] धिगु जीवणु[3] धिगु वेसु ।
जे ग्रासा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिग्रा नाउ ।
तिस के चरन पखालीग्रहि[4] नानक हउ बलिहार जाउ । ११ ।(६)

नानक तरवरु एकु फलु दुई पंखेरु[5] आहि ।
ग्रावत जात न दीसही[6] ना पर पंखी ताहि ।
बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु[7] ।
हरि रसि फलि राते[8] नानका करमि सचा नीसाणु[9] । १२ ।(६)

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ।
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र[10] सु धंधु[11] ।
जह देखा तह जेवरी[12] माइआ का सनबंधु ।
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु[13] । १३ ।(७)

गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा ग्रनदिनु[14] सहजि पिआरि ।
सदा ग्रनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि[15] उरिधारि ।
ग्रंतरि प्रीतमु वसिओ घुरि करमु लिखिग्रा करतारि ।
नानक आपि मिलाइअनु ग्रापे किरपा धारि । १४ ।(८)

कहिऐ कथिऐ न पाईऐ ग्रनदिनु रहै सदा गुण गाइ ।
विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ[16] ।
गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ।
नानक नदरी[17] पाईऐ ग्रापे लए मिलाइ । १५ ।(८)

सेखा ग्रंदरहु जोरु छडि[18] तू भउ करि झलु गवाइ[19] ।
गुर कै भै केते निसतरे भै विचि[20] निरभउ पाइ ।
मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि ग्राइ ।
सांती विचि कार कमावणी सा खसमु[21] पाए थाइ[22] ।
नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिग्रानी जाइ । १६ ।(९)

---

1) फ़कीरी कोई ही जानेगा 2) मांगता हुग्रा फिरता रहे 3) ऐसे जीवन को धिक्कार हैं 4) चरणों को धोया जाए 5) पक्षी 6) दिखाई पड़ता है 7) निर्लिप्त 8) अनुरक्त 9) प्रामाणिकता का चिह्न 10) स्त्री 11) जंजाल 12) फंदा, रस्सी 13) जगत् अज्ञान में खचित है 14) प्रतिदिन 15) लोक परलोक में 16) चीख और विलाप करते करते मर गए 17) कृपा-दृष्टि 18) ऐ शेखा ग्रंतर का हठ छोड़ दे 19) मूर्खता को दूर कर दे 20) में 21) पति-परमात्मा 22) स्थान

मनमुख माइश्रा मोहु है नामि न लगा पिश्रारु ।
कूड़ु[1] कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे श्राहारु ।
बिखु माइआ धनु संचि मरहि श्रंते[2] होइ सभु छारु ।
करम धरम सुच[3] संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ।
नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै[5] दरगहि[6] होइ खुआरु । १७ ।(९)

सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ।
नामु पदारथु पाईऐ अचितु वसै मनि आइ ।
जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै[7] ममता जाइ ।
उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ।
नानक पूरबि[8] जिन कउ लिखिश्रा तिना सतिगुरु मिलिश्रा श्राइ । १८ ।(१०)

नामि रता[9] सतिगुरु है कलिजुग बोहिथु होइ ।
गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना श्रंदरि सचा सोइ ।
नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति[10] होइ ।
नानक सतिगुरु पाइश्रा करमि परापति होइ । १९ ।(१०)

इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ।
नानक जनमु सवारनि श्रापणा कुल का करनि उधारु । २० ।(११)

एहा संधिआ परवाणु[11] है जितु हरि प्रभु मेरा चिति श्रावै ।
हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ।
गुर परसादी दुविधा मरै मनूआ श्रसथिरु[12] संधिआ करे वीचारु ।
नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइ खुश्रारु । २१ ।(१३)

प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिश्रास न जाइ ।
नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि श्राइ । २२ ।(१३)

नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ।
सबदै सिउ चितु न लावई[13] जितु सुखु वसै मनि श्राइ ।
तामसि लगा सदा फिरै श्रहिनिसि[14] जलतु विहाइ ।
जो तिसु भावै सो थीऐ[15] कहणा किछु न जाइ । २३ ।(१५)

---

1) झूठ 2) श्रंततः 3) पवित्रता 5) सफल-मनोरथ नहीं होता 6) प्रभु के द्वार पर 7) अहंभाव 8) पूर्वजन्म 9) अनुरक्त 10) प्रतिष्ठा 11) यही पूजा-पाठ प्रामाणिक है 12) स्थिर 13) नहीं लगाता 14) दिन-रात 15) जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही होता है

सतिगुरु फुरमाइआ कारी[1] एह करेहु ।
गुरु दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु[2] ।
साहिबु सदा हजूरि[3] है भरमै के छउड़[4] कटिकै अंतरि जोति धरेहु ।
हरि का नामु अंमृत है दारु[5] एहु लाएहु ।
सतिगुरु का भाणा[6] चिति रखहु संजमु सचा नेहु[7] ।
नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी[8] अगै हरि सिउ केल करेहु । २४ ।(१५)
माणसु भरिआ आणिआ[9] माणसु भरिआ आइ[10] ।
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ[11] ।
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु[12] धके खाइ ।
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ[13] ।
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ[14] ।
नानक नदरी[15] सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ।
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ[16] । २५ ।(१६)
इहु जगतु जीवतु मरै जा इसनो सोझी होइ ।
जा तिनि सवालिआ[17] तां सवि रहिआ[18] जगाए तां सुधि होइ ।
नानक नदरि[19] करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ।
गुरप्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ । २६ ।(१३)
किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ।
जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला[20] मरणा होइ ।
मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै[21] सभु कोइ ।
गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ।
नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ[22] । २७ ।(१७)
रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ।
अगमु अगोचरु अति वडा[23] अतुलु न तुलिआ जाइ[24] ।
कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ[25] ।

---

1) कर्म 2) स्मरण करो 3) पास, सामने 4) भ्रम का पर्दा 5) औषध 6) इच्छा, मरजी 7) स्नेह, प्रेम 8) यहाँ अंतर में सुख की अवस्था बनी रहेगी 9) एक मनुष्य ने मद्य का प्याला भर कर लाया है 10) दूसरे ने उस में से अपना प्याला भर लिया है 11) दिमाग में खराबी हो जाती है 12) परमात्मा से 13) दंड 14) जितना बस चल सके 15) कृपा-दृष्टि 16) परमधाम में स्थान प्राप्त होता है 17) सुला दिया 18) तब सोता रहा 19) कृपा-दृष्टि 20) सरल, सुखपूर्वक 21) चाहता है 22) तब सदैव जीवन प्राप्त होता है 23) बड़ा 24) अतुलनीय है, उसकी तुलना नहीं की जा सकती 25) किसी से खरीदा भी नहीं जा सकता

गुर कै सबदि भेदिश्रा इन बिधि वसिश्रा मनि आइ ।
नानक आपि अमेउ[1] है गुर किरपा ते रहिश्रा समाइ ।
श्रापे मिलिश्रा मिलि रहिआ आपे मिलिश्रा आइ । २८ ।(१८)

ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ।
तोटा मूलि न श्रावई[2] लाहा[3] सद ही होइ ।
खाधै खरचिऐ तोटि[4] न श्रावई सदा सदा ओहु देइ ।
सहसा[5] मूलि न होवई हाणत[6] कदे न होइ[7] ।
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि[8] करेई । २९ ।(१८)

हउमै विचि[9] जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ।
जिचरु विचि दंमु है[10] तिचरु न चेतई कि करेगु श्रगै जाइ[11] ।
गिआनी होइ सु चेतंनु होइ श्रगिआनी श्रंधु कमाइ ।
नानक एथै[12] कमावै सो मिलै श्रगै पाए जाइ । ३० ।(१९)

धुरि खसमै[13] का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिश्रा न जाइ ।
सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिश्रा[14] सदा रहिआ लिव लाइ ।
दमि[15] दमि सदा सम्हालदा[16] दंमु न बिरथा जाइ ।
जनम मरन का भउ गइश्रा जीवन पदवी पाइ ।
नानक इहु मरतबा[17] तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ[18] । ३१ ।(१९)

सभु किछु हुकमे[19] आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ।
जेको मूरखु श्रापहु जाणै[20] अंधा अंधु कमाइ ।
नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ । ३२ ।(२१)

सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ।
तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ।
नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ । ३३ ।(२१)

(श्रादि ग्रन्थ पृष्ठ ५४८-५५६)

---

1) मापा नहीं जा सकता, श्रनंत 2) घाटा बिलकुल नहीं पड़ता 3) लाभ 4) कमी 5) संशय 6) हानि 7) कभी नहीं होती 8) कृपा-दृष्टि 9) श्रहंभाव में 10) जब तक अंतर में पाखंड है 11) आगे जाकर क्या करेगा 12) यहाँ 13) पति-परमात्मा 14) व्याप्त रहता है 15) श्वास 16) स्मरण करता है 17) महत्व, पदवी, मान 18) इच्छा, मरज़ी 19) प्रभु-आदेश श्रनुसार 20) समझे

१ ओ सतिगुर प्रसादि

रागु वडहंसु

चउपदे घरु १

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ[1] ।
इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ । १ ।
जपि मन मेरे एको नामु ।
सतिगुरि दीआ मो कउ[2] एहु निधानु । १ । रहाउ ।
सिधा के आसण जे सिखै[3] इंद्री वसि करि कमाइ ।
मन की मैलु न उतरै हउमै[4] मैलु न जाइ । २ ।
इसु मन कउ होरु[5] संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ।
सतगुरि मिलिऐ उलटी भई[6] कहणा किछू न जाइ । ३ ।
भणति[7] नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै[8] गुरु कै सबदि फिरि जीवै कोइ ।
ममता की मैलु उतरै इहु मनु हछा[9] होइ । ४ । १ ।

नदरी[10] सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ।
नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ । १ ।
मेरे मन चेति सचा सोइ ।
एको चेतहि ता सुख पावहि फिरि दूखु न मूले होइ[11] । १ । रहाउ ।
नदरि मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ।
नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ । २ ।
जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ।
अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ[12] । ३ ।
सभना नदरि एक है आपे फरकु[13] करेइ ।
नानक सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई[14] देइ । ४ । २ ।

---

1) शरीर को धोने के मन पवित्र नहीं होता 2) मुझे 3) सिद्धों की आसन-प्रक्रिया को सीख लिया जाए 4) अहंभाव 5) अन्य, और 6) मन की स्थिति में परिवर्तन हो गया 7) कहता है 8) मिल कर मर जाए, अर्थात् अहंभाव को नष्ट कर दे 9) अच्छा, श्रेष्ठ, पवित्र 10) कृपा-दृष्टि 11) बिलकुल नहीं होता 12) द्वैत-भाव 13) अंतर, भेद 14) बड़ाई, प्रतिष्ठा

माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ।
सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई[1] । १ ।
मन मेरे गुरमति करणी सारु ।
सदा सदा हरि प्रभु रवहि[2] ता पावहि मोख दुआरु । १ । रहाउ ।
गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ।
बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए । २ ।
मेरी मेरी करदे घटि गए[3] तिना हथि किहु न आइआ[4] ।
सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ । ३ ।
आसा मनसा एहु सरीरु अंतरि जोति जगाए ।
नानक मनमुखि[5] बंधु है गुरमुखि मुकति कराए । ४ । ३ ।

सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ।
सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ[6] । १ ।
मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ।
सतगुरि मोकउ[7] हरि दीआ बुझाइ । १ । रहाउ ।
दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ[8] ।
दूजै भाइ करूपी[9] दूखु पावहि आगै जाइ । २ ।
गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ।
अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ[10] । ३ ।
सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछु न जाइ ।
नानक आपे वेक कीतिअनु[11] नामे लइअनु लाइ[12] । ४ । ४ ।

अंमृत नामु सद मीठा लागा गुरसबदी सादु[13] आइआ ।
सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ । १ ।
हरि करि किरपा सतगुरु मिलाइआ ।
पूरै सतिगुरि हरिनामु धिआइआ । १ । रहाउ ।
ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ।
महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु[14] बहुतु अहंकारा । २ ।

---

1) द्वैतभाव में लग कर प्रजा नष्ट हो गई है 2) याद कर, स्मरण कर 3) कम हो गए, नष्ट हो गए 4) उनके हाथ में कुछ नहीं आया 5) मन के अनुसार चलने वाला, दुष्ट व्यक्ति 6) अंतर से अपनेपन की भावना को नष्ट कर दे 7) मुझे 8) दोहागिन खूब रोती है, उनको परमधाम की प्राप्ति नहीं होती 9) द्वैत-भाव के कारण कुरूप साधक-स्त्री 10) विलाप करती है 11) अलग कर लिए हैं 12) नाम में लगा लिए हैं 13) स्वाद 14) क्रोध, अज्ञान

किसनु सदा अवतारी रुधा[1] कितु लगि तरै संसारा ।
गुरमुखि गिआनि रते[2] जुग अंतरि[3] चूके मोह गुबारा । ३ ।
सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ।
साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोखदुआरा । ४ ।
एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला[4] ।
नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु[5] दइआला । ५ । ५ ।

गुरमुखि[6] सचु संजमु ततु गिआसु ।
गुरमुखि साचै लगै धिआनु । १ ।
गुरमुखि मन मेरे नामु समालि[7] ।
सदा निबहै चलै तेरै नालि[8] । १ । रहाउ ।
गुरमुखि जाति पति[9] सचु सोइ ।
गुरमुखि अंतरि सखाई[10] प्रभु होइ । २ ।
गुरमुखि जिसनो आपि करे सो होइ ।
गुरमुखि आपि वडाई[11] देवै सोइ । ३ ।
गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ।
गुरमुखि नानक परवारै साधारु । ४ । ६ ।

रसना हरि सादि[12] लगी सहजि सुभाइ ।
मनु तृपतिआ हरिनामु धिआइ । १ ।
सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ।
आपणे सतगुर विटहु[13] सदा बलिहारी । १ । रहाउ ।
अखी संतोखिआ[14] एक लिव लाइ ।
मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ[15] । २ ।
देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ।
नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ । ३ ।
नानक मसतकि जिसु वडभागु[16] ।
गुर की बाणी सहज बैरागु । ४ । ७ ।

---

1) लीन, व्यस्त 2) अनुरक्त 3) इस युग में, इस संसार में 4) पालन-पोषण 5) प्रशासक, नियंता 6) गुरु का अनुसारी व्यक्ति 7) स्मरण कर 8) साथ 9) प्रतिष्ठा 10) सहायक, सखा 11) बड़ाई 12) स्वाद 13) ऊपर से 14) आँखें तृप्त हो गई 15) द्वैत-भाव को नष्ट कर के 16) श्रेष्ठ भाग्य

पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ।
सचै सबदि सचि समाइ । १ ।
ए मन नामु निधानु तू पाइ ।
आपणे गुर की मंनि लै रजाइ[1] । १ । रहाउ ।
गुर कै सबदि विचहु[2] मैलु गवाइ ।
निरमलु नामु वसै मनि आइ । २ ।
भरमे भूला फिरै संसारु ।
मरि जनमै जमु करे खुआरु । ३ ।
नानक से वडभागी[3] जिन हरिनामु धिआइआ ।
गुर परसादी[4] मंनि वसाइआ । ४ । ८ ।

हउमै[5] नावै नालि[6] विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ[7] ।
हउमै विचि[8] सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ । १ ।
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ।
हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु[9] हउमै जाइ । १ । रहाउ ।
हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ[10] ।
हउमै वडा गुबारु[11] है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ । २ ।
हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ।
हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ । ३ ।
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ।
सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ[12] । ४ । ९ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५५८-५६०)

असपटदीआ

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ।
अनदिनु[13] सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग[14] हमारा । १ ।

---

1) इच्छा, मरज़ी 2) में से 3) श्रेष्ठ भाग्य वाले हैं 4) गुरु की कृपा के द्वारा 5) अहंभाव, अहंकार 6) साथ, से 7) दोनों एक स्थान पर नहीं रह सकते 8) अहंभाव में 9) अंतर से 10) उत्पत्ति होती हैं 11) यहां अंधकार है 12) समाहित हो जाता है 13) प्रतिदिन 14) श्रेष्ठ भाग्य

मन मेरे साचे नाम विटहु[1] बलि जाउ ।
दासनिदासा[2] होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ । १ । रहाउ ।
जिहवा सची सचि रती[3] तनु मनु सचा होइ ।
बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ[4] । २ ।
सचु खेती सचु बीजणा[5] साचा वापारा ।
अनदिनु[6] लाहा[7] सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा । ३ ।
सचु खाणा सचु पैनणा[8] सचु टेक हरि नाउ ।
जिसनो बखसे[9] तिसु मिलै महली पाए थाउ[10] । ४ ।
आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ।
गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि । ५ ।
अंतरु सचा मनु सचा सची सिफती सनाइ[12] ।
सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ । ६ ।
सचु वेला मूरतु[13] सचु जितु सचे नालि पिआरु[14] ।
सचु वेखणा[15] सचु बोलणा सचा सभु आकारु । ७ ।
नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ।
जिउ भावै तिउ रखसी[16] आपे करे रजाइ[17] । ८ । १ ।

मनूआ दहदिस[18] धावदा[19] ओहु कैसे हरि गुण गावै ।
इंदी[20] विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै । १ ।
वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै[21] ।
राम नामु इसु जुग महि दुलभु[22] है गुरमति हरि रसु पीजै । १ । रहाउ ।
सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ।
गुरमती आपै आपु पछाणै ता निजघरि वासा पावै । २ ।
ए मन मेरे सदा रंगि राते[23] सदा हरि के गुण गाउ ।
हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ । ३ ।
हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ।
पाथरु डुबदा[24] काढि लीआ साची वडिआई[25] । ४ ।

---

1) ऊपर से २) दासों का दास 3) अनुरक्त 4) सारा जन्म नष्ट कर के जाएगा 5) बीज बोना 6) प्रतिदिन 7) लाभ 8) पहनना 9) कृपा करे 10) परमधाम में स्थान ग्रहण करता है 12) शोभा और यश 13) मुहूर्त 14) जिस में सत्यस्वरूप प्रभु से प्रेम पड़ता है 15) देखना है 16) रखेगा 17) इच्छा, मरज़ी 18) दश दिशाओं में 19) भागता है 20) इंद्रिय 21) गायन किए जाएँ 22) दुलर्भ 23) प्रेम में अनुरक्त होकर 24) डूबता हुआ 25) बड़ाई

बिखु से अंमृत भए गुरमति बुधि पाई ।
अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई[1] । ५ ।
माणस जनमु दुलंभु[2] है जग महि खटिआ[3] आइ ।
पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ । ६ ।
मनमुख भूले बिखु लगे अहिला[4] जनमु गवाइआ ।
हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ[5] । ७ ।
मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ।
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ । ८ । २ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५६४-५६५)

छंत

आपणे पिर कै रंगि रती[6] मुईए[7] सोभावंती नारे ।
सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे[8] ।
सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु[9] रचाइआ ।
आपु गवाइआ[10] ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ।
साधन सबदि सहाई प्रेम कसाई[11] अंतरि प्रीति पिआरी ।
नानक साधन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि[12] सवारी । १ ।
निरगुवंतड़ीए[13] पिरु देखि हदूरे[14] राम ।
गुरमुखि जिनि राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ[15] भरपूरे राम ।
पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे[16] जुगि जुगि एको जाता[17] ।
धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ।
जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ[18] हरि सरि रही भरपूरे ।
नानक कामणि सा पिर भावै[19] सबदे रहै हदूरे । २ ।
सोहागणी जाइ पुछहु मुईए जिनी विचहु[20] आपु गवाइआ ।
पिर का हुकमु[21] न पाइओ मुईए जिन्ही विचहु आपु न गवाइआ ।
जिनी आपु गवाइआ तिन्ही पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै[22] ।

---

1) आक से चंदन बन गए और अंतर में सुगंधि व्याप्त हो गई 2) मनुष्य जन्म दुर्लभ है 3) पूर्वजन्मों का कमाया हुआ 4) व्यर्थ 5) अच्छा नहीं लता 6) प्रेम में अनुरक्त 7) सहज संबोधक शब्द-मर जाने वालिए 8) प्रियतम के प्रेम का आनंद मनाती है 9) स्नेह, प्रेम 10) अपनेपन की भावना को नष्ट करने पर 11) प्रेम की ओर खिंची हुई 12) पति, स्वामी 13) गुणहीन स्त्री 14) पास, समीप 15) सर्वत्र व्याप्त है 16) समीप देखो 17) जानो, जाना है 18) शब्द-वाणी का यशोगान किया है 19) अच्छी लगे 20) अंतर से 21) आज्ञा 22) आनंद पूर्वक खुशियाँ मनाती है

सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणे[1] ।
कामणि वडभागी[2] अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ।
नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ । ३ ।
हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए[3] ।
हरि वरु रावहि[4] सदा मुईए निजघरि वासा पाए ।
निजघरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ।
पिर रलीआला[5] जोबनु बाला अनदिनु[6] कंति सवारी ।
हरि वरु सोहागो मसतकि भागो[7] सचै सबदि सुहाए ।
नानक कामणि हरि रंगि राती[8] जा चलै सतिगुर भाए । ४ । १ ।

गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ।
अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा[9] हरि रसु पीजै राम ।
लाहा हरि रसु लीजै[10] हरि रावीजै[11] अनदिनु नामु वखाणै[12] ।
गुण संग्रहि अवगण विकणहि[13] आपै आपु पछाणै ।
गुरमखि पाई वडी वडिआई[14] सचै सबदि रसु पीजै ।
नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै । १ ।
गुरमति खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ।
आपणे घर अंदरि रसु भुंचु[15] तू लाहा लै परथाए[16] राम ।
लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ।
हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ।
मनमुख खेती वणजु[17] करि थाके तृसना भुख[18] न जाए ।
नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए[19] । २ ।
हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो[20] राम ।
गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ।
मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते[21] वीचारी ।
नाम बिना सभु जगु बउराना[22] सबदे हउमै[23] मारी ।

---

1) नाम का बखान करती है 2) श्रेष्ठ भाग्य वाली 3) इच्छा के अनुसार 4) रमण करो, स्मरण करो 5) रसिक 6) प्रतिदिन 7) भाग्य 8) प्रेम में अनुरक्त 9) लाभ 10) लो, प्राप्त करो 11) स्मरण कीजिए 12) नाम का बखान करे 13) बेचना, त्यागना 14) बड़ी प्रतिष्ठा 15) आनंद लो 16) बदले में 17) वाणिज्य 18) भूख 19) अच्छे भाव से 20) श्रेष्ठ भाग्य 21) लीन, मगन 22) पागल 23) अहंभाव

साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ।
नानक सबदि मिलै भउभंजनु[1] हरि रावै मसतकि भागो । ३ ।
खेती वणजु सभु हुकमु[2] है हुकमै मनि वडिआई[3] राम ।
गुरमती हुकमु बुझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ।
हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ।
सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ।
भउभंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ।
कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई । ४ । २ ।

मन मेरिआ तु सदा सचु समालि जीउ ।
आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि[4] न सकै जम कालु जीउ ।
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ।
सदा सचि रता[5] मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ।
दूजै भाइ[6] भरमि विगुती[7] मनमुखि मोही जमकालि ।
कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि । १ ।
मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वस्तु न भालि[8] ।
जो भावै सो भुंचि तू[9] गुरमुखि नदरि[10] निहालि।
गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई[11] ।
मन मुख अंधुले गिआन विहूणे[12] दूजै भाइ खुआई[13] ।
बिनु नावै को छुटै नाही सभ बाधी जमकालि ।
नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि । २ ।
मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइकै इक सचि लगे वापारा ।
सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ।
अंतरि सबदु अपारा हरि नाम पिआरा नामे नउनिधि पाई ।
मन मुख माइआ मोहि विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई[14] ।
हउमै[15] मारि सचि सबदि समाणे सचि रते[16] अधिकाई ।
नानक माणस जनमु दुलंभु[17] है सतिगुरि बूझ बुझाई । ३ ।

---

1) भय को दूर करने वाला, भयनाशक 2) आज्ञा, आदेश 3) बड़ाई 4) स्पर्श करना, प्रभावित करना 5) लीन, मगन 6) द्वैत-भाव 7) भ्रम में नष्ट हुई 8) ढूंढ 9) जो तुझे अच्छा लगे उसी का आनंद ले 10) कृपा-दृष्टि 11) सहायक, सखा 12) वंचित 13) द्वैत-भाव के फल स्वरूप नष्ट हो गए 14) द्वैत-भाव के कारण प्रतिष्ठा नष्ट करली 15) अहंभाव 16) अनुरक्त 17) मनुष्य जन्म दुर्लभ है

मन मेरे सतिगुरु सेवनी आपणा से जन वड़भागी[1] राम ।
जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ।
से जन बैरागी सचि लिव लागी अपणा आपु पछाणिआ ।
मति निहचल अति गूड़ी[2] गुरमुखी सहजे नामु वखाणिआ[3] ।
इकि कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुखि सोइ रहे अभागे[4] ।
नानक सहजे सेवहि गुरु आपणा से पूरे वडभागे । ४ । ३ ।

रतन पदारथ वणजीअहि[5] सतिगुरि दीआ बुझाई राम ।
लाहा[6] लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ।
गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे[7] ।
बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई[8] गुरमति नामु अधारे ।
वखरु[9] नामु सदा लाभु है जिसनो एतु वापारि लाए ।
रतन पदारथ वणजीअहि[10] जां सतिगुरु देइ बुझाए । १ ।
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा एहु वापारा राम ।
कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम[11] ।
बहु वधहि विकारा सहसा[12] इहु संसारा बिनु नावै पति[13] खोई ।
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि[14] बिनु बूझे सुखु न होई ।
आवण जाणा[15] कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ।
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा । २ ।
खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ।
खोटे दरगह सुटिअनि[16] ऊभे[17] करनि पुकारा राम ।
ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ।
बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ।
मनमुख संता नालि[18] वैरु करि दुखु खटे संसारा ।
खोटे खरे परखीनि तितु सचै दरवारा राम । ३ ।
आपि करे किसु आखीऐ[19] होरु करणा किछु न जाई राम ।

---

1) श्रेष्ठ भाग्य वाले 2) गंभीर, गहरी 3) बखान किया है 4) भाग्यहीन 5) वाणिज्य किया जाए 6) प्राप्ति, लाभ 7) संसार में 8) द्वैत-भाव के फल स्वरूप प्रतिष्ठा नष्ट कर ली 9) वस्तु, सौदा 10) वाणिज्य किया जाए 11) झूठ बोल कर विष का सेवन करते हैं, इस से और विकार बढ़ते हैं 12) संशय 13) प्रतिष्ठा 14) वाद विवाद करते हैं 15) आवागमन 16) फेंक दिए जाते हैं 17) खड़े होकर 18) के साथ 19) किस को कहा जाए

जितु भावै तितु लाइसी[1] जिउ तिसदी वडिआई[2] राम ।
जिउ तिसदी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई[3] ।
जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे[4] सोई ।
गुरपरसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति[5] पाई ।
आपि करे किसु आखीऐ[6] होरु करणा किछू न जाई । ४ । ४ ।

सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ।
गुरमती हरि नामु वणजीऐ[7] अति मोलु अफारा[8] राम ।
अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी[9] ।
अंतरि बाहरि भगती राते[10] सचि नामि लिव लागी ।
नदरि[11] करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ।
नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा । १ ।
हंउमै[12] माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै[13] राम ।
गुरमती मनु निरमला रसना हरिरसु पीजै राम ।
रसना हरिरसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ।
अंतरि खूहटा[14] अंमृति भरिआ[15] सबदे काढि[16] पीऐ पनिहारी ।
जिसु नदरि[17] करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै[18] ।
नानक नामि रते[19] से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै । २ ।
पंडित जोतकी[20] सभि पड़ि पड़ि कूकदे[21] किसु पहि करहि पुकारा राम ।
माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ।
माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि[22] दुखु पाई ।
बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा मांहि समाई ।
जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा[23] ।
नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि[24] मुए गावारा । ३ ।
माइआ मोहि मनु रंगिआ[25] मोहि सुधि[26] न काई राम ।
गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा[27] रंगु जाई राम ।

---

1) लगाएगा 2) जिस प्रकार उसकी बड़ाई है 3) (मनुष्यों में से) कोई शूरवीर अथवा कायर नहीं है 4) कृपा करता है 5) प्रतिष्ठा 6) किस को कहा जाए 7) वाणिज्य किया जाए 8) फैला हुआ, बड़ा 9) बड़े भाग्य वाले 10) अनुरक्त, लीन 11) कृपा-दृष्टि 12) अहंभाव 13) भर जाती है 14) कुंआ 15) भरा हुआ 16) निकाल कर 17) कृपा-दृष्टि 18) स्मरण करती है 19) अनुरक्त 20) ज्योतिषी 21) चीखते हैं 22) आवागमन 23) मिटाने वाला 24) चीख-कर 25) मगन है, लीन है 26) होश 27) मायामय रंग (प्रेम)

दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा।
गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा[1]।
आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए[2]।
नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए। ४। ५।

ए मन मेरिआ आवागउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा[3] राम।
आपे सचा बखसि[4] लए फिरि होइ न फेरा[5] राम।
फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई।[6]
साचै रंगि राते[7] सहजे माते[8] सहजे रहे समाई।
सचा मनि भाइआ[9] सचु वसाइआ सबदि रते अंति निवेरा।
नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि[10] फेरा। १।
माइआ मोहु सभु बरलु[11] है दूजै भाइ[12] खुआई राम।
माता पिता सभु हेतु[13] है हेते पलचाई[14] राम।
हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई।
जिनि सृसटि साजी[15] सो करि वेखै[16] तिसु जेवडु[17] अवरु न कोई।
मनमुखि[18] अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई।
नानक बिनु नावै सभु कोई भुला[19] माइआ मोहि खुआई। २।
इहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम[20]।
अरदासि[21] करीं गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई[22] राम।
रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता।
सेवा लागे से वडभागे[23] जुगि जुगि एको जाता[24]।
जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति[25] नही पाई।
नानक तिसनो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई। ३।
जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम।
अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम।
आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ।

---

1) सँवारता है, सुधारता है 2) और कुछ कहा नहीं जा सकता 3) छुटकारा 4) क्षमा कर देता है; कृपा करता है 5) पुन: जन्म-मरण नहीं होता 6) बड़ाई 7) प्रेम में अनुरक्त 8) मस्त, लीन 9) अच्छा लगा 10) संसार सागर 11) पागलपन, मूर्खता 12) द्वैत-भाव 13) मोह 14) उलझना 15) बनाई है 16) देखता है 17) उस जितना बड़ा 18) मन के अनुसार कार्य करने वाला 19) भूला हुआ है 20) भाग कर राम की शरण में पड़ गए 21) विनय, प्रार्थना 22) प्रतिष्ठा प्रदान करें 23) बड़े भाग्य वाले 24) जान लिया है 25) मुक्ति

दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ[1] ।
घर महि निजघरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई[2] ।
नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनी[3] मति परवाणु[4] सचु साई । ४ । ६ ।
(आदि ग्रन्थ, पृष्ठ 567-572)

अलाहणीआ

प्रभु सचड़ा[5] हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु[6] ।
साधन रंड न कबहू बैसई[7] ना कदे[8] होवै सोगु ।
ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग साधन महलि समाणी[9] ।
जिनि प्रिय जाता[10] करम बिधाता बोले अंमृत बाणी ।
गुणवंतीआ गुण सारहि[11] अपणे कंत सभालहि ना कदे लगै विजोगो ।
सचड़ा पिरु[12] सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो । १ ।
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ।
साधन प्रिअ कै रंगि रती[13] विचहु आपु गवाए[14] ।
विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ।
कामणि इंछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ।
सबद रंगि राती जोबनि माती[15] पिर कै अंकि समाए ।
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए । २ ।
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूजउ संता जाए ।
आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए[16] ।
पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती[17] ।
कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ।
पिरु रहिआ भर-पूरे वेखु हदूरे[18] रंगु माणे[19] सहजि सुभाए ।
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए । ३ ।
पिरहु विछुंनीआ[20] भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ।

---

1) भली-भाँति बखान किया है 2) प्रतिष्ठा 3) परमधाम प्राप्त करेंगे 4) प्रामाणिक, स्वीकृत 5) सत्य-स्वरूप 6) योग्य 7) वह स्त्री कभी विधवा हो कर नहीं बैठती 8) कभी 9) परमधाम में समाई रहती हैं 10) जान लिया 11) गुणों का स्मरण करती हैं 12) पति-परमात्मा 13) प्रेम में अनुरक्त 14) अंतर से अपने-पन की भावना नष्ट हो जाती है 15) मस्त 16) सहज भाव से, स्वाभाविक 17) सच्चे शब्द में साधक रूप स्त्री मगन हो जाती है 18) सामने देखो 19) आनंद मनाएगा 20) पति से वियुक्त

सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ।
अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ[1] गवाए सचे ही सचि राती[2] ।
सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती[3] ।
पिरु निरमाइलु[4] सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ।
पिरहु विछुंनीआ[5] भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए । ४ । १ ।

सुणिअहु कंत महेलीहो[6] पिरु सेविहु सबदि वीचारि ।
अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी[7] रोवै कंत विसारि ।
रोवै कंत संमालि[8] सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ।
गुरमुखि जाता[9] सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ।
जिनि आपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कुड़िआरे[10] ।
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे । १ ।
सभु जगु आपि उपाइओनु[11] आवण जाणु संसारा[12] ।
माइआ मोहु खुआइअनु मरि जंमै वारो वारा[13] ।
मरि जंमै वारो वारा वधहि[14] बिकारा गिआन विहूणी मूठी[15] ।
बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ।
पिरु जगजीवनु किसनो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ।
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे । २ ।
सो पिरु सचा सद[16] ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ।
भूली फिरै धन इआणीआ[17] रंड बैठी दूजै भाए[18] ।
रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव[19] घटै तनु छीजै ।
जो किछु आइआ सभु किछु जासी[20] दुखु लागा भाइ दूजै ।
जम कालु न सूझै माइआ जगु लूझै[21] लबि लोभि चितु लाए ।
सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए । ३ ।
इक रोवह पिरहि विछुंनीआ[22] अंधी ना जाणै पिरु नाले[23] ।
गुरपरसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ।

---

1) द्वैत-भाव 2) मगन, लीन 3) अहंभाव का भ्रम नष्ट हो गया 4) निर्मल 5) पति से वियुक्त 6) पति की महिलाओ ! सुनो 7) ठगी हुई 8) (गुणवान स्त्री) पति का स्मरण कर के रुदन करती है 9) जान लिया, भेद पा लिया 10) झूठ के कारण झूठी स्त्री ठगी गई 11) उत्पन्न किया है 12) संसार आवागमन का खेल है 13) बार-बार 14) बढ़ते हैं 15) ज्ञान से वंचित होने के फलस्वरूप ठगी गई 16) सदा, सदैव 17) ना-समझ 18) द्वैत-भाव के कारण विधवा हो कर बैठ गई 19) आयु 20) जाएगा 21) झगड़े में व्यस्त, उलझे हुए 22) वियुक्त 23) साथ में

पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ।
इहु तनु रुलै रुलाईआ[1] कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे[2] ।
नानक साधन मिलै मिलाई[3] पिरु अंतरि सदा समाले ।
इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ[4] अंधी न जाणै पिरु है नाले । ४ । २ ।

रोवहि पिरहि विछुंनीआ मैं पिरु सचड़ा है सदा नाले ।
जिनी चलणु सही जाणिआ[5] सतिगुरु सेवहि नामु समाले ।
सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुर सेवि सुखु पाइआ ।
सबदे कालु मारि[6] सचु उरिधारि फिरि आवण जाणु न होइआ ।
सचा साहिबु सची नाई[7] वेखै नदरि निहाले[8] ।
रोवहि पिरहु विछुनीआ[9] मैं पिरु सचड़ा है सदा नाले[10] । १ ।
प्रभु मेरा साहिबु सभदू[11] ऊचा है किव मिलां[12] प्रीतम पिआरे ।
सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उरधारे ।
सदा उरधारे नेहु नालि पिआरे[13] सतिगुर ते पिरु दिसै[14] ।
माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै[15] ।
पिर रंगि राता[16] सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ।
प्रभु मेरा साहिबु सभदू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे । २ ।
मैं प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे[17] ।
मैं सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ।
सचे सबदि वीचारे रंगि राती नारे[18] मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ।
अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ।
अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै तृसना दूख निवारे ।
मैं पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे । ३ ।
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ।
आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ।
आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु संवारे ।

1) व्यर्थ में भटकता रहता है, नष्ट होती है 2) जिन्होंने पति-परमात्मा को पास में नहीं जाना 3) स्त्री (पति के द्वारा) मिलाने पर ही मिलती है 4) वियुक्त 5) जिन्होंने (रस संसार से) चलना (मरना) सही (सच्चा) जान लिया है 6) शब्द के द्वारा मृत्यु के भय को नष्ट करके 7) नाम 8) कृपा पूर्वक देख-कर आनंदित कर देता है 9) वियुक्त 10) साथ में 11) सब से 12) कैसे मिलूं 13) प्रियतम के साथ स्नेह है 14) दिखाई देता है 15) उस के पहनने से परमात्मा-मार्ग से कदम हटते हैं 16) प्रेम में अनुरक्त 17) अवगणों के कारण 18) प्रेम में मगन स्त्री

धनु[1] जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ।
गिआनि रतनि घटि चानणु[2] होआ नानक नाम पिआरो ।
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ[3] गुर बिनु घोर अंधारो । ४ । ३ ।

इहु सरीरु जजरी[4] है इसनो जरु[5] पहुचै आए ।
गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाए ।
होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ।
ऐथै[6] कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति[7] खोई ।
जमपुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण[8] न भाई ।
इहु सरीरु जजरी है इसनो जरु पहुचै आई । १ ।
काइआ कंचनु तां थीऐ[9] जां सतिगुरु लए मिलाए ।
भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ[10] सचड़ै नामि समाए ।
सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ।
सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए[11] ।
जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ।
कांइआ कंचनु तां थीऐ जे सतिगुरु लए मिलाए । २ ।
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ।
बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ[12] किआ मुहु देसनि आगै जाए[13] ।
किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ।
नामि रतीआ से रंगि चलूला[14] पिर कै अंकि समाए ।
तिसु जेवडु[15] अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ।
सो सचा सचु सलाहिऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए । ३ ।
जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ।
से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ।
तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नहाए[16] सचै सहजि सुभाए ।
नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ।

---

1) धन्य है (उसका जगत् में आना) 2) प्रकाश 3) उत्पन्न किया है 4) जर्जर 5) वृद्धावस्था 6) यहाँ, इस लोक में 7) प्रतिष्ठा 8) बहन 9) होगा 10) माया का भ्रम अंतर से निकाल देना चाहिए 11) अंतर से अहंभाव के चले जाने पर 12) भूली हुई 13) आगे जा कर क्या मुँह दिखाएँगी 14) जो नाम में अनुरक्त है, उन का रंग अधिक लाल है (अर्थात् उन के व्यक्तित्व में विशेष निखार है) 15) उस जितना बड़ा 16) सच्चे सरोवर (भाव सत्संगति) में स्नान कर के

अनदिनु[1] भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए।
जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिनकै लागउ पाए। ४। ४।
(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५८२-५८५)

सलोक*

सबदि रते[2] वडहंस[3] है सचु नामु उरिधारि।
सचु संग्रहहि सद[4] सचि रहहि सचै नाम पिआरि।
सदा निरमल मैलु न लगई नदरि[5] कीती करतारि।
नानक हउ तिनकै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि। १ ।(१)§
मै जानिआ वडहंसु[6] है ता मै कीआ संगु।
जे जाणा बगु बपुडा[7] त जनमि न देदी अंगु[8]। २। (१)
हंसा वेखि तरंदिआ[9] बगां[10] भि आया चाउ[11]।
डुबि मुए बग बपुड़े सिर तलि ऊपरि पाउ। ३। (१)
भै विचि सभु आकारु है[12] निरभउ हरि जीउ सोइ।
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै[13] भउ कदे न होइ।
दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि[14] न आवै पोहि[15] न सकै कोइ।
गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भाव सु होइ।
नानक आपे ही पति रखसी[16] कारज सवारे सोइ। ४। (२)
इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे[17] भी फुनि जाहि।
जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गऐ पछुताहि।
नानक सचि रते[18] से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि। ५। (२)
सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु।
ऐथै मिलनि वडिआईआ[19] दरगह मोख दुआरु।
सची कार कमावणी सचु पैनणु[20] सचु नामु अधारु।
सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु।
सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु।
नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिसनो नदरि[21] करै करतारु। ६। (३)

---

1) प्रतिदिन *ये श्लोक 'वडहंस की वार म. ४' में से लिए गए हैं 2) लीन, अनुरक्त 3) श्रेष्ठ हंस, महान् संत 4) सदा, सदैव 5) कृपा-दृष्टि §कोष्ठकों में लिखे अंक सम्बंधित पौड़ी पदों के हैं 6) श्रेष्ठ पुरुष 7) बेचारा बगला है 8) जन्म से ही उसकी संगति में न रहती 9) हंसों को तैरता हुआ देखकर 10) बगलों को 11) चाहना पैदा हुई 12) प्रभु के भय में ही समस्त सृष्टि की रचना होती है 13) वहाँ 14) समीप 15) स्पर्श नहीं कर पाता, प्रभावित नहीं कर पाता 16) प्रतिष्ठा की रक्षा करेगा 17) जो शेष रहते हैं 18) अनुरक्त 19) यहाँ (इस लोक में) प्रतिष्ठा प्राप्त होती है 20) पहनना 21) कृपा-दृष्टि

होर विडाणी[1] चाकरी धृगु जीवणु धृगु वासु[2] ।
अंमृतु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि[3] ।
बिखु खाणा बिखु पैनणा[4] बिखु के मुखि गिरास ।
ऐथै[5] दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ।
मनमुख मुहि[6] मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु[7] ।
सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि ।
जमपुरि बधे मारीअहि[8] को न सुणे अरदासि[9] ।
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु । ७ । (३)
सतिगुरि मिलिऐ भुख[10] गई भेखी भुख न जाइ ।
दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ[11] ।
अंदरि सहजु न आइओ सहजे हीं लै खाइ ।
मनहठि जिस ते मंगणा[12] लैणा दुखु मनाइ[13] ।
इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ[14] ।
सबदि रते तिना सोझी पई दूजै[15] भरमि भुलाइ ।
पइऐ किरति कमावणा[16] कहणा कछु न जाइ ।
नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ[17] । ८ । (४)
सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ।
चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ।
अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ।
मैलु गई मनु निरमलु होआ अंमृतसरि तीरथि नाइ[18] ।
सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ[19] ।
घर हीं परचा[20] पाइआ जोति जोति मिलाइ ।
पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ[21] ।
नानक नामि रते[22] से उबरे सचे सिउ लिवलाइ । ९ । (४)

1) अन्य किसी गैर की 2) निवास 3) मूलधन और राशि विषवत है 4) पहनना 5) यहाँ, इस लोक है 6) मुख, मुँह 7) विनाश को प्राप्त होते हैं 8) मारे जाएँगे 9) प्रार्थना, विनय 10) भूख, परमात्मा प्राप्ति की इच्छा 11) आगे (परलोक में) दुगना दंड मिलेगा 12) मांगना 13) किसी अन्य से लिया जाना भी देने वाले के द्वारा दुःख मनाना है 14) इस भेख के स्थान पर गृहस्थ धर्म ही अच्छा है जहाँ से किसी को कुछ उपलब्ध होता है 15) द्वैत-भाव में 16) गत-जन्मों में किए कर्मों का फल भोगना पड़ता है 17) जिन की प्रतिष्ठा उचित स्थान ग्रहण करती है 18) स्नान 19) प्रेम-पूर्वक 20) परिचय 21) प्रतिष्ठा नष्ट कर के ले जाएगा 22) अनुरक्त

सजण मिलै सजणा जिन सतिगुर नालि[1] पिआरु ।
मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु।
मन ही ते मनु मानिआ[2] गुरकै सबदि अपारि ।
एहि[3] सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ।
इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ।
विछुड़िआ का किआ विछुड़े जिना दूजे भाइ[4] पिआरु ।
मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि[5]।
इसु परीती तुटदी विलमु न होवई[6] इतु दोसती चलनि विकार ।
जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ।
नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि । १० । (५)

इकि सदा इकतै रंगि रहहि[7] तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ।
तनु मनु धनु अरपी[8] तिन कउ निवि निवि[9] लागउ पाइ ।
तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ[10] तृसना भुख सभ जाइ ।
नानक नामि रते[11] सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ । ११ । (५)

तृसना दाधी[12] जलि मुई जलि जलि करे पुकार ।
सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार[13] ।
नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु[14] सबदि न करे वीचार । १२ । (६)

भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ।
वरमी[15] मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ।
सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ।
मनु तनु सीतलु सांति होइ तृसना अगनि बुझाइ ।
सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ[16] ।
गुरमुखि उदासी[17] सो करे जि सचि रहै लिवलाइ ।
चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ[18] ।
नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै[19] पचहि पचाइ । १३ । (६)

---

1) से के साथ 2) प्रकाशमय मन ने अंधकारमय मन को मना लिया 3) ये 4) द्वैत-भाव 5) थोड़े दो चार दिनों के लिए 6) इस प्रकार की मित्रता को टूटते हुए देर नहीं लगती 7) एक ही रंग (प्रेम) में 8) अर्पित कर दो 9) झुक-झुक कर 10) संतोष प्राप्त होता है 11) अनुरक्त 12) तृष्णा से जली हुई दुनिया 13) दूसरी बार 14) जब तक 15) साँप का बिल 16) जब अंतर से द्वैत-भाव नष्ट हो जाता है 17) सांसारिक प्रपंच से उदासीनता 18) हरिनाम से अच्छी तरह तृप्त हो गई 19) अहंभाव

कलि महि जमु जंदारु[1] है हुकमे कार कमाइ[2]।
गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ[3]।
जमकालै वसि जगु बांधिआ तिसदा फरू न कोइ[4]।
जिनि जमु कीता[5] सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ।
नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ। १४। (७)

एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदे दुखु हउमै[6] रोगु न जाइ।
सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरिनामो मंनि वसाइ।
नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ[7] सहजि सुभाइ। १५। (७)

भगति करहि मरजीवड़े[8] गुरमुखि भगति सदा होइ।
ओना कउ धुरि[9] भगति खजाना बखसिआ[10] मेटि न सकै कोइ।
गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ।
नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होई[11]। १६। (८)

सतिगुर की सेव न कीनीआ[12] किआ ओहु करे वीचारु।
सबदै सार न जाणई[13] बिखु भूला गावारु।
अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ[14] पिआरु।
अणहोदा आपु गणाइदे[15] जमु मारि करे तिन खुआरु।
नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु[16]। १७। (८)

रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु।
रतना सार न जाणई[17] अगिआनी अंधु अंधारु।
रतनु गुरु का सबदु है बूझै बूझणहारु।
मूरख आपु गणाइदे[18] मरि जंमहि होइ खुआरु।
नानक रतना सो लहै जिसु गुर मुखि लगै पिआरु।
सदा सदा नामु उचरै हरिनामो नित बिउहारु[19]।
क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उरधारि। १८। (९)

---

1) ज़ालिम, निर्दय 2) प्रभु के आदेश अनुसार ही वह सारा कार्य करता है 3) दंड 4) उसको पकड़ने वाला कोई नहीं 5) किया है, बनाया है 6) अहंभाव, अहंकार 7) भूल गया 8) मर कर जीने वाले साधक 9) परमधाम से 10) प्रदान किया गया है 11) पुन: कभी वियोग नहीं होता 12) सेवा नहीं की 13) नहीं जानता 14) द्वैत-भाव 15) कुछ न होते हुए भी अपने आप को बहुत कुछ समझते हैं 16) दयालु 17) रत्नों के भेद को नहीं जानता 18) गिनवाते हैं 19) व्यवहार

सतिगुर की सेव न कीनीआ हरिनामु न लगो पिआरु ।
मत तुम जाणहु ओइ जीवदे[1] ओइ आपि मारे करतारि ।
हउमै वडा रोगु है भाई दूजै करम कमाइ[2] ।
नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरी विसरिआ[3] दुख पाइ । १९ । (९)

बिनु सतिगुरु सेवे जिअ के बंधना विचि हउमै[4] करम कमाहि ।
बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ।
बिनु सतिगुरु सेवे फिका बोलणा नामु न वसे मन माहि ।
नानकु बिनु सतिगुर सेवे जमपुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि । २० । १०

भगत जना कंउ आपी तुठा[5] मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ।
पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु[6] सिरि छतु[7] सचा हरि बणाइ ।
सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ।
राजे ओइ न आखीअहि[8] भिड़ि मरहि[9] फिरि जूनी पाहि ।
नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि । २१ । (११)

सुणि सिखीऐ[10] सादु न आइओ जिचरु[11] गुरमुखि सबदि न लागै ।
सतिगुरु सेवीऐ नामु मनि वसै विचहु[12] भ्रमु भउ भागै ।
जेहा सतिगुरु नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ।
नानक नामि मिलै वडिआई[13] हरि दरि सोहनि आगै । २२ । (११)
नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ।
मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी[14] अंधे भउकि मुए बिललाइ । २३ । (१२)
कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ।
निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ।
नानक गुरमुखी सदा सुख पावहि अनदिनु[15] हरि बेरागी । २४ । (१२)
मनमुख काइरु करूपु है बिनु नावै नाकु नाहि[16] ।
अनदिनु धंधे विआपिआ[17] सुपनै भी सुखु नाहि ।
नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे[18] दुख सहाहि । २५ ।

---

1) वे जीते हैं 2) अहँभाव बहुत बड़ा रोग है इस के फलस्वरूप द्वैत-भाव में कर्म किए जाते हैं 3) भूलने पर 4) अहंभाव में 5) प्रसन्न हुआ है दयालु हुआ है 6) दी है 7) छत्र 8) नहीं कहे जा सकते 9) नाक कटा कर फिरते हैं 10) शिक्षा लेने पर 11) जब तक 12) अंतर से 13) बड़ाई 14) दुष्ट व्यक्ति घर में उपलब्ध वस्तु को तो जानते नहीं 15) प्रतिदिन 16) मर्यादा नहीं है 17) उलझा हुआ है 18) नहीं तो बंधे हुए दुःख सहन करता हैं

गुरमुखि सदा दरि सोहणे[1] गुर का सबदु कमाहि ।
अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ।
नानक गुरमुखि हरिनामु पाइआ सहजे सचि समाहि । २६ । (१३)

सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ।
ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ[2] ।
नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ । २७ । (१४)

ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु[3] जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ।
सहसा मूलि न होवई[4] हउमै[5] सबदि जलाइ ।
कूड़ै की पालि विचहु निकलै[6] सचु वसै मनि आइ ।
अंतरि सांति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ।
नानक पूरे सातिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ[7] । २८ ।(१४)

बिनु सतीगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ।
दूजै भाइ[8] अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ ।
विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ।
नानक बिनु नाव जमु मारसी[9] अंति गइआ पछुताइ । २९ । (१५)

इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई[10] ।
सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई[11] ।
पूरै गुरि वेखालिआ[12] सबदे सोझी पाई ।
पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै[13] सबदि जलाई ।
तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ।
निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ।
अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ।
नानकु वेखि विगसिआ[14] हरि सचे की वडिआई[15] । ३० । (१५)

सतिगुरु भेटिआ[16] से हरि कीरति सदा कमाहि ।
अचिंतु हरि नामु तिनकै मनि वसिआ[17] सचै सबदि समाहि ।

---

1) सुंदर 2) भले ही सौ बार इस संसार में जन्म धारण करे और मरे 3) शोध कर लो 4) संशय मूलतः नहीं होता 5) अहंभाव 6) झूठ का पर्दा अंतर से निकाल दिया जाता है 7) इच्छा के अनुसार 8) द्वैत-भाव 9) मारेगा 10) अन्य सभी पूरी तरह नारियां हैं 11) समझा नहीं जा सकता 12) दिखाया है 13) द्वैत-भाव 14) देख कर विकसित होता है (प्रसन्न होता है) 15) बड़ाई 16) भेट हुई है, मिला है 17) बस गया है

कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ।
पार ब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ।
जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि[1] । ३१ । (१६)

हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ[2] ।
हंउमै वडा[3] रोगु है मरि जंमै अवै जाइ ।
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुर मिलिआ प्रभु आइ ।
नानक गुरपरसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ । ३२ । (१६)

गुरमुखि सेवि न कीनीआ[4] हरिनामि न लगो पिआरु ।
सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ।
मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ संसारि ।
नानक जिन कउ नदरि[5] करे से गुरमुखि लंघे पारि[6] । ३३ । (१७)

इको सतिगुरु जागता होरु[7] जगु सूता मोहि पिआसि ।
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ।
मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ।
नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि[8] पूरबि लिखिआसि[9] ।३४।(१७)

जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ[10] करम कमाइ ।
दूजै भाइ जेते करे दुखु लगै तनि धाइ ।
गुरपरसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ।
सची बाणी करम करे अनदिनु[11] नामु धिआइ ।
नानक जित आपे लाए तितु लागे कहणा किछु न जाइ । । ३५ । (१८)

हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ।
सतगुरु दाता जीऊ का सद जीवै देवणहारा[12] ।
अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर क सबदि अपारा ।
सबदु गुरु का सद उचरहि[13] जुगु जुगु वरतावणहारा[14] ।
इहु[15] मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापरा ।

---

1) मर्यादा का पालन करता है 2) अहंभाव में सदा खटका है और सारा जीवन खटके में भयभीत व्यतीत हो जाता है 3) बड़ा 4) नहीं की 5) कृपा-दृष्टि 6) पार हो जाते हैं 7) अन्य 8) आदि से, परमधाम से 9) लिखा हुआ था 10) द्वैत-भाव 11) प्रतिदिन 12) देने वाला 13) जपते हैं 14) युग-युग में अपनी कला को व्याप्त करता है 15) यह

अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा[1] ।
नानक जिसनो नदरि[2] करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा । ३६ । (१८)

मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ ।
मन हठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ[3] ।
रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ।
गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ।
नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ । ३७ । (१९)

सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ।
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ।
नानक किरति पइऐ कमावणा[4] कोइ न मेटणहारु । ३८ । (१९)

सतिगुर नो सभु को वेखदा[5] जेता जगतु संसारु ।
डिठै मुकति न होवई[6] जिचरु[7] सबदि न करे वीचारु ।
हउमै[8] मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ।
इकि आपे बखसि मिलाइअनु[9] दुबिधा तजि विकार ।
नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि । ३९ । (२१)

सतिगुरु न सेविओ मूरख अंध गवार ।
दूजै भाइ[10] बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ।
जिन कारणि गुरु विसरिआ[11] से न उपकारे अंति वार[12] ।
नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसहार[13] । ४० । (२१)

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५८५–५९४)

---

1) कराने वाला 2) कृपा-दृष्टि 3) द्वैत-भाव 4) किए हुए कर्मों के अनुसार फल भोगना पड़ता है 5) देखता है 6) केवल देखने से मुक्ति प्राप्त नहीं होती 7) जब तक 8) अहंभाव 9) कृपा-कर के मिला लेता है 10) द्वैत-भाव के कारण 11) भुला दिया 12) अंतकाल में सहायक न हो पाए 13) कृपा करने वाला कृपा करता है

१ ओ सतिगुर प्रसादि

रागु सोरिठ

चउपदे घरु १

सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदे सादु आइआ।
गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ[1]।
अनदिनु[2] गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ[3]। १।
मेरे ठाकुर हम बारिक[4] सरणि तुमारी।
एको सचा सचु तु केवलु आपि मुरारी। रहाउ।
जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै[5] मारी।
गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उरधारी। २।
इहु मनूआ दहदिसि[6] धावदा दूजै भाइ खुआइआ[7]।
मनमुख[8] मुगधु हरिनामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ।
सतिगुरु भेटे ता नाउ पाइ हउमै मोहु चुकाइआ। ३।
हरिजन साचे साचु कमावहि गुरकै सबदि वीचारी।
आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उरधारी।
नानक नावहु गति मति पाई एहा[9] रासि हमारी। ४। १।

भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ[10] हरि धनु सचु सोइ।
अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही[11] किनै न कीमति होइ।
नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ। १।
मन मेरे गुरसबदी हरि पाइआ जाइ।
बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा[12] दरगहे[13] मिलै सजाइ। रहाउ।

---

1) जिन्हों ने अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट कर दिया 2) प्रतिदिन 3) सुशोभित है 4) बालक 5) अहंभाव 6) दस दिशाओं में 7) द्वैत-भाव के कारण नष्ट हुआ है 8) मन के अनुसार कार्य करने वाले 9) यही 10) नाम 11) नाम रूप धन अन्यून है, कभी खत्म नहीं होता 12) भूला फिरता है 13) परमातमा के द्वार पर

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ।
अंमृतु लूटहि मनमुख नहीं बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ।
अंधा जगतु अंधु वरतारा[1] बाझु गुरु गुबारा । २ ।
हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि[2] ।
गुरमुख होवै सु नामु धिआवै सदा हरिनामु समालि[3] ।
सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि[4] । ३ ।
सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु[5] अमरु[6] सिरि बादिसाहा ।
अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा[7] ।
नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा[8] । ४ । २ ।

दासनिदासु[9] होवै ता हरि पाए विचहु[10] आपु गवाई ।
भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ।
सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई । १ ।
हरि जीउ साची नदरि[11] तुमारी ।
आपणिआ[12] दासा नो कृपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी[13] । रहाउ ।
सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ[14] भागा ।
मेरा प्रभु साचा अति सुआलिओ[15] गुर सेविआ चितु लागा ।
साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा । २ ।
महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ।
पूरे गुर की सेवा कीनी अचितु[16] हरि मनि वसाइआ ।
मन तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ । ३ ।
हरि का मारगु सदा पंथु बिखड़ा[17] को पाए गुर वीचारा ।
हरि कै रंगि राता[18] सबदे माता हउमै[19] तजे विकारा ।
नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा[20] । ४ । ३ ।

हरि जीउ तुधुनो[21] सदा सालाही पिआरे जिचरु[22] घट अंतरि है सासा ।
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जानउ बरस पचासा ।

---

1) सवर्ग अंधकार व्याप्त है 2) अहंभाव और अपने-पन की भावना में ख्वार होते रहे, यह सब कुछ मृत्यु के समय साथ नहीं देता 3) स्मरण कर के 4) कृपालु अपनी कृपा-दृष्टि से आनंदित कर देता है 5) प्रकाश 6) हुकम, आदेश 7) लाभ 8) प्राप्त होता है 9) दासों का दास 10) अंतर से 11) कृपा-दृष्टि 12) अपने 13) हमारी मर्यामा/प्रतिष्ठा की रक्षा कर लो 14) भय 15) सुन्दर 16) चिंता मुक्त अवस्था में 17) कठिन 18) प्रेम में अनुरक्त 19) अहंभाव 20) सुधारने वाला हैं 21) तुम को 22) जब तक

हम मूड़ मुगध सदा से[1] भाई गुर कै सबदि प्रगासा[2] । १ ।
हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई[3] ।
हरि जीउ तुधु विटहु वारिश्रा सदही[4] तेरे नाम विटहु बलि जाई । रहाउ ।
हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले[5] भाई सबदे ही मुकति पाई ।
सबदे मनु तनु निरमले होआ हरि वसिआ मनि श्राई ।
सबदु गुर दाता जितु मनु राता[6] हरि सिउ रहिआ समाई । २ ।
सबदु न जाणहि से अने बोले[7] से कितु श्राए संसारा ।
हरिरसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जमहि वारो बारा[8] ।
बिसटा के कीडे बिसटा माहि सामाणे मनमुख[9] मुगध गुबारा । ३ ।
श्रापे करि वेखै[10] मारगि लाए भाई तिसु बिनु श्रवरु न कोई ।
जो धुरि लिखिआ सो कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ।
नानक नामु वसिश्रा मन अंतरि भाई अवरु न दूजा[11] कोई । ४ । ४ ।

गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि श्रनदिनु नामु वखाणे[12] ।
भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे[13] ।
तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे । १ ।
मन मेरे हरि जीउ सदा समालि[14] ।
श्रंतकालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि[15] । रहाउ ।
दुसट चउकड़ी[16] सदा कूड़ु[17] कमावहि ना बूझहि वीचारे ।
निंदा दुसटी[18] ते किनि फलु पाइश्रा हरणाखस नखहि बिदारे ।
प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे । २ ।
आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ।
साधू जन की निंदा विश्रापे जासनि जनमु गवाई[19] ।
राम नामु कदे चेतहि नाही[20] अंति गए पछुताई । ३ ।
सफलु जनमु भगता का कीता[21] गुर सेवा आपि लाए ।
सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ।
नानक दासु कहै बेनंती[22] हउ लागा तिन कै पाए । ४ । ५ ।

---

1) थे 2) ज्ञान रूप प्रकाश 3) समझा दो 4) मैं सदैव तुम्हारे ऊपर से न्योच्छावर होता हूँ 5) पुनः जीवित कर दिए 6) लीन, मगन 7) अंधे और बहरे हैं 8) बार-बार 9) दुष्ट पुरुष 10) देखता है 11) दूसरा 12) बखान करता है 13) अच्छे लगते हैं 14) स्मरण कर 15) अंत-काल में तेरा सहायक होगा और तुम्हारे साथ अंत तक निर्वाह करेगा 16) मंडली 17) झूठ 18) दुष्टा 19) अपना जन्म नष्ट कर के जाएँगे 20) कभी स्मरण नहीं करते 21) किया 22) प्रार्थना

सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै[1] ।
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ।
बिनु सतिगुर सुखु कदे[2] न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै । १ ।
हरि के दास सुहेले[3] भाई ।
जनम जनम के किलबिख[4] दुख काटे आपे मेलि मिलाई । रहाउ ।
इहु[5] कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा[6] ।
बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ।
करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारोवारा[7] । २ ।
हउ मेरा जगु पलचि रहिआ[8] भाई कोइ न किसही केरा ।
गुरमुखि महलु[9] पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ।
ऐथै[10] बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा[11] । ३ ।
सतिगुरु सदा दइआलु है भाई विणु भागा[12] किया पाईऐ ।
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि[13] जेहा भाउ[14] तेहा फलु पाईऐ ।
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाइऐ[15] । ४ । ६ ।

चौतुके

सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदे बाणी ।
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै[16] सबदि समाणी ।
बिनु गुर साचे भगति न होवी[17] होर भूली फिरै इआणी[18] ।
मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी । १ ।
भाई रे सदा रहहु सरणाई ।
आपणी नदरि करे पति राखै[19] हरिनामो दे वडिआई[20] । रहाउ ।
पूरे गुर ते आपु पछाता[21] सबदि सचै बीचारा ।
हिरदै जग जीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ।
सदा हजूरि[22] रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ।
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा । २ ।

---

1) गुरु की इच्छा के अनुरूप जीवनयापन करे 2) कभी 3) सुखी, आनंदित 4) पाप 5) ये 6) सारा संसार भ्रम में भूला हुआ है 7) बार-बार 8) जगत् अहंभाव में उलझा हुआ है 9) परमधाम 10) यहाँ, इस लोक में 11) उसका 12) भाग्यों के बिना 13) सब को एक दृष्टि से देखता है 14) भाव 15) अंतर से अपने-पन की भावना को खत्म कर दो 16) अहंभाव 17) नहीं हो पाती 18) ना-समझ 19) प्रतिष्ठा की रक्षा करता है 20) बड़ाई 21) अपने आप को पहचान लिया 22) पास, सामने

सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ।
हरी रसु चाखि सदा मनु तृपतिआ[1] गुण गावै गुणी अघाइआ[2] ।
कमलु प्रगासि[3] सदा रंगि राता[4] अनहद सबदु वजाइआ ।
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ । ३ ।
राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ।
गुरमुखि होवै सु मगु[5] पछाणै हरि रसि रसन रसाई[6] ।
जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ।
नानक नामु समालहि[7] से जन सोहनि दरि साचै पति[8] पाई । ४ । ७ ।

दुतुके

सतिगुर मिलिऐ उलटी भई[9] भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ।
सो गुरु सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ । १ ।
मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ।
मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ[10] । रहाउ ।
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ[11] ।
तुह कुटहि[12] मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ । २ ।
गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ[13] भाई साची प्रीति पिआरि ।
सदा हरि के गुण रवै भाई गुरकै हेति अपारि । ३ ।
आइआ सो परवाणु[14] है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ।
नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ । ४ । ८ ।

घरु १

तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ[15] भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ।
राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ । १ ।
मन रे त्रैगुण छोडि चउथै चितु लाइ ।
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ । रहाउ ।
नामै ते सभि ऊपजै भाई नाइ विसरिऐ[16] मरि जाइ ।

---

1) तृप्त हो गया 2) गुणों से संतुष्ट हो गया 3) हृदय कमल खिल गया 4) प्रेम में अनुरक्त 5) मार्ग 6) हरि-रस से जिह्वा रस-मगन हो गई 7) स्मरण करते हैं 8) प्रतिष्ठा 9) साधक के व्यक्तित्व में परिवर्तन उपस्थित हो गया 10) हरी का स्थान प्राप्त कर लिया 11) द्वैत-भाव 12) केवल छिलके (फूस) को कूटना 13) बस गया है 14) स्वीकृत, प्रामाणिक 15) तीनों गुणों में तीनों लोक उलझे हुए हैं 16) नाम को भुला देने पर

अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ । २ ।
गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ।
जग महि लाहा[1] हरिनामु है भाई हिरदै रखिआ उरधारि । ३ ।
गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ।
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा[2] भाई जितु लगि पारि जन पाइ । ४ । ९ ।

सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होरथै[3] सुखु नाही ।
हउमै[4] जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही[5] । १ ।
प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ।
सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा[6] जनमु गवाइ । रहाउ ।
त्रैगुण धातु[7] बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ।
संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ । २ ।
सतिगुरु सेवे सो वडभागी[8] जिसनो आपि मिलाए ।
हरि रसु पी जन सदा तृपतासे विचहु आपु गवाए[9] । ३ ।
इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ।
नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै[10] घरै अंदरि सचु पाए । ४ । १० ।

बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ।
हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई । १ ।
हरि जीउ कृपा करहु तुम पिआरे ।
सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरिनामु देवहु आधारे । रहाउ ।
मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ।
हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख[11] काटणहारा । २ ।
सबदि मरहु फिरि जीवहु सदही[12] ता फिरि मरणु न होई ।
अंमृत नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई । ३ ।
दातै दाति रखी हथि अपणै[13] जिसु भावै[14] तिसु देई ।
नानक नामि रते[15] सुखु पाइआ दरगह जापहि सेइ[16] । ४ । ११ ।

---

1) लाभ 2) नाम ही बेड़ी (नौका) है, नाम ही भवसागर पार करने का साधन (चपटी लकड़ियों का बना हुआ कच्चा बेड़ा) है 3) अन्यत्र 4) अहंभाव 5) ढाढ़ों मार कर रोना 6) जाएगा 7) त्रिगुणात्मक दौड़ (भ्रम) 8) श्रेष्ठ भाग्य वाले 9) अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट करते हैं 10) आँखों से देखे 11) पाप 12) सदा 13) अपने हाथ में 14) चाहे 15) लीन 16) परमात्मा के द्वार पर वही प्रतिष्ठित होते हैं

सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तदही[1] पाए ।
हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए । १ ।
बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना[2] ।
मनमुखि[3] अंधा सबदु न जाणै झूठ भरमि भुलाना । रहाउ ।
त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै[4] बंधन कमाए ।
जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ[5] गरभ जोनि दुखु पाए । २ ।
त्रै गुण वरतहि[6] सगल संसारा हउमै विचि पति खोई[7] ।
गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई । ३ ।
त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ।
नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई । ४ । १२ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ५९९-६०४)

सोरठि घरु १
असटपदीआ तितुकी

भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ[8] ।
प्रहिलाद जन तुधु[9] राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ।
गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ । १ ।
हरि जी एह तेरी वडिआइ[10] ।
भगता की पैज[11] रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई । रहाउ ।
भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई[12] ।
केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ।
रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई[13] । २ ।
मनमुखा नो परतीति न आवी[14] अंतरि लोभ सुआउ[15] ।
गुरमुखि[16] हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ[17] ।
कूड़ कपट पाजु लहि जासी[18] मनमुख फीका अलाउ[19] । ३ ।

---

1) तभी 2) पागल, मूर्ख 3) मन के अनुसार कार्य करने वाला 4) अहंभाव 5) खड़ा है 6) व्याप्त है 7) अहंभाव में प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है 8) भक्तों की प्रतिष्ठा की सदैव तुम रक्षा करते आए हो, आदिकाल से यह रक्षा करते आ रहे हो 9) तुम ने 10) बड़ाई 11) मर्यादा, प्रतिष्ठा 12) समीप नहीं आता 13) सहज भाव से 14) आती 15) स्वाद 16) गुरु के उपदेश के अनुरूप 17) भाव, प्रेम 18) झूठ और कपट का रहस्य खुल जाएगा 19) आलाप

भगता विचि आपि वरदता[1] प्रभ जी भगती हु तू जाता[2] ।
माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ।
हउमै[3] मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता । ४ ।
अचिंत[4] कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ।
गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणिहारा[5] ।
ओना की रीस करे सु विगुचै[6] जिन हरि प्रभु है रखवारा[7] । ५ ।
बिनु सतिगुरु सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई[8] ।
आवहि जावहि ठउर न पावहि[9] दुख महि दुखि समाई ।
गुरमुखि होवै सु अंमृतु पीवै सहजे साचि समाई । ६ ।
बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै[10] जे अनेक करम करै अधिकाई[11] ।
वेद पड़हि तै वाद वखाणहि[12] बिनु हरि पति[13] गवाई ।
सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छुटहि गुर सरणाई[14] । ७ ।
जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचे सचिआरा ।
ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा[15] ।
नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरिधारा । ८ । १ ।

दुतुकी

निगुणिआ नो आपे बखसि[16] लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ।
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ । १ ।
हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ।
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ[17] । रहाउ ।
कउण कउण अपराधी बखसिअनु भाई पिआरे साचै सबदि वीचारि ।
भउजलु पारि उतारिअनु[18] भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि[19] । २ ।
मनूरै[20] ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ।
आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ । ३ ।
हउ वारी हउ वारणै[21] भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ।
नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ । ४ ।

---

1) भक्तों में प्रभु स्वयं व्याप्त है 2) जाना जा सकता है 3) अहंभाव 4) बिना चिन्ता किए, निस्संकोच 5) सब कार्य सम्पन्न करने वाला है 6) जो उनसे स्पर्द्धा करता है, वह नष्ट होता है 7) रक्षा करने वाला 8) विलाप करते हुए 9) ठिकाना नहीं मिलता 10) जन्म-मरण का चक्कर नहीं छूटता 11) बहुत, अधिक 12) वाद-विवाद करता है 13) प्रतिष्ठा 14) भाग कर गुरु की शरण में जाने से ही मुक्ति होती है 15) मिटाने वाला नहीं है 16) क्षमा कर देता है 17) मिला लिया है 18) पार उतार दिए हैं 19) नौका पर चढ़ा कर 20) घटिया लोहा, लोहे का मैल 21) मैं न्यौच्छावर होता हूँ

गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ।
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ[1]। ५।
गुरमती भउ ऊपजै[2] भाई भउ करणी सचु सारु।
प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु। ६।
जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिनकै हउ लागउ पाइ।
जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ[3]। ७।
सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ।
नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ। ८। २।
हरि जीउ सबदे जापदा[4] भाई पूरै भागि मिलाइ।
सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ[5]। १।
हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ।
गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ। रहाउ।
गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ।
सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ। २।
पिर[6] का हुकमु[7] न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि।
मन हठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि[8]। ३।
से गावहि जिन मसतकि भागु है भाइ भाई[9] सचै बैरागु।
अनदिनु राते गुण रवहि[10] भाई निरभउ गुर लिव लागु। ४।
सभना मारि जीवालदा[11] भाई सो सेवहु दिनु राति।
सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिसदी वडी है दाति[12]। ५।
मनमुखि मैली डुंमणी[13] भाई दरगह नाही थाउ[14]।
गुरमुखि होवै ता गुण रवै[15] भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ। ६।
एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ[16]।
किड़ी पवंदी मुहाइओनु[17] भाई बिखिआ नो लोभाइ। ७।
नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुख सांति सरीर।
नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर[18]। ८। ३।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ६३७-६३९)

---

1) अंतर से अहंभाव निकाल कर 2) भय उत्पन्न होता है 3) क्षमा करा ली 4) प्रतीत होता है 5) प्रतिदिन प्रेम में अनुरक्त रहती हैं 6) प्रियतम 7) आज्ञा, आदेश 8) नाम की आराधना के बिना झूठी हैं 9) प्रेम 10) स्मरण करे 11) जीवित करता है 12) जिस का इतना कुछ प्रदान किया हुआ है 13) द्विविधा ग्रस्त 14) परमात्मा के द्वार पर उसका कोइ स्थान नहीं है 15) स्मरण करता है 16) क्या मुँह दिखाएगा 17) कानों में चेतावनी की आवाज़ पड़ने पर भी लूटा जाता है 18) गंभीर गुण-सम्पन्न है

सलोकु*

हउमै[1] जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ[2] ।
पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ[3] ।
इहु जगु जलता नदरी[4] आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ।
सबदि रते[5] से सीतल भए नानक सचु कमाइ । १ । (२)§
सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु[6] ।
जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै[7] सेई पुरखु सुजाण ।
कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ।
गुरमुखि मुए जीवदे[8] परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि[9] ।
नानक मुए न आखीअहि[10] जि गुर कै सबदि समाहि । २ । (२)
पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु[11] ।
मोह ठगउली पाइअनु[12] विसरिआ गुणतासु[13] ।
मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु[14] ।
जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहिण न मिलनी पासि[15] ।
दुखु लागा बहु अति घणो पुतु कलतु[16] न साथि कोई जासि[17] ।
लोका विचि[18] मुहु काला होआ अंदरि उभे सास[19] ।
मनमुखा नो को न विसही[20] चुकि गइआ वेसासु[21] ।
नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु । ३ । (३)
से सैण[22] से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ।
सतिगुर का भाणा[23] अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ।
दूजै भाइ[24] लगे सजण न आखीअहि[25] जि अभिमानु करहि वेकार ।
मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ।
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु । ४ । (३)
माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ।
मनमुख खाधे गुरमुख उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ।

*ये श्लोक 'सोरठि वार महले ४ की' में से लिए गए हैं

1) अहंभाव 2) द्वैत-भाव 3) अपने लेखे (खाते) में डाल कर 4) नज़र, दृष्टिगोचर 5) अनुरक्त §कोष्ठकों में लिखे अंक सम्बन्धित पौड़ी-पदों के हैं 6) प्रामाणिक 7) जीवित और मृत अवस्था नहीं भूलते 8) मृत और जीवित 9) जन्म और मरण में आते रहते हैं 10) मरा हुआ नहीं कहा जा सकता 11) लिख दिया है 12) मोह रूप ठगमूरी को प्राप्त करने पर 13) गुण-निधि, परमात्मा 14) मत समझो कि जगत् जीवित है, वस्तुतः द्वैत-भाव के कारण मरा हुआ है 15) पास में बैठना नहीं मिलता 16) स्त्री, पत्नी 17) जाएगा 18) में 19) श्वास फूलना 20) विश्वास नहीं करता 21) विश्वास 22) सम्बंधी 23) इच्छा 24) द्वैत-भाव 25) नहीं कहे जा सकते

बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ[1] ।
धंधा करतिआ निहफलु निहफलु जनमु गवाइआ सुख दाता मनि न वसाइआ ।
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि[2] लिखि पाइआ । ५ । (४)

घर ही महि अंमृतु भरपूर है मनमुखा सादु न पाइआ ।
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ।
अंमृतु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ।
गुरमुखि विरलै सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ।
तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ।
सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ।
बिनु सबदै सभु जगु बउराना[3] बिरथा जनमु गवाइआ ।
अंमृतु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ । ६ । (४)

जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ।
जीउ वंञै चउखंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ।[4]
नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह[5] । ७ । (५)

सजणु मैडा रंगुला[6] रंगु लाए मनु लेइ ।
जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि[7] ।
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह[8] । ८ । (५)

सतिगुर की सेवा सफलु है जेको करे चितु लाइ ।
मनि चिंदिआ[9] फलु पावणा हउमै विचहु जाइ[10] ।
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ।
इसु जग महि नामु अलभु[11] है गुरमुखि वसै मनि आइ ।
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ । ९ । (६)

मनमुख मंनु अजितु है दूजै[12] लगै जाइ ।
तिसनो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ[13] ।
घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ।

---

1) गुरु के उपदेश के द्वारा यह बात स्पष्ट हुई 2) आदि से, परमधाम से 3) पागल 4) (तिलों के समान) मेरे शरीर को कोल्हू की तरह पीड़ा जाए और थोड़ा सा रक्त भी न निकले । मेरा मन सत्य स्वरूप हरि के प्रेम में न्योच्छावर हो 5) दिन को 6) मेरा प्रियतम रसिक स्वभाव वाला है 7) खार, सज्जी 8) न उस पर दूसरा रंग चढ़ता है 9) इच्छित 10) अंतर से अहंभाव चला जाता है 11) दुष्प्राप्य 12) द्वैत-भाव 13) गुज़रती है

इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ।
भेखधारी भेख करि थके अठसठि तीरथ नाइ[1] ।
मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ[2] ।
गुरपरसादी भउ पइआ वडभागि[3] वसिआ मनि आइ ।
भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ।
सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ[4] ।
सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ । १० । (६)

सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे[5] दुख सहाहि ।
फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि[6] तै मरि जाहि ।
साहसा[7] रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ।
नानक नदरी बखसि[8] लेहि सबदे मेलि मिलाहि । ११ । (७)

जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ।
जिउ छुटड़ि[9] घरि घरि फिरै दुहचारणी बदनाउ ।
नानक गुरमुख बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ । १२ । (७)

थालै विचि तै वसतू पईओ[10] हरि भोजनु अंमृतु सारु ।
जितु खाधे मनु तृपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ।
इहु भोजनु अलभु[11] है संतहु लभै[12] गुर वीचारि ।
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ[13] सदा रखीऐ उरिधारि ।
एह मुदावणी सतिगुरु पाई गुरसिखा लधी भालि[14] ।
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी[15] हरि पाइआ गुरमुखि घालि[16] । १३ । (८)

जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ।
आपि विछोडेनु[17] से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ[18] ।
नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ । १४ । (८)

---

1) स्नान करते हैं 2) अंहभाव के कारण भ्रमों में पड़े हैं 3) श्रेष्ठ भाग्य 4) आत्मा की ज्योति परमातमा की ज्योति में मिल जाती है 5) बंधे हुए 6) जन्म लेने और मर जाते हैं 7) संशय 8) कृपा-दृष्टि से क्षमा कर देता है 9) परित्यक्ता 10) थाल में तीन वस्तुएँ पड़ी हैं 11) दुष्प्राप्य 12) प्राप्त होता है 13) इस मुद्रा युक्त (रहस्यपूर्ण) बात को अंतर से क्यों निकाली जाए 14) ढूंढ कर प्राप्त कर ली है 15) बूझेगा 16) परिश्रम से 17) जिन्हें आप वियुक्त करता है 18) द्वैत-भाव के कारण नष्ट होते हैं

विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा[1] सैसारि ।
मनमुखि करम कमावणे हउमै[2] अंधु गुबारु ।
गुरमुखि अंमृतु पीवणा नानक सबदु वीचारि । १५ । (९)

सहजे जागै सहजे सोवै ।
गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै[3] ।
मनमुख भरमै सहसा होवै ।
अंतरि चिंता नीद न सोवै ।
गिआनी जागहि सवहि सुभाइ[4] ।
नानक नामि रतिआ[5] बलि जाउ । १६ । (९)

अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ।
विणु डिठा[6] किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ।
नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ । १७ । (१०)

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ।
सचा सउदा हटु सचु[7] रतनी भरे भंडार ।
गुर किरपा ते पाईअनि[8] जे देवै देवणहारु[9] ।
सचा सउदा लाभु सदा खटिआ[10] नामु अपारु ।
विखु विचि[11] अंमृतु प्रगटिआ[12] करमि पीआवणुहारु[13] ।
नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु । १८ । (१०)

सेखा चउचकिआ चउवाइआ[14] एहु मनु इकतु घरि आणि[15] ।
एहड़ तेहड़ छडि तू[16] गुर का सबदु पछाणु ।
सतिगुर अगै ढहि पउ[17] समु किछु जाणै जाणु[18] ।
आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु[19] ।
सतिगुर कै भाणै[20] भी चलहि ता दरगह[21] पावहि माणु ।
नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु[22] । १९ । (११)

---

1) कमी, घाटा 2) अहंभाव 3) गुरमुख व्यक्ति से सदैव प्रभु की स्तुति होती है 4) ज्ञानी व्यक्ति सहज भाव से सोता जागता है 5) अनुरक्त 6) बिना देखे 7) सौदा सच्चा है और दुकान भी सच्ची ही है 8) प्राप्ति होती है 9) देने वाला, प्रदाता 10) कमाया 11) में 12) प्रकट हुआ 13) प्रभु-कृपा से द्वारा पीने के योग्य हुआ 14) चारों ओर भ्रमित एवं वासनाओं की वायु से डुलायमान ऐ शैव ! 15) लाओ 16) इधर उधर की बातों को तुभ छोड़ दो 17) गिर पड़, शरण मे पहुंच जा 18) जानने वाला है 19) संसार में अतिथि के समान अपने आप को समझो 20) इच्छा 21) प्रभु-द्वार 22) खाने और पहनने को धिक्कार है

हरि गुण तोटि[1] न आवई कीमति कहणु न जाइ ।
नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि[2] गुण महि रहै समाइ । २० । (११)

परथाइ[3] साखी महापुरख बोलदे साझी सगल जहानै[4] ।
गुरमुखि होइ सु भउ[5] करे आपणा आपु पछाणै ।
गुरपरसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ।
जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै[6] । २१ । (१२)

गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ[7] ।
अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ।
पंडित तिनकी बरकती[8] सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ[9] ।
जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ।
पंडित दूजै भाइ[10] बरकति ना होवई ना धनु पलै पाइ ।
पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत बिहाइ[11] ।
कूक पुकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ[12] ।
नानक नाम विहूणिआ[13] मुहि कालै उठि जाइ । २२ । (१२)

पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुगचारि ।
त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि[14] ।
पंडित भूले दूजै[15] लागे माइआ कै वापारि ।
अंतरि तृसना भुख है मूरख भुखिआ[16] मुए गवार ।
सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ।
अंदरहु तृसना भुख गई सचै नाइ[17] पिआरि ।
नानक नामि रते सहजे रजे[18] जिना हरि रखिआ उरधारि । २३ । (१३)

मनमुख हरिनामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ।
अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ।
मन हठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ।
नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ[19] ।
नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ[20] जे आपे मेलि मिलाइ । २४ । (१३)

---

1) कमी, न्यूनता 2) स्मरण करते हैं 3) विशेष व्यक्ति अथवा घटना सम्बंधी 4) संसार 5) भय 6) वे ज्ञान की बातें कैसे कह सकते हैं 7) आ पहुँचा है 8) सौभाग्य से 9) जो परमात्मा के नाम में अनुरक्त हैं 10) द्वैत-भाव 11) व्यतीत होता है 12) न अंतर से संशय जाता है 13) वंचित 14) अहंभाव में नाम भूल जाता है 15) द्वैत-भाव 16) भूख में ही 17) नाम 18) तृप्त हो गए 19) द्वैत-भाव में जा लगा 20) बड़ाइयाँ, प्रतिष्ठाएँ

हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ[1] ।
मनु तनु आगै राखि कै ऊभी[2] सेव करेइ ।
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ[3] सभु राजु स्रसटि का लेई ।
नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि[4] करेइ । २५ । (१४)
जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु[5] ।
नानक कुल उधारहि आपणा दरगह[6] पावहि माणु । २६ । (१४)
नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ।
जम दरि बधे मारीअहि[7] फिरि विसटा माहि पचाहि । २७ । (१५)
नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ।
हरि कै नाइ[8] समाइ रहे चूका आवणु जाणु[9] । २८ । (१५)
बिनु करमै[10] नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ।
नानक नदरि[11] करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ । २९ । (१६)
इक दझहि[12] इक दबीअहि[13] इकना कुते खाहि ।
इकि पाणी विचि उसटीअहि[14] इकि भी फिरि हसणि पाहि[15] ।
नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि[16] । ३० । (१६)
नानक नावहु घुथिआ[17] हलतु पलतु[18] सभु जाइ ।
जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ[19] ।
जम दरि बधे मारीअहि[20] बहुती मिलै सजाइ । ३१ । (१७)
संता नालि[21] वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ।
अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार[22] ।
तृसना कदे[23] न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ।
मुह काले तिना निंदका तितु सचे दरबारि ।
नानक नाम विहूणिआ[24] ना उरवारि न पारि[25] । ३२ । (१७)
सतिगुर की सेवा गाखड़ी[26] सिरु दीजै आपु गवाइ ।
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ।

---

1) जिस प्रकार निहाई लौहार के सामने अपना सिर रख देती है 2) खड़ी होकर 3) अपनेपन की भावना का निवारण करते हैं 4) कृपा-दृष्टि 5) स्वीकृत, प्रामाणिक 6) प्रभु के द्वार पर 7) मारे अथवा पीटे जाते हैं 8) नाम 9) आवागमन 10) कृपा 11) कृपा-दृष्टि 12) जलाए जाते हैं 13) दबाए अथवा गाड़े जाते हैं 14) जल में प्रवाहित किए जाते हैं 15) गड्ढे में डाले जाते हैं (पारसियों के समान) 16) यह प्रतीत नहीं होता कि ये सभी कहाँ जाकर समाहित होते हैं 17) नाम से वियुक्त होकर 18) लोक-परलोक 19) द्वैत-भाव 20) मारे जाते हैं, पीटे जाते हैं 21) से, साथ 22) बार-बार 23) कभी 24) वंचित 25) न इस ओर के, न उस ओर के 26) कठिन

पारस परसिऐ[1] पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ।
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ।
नानक गणतै[2] सेवकु ना मिले जिसु बखसे[3] सो पवै थाइ। ३३। (१८)
महलु कुमहलु[4] न जाणनी मूरख अपणै सुआइ[5]।
सबदु चीनहि[6] ता महलु लहहि जोती जोति समाइ[7]।
सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ।
सतिगुरु अपणै घरि वरतदा[8] आपे लए मिलाइ।
नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई[9] जिस नो किरपा करे रजाइ[10]। ३४।(१८
ब्रहमु बिंदै तिसदा ब्रहमतु रहै[11] एक सबदि लिव लाइ।
नवनिधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ[12]।
बिनु सतिगुर नाउ[13] न पाइऐ बुझहु[14] करि वीचारु।
नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि। ३५। (१९)
किआ गभरु[15] किआ बिरधि है मनमुख तृसना भुख[16] न जाइ।
गुरमुखि सबदे रतिआ[17] सीतलु होए आपु गवाइ।
अंदरु तृपति संतोखिआ[18] फिरि भुख न लगै आइ।
नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु[19] है जो नामि रहे लिव लाइ। ३६। (१९)
गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ।
नानक नाम विहूणे[20] मनमुखी जासनि[21] जनमु गवाइ। ३७। (२०)
सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे[22] थकि रहे लिव लाइ।
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ।
बिनु नावै पैनणु[23] खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति[24]।
सा सिधि सा करमाति है अचिंतु[25] करे जिसु दाति।
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा[26] सिधि एहा करमाति। ३८। (२०)
पड़णा गुड़णा[27] संसार की कार है अंदरि तृसना विकारु।
हउमै विचि[28] सभि पड़ि थके दूजै भाइ[29] खुआरु।

---

1) स्पर्श करने से 2) अपने-आप को कुछ समझने वाले को 3) कृपा करता है 4) अच्छा अथवा बुरा स्थान 5) अपने स्वाद के कारण 6) पहचानने से 7) आत्म-ज्योति परमात्म ज्योति में समाहित हो जाती है 8) व्याप्त है, बस रहा है 9) सभी कार्य सम्पन्न हो गए 10) इच्छा से 11) जो ब्रह्म को पहचानता है उसका ब्राह्मणत्व कायम रहता है 12) बसाता है 13) नाम 14) समझते हैं, पहचानते हैं 15) युवक, जवान 16) भूख 17) अनुरक्त 18) संतुष्ट हो जाता है 19) स्वीकृत, प्रामाणिक 20) वंचित 21) जाएँगे 22) ढूंढते हैं 23) पहनना 24) चमत्कार 25) बिना चिंता किए, सहज भाव से 26) यही 27) पढ़ना और पढ़कर अभ्यास करना 28) अहंभाव में 29) द्वैत-भाव में

सो पड़िआ सो पंडितु बीना[1] गुर सबदि करे वीचारु ।
अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोखु दुआरु ।
गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ।
धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु । ३९ । (२१)
विणु[2] मनु मारे कोइ न सिझई[3] वेखहु[4] को लिव लाइ ।
भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ।
गुरमुखि[5] एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ।
नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै[6] सबदि जलाइ । ४० । (२१)
जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु[7] ।
खंनली[8] धोती उजली[9] न होवई जे सउ धोवणि पाहु ।
गुरपरसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु[10] ।
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु । ४१ । (२२)
चहु जुगी कलि काली कांढी[11] इक उतम पदवी[12] इसु जुग माहि ।
गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ।
नानक गुरपरसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि,
हरि भगती माहि समाहि ।४२ । (२१)
रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ[13] ।
सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ[14] ।
सरीरु जलउ गुण बाहरा[15] जो गुर कार न कमाइ ।
जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ[16] ।
नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ । ४३ । (२३)
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ।
पिरकै भाणै[17] सदा चलै ता बनिआ सीगारु ।
सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरिवरु पाइआ नारि ।
ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ।
नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि । ४४ । (२३)

---

1) द्रष्टा, समझदार, बुद्धिमान 2) बिना 3) सफल मनोरथ नहीं होता 4) देख लो 5) गुरु के उपदेश अनुसार चलने वाला व्यक्ति 6) अहंभाव 7) कृष्ण, काला 8) कोल्हू को साफ करने वाला कपड़ा 9) साफ 10) उसकी बुद्धि सांसारिकता से हट-कर बदल जाती है 11) चार युगों में से कलियुग को काला अथवा कलंकित कहा जाता है 12) हरिकीर्तन की उत्तम स्थिति 13) 'उथारा' नाम की खोटे संकल्प रूप बीमारी से दबे हुए व्यक्ति का जीवन अविद्या में सोए हुए ही व्यतीत हो जाता है 14) चाहना 15) गुणों से वंचित 16) मैं ने अहंभाव और द्वैत भाव से जगत् को जलते हुए देखा है 17) इच्छा

गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ।
जंमणु मरणा[1] मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ[2] ।
हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ।
नानक हउ बलिहारी तिन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ[3] । ४५ । २४ ।

बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ।
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ[4] पिआरु ।
सा कुसुध[5] सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि[6] । ४६ । २४ ।

ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ[7] ।
हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ[8] देइ न पछोताइ ।
हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ।
नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै[9] सबदि जलाइ । ४७ । २९ ।

आपे सेवा लाइअनु[10] आपे बखस[11] करेइ ।
सभना[12] का मा पिउ आपि है आपे सार[13] करेइ ।
नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुग जुग सोभा होइ । ४८ । २९ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ६४३-६५३)

---

1) जन्म-मरण 2) काल (मृत्यु) के वश में कुछ नहीं रहता 3) इच्छा के अनुसार 4) द्वैत-भाव 5) अपवित्र 6) स्त्रियों में निंदनीय है 7) प्रेमपूर्वक 8) बड़ाइयां 9) अहंभाव 10) लगाता है 11) कृपा करता है 12) सभी का 13) ध्यान रखता है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु धनासरी

चउपदे घरु २

इहु धनु अखुटु[1] न निखुटै[2] न जाइ।
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ।
अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई।
गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई[3]। १।
से धनवंत हरिनामि लिव लाइ।
गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ[4] हरि किरपा ते वसै मनि आइ। रहाउ।
अवगुण काटि गुण रिदै समाइ।
पूरै गुर का सहजि सुभाइ[5]।
पूरै गुर की साची बाणी।
सुखमन[6] अंतरि सहजि समाणी। २।
एकु अचरजु[7] जन देखहु भाई।
दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई।
नामु अमोलकु न पाइआ जाइ।
गुर परसादि वसै मनि आइ। ३।
सभ महि वसै प्रभु एको सोइ।
गुरमती घटि[8] परगटु होइ।
सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ[9]।
नानक नामु मिलै मनु मानिआ[10]। ४। १।

---

1) न खत्म होने वाला 2) खत्म नहीं होता 3) बस जाता है 4) प्रकाशित हुआ, प्रकट हुआ 5) सहज भाव से, स्वभाविक हो 6) सुषुम्न नाड़ी 7) आश्चर्य 8) शरीर में 9) जान और पहचान लिया 10) मन मान जाता है, संतुष्ट हो जाता है

हरिनामु धनु निरमलु अति अपारा ।
गुर कै सबदि भरे भंडारा ।
नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ।
माइआ मोहि जलै अभिमानु । १ ।
गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ । ।
तिसु सदा अनंद होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ । रहाउ ।
सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ[1] ।
जो चाखै सो निरमलु होइ ।
निरमल नामि हउमै[2] मलु धोई ।
साची भगति सदा सुखु होइ । २ ।
जिनि हरि रसु चाखिआ सा हरि जनु लोगु ।
तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु[3] ।
आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ।
हरिनामु जपै हरि ते सुखु पावै । ३ ।
बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ[4] ।
अनदिनु दाझहि[5] साति[6] न पाइ ।
सतिगुरु मिलै सभु तृसना बुझाए ।
नानक नामि सांति सुखु पाए । ४ । २ ।

सदा धनु अंतरि नामु समाले[7] ।
जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ।
मुकति पदारथु तिन कउ पाए ।
हरि कै नामि रते[8] लिव लाइ । १ ।
गुर सेवा ते हरिनामु धनु पावै ।
अंतरि परगासु[9] हरिनामु धिआवै । रहाउ ।
इहु हरि रंगु गूड़ा[10] धन पिर होइ[11] ।
सांति सीगारु रावे[12] प्रभु सोइ ।

---

1) शब्द दीपक से तीनों लोगों में तत्वज्ञान का प्रकाश होता है 2) अहंभाव 3) कभी शोक की अवस्था उत्पन्न नहीं होती 4) सब सृष्टि विलाप कर के मर रही है 5) प्रतिदिन जलते हैं 6) शांति 7) संभाल कर रखे 8) अनुरक्त 9) प्रकाश 10) गहरा, गंभीर 11) पति-पत्नी के प्रेम के समान 12) स्मरण करे

हउमै विचि[1] प्रभु कोइ न पाए ।
मूलहु भुला जनमु गवाए । २ ।
गुर ते साति सहज सुखु बाणी[2] ।
सेवा साची नामि समाणी ।
सबदि मिलै प्रीतमु सदा सिधाए ।
साच नामि वडिआई[3] पाए । ३ ।
आपे करता जुगि जुगि सोइ ।
नदरि[4] करे मेलावा होइ ।
गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ।
नानक साचि राते[5] प्रभि आपि मिलाए । ४ । ३ ।
जगु मैला मैलो होइ जाइ ।
आवै जाइ दूजै लोभाइ[6] ।
दूजै भाइ सभ परज विगोई[7] ।
मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति[8] खोई । १ ।
गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ।
अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ । रहाउ ।
गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ।
राम नामि राते भगति दृड़ाई ।
भगति करे जनु वडिआई[9] पाए ।
साचि रते सुख सहजि समाए । २ ।
साचे का गाहकु विरला को जाणु[10] ।
गुर कै सबदि आपु पछाणु ।
साची रासि साचा वापारु ।
सो धंनु परखु जिसु नामु पिआरु । ३ ।
तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ।
ऊतम बाणी सबदु सुणाए ।

---

1) अहंभाव में 2) गुरु से शान्ति, सहज सुख और उपदेश रूपी वाणी प्राप्त होती है 3) बड़ाई 4) कृपा-दृष्टि 5) लीन, मगन 6) द्वैत-भाव के लोभ में 7) सारी प्रजा नष्ट हो रही है 8) प्रतिष्ठा 9) बड़ाई 10) जानता है

प्रभ साचे की साची कार[1] ।
नानक नामि सवारणहार[2] । ४ । ४ ।

जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ।
तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ[3] ।
साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ।
साचै सबदि वसै मनि आइ । १ ।
गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ।
सहजे हरि नामु मंनि वसाए । १ । रहाउ ।
कूड़ु[4] कुसतु तृसना अगनि बुझाए ।
अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ।
गुर कै भाणै[5] चलै ता आपु जाइ[6] ।
साचु महलु पाए हरि गुण गाइ । २ ।
न सबदु बूझै न जाणै बाणी ।
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी[7] ।
सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ।
हउमै विचहु ठाकि रहाए[8] । ३ ।
किसनो कहीऐ दाता इकु सोइ ।
किरपा करे सबदि मिलावा होइ ।
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ।
नानक साचे साचा भावा[9] । ४ । ५ ।

मनु मरै धातु[10] मरि जाइ ।
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ।
इहु मनु मरै दारु जाणै कोइ[11] ।
मनु सबदि मरै बुझै जनु सोइ । १ ।
जिसनो बखसे[12] हरि दे वडिआई[13] ।
गुर परसादि वसै मनी आई । रहाउ ।

---

1) कार्य 2) संवारने वाला है 3) नाम 4) झूठ 5) इच्छा, मरज़ी 6) अहंकार की भावना नष्ट होती है 7) जीवन दुःख में व्यतीत होता है 8) मन मे अहंभाव को आने से रोक देता है 9) अच्छा लग रहा है 10) दौड़ने की रुचि, तृष्णा 11) मन मारने की विधि कोई बिरला ही जानता है 12) कृपा करता है 13) बड़ाई

गुरमुखि करणी कार कमावै[1] ।
ता इसु मन की सोझी पावै ।
मनु मै मतु मैगल मिकदारा[2] ।
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा । २ ।
मनु असाधु साधै जनु कोई ।
अचरु चरै[3] ता निरमलु होई ।
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ।
हउमै विचहु तजै विकार[4] । ३ ।
जो धुरि रखिअनु[5] मेलि मिलाइ ।
कदे[6] न विछुड़हि सबदि समाइ ।
आपणी कला आपे प्रभु जाणै ।
नानक गुरमुखि नामु पछाणै । ४ । ६ ।

काचा धनु संचहि मूरख गावार ।
मनमुख भूले अंध गावार ।
बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ।
ना साथि जाइ न परापति होइ । १ ।
साचा धनु गुरमती पाए ।
काचा धनु फुनि आवै जाए । रहाउ ।
मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ।
भवजलि डूबे न उरवारि न पारि[7] ।
सतिगुरु भेटे पूरै भागि ।
साचि रते अहिनिसि[8] बैरागि । २ ।
चहु जुग महि अंमृतु साची बाणी ।
पूरै भागि हरिनामि समाणी ।
सिध साधिक तरसहि सभि लोइ[9] ।
पूरै भागि परापति होइ । ३ ।

---

1) गुरु के उपदेश को करने के लिए कार्य बना ले 2) मन मद से मस्त हाथी के समान है 3) अखाद्य वस्तु को खाए, विषय वासनाओं को नष्ट करे 4) अंतर से अहंभाव और विकार को त्याग दे 5) अपने द्वार से ही रक्षा कर दी है 6) कभी 7) न इधर के, न उधर के 8) दिन रात्रि 9) लोग

सभु किछु साचा साचा है सोइ ।
ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ ।
सचु साचा सचु आपि दृड़ाए ।
नानक आपे वेखै[1] आपे सचि लाए । ४ । ७ ।

नावै की कीमति मिति कही न जाइ ।
से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ।
गुरमति साची साचा वीचारु ।
आपे बखसे[2] दे वीचारु । १ ।
हरि नामु अचरजु[3] प्रभु आपि सुणाए ।
कली काल विचि[4] गुरमुखि पाए । १ । रहाउ ।
हम मूरख मूरख मन माहि ।
हउमै विचि[5] सभ कार कमाहि ।
गुरपरसादी हउमै जाइ ।
आपे बखसे लए मिलाइ । २ ।
बिखिआ का धनु बहुतु अभिमान ।
अहंकारि डूबै न पावै मानु ।
आपु[6] छोडि सदा सुखु होई ।
गुरमति सालाही सचु सोई । ३ ।
आपे साजे करता सोइ ।
तिसु बिनु दूजा[7] अवरु न कोइ ।
जिसु सचि लाए सोई लागै ।
नानक नामि सदा सुखु आगै । ४ । ८ ।

घरु ४

हम भीखक[8] भेखरी तेरे तू निज पति है दाता ।
होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कउ सदा रहउ रंगि राता[9] । १ ।
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु[10] ।
करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा[11] कोई । १ । रहाउ ।

1) आप ही देखता है 2) कृपा-पूर्वक 3) आश्चर्य 4) में, अंतर 5) अहंभाव में 6) अपनेपन की भावना 7) दूसरा 8) भिक्षुक 9) प्रेम मगन 10) नाम के ऊपर 11) दूसरा

बहुते फेर[1] पए किरपन[2] कउ अब किछु किरपा कीजै ।
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै[3] । २ ।
भनति[4] नानक भरम पट खूल्हे गुरपरसादी जानिआ ।
साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ । ३ । १९ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ ६६३-६६६)

1) चक्कर 2) कंजूस 3) ऐसी कृपा करिए 4) कहता है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु सूही

असपटदीआ घरु १

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै[1] ।
गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु[2] न जापै ।
कउडी[3] बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै[4] ।
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै[5] दुखु न संतापै । १ ।
बलिहारी गुर अपणे विटहु[6] जिनि साचे सिउ लिव लाई ।
सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ[7] सहजे रहिआ समाई । १ । रहाउ ।
गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ।
जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ।
मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे[8] संसारे ।
माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे । २ ।
सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए[9] ।
साचा सबदु सिफति[10] है साची साचा मंनि वसाए ।
सची बाणी गुरमुखि आखै[11] हउमै विचहु जाए[12] ।
आपे दाता करमु[13] है साचा साचा सबदु सुणाए । ३ ।
गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे[14] गुरमुखि नामु जपाए ।
सदा अलिपतु साचै रंगि राता[15] गुर कै सहजि सुभाए ।
मनमुख सदही कूड़ो[16] बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ।
जमकालि बाधा[17] तृसना दाधा[18] बिनु गुर कवणु छुडाए । ४ ।

---

1) प्रतीत नहीं होता, पहचाना नहीं जाता 2) स्वाद 3) कौड़ी 4) अपने आप को पहचानता नहीं 5) अहंभाव 6) ऊपर से 7) प्रकासित हो गया 8) कमाता है 9) इच्छा, मरजी 10) गुण, स्तुति 11) कहता है 12) अहंभाव अंतर से चला जाता है 13) कृपा 14) कमाता है 15) प्रेम में अनुरक्त है 16) झूठ 17) बंधा हुआ 18) जला हुआ

सचा तीरथु जितु सतसरि नावणु[1] गुरमुखि आपि बुझाए ।
अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै[2] मलु जाए ।
सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ।
सची सिफति[3] सची सालाह पूरे गुर ते पाए । ५ ।
तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए[4] ।
हुकमु[5] होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए[6] ।
गुर की साखी[7] सहजे चाखी तृसना अगनि बुझाए ।
गुर कै सबदि राता[8] सहजे माता[9] सहजे रहिआ समाए । ६ ।
हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ[10] पिआरे ।
सची वडिआई[11] गुर ते पाई सचै नाइ[12] पिआरे ।
एको सचा सभ महि वरतै[13] विरला को वीचारे ।
आपे मेलि लए ता बखसे[14] सची भगति सवारे । ७ ।
सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ।
जंमण मरणा हुकमो वरतै[15] गुरमुखि आपु पछाणै ।
नामु धिआए ता सतिगुर भाए[16] जो इछे सो फलु पाए ।
नानक तिस दा[17] सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए[18] । ८ । १ ।
काइआ कामणि अति सुआल्हिउ[19] पिरु वसै जिसु नाले[20] ।
पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले[21] ।
हरि की भगति सदा रंगि राता[22] हउमै विचहु जाले[23] । १ ।
वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ।
पूरे गुर ते उपजी[24] साचि समाणी । १ । रहाउ ।
काइआ अंदरि सभु किछु वसै[25] खंड मंडल पाताला ।
काइआ अंदरि जग जीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ।
काइआ कामणि सदा सुहेली[26] गुरमुखि नामु सम्हाला । २ ।

---

1) सत्य स्वरूप सरोवर में स्नान करना 2) स्नान करने से 3) गुण, स्तुति 4) नीच बुद्धि के कारण मनुष्य यह बात कह नहीं सकता 5) आदेश, आज्ञा 6) अंतर से अहंभाव चला जाता है 7) शिक्षा, उपदेश 8) अनुरक्त 9) मस्त, मगन 10) भावना, इच्छा 11) बड़ाई 12) नाम 13) व्याप्त 14) कृपा करे 15) जन्म-मरण प्रभु की आज्ञा के अनुसार होता है 16) अच्छा लगता है 17) का 18) यदि अंतर से अपनेपन की भावना निकाल दे 19) सुंदर 20) जिस के साथ 21) स्मरण करे 22) प्रेम में अनुरक्त 23) अंतर से अहंभाव जला दे 24) उत्पन्न हुई 25) बसता है 26) सुखी, आनंदित

काइआ अंदरि आपे वसै अलखु[1] न लखिआ जाई ।
मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि[2] जाई ।
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई[3] । ३ ।
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ।
इसु काइआ अंदरि नउ खंड पृथमी हाट पटण[4] बाजारा ।
इसु काइआ अंदरि नामु नउनिधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा । ४ ।
काइआ अंदरि तोलि तोलावै आपे तोलणहारा[5] ।
इहु मनु रतनु जवाहर माणकु[6] तिसका मोलु अफारा[7] ।
मोलि कितही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा । ५ ।
गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ।
जिसनो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ।
काइआ अंदरि भउ भाउ[8] वसै गुर परसादी[9] पाइ । ६ ।
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति[10] जितु संसारा ।
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवागउणु पासारा[11] ।
पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा । ७ ।
सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ।
विणु नावै दरि ढोई नाही[12] ता जमु करे खुआरी ।
नानक सचु वडिआई[13] पाए जिसनो हरि किरपा धारी । ८ । २ ।

घरु १०

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी[14] ।
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई[15] । १ ।
वाहु मेरे साहिबा वाहु ।
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु[16] । १ । रहाउ ।
दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि[17] ।
जमपुरि बधे मारीअहि[18] वेला न लाहंनि[19] । २ ।

---

1) जो समझा न जा सके 2) ढूंढने के लिए 3) न समझा जा सकने वाला समझा दिया 4) नगर 5) इस शरीर के अंदर प्रभु स्वयं गुणों को तोलने वाला है 6) माणिक्य 7) बहुत अधिक 8) भय और प्रेम 9) गुरु की कृपा पूर्वक 10) उत्पन्न हुआ है 11) प्रसार 12) परमात्मा के द्वार पर कोई आदर नहीं 13) बड़ाई 14) मर जाएगी, नष्ट हो जाएगी 15) जो मर कर मिट्टी हो जाएँगे 16) इच्छा-रहित, लागरज़ 17) सड़ कर मर जाते हैं 18) मारे जाते हैं 19) फिर समय हाथ नहीं लगता

गुरमुखि जनमु सकारथा[1] सचै सबदि लगंनि[2] ।
आतम रामु प्रगासिआ[3] सहजे सुखि रहंनि[4] ।३ ।
गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि[5] ।
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलति फिरंनि[6] । ४ ।
दुसटा नालि[7] दोसती नालि संता वैरु करंनि ।
आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि[8] । ५ ।
निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि[9] ।
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि[10] । ६ ।
ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ[11] ।
आपि बीजि आपे ही खावणा[12] कहणा किछू न जाइ[13] । ७ ।
महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ[14] ।
ओइ[15] अंमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ[16] । ८ ।
गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि[17] ।
से वडभागी[18] जि ओना मिलि रहे अनदिनु नाम लएनि[19] । ९ ।
देसी रिजकु संबाहि[20] जिनि उपाई मेदनी ।
एको है दातारु सचा आप धणी[21] । १० ।
सो सचु तेरै नालि[22] है गुरमुखि नदरि निहालि[23] ।
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि । ११ ।
मनु मैला सचु निरमला किउकरि मिलिआ जाइ ।
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै[24] सबदि जलाइ । १२ ।
सो सहु सचा वीसरै[25] ध्रिगु जीवणु संसारि ।
नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि । १३ ।
सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उरधारि ।
मिलिया होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि । १४ ।
पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ।
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि । १५ ।

---

1) सार्थक, सफल 2) लगते हैं 3) प्रकाशित हुआ है 4) रहते हैं 5) द्वैत-भाव में लगकर 6) जलते फिरते हैं 7) साथ 8) डुबा देते हैं 9) करते हैं 10) पड़ते हैं 11) उसी प्रकार के कर्म करता है 12) खाना पड़ता है 13) कुछ कहा नहीं जा सकता 14) किसी विशेष संदर्भ में 15) वे 16) उन में तिल मात्र लालच नहीं होता 17) गुण करने वाले गुणों का संग्रह करते हैं और दूसरों को उपदेश देते हैं 18) श्रेष्ठ भाग्य वाले 19) लेते हैं 20) आजीविका पहुँचाएगा 21) स्वामी 22) साथ 23) कृपा-दृष्टि से देख 24) अहंभाव 25) भूल जाए

मनमुख मनु न भिजई[1] अति मैले चिति कठोर ।
सपै[2] दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर[3] । १६ ।
आपि करे किसु आखीऐ[4] आपे बखसनहारु[5] ।
गुरसबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु[6] । १७ ।
सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि[7] ।
ओना सचु न भावई[8] दुख ही माहि पचंनि[9] । १८ ।
हउमै[10] मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार[11] ।
पइऐ किरति कमावणा[12] कोइ न मेटणहार । १९ ।
संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ।
सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु । २० ।
गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि[13] नामु धिआइ ।
हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ[14] । २१ ।
गुरु सालाही आपणा निवि निवि[15] लागा पाइ ।
तनु मनु सउपी[16] आगै धरी विचहु आपु गवाइ[17] । २२ ।
खिंचोताणि विगुचीऐ[18] एकसु सिउ लिव लाइ ।
हउमै[19] मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ । २३ ।
सतिगुर नो मिले सि भाइरा[20] सचै सबदि लगंनि[21] ।
सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि[22] । २४ ।
से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि[23] ।
अवगण विकणि पल्हरनि[24] गुण की साझ करंन्हि[25] । २५ ।
गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ।
सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा[26] नामु लएनि । २६ ।
सुइना रुपा[27] पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि[28] ।
विणु नावै नालि न चलसी[29] सभ मुठी जम कालि । २७ ।

---

1) मन के अनुसार चलने वाले व्यक्ति का मन भीगता नहीं है 2) सर्प, सांप 3) शुद्ध, खालिस 4) कहा जाए 5) कृपालु 6) सच्चा शृंगार बनता है 7) वहां झूठे ठहर नहीं सकते 8) उनको सच अच्छा नहीं लगता 9) नष्ट हो जाते हैं 10) अहंभाव 11) बारबार जन्म लेता और मरता है 12) कृत कर्मों के अनुरूप आवागमन का चक्कर काटना पड़ता है 13) प्रतिदिन 14) अहंभाव और अपनेपन का बड़ा रोग है, अंतर को रोक कर रखता है 15) झुक झुक कर 16) सौंप कर 17) अंतर से अपनेपन की भावना को खत्म करके 18) द्वैत-भाव की दुविधा से दुःख सहन करना पड़ता है 19) अहंभाव 20) गुरु-भाई हैं 21) लगते हैं 22) दिखाई पड़ते है 23) सेवा करते हैं 24) अवगुणों को भूसे के दर से बेचते हैं 25) करते हैं 26) लाभ 27) चांदी 28) साथ 29) चलेगा

मन का तोसा[1] हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ।
एहु खरचु अखुटु[2] है गुरमुखि निबहै नालि[3] । २८ ।
ऐ मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ[4] ।
एहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ[5] गुरमती सचु धिआइ । २९ ।
हरि की कीमती ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ।
गुर कै सबदि मनु तनु रपै[6] हरि सिउ रहै समाइ । ३० ।
सो सहु मेरा रंगुला[7] रंगे सहजि सुभाइ ।
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ । ३१ ।
चिरी विछुंने[8] भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि[9] ।
अंतरि नवनिधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई[10] हरि गुण सहजि रवंनि[11] ।३२ ।
ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि[12] ।
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केलु करंनि[13] । ३३ ।
सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि ।
इसु जग महि विरले जाणीअहि[14] नानक सचु लहंनि[15] । ३४ । ३ ।

हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलीआ जाइ ।
गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु[16] वसै मनि आइ । १ ।
गुरमुखि हरि हरि नामु जपंनि[17] ।
हउ तिनकै बलिहारणै मनि हरिगुण सदा रवंनि[18] । १ । रहाउ ।
गुर सरवरु मानसरोवरु है वडभागी[19] पुरखु लहंन्हि[20] ।
सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि[21] । २ ।
नामु धिआइन्हि रंगि सिउ[22] गुरमुखि नामि लगंन्हि[23] ।
धुरि पूरबि[24] होवै लिखिआ गुर भाणा[25] मंनि लएन्हि । ३ ।
वडभागी[26] घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ।
गुरि पूरै वेखालिआ[27] प्रभु आतम रामु पछानु । ४ ।

---

1) यात्रा का सामान 2) अक्षुण्ण, अन्यून 3) साथ निर्वाह करता है 4) प्रतिष्ठा नष्ट कर के जाएगा 5) द्वैत-भाव मे व्याप्त है 6) मगन हो जाए 7) रसिक 8) बिछुड़े हुए 9) सेवा करते है 10) समाप्त नहीं होता 11) स्मरण करते हैं 12) सहन करते हैं 13) आनंदयुक्त क्रीडा करते हैं 14) जाने जाते हैं 15) लेते हैं 16) सहज भाव से 17) जपते हैं 18) स्मरण करते हैं 19) बड़े भाग्य वाले 20) लेते हैं 21) वे हंस नाम रूप मोती प्राप्त करते हैं 22) प्रेम पूर्वक नाम की आराधाना करते 23) लगते हैं 24) प्रभु द्वार से पहले ही 25) इच्छा 26) बड़े भाग्य वाले 27) दिखाया है

सभना क प्रभु एकु है दूजा[1] अवरु न कोइ ।
गुरपरसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ । ५ ।
सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ[2] ।
मंदा किसनो ग्राखीऐ[3] सबदि वेखहु[4] लिव लाइ । ६ ।
बुरा भला तिचरु ग्राखदा[5] जिचरु है दुहु[6] माहि ।
गुरमुखि एको बुझिग्रा एकसु माहि समाइ । ७ ।
सेवा सा प्रभ भावसी[7] जो प्रभु पाए थाइ[8] ।
जन नानक हरि आरधिग्रा गुरचरणी चितु लाइ । ८ । २ । ४ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ७५३-७५७)

सूही घरु २

छंत

सुख सोहिलड़ा[9] हरि धिआवहु । गुरमुखि हरि फलु पावहु ।
गुरमुखि फलु पावहु हरिनामु धिआवहु जनम-जनम के दूख निवारो ।
बलिहारी गुर अपणे विटहु[10] जिनि कारज सभि सवारे ।
हरि प्रभु क्रृपा करे हरि जापहु[11] सुख फल हरिजन पावहु ।
नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु । १ ।
सुणि हरि गुण भीने[12] सहजि सुभाए । गुरमति सहजे नामु धिआए ।
जिन कउ धुरि[13] लिखिग्रा तिन गुरु मिलिग्रा तिन जनम मरण भउ[14] भागा ।
अंदरहु दुरमति दूजी[15] खोई सो जनु हरि लिव लागा ।
जिन कउ क्रृपा कीनी मेरै सुग्रामी तिन ग्रनदिनु हरि गुण गाए ।
सुणि मन भीने सहजि सुभाए । २ ।
जुग महि रामनामु निसतारा ।
गुर ते उपजै[16] सबदु वीचारा ।
गुरसबदु वीचारा रामनामु पिग्रारा जिसु किरपा करे सु पाए ।
सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख[17] सभि गवाए ।

1) दूसरा 2) सभी स्थानों पर 3) बुरा किस को कहा जाए 4) देख लो 5) बुरा भला तभी कहा जा सकता है 6) द्वैत-भाव 7) अच्छी लगेगी 8) स्वीकृत होती है 9) मांगलिक अथवा खुशी का गीत 10) ऊपर से 11) जप करो 12) भीग गए 13) प्रभु के द्वार से 14) भय 15) द्वैत-भावना 16) उत्पन्न होता है 17) पाप

सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा।
जुग महि रामनामु निसतारा। ३।
साजन आइ वुठे[1] घर माही।
हरि गुण गावहि तृपति अघाही।
हरि गुण गाइ सदा तृपतासी फिरि भूख न लागै आए।
दहदिसि[2] पूज होवै हरिजन की जो हरि हरि नामु धिआए।
नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े[3] हरि बिनु को दूजा[4] नाही।
साजन आइ वुठे घर माहि। ४। १।

घरु ३

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम।
सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै[5] सबदि जलाइआ राम।
हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ[6] जिसकी साची बाणी।
साची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी[7]।
भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ।
नानक भगत सोहहि[8] दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ। १।
हरि भगता की जाति पति[9] है भगत हरि कै नामि समाणे राम।
हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि[10] जिन गुण अवगण पछाणे राम।
गुण अउगण पछाणै हरिनामु वखाणै[11] भै भगति मीठी लागी।
अनदिनु[12] भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी।
भगती राते[13] सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले[14]।
नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले। २।
मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु[15] सतिगुर भगति न होई राम।
हउमै[16] माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम।

1) बस गए हैं 2) दस दिशाओं में 3) संयोग और वियोग अवस्थाओं का कारण स्वरूप हैं 4) दूसरा 5) अहंभाव 6) अच्छा लगा 7) कह कर बखान की है 8) सुशोभित 9) प्रतिष्ठा 10) अंतर से अपनेपन की भावना को नष्ट करते हैं 11) बखान करते हैं 12) प्रतिदिन 13) अनुरक्त 14) सदा अपने साथ देखता है 15) बिना 16) अहंभाव

मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ[1] परजि विगोई[2] विणु गुर ततु न जानिआ ।
भगति विहूणा[3] सभु जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ।
कोटि मधे किनै पछाणिआ हरिनामा सचु सोई ।
नानक नामि मिलै वडिआई[4] दूजै भाइ पति[5] खोइ । ३ ।
भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे[6] राम ।
भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ।
कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ।
सदा अखुटु कदे न निखुटै[7] हरि दीआ सहजि सुभाइआ[8] ।
हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ।
नानक आपे बखसि[9] मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ । ४ । १ । २ ।

सबदि सचै सचु सोहिला[10] जिथै[11] सचे का होइ वीचारो राम ।
हउमै[12] सभि किलविख[13] काटे साचु रखिआ उरिधारे राम ।
सचु रखिआ उरधारे दुतरु[14] तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ।
सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ[15] सोई ।
साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै[16] सभु सोई ।
नानक साचा साहिबु साची नाई[17] सचु निसतारा होई । १ ।
साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखे सचु सोई राम ।
सचा भोजनु भाउ[18] सचा है सचै नामि सुखु होई राम ।
साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा[19] ।
जोती जोति मिलाई[20] सचि समाई सचि नाइ परगासा[21] ।
जिनी सचु जाता[22] से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ।
नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि[23] । २ ।
सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला[24] होई राम ।
निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि[25] साचा पुरखु प्रभु सोई राम ।

1) द्वैत-भाव 2) समस्त सृष्टि (प्रजा) नष्ट हो रही है 3) वंचित 4) बड़ाई 5) प्रतिष्ठा 6) बखान करते हैं 7) सदैव अक्षुण्ण है, कभी खत्म नहीं होता 8) सहज भाव से 9) कृपा-पूर्वक 10) आनंद का गीत 11) जहाँ 12) अहंभाव 13) पाप 14) कठिनता से पार किया जाने वाला 15) दिखाया है 16) देखे 17) नाम 18) भाव, प्रेम 19) निवास 20) आत्म-ज्योति का परमात्म-ज्योति से मिलन हो गया 21) प्रकाश 22) जान लिया 23) फिर वे बिछुड़ कर दुःख नहीं पाते 24) आनंदपूर्ण गान 25) में

सभु सचु वरतै[1] सचो बोलै जो सचु करै सु होई ।
जह देखा तह सचु पसरिआ[2] अवरु न दूजा[3] कोई ।
सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ।
नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई । ३ ।
सचे भगत सोहहि दरवारे[4] सचो सचु वखाणे[5] राम ।
घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ।
आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ।
सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ।
साचि रते[6] भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ।
नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई । ४ । २ । ३ ।

जुग चारे धन जे भवै[7] बिनु सतिगुर सोहागु न होई राम ।
निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ।
तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ।
धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ।
सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै[8] मुकति न होई ।
नानक कामणि कंतै रावे[9] मनि मानिऐ सुखु होई । १ ।
सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए[10] हरि वरु पावहि सोई राम ।
सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु[11] न होई राम ।
फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै[12] मारि पछाणिआ ।
करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ।
गुरमुखि प्रभु रावे दिन राती आपणा साची सोभा होई ।
नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ[13] प्रभु सोई । २ ।
गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ।
हरि कै रंगि रती[14] है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ।
मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई[15] ।

1) व्याप्त है 2) विस्तृत है, फैला हुआ है 3) दूसरा, अन्य 4) परमात्मा के दरबार में 5) बाखन करता है 6) अनुरक्त 7) चार युग तक यदि स्त्री (साधक) फिरती रहे 8) हरि-नाम के बिना 9) स्मरण करे 10) बालिका 11) वेश, भेस 12) अहंभाव 13) सर्वत्र व्याप्त है 14) अनुरक्त 15) सभी स्थानों में सच स्वरूप व्याप्त है

सचा सीगारु[1] करे दिनु राती कामणि सचि समाई ।
हरि सुख दाता सबदि पछाता कमाणि लइआ कंठि लाए ।
नानक महलि[2] महलु[3] पछाणै गुरमती हरि पाए । ३ ।
सा धन बाली धुरि[4] मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ।
गुरमती घटि चानणु[5] होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ।
प्रभु रवि रहिआ सभ थाई[6] मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ[7] ।
सेज सुखली मेरे प्रभ भाणी[8] सचु सीगारु बणाइआ ।
कामणि निरमल हउमै[9] मलु खोई गुरमती सचि समाई ।
नानक आपि मिलाई करतै नामु नवैनिधि पाई । ४ । ३ । ४ ।

हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे[10] पाए राम ।
अनदिनो[11] सबदि रवहु[12] अनहद सबदि वजाए राम ।
अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ।
अनदिनु भगति करहि गुर आगै साधन[13] कंत पिआरी ।
गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए[14] ।
नानक तिन घरि सद ही सोहिला[15] हरि करि किरपा घरि आए । १ ।
भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिवलाए राम ।
गुरमुखे मन निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाए राम ।
निरमल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अंमृतु बाणी ।
जिन मनि वसिआ सेई जन निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ।
तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ।
नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए । २ ।
संत संगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ।
गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ।
हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले[16] ।
सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु[17] नामु सम्हाले ।

1) श्रृंगार 2) महिला ने 3) परमधाम 4) प्रभु के द्वार से 5) प्रकाश 6) प्रभु सभी स्थानों में व्याप्त है 7) जो पूर्व में ही परमात्मा ने लिख दिया है 8) अच्छी लगती है 9) अहंभाव 10) गुरु के द्वार से 11) प्रतिदिन 12) स्मरण करो 13) स्त्री 14) सुशोभित हैं 15) आनंदपूर्ण गान 16) मन परमात्मा के साथ अनुरक्त हो गया है 17) प्रतिदिन

गुर सबदे राता[1] सहजे माता[2] नामु मनि वसाए ।
नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुरि सेवि समाए । ३ ।
बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु[3] न पाइआ राम ।
गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ।
तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रंगि राते[4] ।
हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते[5] ।
साची भगति करहि दरि जापहि[6] घरि दरि सचा सोई ।
नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई । ४ । ४ । ५ ।

जे लोड़हि वरु बालड़ीए[7] ता गुर चरणी चितु लाए राम ।
सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ।
हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन[8] कंत पिआरी ।
सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी[9] ।
मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ।
नानक सदा पिरु रावे[10] आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ । १ ।
पिरु पाइअड़ा[11] बालड़ीए अनदिनु सहजे माती[12] राम ।
गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती[13] राम ।
तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती[14] मेरा प्रभु मेलि मिलाए ।
अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए[15] ।
गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ।
नानक नामु मिले वडिआई[16] प्रभु रावे रंगि राती[17] । २ ।
पिरु रावे रंगि रातड़ीए[18] पिर का महलु[19] तिन पाइआ राम ।
सो सहो[20] अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ।
विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ[21] हरि कामणि मनि भाणी[22] ।
अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ।

---

1) अनुरक्त, लीन 2) मस्त, मगन 3) परमधाम 4) प्रेम में अनुरक्त 5) जान लिए हैं 6) प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं 7) ऐ बालिका ! यदि तू वर चाहती है 8) स्त्री 9) सुसज्जित है 10) स्मरण करती है 11) प्राप्त कर लिया 12) मगनलीन 13) रत्ती भर 14) अनुरक्त, लीन 15) अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट कर के 16) बड़ाई 17) प्रेम में अनुरक्त हो कर स्मरण करती है 18) अनुरक्त 19) प्रियतम-धाम 20) पति-परमात्मा 21) अच्छा लगा 22) अच्छी लगी

जुग चारे साचा एको वरतै[1] बिनु गुर किनै न पाइआ ।
नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ । ३ ।
कामणि मनि सोहिलड़ा[2] साजन मिले पिआरे राम ।
गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ[3] उरधारे राम ।
हरि राखिआ उरधारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता[4] ।
प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता[5] ।
सतिगुर सेवि सदा सुख पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ।
नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे । ४ । ५ । ६ ।

सोहिलड़ा[6] हरि नामु गुर सबदी वीचारे राम ।
हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै[7] रामनामु पिआरे राम ।
राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ।
आवण जाण रहे[8] सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ।
हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ।
सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे । १ ।
हम नीवी[9] प्रभु अति ऊचा किऊकरि मिलिआ जाए राम ।
गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए[10] राम ।
मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ[11] माणे ।
सेज सुखाली[12] जा प्रभु भाइआ[13] हरि हरि नामि समाणे ।
नानक सोहागणि सा वडभागी[14] जे चले सतिगुर भाए ।
हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउकरि मिलिआ जाए । २ ।
घटि घटे सभना विचि[15] एको एको राम भतारो[16] राम ।
इकना प्रभु दूरि वसे इकना मनि आधारो राम ।
इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ।
घटि घटि हरि प्रभ एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ।
सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ।
घटि घटे सभना एको एको राम भतारो राम । ३ ।

---

1) व्याप्त 2) प्रसन्नता का गीत 3) रखा है 4) जान लिया है 5) कर्मों का फल प्रदान करने वाला 6) आनंदपूर्ण गान 7) भीगते हैं 8) आवागमन समाप्त हो जाता है 9) नीच 10) स्वाभाविक हीं 11) मौज, आनंद 12) सुखदायक 13) अच्छा लगा 14) श्रेष्ठ भाग्यवाली 15) में 16) पति

गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइग्रा राम ।
हरि धूड़ि[1] देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइग्रा राम ।
पापी मुकतु कराए ग्रापु गवाए निज घरि पाइग्रा वासा[2] ।
बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी[3] गुरमति नामि प्रगासा[4] ।
हरि हरि ग्रनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ[5] लगाए ।
गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए । ४ । ६ । ७ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ७६७-७७२)

वार सूही की
सलोका नालि महला ३[6]

सलोकु

सूहै वेसि दोहागणी[7] पर पिरु रावण[8] जाइ ।
पिरु छोडिग्रा घरि आपणै मोही दूजै भाइ[9] ।
मिठा[10] करि कै खाइग्रा बहु सादहु वधिआ रोगु ।
सुधु भतारु हरि छोडिग्रा फिरि लगा जाइ विजोगु ।
गुरमुखि होवै सु पलटिग्रा[11] हरि राती[12] साजि सीगारी ।
सहजि सचु पिरु राविग्रा[13] हरि नामा उरधारि ।
आगिग्राकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ।
नानक पिरु पाइग्रा हरि साचा सदा सोहागणि नारि । १ । (१)
सूहवीए[14] निमाणीए सो सहु[15] सदा सम्हालि[16] ।
नानक जनमु सवारहि ग्रापणा कुलु भी छुटी नालि[17] । २ । २ ।

पउड़ी

आपे तखतु रचाइओनु[18] ग्राकास पताला ।
हुकमे धरती साजीग्रनु सची धरमसाला ।
ग्रापि उपाइ खपाइदा[19] सचे दीन दइआला ।
सभना रिजकु संबाहिदा[20] तेरा हुकमु निराला ।
आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला । १ ।

---

1) चरणधूलि 2) निवास 3) आयु रूप रात्रि व्यतीत होती है 4) प्रकाशित 5) मीठे, मधुर 6) तीसरे गुरु के श्लोकों सहित 7) लाल वस्त्रों के होते हुए भी दोहागिन है 8) रमण करने के लिए 9) द्वैत-भाव, माया मोह 10) मीठा 11) बदलता है 12) ग्रनुरक्त 13) स्मरण किया है, रमण किया है 14) लाल वस्त्रों वालिए ! 15) पति 16) ग्रपना ले 17) साथ 18) रचना की है 19) नष्ट करता है 20) सभी को आजीविका पहुँचाता है

सलोकु

सूहब[1] ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ[2] ।
सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला[3] दूजा नाही थाउ[4] ।
ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ[5] ।
नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु
उजला खसमै[6] माहि समाइ । १ । ३ ।
लोका वे हउ सूहवी[7] सूहा वेसु करी ।
वेसी सहु[8] न पाइऐ करि करि वेस रही ।
नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ।
जो तिसु भावै सो थीऐ[9] इत विधि कंत मिली । १ । ४ ।

पउड़ी

हुकमी[10] सृसटि साजीअनु बहु भिति[11] संसारा ।
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा[12] सचे अलख अपारा ।
इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ।
सचि रते[13] से निरमले हउमै[14] तजि विकारा ।
जिसु तू मेलहि सो तुधु[15] मिलै सोई सचिआरा । २ ।

सलोकु

सूहवीए[16] सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ[17] ।
खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ[18] ।
गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ[19] ।
उलटी सकति सिवै घरि आई[20] मनि वसिआ हरि अंमृत नाउ[21] ।
नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ गुण गाउ । १ । ५ ।
सूहा[22] रंगु विकारु है कंतु न पाइआ जाइ ।
इसु लहदे[23] बिलम न होवई रंड बैठी[24] दूजै भाइ ।
मुंध[25] इआणी[26] दुंमणी सूहै वेसि लोभाइ ।
सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ।
नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुरु भाइ । २ । ६ ।

---

1) लाल वेश वाली स्त्री 2) नाम 3) सुन्दरता में वृद्धि होती है 4) दूसरा स्थान नहीं है 5) दिन-रात प्रेम लगता है 6) पति परमात्मा 7) ऐ लोगो ! मैं लाल वस्त्रों वाली हूं 8) पति 9) जो उसे अच्छा लगता है, वही होता है 10) आज्ञा से 11) भाँति 12) प्रतीत नहीं होता, कितना है 13) अनुरक्त 14) अहंभाव 15) तुझे 16) लाल वस्त्रों वाली 17) द्वैत-भाव 18) छाया 19) सच्चा, स्थायी 20) माया से रुचि ,हट कर परमात्मा के दरबार में आकर स्थिर हो गई 21) नाम 22) लाल 23) उतरते हुए 24) विधवा हो कर बैठ जाती है 25) स्त्री 26) नासमझ

पउड़ी

आपे आपि उपाइअनु[1] आपि कीमति पाई । तिस दा अंतु न जापई[2] गुरसबदि बुझाई ।
माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई[3] । मनमुख ठउर न पाइनी[4] फिरि आवै जाई ।
जो तिसु भावै सो थीऐ सभ चलै रजाई[5] । ३ ।

सलोकु

सूहै वेसि[6] कामणि कुलखणी जो प्रभ छोड़ि पर पुरख धरे पिआरु ।
ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ।
जिसु पूरबि[7] होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ।
सूहा वेसु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु[8] ।
पेईऐ साहुरै[9] बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु संसारु ।
ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे[10] सिरजणहारु ।
नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु[11] । १ । ७ ।

पउड़ी

एहु जगु आपि उपाइओनु[12] करि चोज विडानु[13] ।
पंच धातु विचि पाईअनु[14] मोहु झूठु गुमानु ।
आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु अगिआनु ।
इकना आपि बुझाइओनु[15] गुरमुखि हरि नामु गिआनु ।
भगति खजाना बखसिओनु[16] हरि नामु निधानु । ४ ।

सलोकु

सूहवीए[17] सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ।
सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि[18] मुई गावारि ।
सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि[19] ।
मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ।
सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ[20] करे सीगारु ।
नानक करमी महलु पाइआ[21] पिरु राखिआ उरधारि । १ । ८ ।
मुंधे[22] सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु । आवण जाणा वीसरै गुरसबदी वीचारु ।

---

1) उत्पन्न करता है 2) उसका अंत प्रतीत नहीं होता 3) द्वैत-भाव में भ्रमित है 4) स्थिरता प्राप्त नहीं करते 5) जो उसे अच्छा लगता है, वही होता है, सब उसकी इच्छा के अनुसार कार्यरत हैं 6) लाल वेश 7) पहले से ही 8) क्षमा रूप श्रृंगार 9) मायके और ससुराल में 10) रमण करता है 11) पति 12) उत्पन्न किया है 13) आश्चर्ययुक्त कृत्यों से 14) में डाले हैं 15) समझा देता है 16) कृपा करता है 17) लाल वेश वालिए ! 18) जल कर 19) अहंभाव को अंतर से मार कर 20) भय और प्रेम का 21) शुभ कर्मों के फलस्वरूप परमधाम प्राप्त होता है 22) ऐ स्त्री !

मुंध सुहावी सोहणी[1] जिसु घरि सहजि भतारु ।
नानक साधन[2] रावीऐ[3] रावे रावणहारु । २ । ९ ।

पउड़ी

मोहु कूडु[4] कुटंबु है मनमुखु मुगधु रता ।
हउमै[5] मेरा करि मुए किछु साथि न लिता[6] ।
सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता[7] ।
फिरि वेला हथि न आवई[8] जमकालि वसि किता[9] ।
जेहा धुरि लिखि पाइओनु से करम कमिता[10] । ५ ।

सलोक

सतीआ एहि न आखीअनि[11] जो मड़िआ[12] लगि जलंनि ।
नानक सतीआ जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि । १ । १० ।
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि ।
सेवनि साई[13] आपणा नित उठि सम्हालंनि । २ । ११ ।
कंता नालि महेलीआ[14] सेती अगि जलाहि ।
जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ।
नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ।
भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि[15] । ३ । १२ ।

पउड़ी

तुधु[16] दुखु सुखु नालि[17] उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ।
नावै जेवड[18] होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ।
नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ।
करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ।
सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ । ६ ।
करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ।
आपे सृसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई ।
जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ।
सतिगुरि एकु विखालिआ[19] मनि तनि सुखु होई ।

---

1) सुहावनी और सुन्दर 2) स्त्री 3) रमण की गई हो 4) झूठ 5) अहंभाव 6) लिया 7) द्वैत-भाव में भ्रमित है 8) समय हाथ नहीं आता 9) वश में किया है 10) जैसा प्रभु-द्वार से लिखा हुआ मिला, वैसा ही कर्म किया गया 11) न कही जाएँ 12) शवों के साथ 13) स्वामी 14) पतिओं के साथ उनकी पत्नियाँ 15) भले ही पति जीवित हो अथवा मृत, वे दूर से ही भाग जाती हैं 16) तुमने 17) साथ ही 18) नाम जितनी बड़ी 19) दिखाया है

गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई । ७ ।
सचु धिआइनि से सचे गुरसबदि वीचारी ।
हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरिधारी ।
कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी[1] ।
जिनि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी[2] ।
जिसु बुझाइहि सो बुझसी[3] सचिआ किआ जंत विचारी । ८ ।

सलोकु

कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलों कंतु मनाइ ।
मतु सेजै कंतु न आवई[4] एवै बिरथा जाइ ।
कामणि पिर[5] मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु[6] ।
कीआ तउ परवाणु[7] है जा सहु[8] धरे पिआरु ।
भउ सीगारु तबोल[9] रसु भोजनु भाउ[10] करेइ ।
तनु मनु सउपे[11] कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ । १ । १३ ।
काजल फूल तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ।
सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु[12] । २ । १४ ।
धन पिरु एहि न आखीअनि[13] बहनि इकठे होइ ।
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ । ३ । १५ ।

पउड़ी

भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ।
सतिगुरि मिलिए भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि[14] ।
तनु मनु रता रंग सिउ हउमै[15] तृसना मारि ।
मनु तनु निरमलु अति सोहणा[16] भेटिआ कृसन मुरारि ।
भउ भाउ सभु तिसदा[17] सो सचु वरते संसारि । ९ ।
हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ।
गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गंभीरु ।
मनि तनि हिरदै रवि रहिआ[18] हरि हीरा हीरु[19] ।
जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु[20] ।

---

1) कोठों मंडपों और महलों में रुचि रखने वाले गँवार हैं 2) अंधकार ग्रस्त हैं 3) समझेंगे 4) न आए 5) प्रियतम 6) तब वास्तविक श्रृंगार बना जानिए 7) स्वीकृत 8) पति-परमात्मा 9) पान 10) भाव, प्रेम 11) सौंप कर 12) सब कुछ व्यर्थ हो गया 13) पति और पत्नी इन को नहीं कहा जा सकता 14) भय और प्रेम से अपना रूप निखार लो 15) अहंभाव 16) सुंदर 17) उसका 18) व्याप्त है 19) हीरों में श्रेष्ठ हीरा 20) फेरा, आवागमन का चक्कर

नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु । १० ।
सचा अमरु चलाइओनु[1] करि सचु फुरमाणु ।
सदा निहचलु रवि रहिआ[2] सो पुरखु सुजाणु ।
गुरपरसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु[3] ।
पूरा थाटु[4] बणाइआ रंगु गुरमति माणु ।
अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु । ११ ।
आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधे लाइआ ।
इकि आपे ही आपि लाइअनु[5] गुर ते सुखु पाइआ ।
दहदिस[6] इहु मनु धावदा[7] गुरि ठाकि रहाइआ ।
नावै नो सभ लोचदी[8] गुरमती पाइआ ।
धुरि[9] लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ । १२ ।
काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ।
इकि दूजै भाइ[10] खुआइअनु हउमै विचि[11] विआपे ।
इहु मानस जनमु दुलंभु[12] सा मनमुख संतापे ।
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी[13] जिसु सतिगुरु थापे[14] ।
सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै[15] आपे । १३ ।
माइआ मोहु सभु कूड़ु[16] है कूड़ो होइ गइआ ।
हउमै झगड़ा पाइओनु[17] झगड़ै जगु मुइआ ।
गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु[18] इको रवि रहिआ ।
सभु आतमरामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ।
जोति समाणी जोति विचि[19] हरिनामि समइआ । १४ ।
दरि मंगतु जाचै दानु[20] हरि दीजै क्रिपा करि ।
गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ।
अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ।
हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ।
जग महि वरतै[21] आपि हरि सेती प्रीति करि । १५ ।

---

1) सच्ची आज्ञा का प्रचलन किया है 2) व्याप्त है 3) प्रामाणिकता 4) ठाठ 5) लगा लिए हैं 6) दस दिशाओं में 7) दौड़ता है 8) लालायित है, इच्छा करती है 9) परमात्मा के द्वार से 10) द्वैत-भाव 11) अहंभाव में 12) दुर्लभ 13) समझेगा 14) स्थापित करता है 15) व्याप्त है 16) झूठ 17) अहंभाव का विवाद डाल दिया है 18) खत्म कर देते हैं 19) में 20) द्वार पर खड़े होकर भिक्षुक दान की याचना करता है 21) व्याप्त है

ढाढी[1] गुण गावै नित जनमु सवारिआ ।
गुरमुखि सेवि सलाहि सचा उरधारिआ ।
घरु दरु पावै महलु[2] नामु पिआरिआ ।
गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ[3] ।
तू आपि सवारहि आपि सिरजन हारिआ । १६ ।

जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए ।
हउमै विचहु दूरि करि[4] सचु मंनि वसाए ।
सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ।
मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ[5] गुर पुरखि मिलाए ।
मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए । १७ ।

आपे बखसे[6] दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ।
अनदिनु सेवी गुण रवा[7] मनु सचै रचनी[8] ।
प्रभु मेरा बेअंत है अंतु किनै न लखनी ।
सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ।
जो इछै सो फलु पाइसी[9] सभि घरै विचि जचनी[10] । १८ ।

हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ।
दूजी[11] कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ।
नामि रतिआ[12] नामु पाईऐ नामे गुण गावै ।
गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ।
सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै । १९ ।

हउ किआ सालाही किरम जंतु[13] वडी तेरी वडिआई[14] ।
तू अगम दइआलु अगंमु है आपि लैहि मिलाई ।
मै तुझ बिनु बेली[15] को नही तू अंति सखाई[16] ।
जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई[17] ।
नानक वेपरवाहु[18] है तिसु तिलु न तमाई[19] । २० ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ७८५-७९२)

---

1 ढाढ़ी, भाट 2) परमधाम 3) न्योछावर होता हूं 4) अहंभाव को अंतर से दूर करके 5) चिरकाल से बिछुड़े हुए को 6) कृपा करता है 7) स्मरण करती हूँ 8) रच जाना, लीन होना 9) प्राप्त करना 10) सभी प्रकार की याचना घर में ही से पूरी हो जाती है 11) द्वैत-भाव 12) अनुरक्त होने से 13) कीड़े जीव 14) तुम्हारी प्रतिष्ठा बहुत बड़ी है 15) साथी, सहायक 16) अंतकाल का साथी/मित्र है 17) मुक्त कर लेता है 18) जिसे किसी की ग़रज़ न हो 19) उस में तिल मात्र लालच नहीं है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु बिलावलु

चउपदे घरु १

धृगु धृगु खाइआ धृगु धृगु सोइआ धृगु धृगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ[1] ।
धृगु सरीरु कुटंब सहित सिउ जितु हुणि[2] खसमु[3] न पाइआ ।
पउड़ी छुड़की[4] फिरि हाथि न आवै अहिला[5] जनमु गवाइआ । १ ।
दूजा भाउ[6] न देई लिव लागणि[7] जिनि हरि के चरण विसारे[8] ।
जग जीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे । १ । रहाउ ।
तू दइआलु दइआ पति दाता[9] किआ एहि जंत विचारे ।
मुकत बंध सभि तुझते होए ऐसा आखि वखाणे[10] ।
गुरमुखि होवै सो मुकति कहीऐ मनमुख बंध विचारे । २ ।
सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नालै[11] ।
तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि सवारे ।
भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे[12] । ३ ।
जिस नो नदरि[13] करे सोई जनु पाए गुर का सबदु सम्हाले ।
हरि जन माइआ माहि निसतारे ।
नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे । ४ । १ ।

अतुलु किउ तोलिआ जाइ[14] ।
दूजा होइ[15] त सोझी पाइ ।
तिस ते दूजा नाही कोइ ।
तिस दी कीमति किकू होइ[16] । १ ।
गुरपरसादि वसै मनि आइ ।
ता को जाणै दुविधा जाइ । १ । रहाउ ।

---

1) वस्त्र पहनने को धिक्कार 2) अब, इस जन्म में 3) पति-परमात्मा 4) मनुष्य जन्म रूप सीढ़ी छूट गई 5) व्यर्थ, निष्फल 6) द्वैत-भाव 7) लिव लगने नहीं देता 8) भुला दिया है 9) प्रतिष्ठा प्रदान करने वाला 10) ऐसा कह कर बाखान किया जाता है 11) साथ 12) न लोक के, न परलोक के 13) कृपा-दृष्टि 14) परमात्मा तौला नहीं जा सकता, अनुमान से परे है 15) तुलना में दूसरा कोई हो तो 16) कैसे हो सकती है

आपि सराफु कसवटी लाए ।
आपे परखे आपि चलाए ।
आपे तोले पूरा होइ ।
आपे जाणै एको सोइ । २ ।
माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ।
जिस नो मेले सु निरमलु होइ ।
जिस नो लाए लगै तिसु आइ ।
सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ । ३ ।
आपे लिव धातु[1] है आपे ।
आपि बुझाए आपे जापे[2] ।
आपे सतिगुरु सबदु है आपे ।
नानक आखि सुणाए आपे[3] । ४ । २ ।

साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ।
ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना । १ ।
सतिगुरु परचै[4] हरि नामि समाना ।
जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु[5] लागै सहज धिआना । १ । रहाउ ।
किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ।
जब अपुनी जोति खिचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना[6] । २ ।
आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ।
जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै[7] भगवाना । ३ ।
कहत नानक तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ।
इकना[8] घर महि दे वडिआई[9] इकि भरमि भवहि अभिमाना । ४ । ३ ।
पूरा थाटु[10] बणाइआ पूरे वेखहु[11] एक समाना ।
इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई[12] मतु को धरहु गुमाना । १ ।
सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ।
इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै[13] हरि नामा । १ । रहाउ ।

---

1) माया के प्रभावाधीन इधर उधर भटकना 2) प्रतीत होता है 3) आप ही कह कर सुनाता है 4) परिचय से 5) प्रतिदिन 6) फिर कोई बखान करके दिखलाए 7) अच्छा लगे 8) एक को, कुछ को 9) बड़ाई 10) ठाठ 11) देखता है 12) प्रतिष्ठा 13) बस जाता है

चहु जुगा का हुनि[1] निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ।
जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा । २ ।
जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ।
गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि ते पूरे परवाना । ३ ।
कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै[2] मनि अभिमाना ।
कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत[3] पाहि निधाना । ४ । ४ ।

गुरमुखि प्रीती जिस नो आपे लाए ।
तितु घरि बिलावलु गुरसबदि सुहाए[4] ।
मंगलु नारी गावहि आए ।
मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए । १ ।
हउ तिन बलिहारै जिना हरि मनि वसाए ।
हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहज सुभाए[5] । १ । रहाउ ।
सदा रंगि राते तेरे चाए[6] ।
हरि जीउ आपि वसै मनि आए ।
आपे सोभा सद ही पाए ।
गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए । २ ।
गुरमुखि राते[7] सबदि रंगाए ।
निजघरि वासा हरि गुण गाए ।
रंगि चलूले[8] हरि रसि भाए[9] ।
इहु रंगु कदे[10] न उतरै साचि समाए । ३ ।
अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ।
सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ।
जा सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा[11] ।
नानक नामु दृड़ाए पूरा गुरु मेरा । ४ । ५ ।

---

1) अब 2) खत्म हो जाता है 3) मानने वाले 4) सुशोभित हैं 5) स्वाभाविक ढंग से 6) चाहना में, प्रेम में 7) अनुरक्त 8) (प्रेम का) गहरा रंग 9) अच्छा लगे, अथवा प्रेम 10) कभी 11) पुन: आवागमन में नहीं आते

पूरे गुर ते वडिग्राई[1] पाई ।
अचिंत[2] नामु वसिग्रा मनि ग्राई ।
हउमै[3] माइआ सबदि जलाई ।
दरि साचै गुर ते सोभा पाई । १ ।
जगदीस सेवउ मै ग्रवरु न काजा ।
अनदिनु ग्रनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा[4] । १ । रहाउ ।
मन की परतीति मन ते पाई ।
पूरे गुर ते सबदि बुभाई ।
जीवण मरणु को समसरि वेखै[5] ।
बहुड़ि[6] न मरै ना जमु पेखै[7] । २ ।
घर ही महि सभि कोट निधान ।
सतिगुरि दिखाए गइआ ग्रभिमानु ।
सद ही लागा सहजि धिआन ।
ग्रनदिनु[8] गावै एको नाम । ३ ।
इसु जुग महि वडिग्राई पाई ।
पूरे गुर ते नामु धिआई ।
जह देखा तह रहिआ समाई ।
सदा सुखदाता कीमति नही पाई । ४ ।
पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ।
अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ।
गुर का सबदु ग्रति मीठा लाइग्रा ।
नानक तृसन बुझी मनि तनि सुखु पाइग्रा । ५ । ६ ।

बिलावलु
ग्रसटपदी घरु १०

जगु कऊआ मुखि चुंच गिग्रानु[9] ।
ग्रंतरि लोभु झूठु ग्रभिमानु ।

---

1) प्रतिष्ठा 2) सहज भाव से 3) ग्रहंभाव 4) प्रतिष्ठा प्रदान कराने वाला नाम 5) बराबर देखे 6) पुनः 7) देखे 8) प्रतिदिन 9) ज्ञान की बातें केवल चोंच पर हैं, हृदय में नहीं

बिनु नावै पाजु लहगु निदानि[1] । १ ।
सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति[2] ।
गुरु भेटे हरिनामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति । १ । रहाउ ।
गुरि कहिआ सा कार कमावहु[3] ।
सबदु चीन्हि[4] सहज घरि आवहु ।
साचै नाइ वडाई पावहु[5] । २ ।
आपि न बूझै लोक बुझावै ।
मन का अंधा अंधु कमावै ।
दरु घरु महलु[6] ठउरु[7] कैसे पावै । ३ ।
हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ।
घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ।
तिस नालि[8] किआ चलै पहनामी[9] । ४ ।
साचा नामु साचै सबदि जानै ।
आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ।
गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै[10] । ५ ।
सतिगुरि सेविऐ दूजी[11] दुरमति जाई ।
अउगण काटि पापा मति खाई ।
कंचन काइआ जोती जोति समाई[12] । ६ ।
सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई[13] ।
दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ।
नामि रते सदा सुखु पाई । ७ ।
गुरमति मानिआ करणी सारु ।
गुरमति मानिआ मोख दुआरु ।
नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु[14] । ८ । १ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ८३२-३३)

---

1) अंत में परदा हट जाएगा, रहस्य खुल जाएगा 2) चित्त में 3) कर्म करो 4) शब्द का विचार कर के 5) सच्चे नाम से बड़ाई प्राप्त करो 6) परमधाम 7) स्थान 8) साथ 9) गुप्त रखने की क्रिया 10) बखान करते हैं 11) द्वैत-भावना 12) आत्म-ज्योति परमात्म ज्योति में समाहित हो गई 13) बहुत अधिक प्रतिष्ठा है 14) सारा परिवार आधार-युक्त बनता है

बिलावलु घरु १०
वार सत

आदित वारि[1] आदि पुरखु है सोई ।
आपे वरतै[2] अवरु न कोई ।
ओति पोति जगु रहिआ परोई[3] ।
आपे करता करै सु होई ।
नामि रते[4] सदा सुखु होई ।
गुरमुखि विरला बूझै कोई । १ ।
हिरदै जपनी[5] जपउ गुणतासा[6] ।
हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन
पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा[7] । १ । रहाउ ।
सोमवारि सचि रहिआ समाइ ।
तिस की कीमति कही न जाइ ।
आखि आखि[8] रहे सभि लिव लाइ ।
जिसु देवै तिसु पलै पाइ[9] ।
अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ।
गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ । २ ।
मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ।
आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ।
आपि बुझाए सोई बूझै ।
गुर कै सबदि दरु घरु[10] सूझै ।
प्रेम भगति करे लिव लाइ ।
हउमै[11] ममता सबदि जलाइ । ३ ।
बुधवारि आपे बुधि सारु ।
गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ।
नामि रते[12] मनु निरमलु होइ ।

---

1) रविवार 2) व्याप्त है 3) पूर्ण रूप से जगत् को पिरो रखा है 4) अनुरक्त 5) हृदय की माला से 6) गुणों के भंडार को 7) दासानुदास, नौकरों का नौकर 8) कह कह कर 9) सौंपता है 10) प्रभु का द्वार एवं घर 11) अहंभाव 12) अनुरक्त

हरि गुण गावै हउमै[1] मलु खोइ ।
दरि[2] सचै सद सोभा पाए ।
नामि रते गुरसबदि सुहाए[3] । ४ ।
लाहा[4] नामु पाए गुरदुआरि ।
आपे देवै देवणहारु[5] ।
जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ।
गुर परसादी आपु गवाईऐ ।
नानक नामु रखहु उरधारि ।
देवणहारे कउ जैकारु । ५ ।
वीरवारि वीर[6] भरमि भुलाए ।
प्रेत भूत सभि दूजै[7] लाए ।
आपि उपाए करि वेखै वेका[8] ।
सभना करते तेरी टेका[9] ।
जीअ जंत तेरी सरणाई ।
सो मिलै जिसु लैहि मिलाई । ६ ।
सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ।
आपि उपाइ सभ कीमति पाई ।
गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ।
सचु संजमु करणी है कार[10] ।
वरतु[11] नेकु नितप्रति पूजा ।
बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा[12] । ७ ।
छनिछरवारि सउण[13] सासत[14] बीचारु ।
हउमै मेरा[15] भरमै संसारु ।
मनमुखु अंधा दूजै भाइ ।
जम दरि बाधा चोटा खाइ ।
गुरपरसादी सदा सुखु पाए ।
सचु करणी साचि लिव लाए । ८ ।

---

1) अहंभाव 2) द्वार पर 3) सुशोभित हैं 4) लाभ 5) देने वाला, प्रदाता 6) वीरभद्र, हनुमान, भैरव 7) द्वैत-भाव 8) अलग-अलग कर के देखता है 9) आधार, आश्रय 10) कार्य, कर्म 11) व्रत 12) द्वैत-भाव है 13) शकुन 14) शास्त्र 15) अहंभाव और अपनेपन की भावना

सतिगुरु सेवहि से वडभागी[1] ।
हउमै[2] मारि सचि लिव लागी ।
तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ[3] ।
तू सुखदाता लैहि मिलाइ ।
एकस ते दूजा[4] नाही कोइ ।
गुरमुखि बूझै सोझी होइ । ९ ।
पंद्रह थितीं[5] तै सत वार ।
माहा रुती[6] आवहि वार वार ।
दिनसु रैणि तिवै संसारु ।
आवागउणु कीआ करतारि ।
निहचलु साकु रहिआ कलधारि[7] ।
नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि । १० । १ ।

आदि पुरखु आपे सृसटि साजे ।
जीअ जंत माइआ मोहि पाजे[8] ।
दूजै भाइ[9] परपंचि लागे ।
आवहि जावहि मरहि अभागे[10] ।
सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ।
परपंचु चूकै सचि समाइ । १ ।
जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ।
ता कै मनि वसिआ[11] प्रभु एकु । १ । रहाउ ।
सृसटि उपाइ आपे सभु वेखै[12] ।
कोइ न मेटै तेरै लेखै ।
सिध सधिक जे को कहै कहाए ।
भरमे भूला आवै जाए ।
सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ।
हउमै मारे ता दरु सूझै[13] । २ ।

---

1) श्रेष्ठ भाग्य वाला है 2) अहंभाव 3) स्वाभाविक ढंग से 4) दूसरा 5) तिथियाँ 6) ऋतुएँ 7) अपनी शक्ति का संचालनकर रहा है 8) व्यस्त, लीन 9) द्वैत-भाव 10) भाग्यहीन 11) बस गया है 12) देखता है, देखभाल करता है 13) अहंभाव को मारने पर ही प्रभु के द्वार का बोध होता है

एकसु ते सभु दूजा हूआ[1] ।
एको वरतै[2] अवरु न बीआ[3] ।
दूजे ते जे एका जाणै ।
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै[4] ।
सतिगुरु भेटे ता एको पाए ।
विचहु दूजा ठाकि रहाए[5] । ३ ।
जिस दा साहिबु डाढा[6] होइ ।
तिस नो मारि न साकै कोइ ।
साहिब की सेवकु रहै सरणाई ।
आपे बखसे दे वडिआई[7] ।
तिस ते ऊपरि नाही कोइ ।
कउणु डरै डरु किस का होइ । ४ ।
गुरमती सांति वसै सरीर ।
सबदु चीन्हि[8] फिरि लगै न पीर ।
आवै न जाइ ना दुखु पाए ।
नामे राते सहजि समाए ।
नानक गुरमुखि वेखै हदूरि[9] ।
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि । ५ ।
इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ।
आपे करे हरि आपि कराए ।
एको वरतै अवरु न कोइ ।
मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ।
सतिगुरु सेवे करणी सारी[10] ।
दरि साचै साचे वीचारी । ६ ।
थिती[11] वार सभि सबदि सुहाए[12] ।
सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ।
थिती वार सभि आवहि जाहि ।

---

1) एक परमात्मा के द्वारा ही दूसरी सृष्टि की रचना हुई है 2) व्याप्त है 3) दूसरा 4) प्रभु-द्वार पर प्रामाणिकता का चिह्न प्राप्त करता है 5) अंतर से द्वैत-भाव को रोक रखता है 6) बलवान, शक्तिशाली 7) आप ही कृपापूर्वक प्रतिष्ठा प्रदान करता है 8) समझ कर 9) अपने सामने एवं समीप देखता है 10) श्रेष्ठ करनी है 11) तिथि 12) सुशोभित है

गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ।
थिति[1] वार सा जा सचि राते[2] ।
बिनु नावै सभि भरमहि काचे[3] । ७ ।
मनमुख मरहि बिगती[4] जाहि ।
एकु न चेतहि दूजै लोभाहि[5] ।
अचेत पिंडी[6] अगिआन अंधारु ।
बिनु सबदै किउ पाए पारु ।
आपि उपाए उपावणहारु[7] ।
आपे कीतोनु[8] गुर बीचारु । ८ ।
बहुते भेख करहि भेखधारी ।
भवि भवि भरमहि काची सारी[9] ।
ऐथै[10] सुखु न आगै होइ ।
मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ।
सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ।
घर ही अंदरि सचु महलु[11] पाए । ९ ।
आपे पूरा करे सु होइ ।
एहि थिती वार दूजा दोइ[12] ।
सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ।
थिती वार सेवहि मुगध गवार ।
नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ।
इकतु नामि सदा रहिआ समाइ । १० । २ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ ८४१-८४३)

सलोकु*

बिलावलु तब ही कीजीऐ[13] जब मुखि होवै नामु ।
राग नाद सबदि सोहणे[14] जा लागै सहजि धिआनु ।

---

1) तिथि 2) लीन, मगन 3) कच्चे 4) बुरी स्थिति 5) द्वैत-भाव में लुभित है 6) अज्ञानी शरीर 7) उत्पन्न करने वाला 8) किया है 9) कच्चे मुहरे 10) यहाँ, इस लोक में 11) परमधाम 12) इन तिथिओं और वारों का विचार द्वैत-भाव का जनक है *ये श्लोक 'बिलावलु की वार महला ४' में से लिए गए हैं 13) बिलावल राग तब ही गाया भला है 14) सुंदर, सुशोभित

राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ।
नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु । १ । (१)§

दूजै भाइ[1] बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ[2] ।
पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ।
मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ।
नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ[3] ।
आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ।
जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ[4] । २ । (२)

बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ।
जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ।
सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ[5] ।
सतसंगती महि भाउ[6] करि सदा हरि के गुण गाइ ।
नानक से जन सोहणे[7] जि गुरमुखि मेलि मिलाइ । ३ । (२)

ब्रहमु बिदहि[8] ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ।
जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै[9] रोगु गवाइ ।
गुण रवहि[10] गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ।
इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ।
नानक जिन्ह कउ नदरि[11] करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ । ४ । (३)

सतिगुर की सेव न कीतीआ[12] सबदि न लगो भाउ[13] ।
हउमै[14] रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ[15] ।
मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ।
गुरमुखि जनमु सफलु है जिसनो आपे लए मिलाइ ।
नानक नदरी नदरि करे[16] ता नाम धनु पलै पाइ । ५ । (३)

सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ।

---

§कोष्ठकों में लिखे अंक संबंधित पौड़ी-पदों के हैं

1) द्वैत-भाव 2) वास्तविक स्थान प्राप्त नहीं कर पाता 3) अंतर से अहंभाव को खत्म करके 4) आत्म-ज्योति परमात्म-ज्योति में मिल जाती है 5) इच्छा के अनुसार 6) प्रेम 7) सुन्दर, सुहावने 8) जो ब्रह्म को जानते हैं 9) अहंभाव 10) स्मरण करे 11) कृपा-दृष्टि 12) नहीं की 13) प्रेम 14) अहंकार 15) स्वार्थ 16) कृपालु, कृपा-दृष्टि करे

सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा[1] को इछे तेहा फलु पाए ।
गुर का सबदु अंमृतु है सभ तृसना भुख गवाए ।
हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ।
सचु धिआइ अमरा पदु[2] पाइआ अनहद सबद वजाए ।
सचो दहदिसि पसरिआ गुरु कै सहजि [3]सुभाए ।
नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि[4] न किसै दे छपाए । ६ । (४)

गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि[5] करेइ ।
मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ।
हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ[6] ।
नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई[7] देइ । ७ । (४)

धृगु एह आसा दूजे भाव[8] की जो मोहि माइआ चितु लाए ।
हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ[9] नामु विसारि दुखु पाए ।
मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ।
कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ।
जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ।
नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि[10] जन नानक तिन बलि जाए । ८ । (५)

आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ।
सभु को जम के चीरे विचि[11] है जेता सभु आकारु ।
हुकमी ही जमु लगदा[12] सो उबरै जिसु बखसै[13] करतारु ।
नानक गुरपरसादी एहु मनु तां तरै जा छोडै अहंकारु ।
आसा मनसा मारे निरासु होइ गुरु सबदी वीचारु । ९ । (५)
पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ।
ओपावा सिरि ओपाउ[14] है नाउ[15] परापति होइ ।
अंदरु सीतलु सांति है हिरदै सदा सुखु होइ ।
अंमृतु खाणा पैन्हणा[16] नानक नाइ वडिआई होइ[17] । १० । (६)

---

1) जैसा 2) अमर पदवी, मुक्ति 3) स्वाभाविक ही 4) गुप्त नहीं रखे जा सकते 5) कृपा-दृष्टि 6) पावन पवित्र 7) बड़ाई, प्रतिष्ठा 8) द्वैत-भाव 9) धान के फूस के समान त्याग दिया 10) प्राप्त करते हैं 11) विस्तार क्षेत्र में 12) परमात्मा की आज्ञा से ही यम परेशान करता है 13) कृपा करे 14) सभी उपायों में से श्रेष्ठ उपाय 15) हरिनाम 16) पहनना 17) नाम से ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है

ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि[1] गुणी निधानु ।
सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै[2] जाइ अभिमानु ।
नानक नदरी[3] पाईऐ अंमृतु गुणी निधानु । ११ । (६)

अंतरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ।
दुख विचि[4] कार कमावणी दुखु वरतै[5] दुखु आगै ।
करमी सति गुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ।
नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भउ[6] भागै । १२ । (७)

गुरमुखि सदा हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ[7] ।
गुरमुखि वेखणु[8] बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ।
नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ[9] तिमर[10] अगिआनु अंधेरु चुकाइआ । १३ । (७)

मनमुखि मैले मरहि गवार ।
गुरमुखि निरमल हरि राखिओ उरधारि ।
भनति[11] नानकु सुणहु जन भाई[12] ।
सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ।
अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ।
दूजै भाइ[13] सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ।
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का बीचार ।
हरि नामु न भाइआ[14] बिरथा[15] जनमु गवाइआ
नानक जमु मारि करे खुआर । १४ । (७)

इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ[16] ।
गुरपरसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु[17] नामु धिआइआ ।
बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ।
आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ[18] ।
सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ।
ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रैगुण भुले[19] हउमै मोहु वधाइआ ।
पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ।

---

1) प्राप्त कीजिए 2) अहंभाव 3) कृपा-दृष्टि से 4) में 5) वर्तमान काल में दुःख है 6) भय 7) नाम मन को अच्छा लगा 8) देखना 9) प्रकाशित हुआ 10) अंधकार 11) कहता है 12) अहंकार का मैल नष्ट हो जाता है 13) द्वैत-भाव 14) अच्छा न लगा 15) व्यर्थ 16) भ्रमित है 17) प्रतिदिन 18) जन्म देने वाली माता धन्य है 19) भूले हुए हैं

जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ।
मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा[1] जनमु गवाइआ ।
नानक नामि रते सेई जन समधे[2] जि आपे बखसि[3] मिलाइआ । १५ । ८ ।

नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ।
तिसहि सरेवहु[4] प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ।
गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ । १६ । ८ ।

गुरमुखि संसा[5] मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ[6] ।
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछु न जाइ ।
नानक तिन का आखिआ[7] आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ[8] । १७ । ९ ।

कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ[9] ।
अनदिनु जागै कदे[10] न सोवै सहजे अंमृतु पिआउ ।
मीठा बोले अंमृत बाणी अनदिनु[11] हरि गुण गाउ ।
निज घरि वासा सदा सोहदे[12] नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ । १८ । ९ ।

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ।
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ।
सतिगुरि सुख वेखालिआ[13] सचा सबदु बीचारि ।
नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु[14] । १९ । १० ।

हउमै[15] माइआ मोहणी दूजै[16] लगै जाइ ।
ना इह मारी नं मरै ना इह हटि विकाइ ।
गुर कै सबदि परजालीऐ[17] ता इह विचहु[18] जाइ ।
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ।
नानक माइआ का कारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ । २० । १० ।

जिनी नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंन्हि[19] ।
पंच चोर तिना घरु मुहन्हि[20] हउमै अंदरि संन्हि[21] ।
साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि[22] ।

---

1) व्यर्थ 2) मानसिक स्थिरता वाले 3) कृपा-पूर्वक 4) सेवा करो 5) संशय 6) चिंता का भाव अंतर से चला जाता है 7) कहा हुआ 8) अपने खाते में डाल ले 9) नाम 10) कभी 11) प्रतिदिन 12) सुशोभित 13) दिखाया है 14) कृपालु 15) अहंभाव 16) द्वैत-भाव 17) अच्छी तरह से जला दें 18) अंतर से 19) उनके कथन झूठे है 20) लूटते हैं 21) अहंभाव के कारण अंतर की दीवार फोड़ दी जाती है 22) नहीं जानते

जिनी अंमृतु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्हि[1]।
दुसटा सेती पिरहड़ी[2] जन सिउ वादु करंन्हि[3]।
नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्हि[4]।
पइऐ किरति[5] कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्हि[6]। २१। (१२)

जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु[7]।
सासि[8] गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु।
हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु[9]।
हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु।
नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु[10]।
जिन कउ पूरबि लिखिआ रसु[11] संत जना सिउ तिसु। २२। (१२)

अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि[12]।
गुर की सेवा विसरी[13] किउ मनु रहै हजूरि[14]।
मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि[15]।
नानक बखसि मिलाइअनु[16] सचै सबदि हदूरि। २३। (१३)

हरि प्रभु सच सोहिला[17] गुरमुखि नामु गोविंदु।
अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु।
वडभागी[18] हरि पाइआ पूरनु परमानंदु।
जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि[19] न मनि तनि भंगु[20]। २४। (१३)

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ८४९-८५४)

---

1) लीन रहते हैं 2) प्रेम 3) झगड़ा करते हैं 4) सहन करते है 5) कृत कर्मों के चक्कर में पड़ते हैं 6) रहते हैं 7) उन बलहीनों को भी बल मिलता है 8) श्वास 9) माया उसकी दासी है 10) उस पर सौ वार न्योछावर होता हूँ 11) प्रेम रस 12) दूर समझा है 13) भूल गई 14) पास में, समीप 15) झूठ में 16) कृपा कर के मिला देता है 17) खुशी का गीत 18) श्रेष्ठ भाग्य वाले ने 19) पुन: 20) विघ्न नहीं पड़ता

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु रामकली

चउपदे घरु १

सतजुगि सचु कहै सभु कोई ।
घरि घरि भगति गुरमुखि होई ।
सतजुगि धरमु पैर है चारि ।
गुरमुखि बूझै को बीचारि । १ ।
जगु चारे नामि वडिआई[1] होई ।
जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई । १ । रहाउ ।
त्रेतै इक कल[2] कीनी दूरि ।
पाखंडु वरतिआ[3] हरि जाणनि दूरि ।
गुरमुखि बूझै सोई होई ।
अंतरि नामु वसै सुखु होइ । २ ।
दुआपुरि दूजै[4] दुबिधा होइ ।
भरमि भुलाने जाणहि दोइ[5] ।
दुआपरि धरमि दुइ पैर रखाए ।
गुरमुखि होवै त नामु दृड़ाइ । ३ ।
कलजुगि धरम कला इक रहाए ।
इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए[6] ।
माइआ मोहु अति गुबारु[7] ।
सतगुरु भेटै नामि उधारु । ४ ।

---

1) बड़ाई 2) कला, अंश 3) व्याप्त 4) द्वैतभाव 5) द्वैत-भाव 6) वृद्धि कर के 7) अज्ञान रूपी अंधकार

सभ जुग महि साचा एको सोई ।
सभ महि सचु दूजा[1] नही कोइ ।
साची कीरति सचु सुखु होई ।
गुरमुखि नामु वखाणै[2] कोई । ५ ।
सभ जुग महि नाम ऊतमु होई ।
गुरमुखि विरला बूझै कोई ।
हरिनामु धिआए भगतु जनु सोई ।
नानक जुगि जुगि नामि वडिआई[3] होई । ६ । १ ।

(आदि ग्रन्थ, पृष्ठ ८८०)

असपटदीआ

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ[4] जोगी खिथा[5] करि तू दइआ ।
आवणु जाणु[6] बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ[7] । १ ।
ऐसी किंगुरी[8] वजाइ जोगी ।
जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ । १ । रहाउ ।
सतु संतोखु पतु[9] करि झोली जोगी अंमृत नामु भुगति[10] पाई ।
धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई । २ ।
मनु दृड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा[11] जाई ।
काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई । ३ ।
इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी न सचु पलै पाइ ।
इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु[12] जाइ । ४ ।
भउ भाउ[13] दुइ पत[14] लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ।
गुरमुखि होवई ता तंती[15] वाजै इन बिधि तृसना खंडी[16] । ५ ।
हुकमु बूझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ।
सहसा[17] तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए । ६ ।

---

1) दूसरा 2) बखान करते हैं 3) बड़ाई 4) कान में श्रम की मुद्राएँ धारण करो 5) बड़ा चोगा 6) आवागमन के भेद समझना 7) जीत लिया 8) वीणा 9) पात्र, खप्पर 10) भोजन 11) चिंता, संशय 12) अंतर से 13) भय और प्रेम 14) तूँबे 15) तंत्री, तार 16) दूर होती है 17) संशय

नदरी आवदा[1] सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ।
सतिगुर नालि[2] तेरी भावनी[3] लागै ता इह सोझी पाइ । ७ ।
एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु[4] करहि ।
गृह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि । ८ ।
इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा[5] तृसना माइआ ।
अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ । ९ ।
हरि का नामु अउखधु[6] है जोगी जिसनो मंनि वसाए ।
गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए । १० ।
जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिसनो नदरि[7] करे सो पाए ।
अंतरि बाहरि एको वेखै[8] विचहु[9] भरमु चुकाए । ११ ।
विणु[10] बजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ।
कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ । १२ । १ ।

भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई । १ ।
संतहु गुरमुखि देइ वडिआई[11] । १ । रहाउ ।
सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु[12] जाई । २ ।
आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई । ३ ।
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई[13] । ४ ।
सदा हजूरि[14] दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई । ५ ।
सचा सबदु रवै[15] घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई । ६ ।
सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि[16] पाइआ जाई । ७ ।
भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई[17] । ८ ।
बिनु नावै सभ भूली फिरदी[18] बिरथा[19] जनमु गवाई । ९ ।
जोगी जुगति गवाई हंढै[20] पाखंडि जोगु न पाई । १० ।
सिव नगरी[21] महि आसनि बैसै गुरसबदी जोगु पाई । ११ ।
धातुरबाजी[22] सबदि निवारे नामु वसै मनि आई । १२ ।

---

1) दृष्टिगत होने वाला 2) साथ 3) श्रद्धा, भावना 4) परिभ्रमण, व्यर्थ घूमते फिरना 5) बड़ा 6) दवाई 7) कृपा-दृष्टि 8) देखे 9) अंतर में से 10) बिना 11) बड़ाई 12) अंदर से 13) सहायक, मित्र 14) पास में, सामने 15) स्मरण करे 16) श्रेष्ठ भाग्य के कारण 17) ठिकाने पर 18) फिरती है 19) व्यर्थ 20) घूम फिर कर 21) शुद्ध मन में 22) माया

एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु[1] करे लिव लाई । १३ ।
नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई । १४ ।
त्रैगुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई । १५ ।
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई । १६ ।
गुरपरसादी त्रिकुटी छूटै[2] चउथै पदि लिव लाई । १७ ।
पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि[3] तिंना[4] बूझ न पाई । १८ ।
बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु करहि किसु भाई । १९ ।
भगति जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई । २० ।
बाणी लागै सो गति पाए[5] सबदे सचि समाई । २१ ।
काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवंनिधि पाई । २२ ।
मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई । २३ ।
लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई । २४ ।
अदिसटु सदा रहै निरालमु जोति जोति मिलाई[6] । २५ ।
हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई । २६ ।
नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति[7] पाई । २७ । २ ।

हरि की पूजा दुलंभ[8] है संतहु कहणा कछू न जाई । १ ।
संतहु गुरमुखि पूरा पाई ।
नामो पूज कराई । १ । रहाउ ।
हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई । २ ।
हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा[9] मनि वसाई । ३ ।
पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ[10] न पाई । ४ ।
सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई । ५ ।
पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई । ६ ।
बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई[11] । ७ ।
गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई । ८ ।
आपे निरमलु पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई । ९ ।

---

1) स्नान 2) तीन गुणों का बंधन 3) वाद विवाद का बखान 4) उनको 5) मुक्ति प्राप्त करते हैं 6) आत्म-ज्योति ब्रह्म ज्योति में मिल जाती है 7) मुक्ति और प्रतिष्ठा 8) दुर्लभ 9) इच्छा, मरज़ी 10) स्थान 11) सारी जनता

पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ[1] मलु लाई । १० ।
गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा[2] मनि वसाई । ११ ।
भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ।[3] १२ ।
अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई[4] । १३ ।
पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई[5] । १४ ।
जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई । १५ ।
एहु मनूआ सुन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई[6] । १६ ।
सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि[7] सत संगति मेलाई । १७ ।
गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई । १८ ।
साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई । १९ ।
भै भंजनु अति पाप निखंजनु[8] मेरा प्रभु अंति सखाई । २० ।
सभु किछु आपे आपि वरतै[9] नानक नामि वडिआई । २१ । ३ ।

हम कुचल कुचील[10] अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी । १ ।
संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ।
सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी । १ । रहाउ ।
पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा धारी । २ ।
इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी । ३ ।
इकि अनदिनु[11] भगति करहि दिनु राती राम नामु उरिधारी । ४ ।
अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै[12] मारी । ५ ।
भै बिनु भगति न होई कबही भै भाइ[13] भगति सवारी । ६ ।
माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि तति बीचारी । ७ ।
आपे आपि कराए करता आपे बखसि[14] भंडारी । ८ ।
तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी । ९ ।
हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी[15] । १० ।
नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट[16] सचे भंडारी । ११ ।
अपणिआ भगता नो आपे तुठा[17] अपणी किरपा करि कलधारी[18] । १२ ।

1) द्वैत-भाव 2) ईश्वरीय इच्छा 3) सहायक 4) झूठी बड़ाई करते हैं 5) प्रतिष्ठा नष्ट करके ले जाएगा 6) आत्म-ज्योति परमात्म-ज्योति में मिल जाएगी 7) बखान करता है 8) नाशक 9) व्याप्त 10) बुरी चाल-ढाल वाले और मैले 11) प्रतिदिन 12) अहंभाव 13) भय और प्रेम 14) कृपा करता है 15) अंतर से अपनेपन की भावना को खत्म कर के 16) न समाप्त होने वाला 17) प्रसन्न हुआ, कृपा की 18) शक्ति धारण की, ऐसा अद्भुत कार्य किया

तिन साचे नाम की सदा भुख[1] लागी गावनि सबदि वीचारी । १३ ।
जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु[2] बिखमु बीचारी । १४ ।
सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी । १५ ।
बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को बीचारी । १६ ।
जो धुरि लिखिआ[3] सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी । १७ ।
काइआ कंचनु सबदे राती[4] साचै नाइ पिआरी । १८ ।
काइआ अंमृति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारि । १९ ।
जो प्रभ खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी । २० ।
बादी बिनसहि[5] सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी । २१ ।
सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै[6] तृसना मारी । २२ ।
सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिसनो क्रिपा तुमारी । २३ ।
सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहंकारी । २४ ।
जिचरु[7] अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी । २५ ।
अनदिनु[8] जागत रहै दिनु राती अपने प्रिअ प्रीति पिआरी । २६ ।
तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु[9] बलिहारी । २७ ।
माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि बीचारी । २८ ।
आपि जगाए सेइ जागे गुर कै सबदि वीचारी । २९ ।
नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी । ३० । ४ ।

नामु खजाना गुर ते पाइआ तृपति रहे आघाई । १ ।
संतहु गुरमुखि मुकति गति पाई । \
एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई[10] । १ । रहाउ ।
आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई[11] । २ ।
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई । ३ ।
आपे साजे सृसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई । ४ ।
तिसहि सरेवहु[12] ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई । ५ ।

---

1) भूख 2) कहना 3) परमात्मा के द्वार से 4) लीन, मगन 5) वाद-विवाद करने वाला नष्ट होता है 6) अहंभाव 7) जब तक 8) प्रतिदिन 9) ऊपर से 10) बड़ाई 11) सभी को आजीविका प्रदान करता है 12) सेवा करो

आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई । ६ ।
आपे मारि जीवाले आपे तिसनो तिलु न तमाई[1] । ७ ।
इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई । ८ ।
से वडभागी[2] जिनी एको जाता[3] सचे रहे समाई । ९ ।
आपि सरूपु[4] सिआणा[5] आपे कीमति कहणु न जाई । १० ।
आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई । ११ ।
वडा[6] दाता गुरमुखि जाता निगुरी[7] अंध फिरै लोकाई । १२ ।
जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई । १३ ।
इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देह बुझाई । १४ ।
सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई[8] । १५ ।
तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु[9] बणत बणाई[10] । १६ ।
निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु[11] मनाई । १७ ।
तिसनो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई । १८ ।
सतिगुर भेटै सो जनु सीझै[12] जिसु हिरदे नामु वसाई । १९ ।
सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई । २० ।
नानक सुणि वेखि[13] रहिआ विसमादु[14] मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई[15] । २१ । ५ ।
(आदि ग्रंथ पृ. ९०८-९१२)

अनन्दु

अनंदु भइआ मेरी माए[16] सतिगुरु मै पाइआ ।
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईया[17] ।
राग रतन परवार परीआ[18] सबद गावण आईआ ।
सबदो त गावहु हरी केरा[19] मनि जिनी वसाइआ ।
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरु मै पाइआ । १ ।

---

1) तिल मात्र लालच नहीं है 2) श्रेष्ठ भाग्य वाले 3) जाना है 4) सुरूप, अच्छे रूप वाला 5) समझदार 6) बड़ा 7) गुरुहीन 8) बड़ी प्रतिष्ठा है 9) न्याय 10) ऐसा विधान किया है 11) आज्ञा, आदेश 12) सफल होते हैं 13) देख रहा है 14) विस्मय, आश्चर्यपूर्ण कार्य 15) सभी स्थानों में 16) माता 17) बधावे बजने लगे 18) अप्सराएँ 19) हरी का

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले[1] ।
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा[2] ।
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ।
सभना गला[3] समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ।
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले । २ ।

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ।
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ।
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ।
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ।
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै । ३ ।

साचा नामु मेरा आधारो ।
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ[4] ।
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ[5] ।
सदा कुरबाणु कीता गुरु विटहु[6] जिस दीआ एहि वडिआईआ[7] ।
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो साचा नामु मेरा आधारो । ४ ।

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै[8] ।
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ[9] ।
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ।
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ।
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे । ५ ।

साची लिवै बिनु देह निमाणी ।
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ।
तुधु बाजु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ[10] ।
एस नउ होरु थाउ नाही[11] सबदि लागि सवारीआ ।
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ । ६ ।

---

1) साथ 2) सारे दुःखों को भुलवा देगा 3) सभी बातों में 4) सब प्रकार की भूखों को नष्ट कर दिया 5) सभी इच्छाएँ पूर्ण कर दीं 6) ऊपर से 7) बड़ाइयाँ 8) उस भाग्यशाली घर में पाँच प्रकार के शब्द-नाद हो रहे हैं 9) जिसके हृदय में तुम ने अपनी शक्ति का संचार किया है 10) परमात्मा 11) अन्य कोई स्थान अथवा ठिकाना नहीं है

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरु ते जाणिआ[1] ।
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ।
करि किरपा किलविख[2] कटे गिआन अंजनु सारिआ[3] ।
अंदरहु जिन का मोहु तुटा[4] तिन का सबदु सचै सवारिआ ।
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ । ७ ।

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ।
पावै त सो जनु देहि जिसनो होरि किआ करहि वेचारिआ ।
इकि भरमि भूले फिरहि दहदिसि[5] इकि नामि लागि सवारिआ ।
गुरपरसादी मनु भइआ[6] निरमलु जिना भाणा भावए[7] ।
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए । ८ ।

आवहु संत पिआरिहो अकथ[8] की करह कहाणी ।
करहा कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ।
हुकमु मंनिहु गुरु केरा गावहु सची बाणी ।
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी । ९ ।

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ।
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ।
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ।
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली[9] पाइआ ।
कुरबाणु कीता तिसै विटहु[10] जिनि मोहु मीठा लाइआ ।
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ । १० ।

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ।
एहु कुटंबु तू जि देखदा[11] चलै नाही तेरै नाले[12] ।
साथि तेरे चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ।
ऐसा कंमु[13] मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ।

---

1) समझा गया 2) पाप 3) लगाया 4) टूट गया है 5) दस-दिशाएं 6) हो गया 7) जिन को परमात्मा की इच्छा अच्छी लगती है 8) अकथनीय प्रभु की 9) ठगमूरी 10) ऊपर से 11) देखते हो 12) साथ 13) कर्म

सतिगुरु का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले[1] ।
कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले । ११ ।

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ।
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे[2] ।
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए[3] ।
आखहि त वेखहि सभु तू है जिनि जगतु उपाइआ ।
कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ । १२ ।

सुरि नर मुनि जन अंमृतु खोजदे[4] सु अंमृतु गुर ते पाइआ ।
पाइआ अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ।
जीअ जंत सभि तुधु[5] उपाए इकि वेखि परसणि आइआ[6] ।
लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरु भला भाइआ ।
कहै नानकु जिसनो आपि तुठा[7] तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ । १३ ।

भगता की चाल निराली ।
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ।
लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ।
खंनिअहु तिखी वालहु निकी[8] एतु मारगि जाणा ।
गुरपरसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी[9] ।
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली । १४ ।

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु[10] किआ जाणा गुण तेरे ।
जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ।
करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ।
जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ।
कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे । १५ ।

---

1) साथ में 2) तुम ही अपने आप को जानते हो 3) कह कर क्या बखान करे 4) खोज करते हैं 5) तुम ने 6) परन्तु उनमें से कोई एक गुरु को देख कर उस के चरण-स्पर्श के लिए आता है 7) प्रसन्न हुआ है 8) तलवार की धार से भी तीक्ष्ण और बाल से भी बारीक 9) उन के हृदय में हरि की भावना समा गई है 10) अन्य

एहु सोहिला[1] सबदु सुहावा[2] ।
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरु सुणाइआ ।
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु[3] लिखिआ आइआ ।
इकि फिरहि घनेरे करहि गला[4] गली किनै न पाइआ ।
कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरु सुणाइआ । १६ ।

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ।
हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ।
पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ[5] ।
कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ।
कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ । १७ ।

करमी[6] सहजु न ऊपजै विणु[7] सहजै सहसा[8] न जाइ ।
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ।
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ।
मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ।
कहै नानकु गुरपरसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ । १८ ।

जीअहु[9] मैले बाहरहु निरमल ।
बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ।
एह तिसना वडा[10] रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ।
वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाहि फिरहि जिउ बेतालिआ[11] ।
कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े[12] लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ । १९ ।

जीअहु[13] निरमल बाहरहु निरमल ।
बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी[14] ।
कूड़ की सोइ[15] पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ।
जनमु रतनु जिनी खटिआ[16] भले से वणजारे ।
कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले[17] । २० ।

1) खुशी का गीत 2) सुशोभित है 3) प्रभु की दरगाह से 4) बातें 5) सभी 6) कर्म-कांडों से 7) बिना 8) संशय 9) अंतर से 10) बड़ा 11) वेताल, प्रेत 12) झूठ 13) अंतर से 14) कर्म और साधना करना 15) झूठ का समाचार 16) कमाया है 17) साथ

जे को सिखु गुरु सेती सनमुख होवै ।
होवै न सनमुख सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले[1] ।
गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ।
आपु छडि[2] सदा रहै परणै[3] गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ।
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए । २१ ।

जे को गुर ते वे मुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ।
पावै मुकति न होरथै[4] कोई पुछहु[5] बिबेकीआ जाए ।
अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ।
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरु सबदु सुणाए ।
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु[6] सतिगुर मुकति न पाए । २२ ।

आवहु सिख सतिगुरु के पिआरिहो गावहु सची बाणी ।
बाणी त गावहु गुरु केरी बाणीआ सिरि बाणी ।
जिन कउ नदरि करमु[7] होवै हिरदै तिना समाणी ।
पीवहु अंमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी[8] ।
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी । २३ ।

सतिगुर बिना होर कची है बाणी ।
बाणी त कची सतिगुरु बाझहु होर कची बाणी ।
कहदे कचे सुणदे कचे कची आखि बखाणी[9] ।
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी[10] ।
चितु जिन का हिरि लइआ[11] माइआ बोलनि पए रवाणी[12] ।
कहै नानकु सतिगुरु बाझहु होर कची बाणी । २४ ।

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ।
सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ[13] ।
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ[14] ।
आपे हीरा रतनु आपे जिसनो देइ बुझाइ ।

---

1) साथ 2) अपनेपन की भावना को छोड़ कर 3) शरण में, आश्रय में 4) अन्य किसी से 5) पूछ लो 6) बिना 7) कृपा-दृष्टि 8) परमात्मा 9) कह कर बखान करना भी कच्चा है 10) कहा हुआ कुछ नहीं जानता, अर्थात् उपदेश को ग्रहण नहीं करता 11) चुराया जा चुका है 12) बड़ी प्रवाहमानता से पाठ करते जाते हैं 13) लीन हो गया 14) प्रेम

कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ । २५ ।

सिव सकति[1] आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए[2] ।
हुकमु वरताए आपि वेखै[3] गुरमुखि किसै बुझाए ।
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ।
गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ।
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए । २६ ।

सिमृति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी[4] ।
ततै सार न जाणी गुरु बाझहु ततै सार न जाणी ।
तिही गुणी[5] संसारु भ्रमि सुता[6] सुतिआ रैणि विहाणी[7] ।
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ।
कहै नानकु सो ततु पाए जिसनो अनदिनु[8] हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी । २७ ।

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ।
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ।
ओसनो किहु पोहि न सकी[9] जिस नउ आपणी लिव लावए ।
आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ।
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ । २८ ।

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ।
माइआ अगनि सभ इको जेही[10] करतै खेलु रचाइआ ।
जा तिसु भाणा[11] ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ।
लिव छुड़की[12] लगी तृसना माइआ अमरु[13] वरताइआ ।
एह माइआ जितु हरि विसरै[14] मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ[15] ।
कहै नानकु गुरपरसादी जिना लिव लागी तिनी विचे[16] माइआ पाइआ । २९ ।

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ[17] ।
मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु[18] रहे लोक विललाइ[19] ।
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ विचहु आपु[20] जाइ ।
जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ।

---

1) चैतन्य और माया 2) आज्ञा जारी करता है 3) देखता है 4) तत्व का भेद नहीं समझते 5) तीन गुणों में 6) सोया हुआ है 7) जीवन रूपी रात्रि व्यतीत हो गई है 8) प्रतिदिन 9) उसका कोई स्पर्श तक नहीं कर पाता 10) जैसी 11) अच्छा लगा 12) छूट गई 13) हुकम, आदेश 14) भूल जाए 15) द्वैत-भाव में लीन हो जाए 16) में ही 17) मूल्यांकन नहीं किया जा सकता 18) किसी से भी 19) विलाप करते हैं 20) अंतर से

हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के[1] नानका जिन हरि पलै पाइ । ३० ।

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ।
हरि रासि[2] मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ।
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी[3] ।
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा[4] ।
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा । ३१ ।

ए रसना तू अनरसि[5] राचि रही तेरी पिआस न जाइ ।
पिआस न जाइ होरतु कितै[6] जिचरु हरि रसु पलै न पाइ[7] ।
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि[8] न तृसना लागै आइ ।
एहु हरि रसु करमी[9] पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ।
कहै नानकु होरि अनरस सभि वीसरे[10] जा हरि वसै मनि आइ । ३२ ।

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ।
हरि जोति रखी तुधु विचि[11] ता तू जग महि आइआ ।
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ।
गुरपरसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी[12] आइआ ।
कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ । ३३ ।

मनि चाउ भइआ[13] प्रभ आगमु सुणिआ ।
हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ।
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ।
गुर चरन लागे दिन सभागे[14] आपणा पिरु जापए[15] ।
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी[16] हरि नामु हरि रसु भोगो ।
कहै नानक प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो[17] । ३४ ।

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइकै किआ तुधु[18] करम कमाइआ ।
कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ।
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ।

---

1) उन्हीं का भाग्य अच्छा है 2) मूलधन 3) दिन में लाभयुक्त कमाई करो 4) अच्छा लगता है 5) अन्य रस में 6) और कहीं 7) जब तक हरि-रस अंतर में नहीं बैठता 8) पुन: 9) कृपा-पूर्वक 10) भूल जाते हैं 11) तुम में 12) नजर में दिखाई पड़ता है 13) मन में प्रसन्नता छा गई 14) दिन भाग्यवान हैं 15) प्रतीत होता है 16) जानी है 17) योग्य, समर्थ 18) तुम ने

गुरपरसादी हरि मंनि वसिश्रा पूरबि लिखिश्रा[1] पाइश्रा ।
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु[2] होश्रा जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ । ३५ ।

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु श्रवरु न देखहु कोई ।
हरि बिनु श्रवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ[3] ।
एहु विसु संसारु तुम देखदे[4] एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी श्राइआ ।
गुरपरसादी बुझिश्रा जा वेखा[5] हरि इकु है हरि बिनु श्रवरु न कोई ।
कहै नानकु एहि नेत्र श्रंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसटि[6] होई । ३६ ।

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ।
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ।
जितु सुणी मनु तनु हरिश्रा होश्रा रसना रसि समाणी ।
सचु श्रलख विडाणी[7] ता की गति[8] कही न जाए ।
कहै नानकु श्रंमृत नामु सुणहु पवित्रु होवहु साचै सुनणै नो पठाए । ३७ ।

हरि जीउ गुफा[9] श्रंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइश्रा ।
वजाइश्रा वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ।
गुरदुश्रारै लाइ भावनी[10] इकना दसवा दुश्रारु दिखाइआ ।
तह श्रनेक रूप नाउ नवनिधि तिसदा श्रंत न जाई पाइआ[11] ।
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा श्रंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ । ३८ ।

एहु साचा सोहिला[12] साचै घरि गावहु ।
गावहु ता सोहिला घरि साचै जिथै[13] सदा सचु धिश्रावहे ।
सचो धिश्रावहि जा तुधु[14] भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ।
इहु सचु सभना का खसमु[15] है जिसु बखसे[16] सो जनु पावहे ।
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे । ३९ ।

श्रनदु सुणहु वडभागीहो[17] सगल मनोरथ पूरे ।

---

1) पहले से ही प्रभु द्वारा लिखा हुश्रा 2) स्वीकृत, प्रामाणिक 3) श्राँखों से केवल हरि को देखो 4) देख रहे हो 5) देखता हूँ 6) दिव्य दृष्टि 7) श्रद्भुत हरि 8) स्थिति एवं स्वरूप 9) शरीर, देह 10) भावना, प्रेम, श्रद्धा 11) उसका श्रंत नहीं पाया जा सकता 12) खुशी का गीत 13) जहाँ पर 14) तुम्हें 15) स्वामी 16) कृपा करे 17) श्रेष्ठ भाग्य वालो !

पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे[1] ।
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ।
संत साजन भए सरसे[2] पूरे गुर ते जाणी[3] ।
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ।
बिनवंति[4] नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे । ४० । १ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ९१७-९२२)

रामकली की वार
जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी[5]
सलोकु

सतिगुरु सहजै दा खेतु है[6] जिसनो लाए भाउ[7] ।
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ।
हउमै एहो बीजु है[8] सहसा गइआ विलाइ[9] ।
ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे[10] सो खाइ ।
अंभै[11] सेती अंभु रलिआ बहुड़ि[12] न निकसिआ जाइ ।
नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु[13] लोका आइ ।
लोकु कि वेखै बपुड़ा जिसनो सोझी नाहि ।
जिसु वेखाले सो वेखै[14] जिसु वसिआ मन माहि । १ । १ ।

मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ।
दुख विचि[15] जंमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ[16]।
आवणु जाणु[17] न सुझई अंधा अंधु कमाइ ।
जो देवै तिसै न जाणई दिते[18] कउ लपटाइ ।
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ । २ । २ ।

सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिसनो आपे मेले सोइ ।
सुखै एहु बिबेकु है[19] अंतरु निरमलु होइ ।

---

1) दु:ख, संताप 2) आनंदित हो गए 3) जान लिया 4) विनय करता है 5) 'जोधै वीरै पूरबाणी' नामक सुप्रसिद्ध लोक-वार की तर्ज (ध्वनि) पर इस को गायन करने का आदेश है 6) सहज (शांति) का खेत है 7) प्रेम 8) अहंभाव संशय का बीज हैं 9) सहज भाव से संशय नष्ट हो जाता है 10) कृपा-पूर्वक देता हैं 11) जल 12) पुन: 13) देखो 14) जिसे दिखाता है, वही देखता है 15) में 16) जीवन समाप्त हो रहा है 17) आवागमन 18) प्रदत्त वस्तु 19) सुख का यह स्वभाव है

अगिआनु का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ।
नानक एको नदरी[1] आइआ जह देखा तह सोइ । ३ । ३ ।

पउड़ी

सचे तखतु[2] रचाइआ बैसन कउ जांई[3] ।
सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ।
आपे कुदरति[4] साजीअनु करि महल सराई[5] ।
चंदु सूरजु दुइ चानणे[6] पूरी बणत बणाई[7] ।
आपे वेखै[8] सुणे आपि गुर सबदि धिआई । १ ।
वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई[9] । १ । रहाउ ।

सलोकु

नानक महिंदी[10] करि कै रखिआ सो सहु नदरि[11] करेइ ।
आपे पीसै आपे घसै[12] आपे ही लाइ लएइ ।
इहु पिरम[13] पिआला खसम[14] का जै भावै तै देइ[15] । २ । ४ ।

पउड़ी

वेकी[16] सृसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ।
आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही[17] ।
जिउ भावै[18] तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ।
सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ।
तुधु जेवड[19] मै नाहि को किसु आखि सुणाई[20] । २ ।

सलोकु

भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि[21] ।
सो सहु[22] सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि[23] ।
गुरपरसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उरधारि ।
नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती[24] करतारि । १ । ५ ।
धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ।
कूड़ु[25] बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ।
सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइ पति खोइ ।
हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ।

1) दृष्टिगत होता है 2) संसार रूपी सिंहासन 3) स्थान 4) प्रकृति 5) महल और सराए 6) प्रकाश करने वाले 7) पूरी तरह विधान किया है 8) देखता है 9) नाम 10) मेहँदी, मेंधी 11) पति की कृपा-दृष्टि 12) घिसा कर 13) प्रेम 14) स्वामी, पति 15) जिस को अच्छा लगता है, उसे देता है 16) भिन्न प्रकार की 17) आप ही देख कर प्रसन्न होता है, दूसरा कोई नहीं है 18) अच्छा लगे 19) तुम्हारे जितना बड़ा 20) कह कर सुनाऊँ 21) ढूँढ ढूँढ कर थक गई हूँ 22) पति 23) साथ 24) की 25) झूठ

गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ।
नानक सहजे मिलि रहै करमि[1] परापति होइ । २ । ६ ।

पउड़ी

इकि आपणी सिफती लाइअनु[2] दे सतिगुर मती[3] ।
इकना नो नाउ बखसिओनु[4] असथिरु हरि सती[5] ।
पउणु पाणी वैसंतरो हुकमि[6] करहि भगती ।
एना नो भउ[7] अगला पूरी बणत बणती[8] ।
सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई । ३ ।

सलोकु

किउकरि इहु मनु मारीऐ किउकरि मिरतकु होइ ।
कहिआ सबदु न मानई हउमै[9] छडै न कोइ ।
गुरपरसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ।
नानक जिसनो बखसे[10] तिसु मिलै तिसु विघनु न लागै कोइ । २ । ७ ।
जीवत मरणा[11] सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ।
भै का संजमु जे करे दारू भाउ[12] लाएइ ।
अनदिनु[13] गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ।
नानक गुरमुखि पाईए जाकउ नदरि[14] करेइ । ३ । ८ ।

पउड़ी

दूजा भाइ[15] रचाइअनु त्रै गुण वरतारा ।
ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा[16] ।
पंडित पड़दे जोतकी[17] ना बूझहि बीचारा ।
सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजनहारा ।
जिसु भावै तिसु बखसि लैहि संचि सबदि समाई । ४ ।

सलोकु

मन का झूठा झूठु कमावै ।
माइआ नो फिरै तपा सदावै[18] ।
भरमे भूला सभि तीरथ गहै[19] ।
ओहु तपा कैसे परमगति लहै[20] ।
गुरपरसादी को सचु कमावै ।
नानक सो तपा मोखंतरु पावै । १ । ९ ।

---

1) कृपा द्वारा 2) अपनी गुण-स्तुति में लगाया है 3) उपदेश 4) नाम प्रदान किया है 5) स्थिर और सत्य स्वरूप हरि ने 6) आदेश, आज्ञा 7) भय 8) पूरे ढंग से विधान किया है 9) अहंभाव 10) कृपा करे 11) जीवित अवस्था में ही मरना 12) प्रेम 13) प्रतिदिन 14) कृपा-दृष्टि 15) द्वैत-भाव 16) कार्य,कर्म 17) ज्योतिषी 18) तपस्वी कहलाता है 19) घूमता फिरता है 20) प्राप्त कर सकता है

सो तपा जि इहु तपु घाले[1] ।
सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ।
सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु[2] ।
नानक सो तपा दरगहि[3] पावै माणु । २ । १० ।

पउड़ी

राति दिनसु उपाइअनु संसार की वरतणि[4] ।
गुरमती घटि चानणा[5] आनेरु[6] विनासणि ।
हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ[7] सभ वणि तृणि ।
सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि[8] ।
सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई । ५ ।

सलोकु

अभिआगत[9] एहि न आखीअनि[10] जिन के चित महि भरमु ।
तिसदै दितै[11] नानका तेहो जेहा धरमु[12] ।
अभै निरंजनु परम पदु ताका भूखा होइ ।
तिसका भोजनु नानका विरला पाए कोइ । १ । ११ ।*
अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ।
उदरै कारणि[13] आपणे बहले[14] भेख करेनि ।
अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि[15] ।
भालि लहनि सहु आपणा[16] निज घरि रहणु करेनि । २ । १२ ।

पउड़ी

अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ।
घरु दरु सभो सचु है जिस विचि सचा नाउ ।
सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ।
सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ[18] ।
सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई । ६ ।

सलोक

रैणाइर[19] माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ।
भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ।
रैणाइर[17] महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ।
नानक नउनिधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ । १ । १३ ।

1) परिश्रम के साथ करे 2) स्वीकृत, प्रामाणिक 3) प्रभु-द्वार पर 4) वर्तनी, रहनी 5) प्रकाश 6) अंधकार 7) व्याप्त 8) जाप करो 9) भिक्षुक साधक 10) कहलाता है 11) उसको देने से 12) उसी प्रकार की धर्म-भावना प्राप्त होती है, अथवा वैसा ही फल मिलता है *यह श्लोक 'सलोक वारां ते वधीक' प्रसंग (पृष्ठ १४१३) में पहले दो श्लोकों के रूप में भी संकलित है 13) उदरपूर्ति के कारण 14) बहुत अधिक 15) आत्म के अंतर में बैठते हैं, अंतर की शोध करते हैं 16) अपने पति को खोज लेते हैं 17) समुद्र

सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै[1] जनमि बिनासु ।
रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु[2] ।
बिखु खाधी[3] मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु[4] ।
इकसु हरि के नाम विणु[5] धृगु जीवणु धृगु वासु ।
जा आपे नदरि[6] करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु[7] ।
ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरु की कबहि न छोडै पासु ।
जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु[8] ।
जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै[9] तिव हरि गुणतासु[10] ।२। १४।

पउड़ी

छतीह जुग गुबारु सा[11] आपे गणत कीनी[12] ।
आपे सृसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ।
सिमृति सासत[13] साजिअनु पाप पुंन गणत गणीनी[14] ।
जिसु बुझाए सो बुझसी[15] सचै सबदि पतीनी[16] ।
सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई[17] । ७ ।

सलोकु

इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ।
जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ।
भै पइऐ तनु खीनु[18] होइ लोभ रतु विचहु जाइ[19] ।
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ।
नानक ते जन सोहणे[20] जो रते हरि रंगु लाइ । १ । १५ ।*
रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु[21] ।
गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ।
भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ।
तिसनो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि[22] पिआरु ।
सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ।

---

1) सहज भाव से 2) हृदय कमल विकसित नहीं हुआ 3) खाने के फल-स्वरूप 4) विनाश 5) बिना 6) कृपा-दृष्टि 7) दासों का दास, दासानुदास 8) इसी प्रकार गृहस्थ जीवन में भी वह उदासीन रहता है 9) अच्छा लगे 10) गुण-निधि 11) अंधकार व्याप्त था 12) सृष्टि की व्यवस्था की 13) शास्त्र 14) व्यवस्था की गई 15) समझेगा 16) प्रतीति होगी, संतोष होगा 17) कृपा-पूर्वक मिला देता है 18) क्षीण 19) अंतर से चली जाती है 20) सुन्दर *यह श्लोक बाबा फरीद के श्लोकों में श्लोकांक ५२ (आदि ग्रंथ पृष्ठ १३८०) के रूप में भी लिखा मिलता है 21) शृंगार 22) साथ

मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि[1] जनमु सभु हारि ।
बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जंमहि होइ खुआरु ।
संसारै विचि सोभ न पाइनी[2] अगै जि करे सु जाणै करतारु ।
नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु[3] ।
चंगै मंदै आपि लाइअनु[4] सो करनि जि आपि कराए करतारु । २ । १६ ।

बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ[5] ।
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु[6] करमा पाइआ न जाइ ।
अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ[7] खुआइ ।
तिन जंमणु मरणु न चुकई हउमै[8] विचि दुखु पाइ ।
जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ।
तिन जम की तलब न होवई[9] ना ओइ दुख सहाहि ।
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि । ३ । १७ ।

पउड़ी

आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ।
आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ।
सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ।
निजघरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ।
सचा गहिर गंभीरु है गुर सबदि बुझाई । ८ ।

सलोकु

सचा नामु धिआइ तू सभो वरते सचु ।
नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ।
कथनी बदनी करता फिरै हुकमु[10] न बूझै सचु ।
नानक हरि का भाणा[11] मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निकचु[12] । १ । १८ ।

मनमुख बोल न जाणनी[13] ओना अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ।
ओइ थाउ कुथाउ[14] न जाणनी उन अंतरि लोभु विकार ।
ओइ आपणै सुआइ आइ बहि[15] गला करहि[16] ओना मारे जमु जंदारु[17] ।
अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर[18] ।

1) जाएँगे 2) संसार में शोभा प्राप्त नहीं कर पाते 3) जन्म और मरण में संसार विलीन है 4) अच्छे बुरे कार्य में प्रभु स्वयं लगाता है 5) दूसरा कोई स्थान नहीं है 6) बिना 7) द्वैत-भाव 8) अहंभाव 9) नहीं होती 10) आज्ञा, आदेश 11) इच्छा, भावना 12) परमात्मा की इच्छा का पालन न करने वाला कच्चों का कच्चा अर्थात महान् कच्चा है 13) जानते नहीं 14) स्थान कुस्थान 15) अपने स्वार्थ के कारण आ कर बैठते हैं 16) बातें करते हैं 17) ज़ालिम, कठोर 18) परमधाम

एह कूड़ै[1] की मलु किउ उतरै कोई कढ़हु इहु बीचारु[2] ।
सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए[3] सभि किलविख कटणहारु[4] ।
नामु जपे नामो आराधै तिसु जन कउ करहु सभी नमसकारु ।
मलु कूड़ी नामि उतारिआनु[5] जपि नामु होआ सचिआरु[6] ।
जन नानक जिस दे एहि चलत[7] हहि सो जिवउ देवणहारु[8] । २ । १९ ।

पउड़ी

तुधु जेवडु[9] दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ[10] ।
गुरपरसादी पाइ जिथहु हउमै जाईए[11] ।
रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ[12] ।
जिस नो बखसे[13] तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ।
घट अंतरि अमृतु रखिओनु[14] गुरमुखि किसै पिआई । ९ ।

सलोकु

बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि[15] ।
जाइ पुछहु सिमृति सासत[16] बिआस सुक नारद बचन सभ सृसटि करेनि ।
सचै लाए सचि लगे सदा सचु समालेनि ।
नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल[17] तारेनि । १ । २० ।
गुरु जिना का अंधुला[18] सिख भी अंधे करम करेनि ।
ओइ भाणै[19] चलनि आपणै नित झठो झूठु बोलेनि ।
कूड़ु[20] कुसतु कमावदे परनिंदा सदा करेनि ।
ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ।
नानक जितु ओइ[21] लाए तितु लगे उइ बपुड़े[22] किआ करेनि । २ । २१ ।

पउड़ी

सभ नदरी[23] अंदरि रखदा[24] जेती सृसटि सभ कीती[25] ।
इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ।
गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ।
जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वाति सिपीती[26] ।
नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई । १० ।

1) इस झूठ 2) कोई ऐसा विचार करो 3) दृढ़ करे 4) सभी पापों का नाश करने वाला 5) नाम के द्वारा झूठा मैल उतारा जाता है 6) सदाचारी 7) चरित 8) वह देने वाला सदा जीवित रहे 9) तुम्हारे जितना बड़ा 10) कहकर सुनाऊँ 11) जहाँ से अहंभाव चला जाए 12) सच्ची बड़ाई के कारण वह कसैला आदि छः रसों से परे है 13) कृपा करता है 14) रखे हुए हैं 15) बुजुर्गों की चरित-कथाएँ पुत्रों को सुपुत्र बना देती हैं अथवा उन्हें पुत्र सुपुत्र करते आए हैं 16) शास्त्र 17) समस्त कुल को 18) अंधा 19) अपने इच्छा के अनुरूप 20) झूठ 21) वह, परमात्मा 22) बेचारे 23) दृष्टि 24) रखता है 25) की है 26) मुख में हरि-यश

पउड़ी

हरि का मंदरु आखीऐ[1] काइआ कोटु गड़ु ॥
अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु[2] ।
हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा[3] हरि हरि नामु दिड़ु[4] ।
मनमुख आपि खुआइअनु[5] माइआ मो हनित कड़ु[6] ।
सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई । ११ ।
हरि मंदरु सोई आखीऐ[7] जिथहु हरि जाता[8] ।
मानस देह गुरबचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ।
बाहरि मूल न खोजीऐ घर माहि बिधाता ।
मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता[9] ।
सभ महि इकु वरतदा[10] गुर सबदी पाईआ जाई । १२ ।

सलोकु

मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ।
मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ।
मूरखु ओहु जि मुगधु[11] है अहंकारे मरणा ।
एतु कमाणै सदा दुखु[12] दुखु ही महि रहणा ।
अति पिआरा पवै खूहि[13] किहु संजमु करणा ।
गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा[14] ।
हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे[15] भी तरणा ।
नानक जो तिसु भावे सो करे जो देइ सु सहणा[16] । १ । २२ ।

पउड़ी

हरि का सभु सरीर है हरि रवि रहिआ[17] सभु आपै ।
हरि की कीमति ना पवै किछु कहणु न जापै ।
गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगति रापै[18] ।
सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै[19] ।
सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई । १३ ।
काइआ हंस धुरि[20] मेलु करतै लिखि पाइआ ।
सभ महि गुपतु वरतदा[21] गुरमुखि प्रगटिआ ।

---

1) कहना चाहिए 2) पढ़ता है 3) सुंदर 4) दृढ़ कर 5) नष्ट होते हैं 6) कढ़ते हैं 7) कहना चाहिए 8) जहाँ से हरि जाना जा सके 9) व्यर्थ में नष्ट कर लिया है 10) व्याप्त है 11) अज्ञानी 12) यहाँ सदा दुःख कमाता है 13) कुएें में गिर पड़ता है 14) उसने निर्लिप्त रहना है 15) डूबते हुए ने भी 16) सहन करना है 17) रमण कर रहा है 18) लिप्त हो कर 19) नष्ट होने पर 20) प्रभु द्वार से 21) व्याप्त है

गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ।
सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ।
सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई[1] । १४ ।

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै[2] ।
बजर कपाट खुलनी गुर सबदि खुलीजै[3] ।
अनहद वाजे धुनि वजदे[4] गुर सबदि सुणीजै ।
तितु घट अंतरि चानणा[5] करि भगति मिलीजै ।
सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई[6] । १५ ।

काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतरि देसा[7] ।
आपे ताड़ी लाईअनु[8] सभ महि परवेसा ।
आपे सृसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा[9] ।
गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा[10] ।
सभु किछु सचो सचु हे गुरि सोझी पाई । १६ ।

मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ[11] बोलै ।
दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै[12] ।
गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै[13] ।
अंतरि परगासु घटि चानणा[14] हरि लधा टोलै[15] ।
आपे भरमि भुलाइदा[16] किछु कहणु न जाई । १७ ।

से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता[17] ।
गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता[18] ।
सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता[19] ।
अंतरि तृसना मरि गई हरि गुण गावीता[20] ।
आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई । १८ ।
सो संगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै[21] ।
सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ।

---

1) बड़ाई 2) रखा जाता है 3) खोले जा करते हैं 4) बजते हैं 5) प्रकाश 6) सृष्टि की रचना की है 7) देश-देशांतर हैं 8) समाधि की अवस्था में है 9) रखा हुआ है 10) प्रकट किया है 11) द्वैत-भाव 12) जल का मंथन करता है 13) निकालते हैं 14) प्रकाश 15) ढूँढने पर मिलता है 16) भुलाता है 17) पिया है 18) सच्चा वाणिज्य किया है 19) श्रेष्ठ भाग्य वाले ने प्राप्त किया है 20) गाए जाने पर 21) जो गुरु के उपदेश के अनुरूप चलते हैं

भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै[1] ।
रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै[2] ।
आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई[3] । १९ ।

सलोकु

आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ।
नानक जो मरि जीविआ सहिला[4] आइआ सोइ । १ । २३ ।
ना किछु आसा हथि है[5] केउ निरासा होइ ।
किआ करे एह बपुड़ी[6] जा भुलाए सोइ । २ । २४ ।

पउड़ी

धृगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ।
प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ।
सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ।
अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु[7] ।
रवि रहिआ[8] सरबति नानकु बलि जाई । २० ।

आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु[9] ।
आपे ही उपदेसदा[10] गुरमुखि पतीआईअनु[11] ।
इकि आपे उझड़ि[12] पाइअनु इकि भगती लाइअनु ।
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी[13] आपे नाइ लाईअनु[14] ।
नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई[15] । २१ । १ । सुधु ।

(आदि ग्रन्थ, पृष्ठ ९४७-९५६)

---

1) अचल हैं 2) उत्तम, श्रेष्ठ 3) बड़ाई 4) सफल मनोरथ 5) हाथ में है, वश में है 6) बेचारा 7) बोल, स्मरण कर 8) व्याप्त है 9) समाधि की अवस्था में होता है 10) उपदेश करता है 11) प्रतीति होती हैं 12) निर्जन स्थान, 13) समझेगा 14) नाम-स्मरण में लगाते हैं 15) बड़ाई

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु मारू

चउपदे घरु १

जह बैसालहि[1] तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा[2] ।
सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा[3] । १ ।
बाबा देहि वसा सच गावा[4] ।
जा ते सहजे सहजि समावा । १ । रहाउ ।
बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ।
इहु फुरमाइआ खसम[5] का होआ वरतै[6] इहु संसारा । २ ।
इंद्री धातु[7] सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ।
आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई । ३ ।
गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे[8] बिनासी ।
जो तिसु भाणा[9] सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी । ४ ।
भणति[10] नानकु लेखा मागै कवना[11] जा चूका मनि अभिमाना ।
तासु तासु[12] धरम-राइ जपतु है पए सचे की सरना । ५ । १ ।

आवण जाणा ना थीऐ[13] निज घरि वासा होई ।
सचु खजाना बखसिआ[14] आपे जाणै सोइ । १ ।
एक मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकारा ।
गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु । १ । रहाउ ।
ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ ना पाइ[15] ।
जोनी सभि भवाईअनि[16] बिसटा मांहि समाइ । २ ।
वडभागी[17] गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ।
अनदिनु[18] सची भगति करि सचा लए मिलाइ । ३ ।

---

1) जहाँ बिठाओगे 2) जाऊंगा 3) स्थान 4) सच्चे ग्राम (सत्संगति) में बसा दे 5) स्वामी 6) व्याप्त है 7) दौड़ने वाली, चंचल 8) तभी 9) इच्छा 10) कहता है 11) कौन 12) त्राहि-त्राहि करता है 13) आवागमन नहीं होता 14) कृपा की है 15) यहाँ पर नाम को भुलाने पर, पुनः हाथ कुछ नहीं लगता 16) भ्रमित हैं 17) बड़े भाग्य वाला 18) प्रतिदिन

आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ[1] ।
नानक नामि वडिआईआ[2] जै भावै[3] तै देइ । ४ । २ ।

पिछले गुनह बखसाइ[4] जीउ अब तू मारगि पाइ ।
हरि की चरणी लागि रहा विचहु[5] आपु गवाइ । १ ।
मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ।
सदा हरिचरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ[6] । १ । रहाउ ।
ना मै जाति न पति[7] है ना मै थेहु न थाउ[8] ।
सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ । २ ।
इहु मनु लालच करदा फिरै[9] लालचि लागा जाइ ।
धंधै कूड़ि विआपिआ[10] जमपुरि चोटा खाइ । ३ ।
नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा[11] नाही कोइ ।
भगति खजाना बखसिओन[12] गुरमुखा सुखु होइ । ४ । ३ ।

सचि रते से टोलि लहु[13] से विरले संसारि ।
तिन मिलिआ मुखु उजला[14] जपि नामु मुरारि । १ ।
बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ।
सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि[15] । १ । रहाउ ।
इकु सचा सभ सेवदी[16] धुरि[17] भागि मिलावा होइ ।
गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ । २ ।
इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ।
ओना विचि[18] आपि वरतदा करणा किछू न जाइ । ३ ।
जिसु नालि[19] जोरु न चलई खले कीचै अरदासि[20] ।
नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि । ४ । ४ ।

मारू ते सीतलु करे मनूरहु[21] कंचनु होइ ।
सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवड[22] अवरु न कोइ । १ ।
मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ।
सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु[23] गुण गाउ । १ । रहाउ ।

1) कृपा-दृष्टि करता है 2) बड़ाइयाँ हैं 3) अच्छा लगता है 4) क्षमा करा कर 5) अंतर से 6) भाव से 7) प्रतिष्ठा 8) ठौर-ठिकाना नहीं है 9) करता फिरता है 10) सांसारिक कार्यों के फलस्वरूप झूठ ही सर्वत्र व्याप्त हो गया है 11) दूसरा 12) कृपा की है 13) ढूँढ लो 14) उज्ज्वल 15) अपनी वस्तु (जीवन के मनोरथ) को ढूँढ ले 16) सेवा करते हैं 17) प्रभु द्वार से 18) में 19) साथ 20) खड़े होकर प्रार्थना करनी चाहिए 21) घटिआ लोहा 22) उस जितना बड़ा 23) प्रतिदिन

गुरमुखि एको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ।
सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ[1] । २ ।
सतिगुरु छोडि दूजै[2] लगे किआ करनि अगै जाइ ।
जमपुरि बधे मारीअहि बहुती[3] मिलै सजाइ । ३ ।
मेरा प्रभु बेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ[4] ।
नानक तिसु सरणाई भजि पउ[5] आपे बखसि[6] मिलाइ । ४ । ५ ।

(आदि ग्रन्थ, ९९३-९९५)

मारु

असटपदी घरु ५

जिस नो प्रेमु मंनि वसाए । साचै सबदि सहजि सुभाए[7] ।
ऐहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी[8] जीउ । १ ।
आपे मेले आपि मिलाए । आपणा पिआरु आपे लाए ।
प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि[9] तुमारी जीउ । १ । रहाउ ।
दिब दृसटि जाणै भरमु चुकाए । गुरपरसादि परमपदु पाए ।
सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ । २ ।
संजोगी धन पिर मेला होवै[10] । गुरमति विचहु[11] दुरमति खोवै ।
रंग सिउ नित रलीआ माणे[12] अपणे कंत पिआरी जीउ । ३ ।
सतिगुर बाझहु वैदु न कोई । आपे आप निरंजनु सोई ।
सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा[13] होवै गिआन बीचारी जीउ । ४ ।
एहु सबदु सारु जिस नो लाए । गुरमुखि तृसना भुख गवाए ।
आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ । ५ ।
अगम निगमु[14] सतिगुरु दिखाइआ । करि किरपा अपनै घरि आइआ ।
अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि[15] तुमारी जीउ । ६ ।
गुरमुखि होवै सो ततु पाए । आपणा आपु विचहु[16] गवाए ।
सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै[17] वेखहु[18] मनि वीचारी जीउ । ७ ।

---

1) जिस से यह बोध हो जाए 2) द्वैत-भाव 3) बहुत अधिक 4) लालच 5) उस की शरण में भाग कर पड़ जाओ 6) कृपा कर के 7) स्वाभाविक ढंग से 8) इलाज 9) कृपा-दृष्टि 10) संयोगवश स्त्री और पुरुष (पत्नी-पति) का मिलाप होता है 11) अंतर से 12) मौज-मेला मनाते हैं 13) बुराई मर जाती है 14) वेद-शास्त्र 15) कृपा-दृष्टि 16) अंतर से 17) बेगार करते हैं, व्यर्थ कार्य करते हैं 18) देख लो

इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी। इकना गुरमुखि हउमै[1] मारी।
सचै सबदि रते[2] बैरागी होरि[3] भरमि भुले गावारी जीउ। ८।
गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ। मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ।
अगै विणु[4] नावै को बेली[5] नाही बूझै गुर बीचारी जीउ। ९।
अंमृत नामु सदा सुखदाता। गुरि पूरै जुग चारे जाता[6]।
जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ। १०। १।
(आदि ग्रंथ, पृष्ठ १०१६)

सोलहे

हुकमी[7] सहजे सृसटि उपाई। करि करि वेखै[8] अपणी वडिआई[9]।
आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे। १।
माइआ मोहु जगतु गुबारा। गुरमुखि बूझै को वीचारा।
आपे नदरि[10] करे सो पाए आपे मेलि मिलाई हे। २।
आपे मेले दे वडिआई। गुर परसादी कीमति पाई।
मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी[11] दूजै भाइ[12] खुआई हे। ३।
हउमै माइआ विचे पाई[13]। मनमुख भूले पति[14] गवाई।
गुरमुखि होवै सो नाइ राचै[15] साचै रहिआ समाई हे। ४।
गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ। मनसा मारि मन माहि समाइआ।
आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे। ५।
सतिगुरु सेवे आपु गवाए। मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए।
अंतरि पिआरु भगती राता[16] सहजि मते बणि आई हे[17]। ६।
दूख निवारणु गुर ते जाता[18]। आपि मिलिआ जग जीवनु दाता।
जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरह जाई हे। ७।
आपे गुरमुखि आपे देवै। सचै सबदि सतिगुरु सेवै।
जरा[19] जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे। ८।

---

1) अहंभाव 2) अनुरक्त 3) और, अन्य 4) बिना 5) साथी, सहायक 6) जाना गया है 7) आज्ञा से 8) देखता है 9) बड़ाई 10) कृपा-दृष्टि 11) विलाप करती फिरती है 12) द्वैत-भाव 13) अहंभाव और माया भी बीच में पड़ी है 14) प्रतिष्ठा 15) मगन हैं 16) अनुरक्त, लीन 17) सहजावस्था में रहने से हरि से बन आती है 18) जाना है 19) बुढ़ापा

तृसना अगनि जलै संसारा । जलि जलि खपै[1] बहुतु विकारा ।
मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे । ९ ।
सतिगुरु सेवनि से वडभागी[2] । साचै नामि सदा लिव लागी ।
अंतरि नामु रविआ निहकेवलु[3] तृसना सबदि बुझाई हे । १० ।
सचा सबदु सची है बाणी । गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ।
सचै सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे[4] । ११ ।
सबदु बुझै सो मैलु चुकाए । निरमल नामु वसै मनि आए ।
सतिगुरु अपणा सदही सेवहि हउमै विचहु जाई हे[5] । १२ ।
गुर ते बूझै ता दरु[6] सूझै । नाम विहूणा[7] कथि कथि लूझै[8] ।
सतिगुर सेवे की वडिआइ[9] तृसना भूख गवाइ हे । १३ ।
आपे आपि मिलै ता बूझै । गिआन विहूणा किछू न सूझै ।
गुर की दाति[10] सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे । १४ ।
जो धुरि लिखिआ[11] सु करम कमाइआ । कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ।
सत संगति महि तिन ही वासा[12] जिन कउ धुरि लिखि पाई हे । १५ ।
अपणी नदरि[13] करे सो पाए । सचै सबदि ताड़ी[14] चितु लाए ।
नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ[15] नामु दरि पाई हे । १६ । १ ।

एको एकु वरतै[16] सभु सोई । गुरमुखि विरला बूझै कोई ।
एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे । १ ।
लख चउरासीह जीअ उपाए । गिआनी धिआनी आखि सुणाए[17] ।
सभना रिजकु समाहे[18] आपे कीमति होर न होई हे । २ ।
माइआ मोहु अंधु अंधारा हउमै मेरा पसरिआ पासारा[19] ।
अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई है । ३ ।
आपे जोड़ि विछोड़े आपे थापि उथापे आपे[20] ।
सचा हुकमु[21] सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे । ४ ।

---

1) नष्ट होता है 2) श्रेष्ठ भाग्य वाले 3) निर्लिप्त, शुद्ध 4) आवागमन समाप्त हो जाता है 5) अंतर से अहं-भाव नष्ट हो जाता है 6) परमात्मा का द्वार 7) वंचित 8) लड़ता झगड़ता है 9) बड़ाई 10) प्रदत वस्तु 11) परमधाम से लिखा गया है 12) निवास 13) कृपा-दृष्टि 14) समाधि 15) भिक्षा 16) व्याप्त 17) कह कर बखान करते हैं 18) सभी को आजीविका पहुंचाता है 19) अहंभाव और अपनेपन की भावना का प्रकाश फैला हुआ है 20) स्थापित करता है 21) आज्ञा

आपे लाइ लए सो लागै । गुरपरसादी जम का भउ[1] भागै ।
अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे । ५ ।
आपे मेले मेलि मिलाए । पूरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ।
अनदिनु[2] भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे । ६ ।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता[3] । आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ।
हउमै[4] मारि तृसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे । ७ ।
काइआ कुटंबु मोहु न बूझै । गुरमुखि होवै त आखी सूझै[5] ।
अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे । ८ ।
मनमुख धातु[6] दूजै[7] है लागा । जनमत की न मूओ आभागा ।
आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे । ९ ।
काइआ कुसुध[8] हउमै मलु लाई । जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ।
सबदि धोपै ता हछी होवै[9] फिरि मैली मूलि न होई हे । १० ।
पंच दूत काइआ संघारहि । मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि ।
अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे । ११ ।
इकि पंचा मारि सबदि है लागे । सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे[10] ।
अंतरि साचु रवहि[11] रंगि राते[12] सहजि समावै सोई हे । १२ ।
गुर की चाल गुरु ते जापै । पूरा सेवकु सबदि सिञापै ।
सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे । १३ ।
हउमै मारे सबदि निवारे । हरि का नामु रखै उरिधारे ।
एकसु बिनु हउ होरु[13] न जाणा सहजे होइ सु होई हे । १४ ।
बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ । गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ।
सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे । १५ ।
आपे गुण दाता बीचारी । गुरमुखि देवहि पकी सारी ।
नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति[14] होई हे । १६ । २ ।

---

1) भय 2) प्रतिदिन 3) जाना है 4) अहंभाव 5) अंतर की आँख से बोध होता है 6) इधर-उधर भागता है 7) द्वैत-भाव 8) अशुद्ध 9) अच्छी होती है, साफ होती है 10) श्रेष्ठ भाग्य वाला 11) स्मरण करते हैं 12) प्रेम में अनुरक्त है 13) अन्य, दूसरा 14) प्रतिष्ठा

जगजीवनु साचा एको दाता । गुरसेवा ते सबदि पछाता ।
एको अमरु[1] एका पतिसाही[2] जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे[3] । १ ।
सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता । आपे आइ मिलिआ सुखदाता ।
रसना सबदि रती[4] गुण गावै दरि साचै पति[5] पाई हे । २ ।
गुरमुखि नामि मिलै वडिआई[6] । मनमुखि निंदकि पति गवाई ।
नामि रते परम हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे । ३ ।
सबदि मरै साई जनु पूरा । सतिगुर आखि सुणाए[7] सूरा ।
काइआ अंदरि अंमृतसरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे[8] । ४ ।
पड़ि पंडितु अवरा समझाए । घर जलते की खबरि न पाए ।
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके सांति न आई हे । ५ ।
इकि भसम लगाइ फिरहि भेखधारी । बिनु सबदै हउमै[9] किनि मारी ।
अनदिनु[10] जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे । ६ ।
इकि गृह कुटंब महि सदा उदासी । सबदि मुए हरि नामि निवासी ।
अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ[11] भगति चितु लाई हे । ७ ।
मनमुखु निंदा करि करि विगुता[12] । अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता[13]
जम कालु तिसु कदे[14] न छोडै अंति गइआ पछुताई हे । ८ ।
सचै सबदि सची पति होई । बिनु नावै मुकति न पावै कोई ।
बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे[15] । ९ ।
इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी । इकि अहिनिसि[16] नामि रते निरंकारी ।
जिसनो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाइ हे[17] । १० ।
इसनानु दानु करहि नही बूझहि । इकि मनूआ मारि मन सिउ लूझहि[18] ।
साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे । ११ ।
आपे सिरजे दे वडिआई[19] । आपे भाणै[20] देइ मिलाई ।
आपे नदरि[21] करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे । १२ ।

---

1) हुक्म, आदेश 2) बादशाही, शासन-व्यवस्था 3) सभी के सिर पर आज्ञा-पालन की व्यवस्था की गई है 4) लीन, अनुरक्त 5) प्रतिष्ठा 6) बड़ाई 7) कह कर सुनाता है 8) प्रेम-भाव से 9) अहंभाव 10) प्रति-दिन 11) भय एवं प्रेम 12) नष्ट हो गया 13) कुत्ते के समान भौंकता है 14) कभी 15) व्यवस्था की हुई है 16) रात-दिन 17) प्रेमा-भक्ति से भय नष्ट हो जाता है 18) संघर्ष करते हैं 19) बड़ाई 20) इच्छा 21) कृपा-दृष्टि

सतिगुरु सेवहि से जन साचे । मनमुख सेवि न जाणनि काचे ।
आपे करता करि करि वेखै[1] जिउ भावै[2] तिउ लाई हे । १३ ।
जुगि जुगि साचा एको दाता । पूरै भागि गुर सबदु पछाता ।
सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी[3] सहजि मिलाई हे । १४ ।
हउमै माइआ मैलु कमाइआ । मरि मरि जंमहि दूजा भाइआ[4] ।
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे । १५ ।
जो तिसु भावै सोई करसी[5] । आपहु होआ ना किछु होसी[6] ।
नानक नामु मिलै वडिआई[7] दरि साचै पति[8] पाई हे । १६ । ३ ।

जो आइआ सो सभु को जासी[9] । दूजै भाइ बाधा जम फासी ।
सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे । १ ।
आपे करता करि करि वेखै[10] । जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ।
गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे । २ ।
मनमुख सहसा[11] बूझ न पाई । मरि मरि जंमै जनमु गवाई ।
गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे । ३ ।
धंधै धावत[12] मनु भइआ मनूरा[13] । फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ।
आपे बखसि[14] लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे । ४ ।
दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि[15] । अउगणिआरी अउगणिआरि ।
कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे । ५ ।
अउगणिआरी कंत न भावै । मन की जूठी जूठु कमावै ।
पिर का साउ[16] न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे । ६ ।
दुरमति खोटी खोटु कमावै । सीगारु करे पिर खसम[17] न भावै ।
गुणवंती सदा पिरु रावै[18] सतिगुरि मेलि मिलाई हे । ७ ।
आपे हुकमु करे सभु वेखै । इकना बखसि लए धुरि लेखै[19] ।
अनदिनु[20] नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे । ८ ।

---

1) देखता है 2) अच्छा लगता 3) कृपा-दृष्टि 4) द्वैत-भाव 5) करेगा 6) होगा 7) बड़ाई 8) प्रतिष्ठा 9) जाएगा 10) देखता है 11) संशय के कारण 12) सांसारिक प्रपंच में लीन रहने के कारण 13) घटिआ लोहा 14) कृपा करता है 15) बुरे आचार वाली 16) प्रियतम का स्वाद 17) प्रियतम, स्वामी 18) रमण करती है 19) परमधाम से लिखे हुए होने के कारण 20) प्रतिदिन

हउमै धातु मोह रसि लाई[1] गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ।
आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे । ९ ।
इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे । इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ।
आपे करे कराए आपे होरु[2] करणा किछू न जाई हे । १० ।
कालु मारि गुर सबदि निवारे । हरि का नामु रखै उरधारे ।
सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे । ११ ।
दूजै भाइ[3] फिरै देवानी । माइआ मोहि दुख माहि समानी ।
बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे । १२ ।
किस नो कहीऐ जा आपि कराए । जितु भावै[4] तितु राहि चलाए ।
आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे । १३ ।
आपे करता आपे भुगता । आपे संजमु आपे जुगता[5] ।
आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिसदा हुकमु[6] न मेटिआ जाई हे । १४ ।
से वडभागी[7] जिनी एको जाता[8] । घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ।
इकथै[9] गुपत परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे । १५ ।
गुरमुखि हरि जीउ एको जाता । अंतरि नामु सबदि पछाता ।
जिसु तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई[10] हे । १६ । ४ ।

सचु सालाही गहिर गंभीरै । सभु जगु है तिसही कै चीरै[11] ।
सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे । १ ।
सचा साहिबु सची नाई[12] । गुरपरसादी मंनि वसाई ।
आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी[13] जम की फासी हे । २ ।
किसु सेवी तै किसु सालाही । सतिगुर सेवी सबदि सालाही ।
सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी[14] हे । ३ ।
देही काची कागद मिकदारा[15] । बूंद पवै[16] बिनसै ढहत न लागै बारा[17] ।
कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे । ४ ।

---

1) अहंभाव वाले माया मोह-रस में लीन करती है 2) और अन्य 3) द्वैत-भाव 4) अच्छा लगे 5) स्वयं निर्लिप्त और लिप्त है 6) आदेश 7) बड़े भाग्य वाला 8) जान लिया है 9) एक ही स्थान पर 10) बड़ाई, प्रतिष्ठा 11) सीमा के अंतर्गत है 12) नाम 13) टूट गई है 14) विकसित है 15) के समान 16) पड़ने पर 17) गिरने में देर नहीं लगती

सचा चउका सुरति की कारा[1] । हरि नामु भोजनु सचु आधारा ।
सदा तृपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे । ५ ।
हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे । हरि गुण गावहि अनदिनु[2] जागे ।
साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी[3] हे । ६ ।
हरि नामु चेता[4] अवरु न पूजा । एको सेवी अवरु न दूजा ।
पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि निवासी हे । ७ ।
भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइआ । आपि भूला जा खसमि[5] भुलाइआ ।
हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे । ८ ।
कामि क्रोधि भरे हम अपराधी । किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ।
डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे । ९ ।
ना कोई करे न करणै जोगा[6] । आपे करहि करावहि सु होइगा ।
आपे बखसि[7] लैही सुखु पाए सदही नामि निवासी हे । १० ।
इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा । हरि साचे सेती वणजु वापारा ।
सचु धनु जंमिआ तोटि[8] न आवै अंतरि नामु निवासी हे । ११ ।
हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै । आपे बखसि लैहि नामु दीजै ।
गुरमुखि होवै सो पति[9] पाए इकतु नामि निवासी हे । १२ ।
अंतरि हरि धनु समझ न होई । गुरपरसादी बूझै कोई ।
गुरमुखि होवै सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे । १३ ।
अनल[10] वाउ[11] भरमि भुलाई । माइआ मोहि सुधि न काई ।
मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी[12] हे । १४ ।
मनमुख हउमै[13] माइआ सूते । अपणा घरु न समालहि अंति विगूते[14] ।
परनिंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे । १५ ।
आपे करतै कार कराई । आपे गुरमुखि देइ बुझाई ।
नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे । १६ । ५ ।

एको सेवी सदा थिरु[15] साचा । दूजै[16] लागा सभु जगु काचा ।
गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे । १ ।

---

1) कार, लकीर 2) प्रतिदिन 3) रसलीन 4) चिंतन करता हूँ 5) स्वामी 6) करने योग्य है 7) क्षमा कर देता है 8) समाप्ति 9) प्रतिष्ठा 10) तृष्णा रूपी अग्नि 11) वासना रुपी वायु 12) प्रकट है 13) अहंभाव 14) नष्ट हो जाते हैं 15) स्थिर 16) द्वैत-भाव

तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता[1] ।
आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ।
आपे बखसे दे वडिआई[2] गुरमति इहु मनु भीजै हे । २ ।
माइआ लहरि सबदि निवारी । इहु मनु निरमलु हउमै[3] मारी ।
सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै[4] हे । ३ ।
मेरी मेरी करत विहाणी[5] । मनमुखि न बूझै फिरै इआणी[6] ।
जम कालु घड़ी मुहतु निहाले[7] अनदिनु आरजा छीजै हे । ४ ।
अंतरि लोभु करै नही बूझै । सिर ऊपरि जम कालु न सूझै ।
ऐथै[8] कमाणा सु अगै आइआ अंत कालि किआ कीजै हे । ५ ।
जो सचि लागे तिन साची सोइ । दूजै[9] लागे मनमुखि रोइ ।
दुहा सिरिआ[10] का खसमु[11] है आपे आपे गुण महि भीजै हे । ६ ।
गुर कै सबदि सदा जनु सोहै[12] । नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ।
माइआ मोह मैलु पतंगु[13] न लागै गुरमती हरिनामि भीजै हे । ७ ।
सभना विचि वरतै[14] इकु सोई । गुरपरसादी परगटु होई ।
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ[15] साचै अंमृतु पीजै हे । ८ ।
किलबिख[16] दूख निवारणहारा । गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ।
सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे । ९ ।
माइआ अगनि जलै संसारे । गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ।
अंतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे । १० ।
इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ[17] पावहि जमु न छोडै बहु करम कमावहि ।
सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईऐ हरि हरि रसना पीजै हे । ११ ।
मनमुखि अंतरि भगति न होई । गुरमुखि भगति सांति सुखु होई ।
पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे । १२ ।
ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी । त्रैगुण बधक मुकति निरारी ।
गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु[18] नामु रवीजै[19] हे । १३ ।

---

1) जाना नहीं 2) स्वयं ही कृपा कर के प्रतिष्ठा प्रदान करता है 3) अहंभाव 4) स्मरण करती है 5) आयु व्यतीत हो गई 6) ना-समझ 7) घड़ी और मुहूर्त्त देखता रहता है 8) यहाँ, इस संसार में 9) द्वैत-भाव 10) दोनों किनारों का 11) स्वामी 12) सुशोभित है 13) थोड़ी सी, किंचित् 14) में व्याप्त है 15) नाम 16) पाप 17) भय 18) प्रतिदिन 19) स्मरण करता है

बेद पड़हि हरिनामु न बूझहि । माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि[1] ।
अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउकरि दुतरु[2] तरीजै हे । १४ ।
बेद बाद सभि आखि वखाणहि[3] । न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ।
पुंनु पापु सभु बेदि दृड़ाइआ गुरमुखि अंमृतु पीजै हे । १५ ।
आपे साचा एको सोई । तिसु बिनु दूजा[4] अवरु न कोई ।
नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे । १६ । ६ ।

सचै सचा तखतु रचाइआ । निज घरि वसिआ तिथै[5] मोहु न माइआ ।
सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे । १ ।
सचा सउदा सचु वापारा । न तिथै भरमु न दूजा पसारा[6] ।
सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै[7] बूझै को वीचारी हे । २ ।
सचै लाए से जन लागे । अंतरि सबद मसतकि वडभागे[8] ।
सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे । ३ ।
सचो सचा सचु सालाही । एको वेखा दूजा नाही[9] ।
गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी[10] गिआनि रतनि हउमै[11] मारी हे । ४ ।
माइआ मोहु सबदि जलाइआ । सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ[12] ।
सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा[13] निवारी हे । ५ ।
माइआ मोहु सभु आपे कीना । गुरमुखि विरलै किनही चीना ।
गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी[14] हे । ६ ।
कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई । हउमै तृसना सबदि बुझाई ।
गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे । ७ ।
सचि लगे तिन सभु किछु भावै । सचै सबदे सचि सुहावै ।
ऐथै[15] साचे से दरि साचे नदरी नदरि[16] सवारी हे । ८ ।
बिनु साचे जो दूजै लाइआ । माइआ मोह दुख सबाइआ ।
बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे । ९ ।

---

1) झगड़ते है, वाद-विवाद करते हैं 2) दुस्तर 3) कहकर बखान करते हैं 4) दूसरा 5) वहाँ पर 6) द्वैत-भाव का प्रसार 7) कभी खत्म नहीं होता 8) बड़े भाग्य वालों के 9) एक को देखता है, दूसरा कोई नहीं है 10) सीढ़ी 11) अहंभाव 12) तुम्हें अच्छा लगा 13) तृष्णा, प्यास 14) श्रेष्ठ, उत्तम 15) यहाँ पर, इस लोक में 16) कृपालु ने कृपा-दृष्टि से

साचा सबदु जिना मनि भाइआ[1] । पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ।
सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते बीचारी हे । १० ।
गुर की सेवा मीठी लागी । अनदिनु[2] सूख सहज समाधी ।
हरि हरि करतिआ[3] मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे । ११ ।
से जन सुखीए सतिगुरि सचे लाए । आपे भाणे[4] आपि मिलाए ।
सतिगुरि राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे । १२ ।
गुरमुखि साचा सबदि पछाता । ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ।
एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना[5] जीआ का आधारी हे । १३ ।
हउमै मेरा दूजा भाइआ[6] । किछु न चलै धुरि खसमि[7] लिखि पाइआ ।
गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे । १४ ।
जा तू देहि सदा सुखु पाए । साचै सबदे साचु कमाए ।
अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे । १५ ।
आपे वेखै[8] हुकमि चलाए । अपणा भाणा[9] आपि कराए ।
नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे । १६ । ७ ।

आपे आपु उपाइ उपंना[10] । सभ महि वरतै एकु परछंना[11] ।
सभना सार[12] करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे । १ ।
जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए । सिरि सिरि धंधै आपे लाए ।
जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता[13] हे । २ ।
आवागउणु है संसारा । माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ।
थिरु[14] साचा सालाही सदही जिनि गुर का सबदु पछाता हे । ३ ।
इकि मूलि लगे ओनी[15] सुखु पाइआ । डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ।
अंमृत फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अमृत बाता[16] हे । ४ ।
हम गुण नाही किआ बोलह बोल । तू सभना देखहि तोलहि तोल ।
जिउ भावै[17] तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे । ५ ।

---

1) अच्छा लगता है 2) प्रतिदिन 3) करते हुए 4) इच्छा 5) सभी 6) अहंभाव और अपनेपन की भावना द्वैत-भाव है 7) स्वामी 8) देखता है 9) इच्छा, मरज़ी 10) उत्पन्न हुआ है, प्रकट हुआ है 11) परिच्छन्न, ढका हुआ 12) देख-भाल 13) जान लिया है 14) स्थिर 15) उन्होंने 16) बातें 17) अच्छा लगे

जा तुधु भाणा[1] ता सची कारै लाए । अवगण छोडि गुण माहि समाए ।
गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे । ६ ।
जह देखा तह एको सोई । दूजी[2] दुरमति सबदे खोई ।
एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद[3] राता हे । ७ ।
काइआ कमलु है कुमलाणा[4] । मनमुखु सबदु न बुझै इआणा[5] ।
गुरपरसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे । ८ ।
कोट गहीं[6] के पाप निवारे । सदा हरि जीउ राखै उरधारे ।
जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे । ९ ।
मनमुखु गिआनु कथे न होई । फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ।
गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता[7] हे । १० ।
मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए । अंतरि सबदु नाही किउ दरि[8] जाए ।
गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे । ११ ।
जह देखा तू सभनी थाई[9] । पूरै गुरि सभ सोझी पाई ।
नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता[10] हे । १२ ।
नामे राता पवितु सरीरा । बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ।
आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे । १३ ।
पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई । विणु[11] नावै मुकति किनै त पाई ।
नामे नामि मिलै वडिआई[12] सहजि रहै रंगि राता हे । १४ ।
काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी[13] । बिनु सबदै चूकै नही फेरी[14] ।
साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता[15] हे । १५ ।
जिस नो नदरि[16] करे सो पाए । साचा सबदु वसै मनि आए ।
नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे । १६ । ८ ।

आपे करता सभु जिसु करणा । जीअ जंत सभि तेरी सरणा ।
आपे गुपतु वरतै[17] सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे । १ ।

---

1) इच्छा हो 2) द्वैत-भावना 3) सदा 4) नष्ट हो जाना है 5) ना समझ 6) शरीर रूपी दुर्ग जो पापों से ग्रस्त है 7) जान लिया है 8) परमधाम 9) स्थानों पर 10) लीन, मगन 11) बिना 12) बड़ाई 13) गिर कर ढेर हो जाएँगे 14) आवागमन 15) जान लिया है 16) कृपा-दृष्टि 17) व्याप्त है

हरि के भगति भरे भंडारा । आपे बखसे[1] सबदि वीचारा ।
जो तुधु भावै[2] सोई करसहि[3] सचे सिउ मनु राता[4] हे । २ ।
आपे हीरा रतनु अमोलो[5] । आपे नदरी[6] तोले तोलो ।
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे । ३ ।
जिस नो नदरि होवै धुरि[7] तेरी । मरै न जंमै चूकै फेरी[8] ।
साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता[9] हे । ४ ।
माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ । ब्रहमा बिसनु देव सबाइआ ।
जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआनमती पछाता हे । ५ ।
पाप पुंन वरतै संसारा । हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ।
गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे । ६ ।
किरतु न कोई मेटणहारा । गुर कै सबदे मोख दुआरा ।
पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे । ७ ।
माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै । दूजै भाइ[10] घणा[11] दुखु आगै ।
मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंतकालि पछुताता हे । ८ ।
हरि कै भाणै[12] हरि गुण गाए । सभि किलबिख[13] काटे दूख सबाए ।
हरि निरमल निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे । ९ ।
जिस नो नदरि करे सो गुणनिधि[14] पाए । हउमै मेरा[15] ठाकि रहाए ।
गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे । १० ।
मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा । आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ।
आपे बखसे सचु दृड़ाए मनु तनु साचै राता हे । ११ ।
मनु तनु मैला विचि[16] जोति अपारा । गुरमति बूझै करि वीचारा ।
हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे । १२ ।
गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा । तिसु विचि नामु है अति अपारा ।
गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे । १३ ।

---

1) कृपा करता है 2) जो तुम्हें अच्छा लगेगा 3) वही करेगा 4) अनुरक्त, लीन 5) जिस का कोई मूल्य न हो 6) कृपा-दृष्टि 7) परमधाम से 8) आवागमन 9) पहचाना है 10) द्वैत-भाव 11) अत्यधिक 12) इच्छा, भावना 13) पाप 14) परमात्मा 15) अहंभाव और अपनेपन की भावना 16) अंतर में

रतनु अमोलकु[1] अगम अपारा । कीमति कवणु करे वेचारा ।
गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे । १४ ।
सिमृति सासत्र बहुतु बिसथारा[2] । माइआ मोहु पसरिआ पासारा[3] ।
मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे । १५ ।
आपे करता करे कराए । सची बाणी सचु दृड़ाए ।
नानक नामु मिलै वडिआई[4] जुगि जुगि एको जाता हे । १६ । ९ ।

सो सचु सेविहु सिरजणहारा । सबदे दूख निवारणहारा ।
अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा[5] हे । १ ।
आपे सचा सचु वरताए । इकि जन साचै आपे लाए ।
साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे । २ ।
धुरि[6] भगता मेले आपि मिलाए । सची भगती आपे लाए ।
साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा[7] हे । ३ ।
गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि । एकस बिनु को अवरु न जाणहि ।
सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा[8] हे । ४ ।
आपे साजे सृसटि उपाए । विरले कउ गुर सबदु बुझाए ।
सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा[9] हे । ५ ।
भंनै[10] घड़े सवारे साजे । माइआ मोहि दूजै जंत पाजे[11] ।
मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा[12] गलि फाहा हे । ६ ।
आपे बखसे[13] गुर सेवा लाए । गुरमती नामु मंनि वसाए ।
अनदिनु[14] नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे । ७ ।
आपे सचा सची नाई[15] । गुरमुखि देवै मंनि वसाई ।
जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा[16] हे । ८ ।
अगम अगोचरु कीमति नही पाई । गुरपरसादी मंनि वसाई ।
सदा सबदि सालाही गुण दाता लेखा कोई न मंगै ताहा[17] हे । ९ ।

---

1) जिस का मूल्य आँका न जा सके 2) विस्तार पूर्वक 3) प्रकार फैला हुआ है 4) बड़ाई, प्रतिष्ठा 5) जिस की गहराई (गंभीरता) को पाया न जा सके 6) परमधाम से 7) लाभ 8) व्यवसाय 9) फांसी, फंदा 10) फोड़ता है 11) द्वैत-भाव में जनता को खचित किया है 12) रस्सा 13) कृपा-पूर्वक 14) प्रतिदिन 15) नाम 16) कलह 17) उसका, उस से

ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा । अंतु न पावहि अलख अभेवा[1] ।
जिन कउ नदरि[2] करहि तू अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे । १० ।
पूरै सतिगुरि सोझी पाई । एको नामु मंनि वसाई[3] ।
नामु जपि तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा[4] हे । ११ ।
सेवक सेवहि मंनि हुकमु[5] अपारा । मनमुख हुकम न जाणहि सारा ।
हुकमे मंने हुकमे वडिआई[6] हुकमे वेपरवाहा हे । १२ ।
गुरपरसादी हुकमु पछाणै । धावतु राखै इकतु घरि आणै[7] ।
नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा[8] हे । १३ ।
सभ जग महि वरतै[9] एको सोई । गुरपरसादी परगटु होई ।
सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे । १४ ।
सदा भगत तेरी सरणाई । अगम अगोचर कीमति नही पाई ।
जिउ तुधु भावहि[10] तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे । १५ ।
सदा सदा तेरे गुण गावा । सचे साहिब तेरै मनि भावा ।
नानकु साचु कहै बेनंती[11] सचु देवहु सचि समाहा हे । १६ । १ । १० ।

सतिगुरु सेवनि से वडभागी[12] । अनदिनु साचि नामि लिव लागी ।
सदा सुखदाता रविआ[13] घट अंतरि हउमै सचै ओमाहा[14] हे । १ ।
नदरि[15] करे ता गुरु मिलाए । हरि का नामु मंनि वसाए ।
हरि मन वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे । २ ।
कृपा करे ता मेलि मिलाए । हउमै[16] ममता सबदि जलाए ।
सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि[17] काहा[18] हे । ३ ।
बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा । बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ।
जो सबदि रातै महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा[19] हे । ४ ।
दुखु सुखु करतै धुरि[20] लिखि पाइआ । दूजा भाउ[21] आपि वरताइआ ।
गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा[22] हे । ५ ।

---

1) जिसका भेद न पाया जा सके 2) कृपा-दृष्टि 3) बसा लिया है 4) गुण-निधान परमात्मा का धाम प्राप्त होता है 5) आज्ञा, आदेश 6) प्रतिष्ठा 7) लाता है 8) उस के 9) व्याप्त 10) तुझे अच्छा लगे 11) विनय 12) बड़े भाग्य वाले 13) रमण कर रहा है 14) उत्साह 15) कृपा-दृष्टि 16) अहंभाव 17) साथ, से 18) कलह 19) लाभ 20) परमधाम 21) द्वैत-भाव 22) विश्वास

से मनमुख जो सबदु न पछाणहि । गुर के भै की सार न जाणहि ।
भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा[1] हे । ६ ।
अकरिओ[2] जमु मारिआ न जाई । गुर कै सबदे नेड़ि[3] न आई ।
सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे । ७ ।
हरि जीउ की है सभ सिरकारा[4] । एहु जमु किआ करे विचारा ।
हुकमी बंदा[5] हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा[6] हे । ८ ।
गुरमुखि साचै कीआ अकारा । गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा[7] ।
गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा[8] हे । ९ ।
गुरमुखि जाता[9] करमि बिधाता । जुग चारे गुर सबदि पछाता ।
गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि सबदि समाहा[10] हे । १० ।
गुरमुखि नामि सबदि सालाहे । अगम अगोचर वेपरवाहे ।
एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा[11] हे । ११ ।
गुरमुखि सांति सदा सुखु पाए । गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ।
गुरमुखि होवै सो नामु बूझै कटे दूरमति फाहा[12] हे । १२ ।
गुरमुखि उपजै साचि समावै । ना मरि जंमै न जूनी पावै ।
गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा[13] हे । १३ ।
गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे[14] । सची बाणी सबदि सवारे ।
अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा[15] हे । १४ ।
सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए । अनदिनु भगति करहु लिव लाए ।
हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे । १५ ।
गुण का दाता सचा सोई । गुरमुखि विरला बूझै कोई ।
नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे । १६ । २ । ११ ।

हरि जीउ सेविहु अगम अपारा । तिसदा[16] अंतु न पाईऐ पारावारा ।
गुरपरसादि रविआ[17] घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा[18] हे । १ ।

---

1) श्वास निकाल लेगा 2) न पकड़ा जा सकने वाला 3) समीप 4) शासन 5) परमात्मा के आदेश में बंधा है 6) श्वास निकालता है 7) प्रसार 8) उस को 9) जान लिया है 10) समाहित है 11) विश्वास 12) फंदा 13) लाभ प्राप्त करते हैं 14) प्रभु के दरबार में 15) जाते हैं 16) उसका 17) रमण कर रहा है 18) अत्यधिक ज्ञान

सभ महि वरतै एको सोई । गुरपरसादी परगटु होई ।
सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु संबाहा[1] हे । २ ।
पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ । हुकमे[2] ही सभु जगतु उपाइआ ।
हुकमु मंने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा[3] पातिसाहा हे । ३ ।
सचा सतिगुरु सबदु अपारा । तिसदै सबदि निसतरै संसारा ।
आपे करता करि करि वेखै[4] देदा सास गिराहा[5] हे । ४ ।
कोटि मधे किसहि बुझाए । गुर कै सबदि रते रंगु लाए ।
हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा[6] हे । ५ ।
सतिगुरु सेवहि से जन साचे । जो मरि जंमहि काचनिकाचे[7] ।
अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा[8] हे । ६ ।
सतिगुरु पूरा साचु दृड़ाए । सचै सबदि सदा गुण गाए ।
गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा[9] हे । ७ ।
सदा हदूरि[10] गुरमुखि जापै । सबदे सेवै सा जनु ध्रापै[11] ।
अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा[12] हे । ८ ।
अगिआनी अंधा बहु करम दृड़ाए । मनहठि करम फिरि जोनी पाए ।
बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा[13] हे । ९ ।
पूरा सतिगुरु भगति दृड़ाए । गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ।
मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा[14] हे । १० ।
मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु । गुर कै सबदि भगति निसतारणु ।
मेरा प्रभु साचा सद[15] ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे । ११ ।
से भगत सचे तेरै मनि भाए । दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ।
साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा[16] हे । १२ ।
जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही । गुर कै सबदि सदा सालाही ।
सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सालाहा हे । १३ ।

---

1) आजीविका पहुँचाता है 2) आदेश से 3) शाह, राजा 4) देखता 5) श्वास और ग्रास प्रदान करता है 6) स्तुति 7) अत्यधिक कच्चे 8) जिस की गंभीरता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता 9) मुहूर्त्त लिखता है 10) पास, सामने 11) तृप्त होता है 12) उत्साह 13) दुविधा 14) सराहना 15) सदा 16) विश्वास अथवा व्यवसाय

बिनु सबदै तुधु नो[1] कोई न जाणी[2] । तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ।
आपे सबदु सदा गुरु दाता हरिनामु जपि संबाहा[3] हे । १४ ।
तू आपे करता सिरजणहारा । तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा[4] ।
गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा[5] हे । १५ ।
भगत सचे तेरै दरवारे । सबदे सेवनि भाइ[6] पिआरे ।
नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा[7] हे । १६ । ३ । १२ ।

मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ । कोइ न किस ही जेहा[8] उपाइआ ।
आपे फरकु करे वेखि बिगसै[9] सभि रस देही माहा[10] हे । १ ।
वाजे पउणु तै आपि वजाए । सिव सकती देही महि पाए ।
गुरपरसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे । २ ।
अंधेरा चानणु[11] आपे कीआ । एको वरतै अवरु न बीआ[12] ।
गुरपरसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै[13] बुधि ताहा हे । ३ ।
अपणी गहण[14] गति आपे जाणै । होरु[15] लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै[16] ।
गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे । ४ ।
देही अंदरि वसतु अपारा । आपे कपट[17] खुलावणहारा ।
गुरमुखि सहजे अंमृतु पीवै तृसना अगनि बुझाहा हे । ५ ।
सभि रस देही अंदरि पाए । विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ।
अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा[18] हे । ६ ।
विणु[19] चाखे सादु किसै न आइआ । गुर कै सबदि अंमृतु पीआइआ ।
अमृत पी अमरापदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा[20] हे । ७ ।
आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै । गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै[21] ।
अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु चुकाहा हे । ८ ।
गुर सेवा ते सभु किछु पाए । हउमै मेरा[22] आपु गवाए ।
आपे कृपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा[23] हे । ९ ।

1) तुम्हें 2) जानता नहीं 3) (आजीविका) पहुंचाने वाला है 4) मिटाने वाला नहीं है 5) उसको 6) प्रेमपूर्वक 7) सुशोभित 8) जैसा 9) देख कर प्रसन्न होता है 10) में, अंतर में 11) प्रकाश 12) दूसरा 13) विकसित होता है 14) गहन, गंभीर 15) अन्य, और 16) कह कर बखान करते हैं 17) कपाट, किवाड़ 18) किस लिए जाते हो 19) बिना 20) उसे, उसको 21) बखान करता है 22) अहंभाव और अपनेपन की भावना 23) सुशोभित

गुर का सबदु अंमृत है बाणी। अनदिनु[1] हरि का नामु वखाणी।
हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे। १०।
सेवक सेवहि सबदि सलाहहि। सदा रँगि राते हरि गुण गावहि।
आपे बखसे[2] सबदि मिलाए परमल[3] वासु मनि ताहा हे। ११।
सबदे अकथु कथे सालाहे। मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे।
आपे गुण दाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे। १२।
मनमुखु भूला ठउर न पाए। जो धुरि लिखिआ[4] सु करम कमाए।
बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे। १३।
आपे आपि आपि सालाहे। तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे[5]।
तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा[6] हे। १४।
बिनु गुर दाते कोइ न पाए। लख कोटी जे करम कमाए।
गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे। १५।
से जन मिले धुरि[7] आपि मिलाए। साची बाणी सबदि सुहाए।
नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी[8] समाहा हे। १६। ४। १३।

निहचलु एकु सदा सचु सोई। पूरे गुर ते सोझी होई।
हरि रसि भीने[9] सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा[10] है। १।
अंदरि रंगु सदा सचिआरा। गुर कै सबदि हरि नाम पिआरा।
नउनिधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा[11] हे। २।
रईअति[12] राजे दुरमति दोई[13]। बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई।
एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा[14] हे। ३।
आवणु जाणा[15] रखै न कोई। जंमणु मरणु तिसै ते होई।
गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै त पाहा[16] हे। ४।
सचु संजमु सतिगुरु दुआरै। हउमै[17] क्रोधु सबदि निवारै।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा[18] हे। ५।

---

1) प्रतिदिन 2) कृपा कर के 3) चंदन 4) परमधाम से लिखा हुआ मिला है 5) तुम्हीं में 6) जिस की गहराई का अनुमान न किया जा सके 7) आदि काल से, परमधाम से 8) गुणों वाले प्रभु 9) भीगे हुए, लिप्त 10) शील ही उनका कवच है 11) लाभ 12) प्रजा 13) द्वैत-भाव 14) उनका 15) आवागमन 16) उसी से प्राप्त होती है 17) अहंभाव 18) उसका

हउमै[1] मोहु उपजै संसारा । सभु जगु बिनसै नामु विसारा ।
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा[2] हे । ६ ।
सचा अमरु[3] सबदि सुहाइआ[4] । पंच सबद मिलि वाजा वाइआ ।
सदा कारजु सचि नामि सुहेला[5] बिनु सबदै कारजु केहा[6] हे । ७ ।
खिन महि हसै खिन महि रोवै । दूजी[7] दुरमति कारजु न होवै ।
संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा[8] हे । ८ ।
जीवन मुकति गुर सबदु कमाए । हरि सिउ सद ही रहै समाए ।
गुर किरपा ते मिलै वडिआई[9] हउमै रोगु न ताहा[10] हे । ९ ।
रस कस[11] खाए पिंडु वधाए[12] । भेख करै गुर सबदु न कमाए ।
अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे । १० ।
बेदु पड़हि पड़ि बादु वखाणहि[13] । घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ।
गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे । ११ ।
घरि वथु[14] छोडहि बाहरि धावहि । मनमुख अंधे सादु न पावहि ।
अनरस[15] राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे । १२ ।
मनमुख देही भरमु भतारो[16] । दुरमति मरै नित होइ खुआरो ।
कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे । १३ ।
कंचन देही सबदु भतारो । अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ।
महला अंदरि गैर-महलु[17] पाए भाणा[18] बुझि समाहा हे । १४ ।
आपे देवै देवणहारा । तिसु आगै नही किसै का चारा ।
आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा[19] हे । १५ ।
जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा । सचा साहिबु ठाकुर मेरा ।
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे । १६ । ५ । १४ ।

गुरमुखि नाद बेद बीचारु । गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ।
गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा । १ ।

---

1) अहंभाव 2) लाभ 3) हुक्म, आदेश 4) सुशोभित है 5) आनंदित, सुखी 6) कैसा, कौन सा 7) द्वैत-भाव 8) कृत कर्मों के प्रभाव को हटाया नहीं जा सकता 9) बड़ाई 10) उसे, उसको 11) कसैला आदि छः प्रकार के रस 12) शरीर बढ़ा रहे हैं 13) बखान करते हैं 14) वस्तु 15) दूसरे रसों में, द्वैतभाव में 16) भ्रम रूपी पति 17) निवास-रहित 18) भावना, इच्छा 19) जिस की गंभीरता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता

घर ही अंदरि साचा सोई । गुरमुखि विरला बूझै कोई ।
नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा । १० ।
दिसंतरु भवै[1] अंतरु नही भाले[2] । माइआ मोहि बधा[3] जम काले ।
जम की फासी कबहू न तूटै[4] दूजै भाइ[5] भरमाइदा । ११ ।
जपु तपु संजमु होरु[6] कोई नाही । जब लगु गुर का सबदु न कमाही ।
गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा । १२ ।
काम करोधु सबल संसारा । बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा[7] ।
सतिगुरु सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा । १३ ।
पउणु पाणी है बैसंतरु । माइआ मोहु वरतै[8] सभ अंतरि ।
जिनि कीते[9] जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा । १४ ।
इकि माइआ मोहि गरबि विआपे । हउमै[10] होइ रहे है आपे ।
जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा । १५ ।
जिनि उपाए सो बिधि जाणै । गुरमुखि देवे सबदु पछाणै ।
नानक दासु कहै बेनंती[11] सचि नामि चितु लाइदा । १६ । २ । १६ ।

आदि जुगादि दइआपति दाता । पूरे गुर कै सबदि पछाता ।
तुधु नो[12] सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा । १ ।
अगम अगोचरु कीमति नही पाई । जीअ जंत तेरी सरणाई ।
जिउ तुधु[13] भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा । २ ।
है भी साचा होसी[14] सोई । आपे साजे अवरु न कोई ।
सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु[15] पहुचाइदा । ३ ।
अगम अगोचरु अलख अपारा । कोइ न जाणै तेरा परवारा ।
आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा । ४ ।
पाताल पुरीआ लोअ अकारा । तिसु विचि[16] वरतै हुकमु करारा ।
हुकमे[17] साजे हुकमे ढाहे[18] हुकमे मेलि मिलाइदा । ५ ।

---

1) घूमता फिरता है 2) हृदय में नहीं ढूँढता 3) बंधा हुआ 4) टूटती नहीं 5) द्वैत-भाव 6) अन्य, और 7) प्रसार 8) व्याप्त है 9) किया है 10) अहंभाव 11) विनय 12) तुमको 13) तुम्हें 14) होगा 15) आजीविका 16) में 17) अपनी आज्ञा से 18) गिराता है

हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे। अगम अगाचर वेपरवाहे।
जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा। ६।
अनदिनु[1] आरजा छिजदी[2] जाए। रैणि दिनसु दुइ साखी आए[3]।
मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रुआइदा[4]। ७।
मनु तनु सीतलु गुरचरणी लागा। अंतरि भरमु गइआ भए[5] भागा।
सदा अनंदु सचे गुण गावहिं सचु बाणी बोलाइदा। ८।
जिनि तू जाता[6] करम बिधाता। पूरै भागि गुर सबदि पछाता।
जति पति[7] सचु सचा सचु सोई हउमै[8] मारि मिलाइदा। ९।
मन कठोरु दूजै भाइ[9] लागा। भरमे भुला फिरै अभागा।
करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा। १०।
लख चउरासीह आपि उपाए। मानस जनमि गुर भगति दृड़ाए।
बिनु भगती बिसटा विचि[10] वासा[11] बिसटा विचि फिरि पाइदा। ११।
करमु होवै गुरु भगति दृड़ाए। विणु करमा किउ पाइआ जाए।
आपे करे कराए करता जिउ भावै[12] तिवै चलाइदा। १२।
सिमृति सासत[13] अंतु न जाणै। मूरखु अंधा ततु न पछाणै।
आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा। १३।
सभु किछु आपे आपि कराए। आपे सिरि सिरि धंधै लाए।
आपे थापि उथापे वेखै[14] गुरमुखि आपि बुझाइदा। १४।
सचा साहिबु गहिर गंभीरा। सदा सलाही ता मनु धीरा।
अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा। १५।
आपि निरालमु होर धंधै लोई[15]। गुरपरसादी बूझै कोई।
नानक नामु वसै घटि अंतरी गुरमती मेलि मिलाइदा। १६। ३। १७।

जुग छतीह कीओ गुबारा[16]। तू आपे जाणहि सिरजणहारा।
होर[17] किआ को कहै कि आखि वखाणै[18] तू आपे कीमति पाइदा। १।

1) प्रतिदिन 2) नष्ट होती जा रही है 3) दोनों साक्षी हैं 4) रुलाता है 5) भय 6) जान लिया है 7) जाति और प्रतिष्ठा 8) अहंभाव 9) द्वैत-भाव 10) में 11) निवास 12) अच्छा लगता है 13) शास्त्र 14) स्वयं निर्माण करके नष्ट करता है और देखता है 15) लोग 16) अंधकार 17) अन्य, और 18) कहकर बखान करते हैं

ओअंकारि सभ सृसटि उपाई । सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई[1] ।
आपे वेक[2] करे सभि साचा आपे मंनि[3] घड़ाइदा । २ ।
बाजीगरि इक बाजी पाई । पूरे गुर ते नदरी[4] आई ।
सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा । ३ ।
बाजहि बाजे धुनि आकारा । आपि वजाए वजावणहारा ।
घटि घटि पउणु वहै इकरंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा । ४ ।
करता करे सु निहचउ[5] होवै । गुर के सबदै हउमै[6] खोवै ।
गुरपरसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइआ । ५ ।
गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही[7] नामु मंनि वसै नामो सालाही ।
नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा । ६ ।
बिनु नावै सभ दुखु संसारा । बहु करम कमावहि वधहि[8] विकारा ।
नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा । ७ ।
आपि करे तै आपि कराए । गुरपरसादी किसै बुझाए ।
गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि[9] मुकती कै घरि पाइदा । ८ ।
गणत गणै[10] सो जलै संसारा । सहसा[11] मूलि न चुकै विकारा ।
गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा । ९ ।
जे सचु देइ त पाए कोई । गुरपरसादी परगटु होई ।
सचु नामु सालाहे रंगि राता[12] गुर किरपा ते सुखु पाइदा । १० ।
जपु तपु संजमु नामु पिआरा । किलविख[13] काटे काटणहारा ।
हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा । ११ ।
अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए । मैले करम करे दुखु पाए ।
कूड़ो कूडु करे वापारा[14] कूडु बोलि दुखु पाइदा । १२ ।
निरमल बाणी को मंनि वसाए । गुरपरसादी सहसा जाए ।
गुर कै भाणै[15] चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा । १३ ।

---

1) बड़ाई 2) भिन्न-भिन्न 3) फोड़ कर 4) दृष्टिगत 5) निश्चय ही 6) अहंभाव 7) गुरु की सेवा जितना बड़ा और कोई लाभ नहीं है 8) बढ़ता है 9) नष्ट करता है 10) व्यर्थ की सोच 11) संशय 12) प्रेम में अनुरक्त 13) पाप 14) झूठा व्यक्ति झूठ का व्यापार करता है 15) भावना, इच्छा

आपि सिरंदा[1] सचा सोई । आपि उपाइ खपाए सोई ।
गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा । १४ ।
अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई । कामि करोधि जलै सभु कोई ।
सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा । १५ ।
मेरा तेरा तुधु आपे कीआ[2] । सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ।
नानक नामु समालि[3] सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा । १६ । ४ । १८ ।

हरि जीउ दाता अगम अथाहा[4] । ओसु तिलु न तमाइ[5] वेपरवाहा ।
तिस नो अपड़ि[6] न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा । १ ।
जो किछु करै सु निहचउ होई । तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ।
जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुरसबदी मेलाइदा । २ ।
चउदह भवण तेरे हट नाले[7] । सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले[8] ।
नावै का वापारी होवै गुरसबदी को पाइदा । ३ ।
सतिगुरि सेविऐ सहज अनंदा । हिरदै आइ वुठा[9] गोविंदा ।
सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा । ४ ।
सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ । अनदिनु[10] मारीअहि दुखु सबाइआ ।
मथे काले महलु न पावहि[11] दुख ही विचि[12] दुखु पाइदा । ५ ।
सतिगुरु सेवहि से वडभागी[13] । सहज भाइ[14] सची लिवलागी ।
सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा । ६ ।
जिस नो सचा देइ सु पाए । अंतरि साचु भरमु चुकाए ।
सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा । ७ ।
आपे करता सभना का सोई । जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ।
आपे बखसे[15] दे वडिआई[16] आपे मेलि मिलाइदा । ८ ।
हउमै करदिआ[17] जनमु गवाइआ । आगै मोहु न चूकै माइआ ।
अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा[18] । ९ ।

1) सर्जना करने वाला 2) अपने और पराए की भावना तुम ने ही पैदा की है 3) स्मरण कर 4) जिस की थाह न पाई जा सके 5) उसे तिल मात्र भी लालच नहीं है 6) उसे कोई पहुँच नहीं पाता 7) १४ भुवन तुम्हारे बाज़ार हैं 8) साथ-साथ 9) बरस पड़ा, आनंदित अवस्था में आ गया 10) प्रतिदिन 11) दुर्भाग्य वाले परमधाम प्राप्त नहीं कर पाते 12) में 13) श्रेष्ठ भाग्य वाले 14) भाव से 15) कृपा करके 16) प्रतिष्ठा 17) अहंकार करते हुए 18) तिलों के समान कोल्हू में पेरता है

पूरै भागि गुर सेवा होई। नदरि[1] करे ता सेवे कोई।
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै[2] महलि[3] सचै पाइदा। १०।
तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए[4]। पूरै भागि गुर सेवा लाए।
तेरै हथि है सभ वडिआई[5] जिसु देवहि सो पाइदा। ११।
अंदरि परगासु[6] गुरु ते पाए। नामु पदारथु मंनि वसाए।
गिआन रतनु सदा घटि चानणु[7] अगिआन अंधेरु गवाइदा। १२।
अगिआनी अंधे दूजै[8] लागे। बिनु पाणी डुबि मूए अभागे।
चलदिआ घरु दरु नदरि[9] न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा। १३।
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई। गिआनी धिआनी पूछहु कोई।
सतिगुर सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा। १४।
सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए। ममता काटि सचि लिव लाए।
सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा[10] पाइदा। १५।
आपे करे कराए करता। सबदि मरै सोई जनु मुकता।
नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा। १६। ५। १९।

जो तुधु करणा सो करि पाइआ। भाणे विचि[11] को विरला आइआ।
भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा।१।
गुरमुखि तेरा भाणा भावै। सहजे ही सुखु सचु कमावै।
भाणे नो लोचै बहुतेरी[12] आपणा भाणा आपि मनाइदा। २।
तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु[13] आए। जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए।
भाणे विचि वडी वडिआई[14] भाणा किसहि कराइदा। ३।
जा तिसु भावै ता गुरु मिलाए। गुरमुखि नामु पदारथु पाए।
तुधु आपणै भाणै सभ सृसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा[15]। ४।
मनमुखु अंधु करे चतुराई। भाणा न मंने बहुतु दुखु पाई।
भरमे भूला आवै जाए घरु महलु[16] न कबहूं पाइदा। ५।

---

1) कृपा-दृष्टि 2) समीप नहीं आता 3) परमधाम 4) तुझे अच्छे लगे 5) बड़ाई 6) प्रकाश 7) प्रकाश 8) द्वैत-भाव 9) दृष्टिगत 10) लाभ 11) इच्छा के अनुरूप 12) बहुत अधिक 13) तुम्हें 14) परमात्मा की इच्छा के अनुरूप कार्य करने में बहुत अधिक प्रतिष्ठा है 15) अच्छा लगता है 16) परमधाम

सतिगुरु मेले दे वडिग्राई[1] । सतिगुर की सेवा धुरि[2] फुरमाई ।
सतिगुर सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा । ६ ।
सभ नावहु उपजै नावहु छीजै[3] । गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ।
रसना नामु धिग्राए रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा । ७ ।
महलै ग्रंदरि महलु को पाए[4] । गुर कै सबदि सचि चितु लाए ।
जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए सचे सचि मिलाइदा । ८ ।
नामु बिसारि मनि तनि दुखु पाइग्रा । माइग्रा मोहु समु रोगु कमाइग्रा ।
बिनु नावै मनु तनु है कुसटी[5] नरके वासा पाइदा । ९ ।
नामि रते तिन निरमल देहा । निरमल हंसा[6] सदा सुखु नेहा[7] ।
नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निजघरि वासा पाइदा ।१० ।
सभु को वणजु करे वापारा । विणु[8] नामै सभु तोटा[9] संसारा ।
नागो ग्राइआ नागो जासी[10] विणु नावै दुखु पाइदा । ११ ।
जिस नो नामु देइ सो पाए । गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ।
गुर किरपा ते नामु वसिग्रा अंतरि नामो नामु धिआइदा । १२ ।
नावै नो लोचै जेती सभ ग्राई[11] । नाउ तिना मिलै धुरि पूरबि[12] कमाई ।
जिनी नाउ पाइग्रा से वडभागी[13] गुर कै सबदि मिलाइदा । १३ ।
काइग्रा कोटु अति ग्रपारा । तिसु विचि[14] बहि प्रभु करे वीचारा ।
सचा निग्राउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा । १४ ।
ग्रंतर घर बंके थानु[15] सुहाइग्रा । गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ।
इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा । १५ ।
मेरै करतै इक बणत बणाई[16] । इसु देही विचि सभ वथु[17] पाई ।
नानक नामु वणजहि रंगि राते[18] गुरमुखि को नामु पाइदा । १६ । ६ । २० ।

काइग्रा कंचनु सबदु वीचारा । तिथै[19] हरि वसै जिस दा[20] अंतु न पारावारा[21] ।
ग्रनदिनु[22] हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा । १ ।

---

1) बड़ाई 2) आदि से, परमधाम से 3) नष्ट होते हैं 4) शरीर रूपी घर में प्रभु का निवास कोई विरला ही समझ पाता है 5) कुष्ठी, कोढ़ी 6) ग्रात्मा 7) स्नेह 8) बिना 9) घाटा, हानि 10) जाएगा 11) जितनी सृष्टि उत्पन्न हुई है 12) पूर्व काल में 13) श्रेष्ठ भाग्य वाले 14) में 15) सुन्दर स्थान 16) विधान किया है 17) वस्तु 18) प्रेम में अनुरक्त 19) वहाँ 20) जिसका 21) इस और उस किनारे का ग्रंदाज नहीं 22) प्रतिदिन

हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ । गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ।
तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि[1] गुण गाइदा । २ ।
हरि के गुण गावा[2] जे हरि प्रभ भावा[3] । अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा[4] ।
गुरबाणी चहु कुंडी[5] सुणीऐ साचै नामि समाइदा । ३ ।
सो जनु साचा जि अंतरु भाले[6] । गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले[7] ।
गिआन अंजनु पाए गुरसबदी नदरी नदरि[7] मिलाइदा । ४ ।
वडै भागि[8] इहु सरीरु पाइआ । माणस जनमि[9] सबदि चितु लाइआ ।
बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा । ५ ।
इकि कितु आए जनमु गवाए । मनमुख लागे दूजै भाए[10] ।
एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ[11] पछुताइदा । ६ ।
गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा । तिसु विचि[12] वसै सचु गुणी गहीरा[13] ।
सचो सचु वेखै सभ थाई[14] सचु सुणि मंनि वसाइदा । ७ ।
हउमै गणत[15] गुरसबदि निवारे । हरि जीउ हिरदै रखहु उरधारे ।
गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुख पाइदा । ८ ।
सो चेते जिसु आपि चेताए । गुर कै सबदि वसै मनि आए ।
आपे वेखै[16] आपे बूझै आपै आपु समाइदा । ९ ।
जिनि मन विचि वथु पाई[17] सोई जाणै । गुर कै सबदे आपु पछाणै ।
आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा । १० ।
एह काइआ पवितु है सरीरु । गुरसबदी चेतै गुणी गहीरु ।
अनदिनु[18] गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा । ११ ।
एहु सरीरु सभु मूलु है माइआ । दूजै भाइ[19] भरमि भुलाइआ ।
हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा । १२ ।
जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु[20] । काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ।
हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा । १३ ।

---

1) बैठ कर 2) गा सकता हूँ 3) अच्छा लगूं 4) शोभायमान है 5) चारों दिशाओं में 6) कृपा-दृष्टि से देखता है 7) कृपालु कृपा-दृष्टि से मिला लेता है 8) श्रेष्ठ भाग्य 9) मनुष्य जन्म 10) द्वैत-भाव 11) पैरों के फिसलने से 12) में 13) गंभीर गुणों वाला 14) सभी स्थानों में देखता है 15) अहं-भाव और सोच-चिंतन (दुविधा) 16) देखता है 17) मन में वस्तु प्राप्त कर ली 18) प्रतिदिन 19) द्वैत-भाव 20) स्वीकृत, प्रामाणिक

बिनु भागा[1] गुरु सेविआ न जाइ। मनमुख भूले मुए बिललाइ[2]।
जिन कउ नदरि[3] होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा। १४।
काइआ कोटु पके हट नाले[4]। गुरमुखि लेवै वसतु समाले।
हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा। १५।
आपे सचा है सुखदाता। पूरे गुर कै सबदि पछाता।
नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा। १६। ७। २१।
निरंकारि आकारु उपाइआ। माइआ मोहु हुकमि[5] बणाइआ।
आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा। १।
माइआ माई त्रैगुण परसूति जमाइआ। चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ।
वरे[6] माह वार थिती[7] करि इसु जग महि सोझी पाइदा। २।
गुर सेवा ते करणी सार[8]। राम नामु राखहु उरिधार।
गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा। ३।
वेदु पड़ै अनदिनु[9] वाद समाले। नामु न चेतै बधा[10] जम काले।
दूजै भाइ[11] सदा दुखु पाए त्रैगुण भरमि भुलाइदा। ४।
गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए। त्रिबिधि मनसा मनहि समाए।
साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा। ५।
जो धुरि राते से हुणि राते[12]। गुरपरसादी सहजे माते[13]।
सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा। ६।
माइआ मोहि भरमि न पाए। दूजै भाइ लगा दुखु पाए।
सूहा[14] रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा[15]। ७।
एहु मनु भै भाइ[16] रंगाए। इतु रंगि साचे माहि समाए।
पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा। ८।
मनमुखु बहुतु करे अभिमानु। दरगह कबही[17] न पावै मानु।
दूजै[18] लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा। ९।

---

1) भाग्य 2) विलाप करते हुए 3) कृपा-दृष्टि 4) साथ ही पक्के बाजार हैं 5) आज्ञा से 6) वर्ष 7) तिथि 8) श्रेष्ठ 9) प्रतिदिन 10) बंधा हुआ 11) द्वैत-भाव 12) जो आदि से (परमधाम से) अनुरक्त हैं' वही अब भी अनुरक्त हैं 13) मगन 14) लाल (कच्चा) 15) इसे जाते देर नहीं लगती है 16) प्रेम और भय 17) कभी 18) द्वैत

मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ[1] । गुरपरसादी हरि मिलै मिलाइआ ।
सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु[2] पाइदा । १० ।
इसु काइआ की कीमति किनै न पाई । मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई[3] ।
गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा । ११ ।
काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा[4] । गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ।
गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा । १२ ।
सचा महलु[5] सचे भंडारा । आपे देवै देवणहारा ।
गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा । १३ ।
काइआ विचि[6] वसतु कीमति नही पाई । गुरमुखि आपे दे वडिआई[7] ।
जिस दा[8] हटु सोई वथु[9] जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा । १४ ।
हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई । गुरपरसादी पाइआ जाई ।
आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा । १५ ।
आपे सचा सबदि मिलाए । सबदे विचहु[10] भरमु चुकाए ।
नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइदा । १६ । ८ । २२ ।

अगम अगोचर वेपरवाहे । आपे मिहरवान अगम अथाहे[11] ।
अपड़ि[12] कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ । १ ।
तुधु नो[13] सेवहि जो तुधु भावहि । गुर कै सबदे सचि समावहि ।
अनदिनु गुण रवहि[14] दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ । २ ।
सबदि मरहि से मरणु सवारहि । हरि के गुण हिरदै उरधारहि ।
जनमु सफलु हरि चरणी लागै दूजा भाउ[15] चुकाइआ । ३ ।
हरि जीउ मेले आपि मिलाए । गुर कै सबदे आपु गवाए ।
अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा[16] पाइआ । ४ ।
तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई । अंतु न पारा कीमति नहीं पाई ।
आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी[17] समाइआ । ५ ।

---

1) गुप्त रखा है 2) जिस का मूल्य न आंका जा सके 3) विधान किया है 4) शरीर में ही लाभ एवं हानि है 5) निवास 6) में 7) बड़ाई 8) का 9) वस्तु 10) अंतर से 11) जिस की थाह न पाई जा सके 12) पहुँच न सके 13) तुमको 14) स्मरण करे 15) द्वैत-भाव 16) लाभ 17) गुणों वाला प्रभु

इसु जग महि मोहु है पासारा[1] । मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ।
धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ । ६ ।
करमु[2] होवै ता सतिगुरु पाए । हउमै मैलु[3] सबदि जलाए ।
मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु[4] अगिआनु अंधेरु गवाइआ । ७ ।
तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई । सचु नामु हरि हिरदै वसाई ।
कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ । ८ ।
नामु अमोलकु[5] अगम अपारा । ना को होआ तोलणहारा ।
आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ । ९ ।
सेवक सेवहि करहि अरदासि[6] । तू आपे मेलि बहालहि[7] पासि ।
सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि[8] धिआइआ । १० ।
जतु सतु संजमु जि सचु कमावै । इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ।
इसु बिखु महि अंमृत परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ । ११ ।
जिसनो बुझाए सोई बूझै । हरि गुण गावै अंदरु सूझै ।
हउमै मेरा ठाकि रहाए[9] सहजे ही सचु पाइआ । १२ ।
बिनु करमा होर फिरै घनेरी । मरि मरि जंमै चुकै न फेरी[10] ।
बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू[11] पाइआ । १३ ।
बहुते भेख करे भेखधारी । बिनु सबदै हउमै[12] किनै न मारी ।
जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ[13] समाइआ । १४ ।
अगिआनु तृसना इसु तनहि जलाए । तिसदी[14] बूझै जि गुर सबदु कमाए ।
तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ । १५ ।
सचा साहिबु सची वडिआई[15] । गुर परसादी विरलै पाई ।
नानकु एकु कहै बेनंती[16] नामे नामि समाइआ । १६ । १ । २३ ।

नदरी[17] भगता लैहु मिलाए । भगत सलाहनि सदा लिव लाए ।
तउ सरणाई उबरहि करते[18] आपे मेलि मिलाइआ । १ ।

---

1) मोह का प्रसार है 2) कृपा-दृष्टि 3) अहंकार का मैल 4) प्रकाश 5) जिस का मूल्य न आंका जा सके 6) प्रार्थना 7) बिठाता है 8) भाग्य 9) अहंकार और अपनेपन की भावना को रोक कर रखे 10) आवागमन 11) कभी 12) अहंभाव 13) नाम 14) उसकी 15) बड़ाई 16) विनय 17) कृपा-दृष्टि से 18) प्रभु ने

पूरै सबदि भगति सुहाई[1] । अंतरि सुखु तेरै मनि भाई[2] ।
मन तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ । २ ।
हउमै विचि[3] सद जलै सरीरा । करमु[4] होवै भेटे गुरु पूरा ।
अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ । ३ ।
मनमुखु अंधा अंध कमाए । बहु संकट जोनी भरमाए ।
जम का जेवड़ा कदे न काटै[5] अंते बहु दुखु पाइआ । ४ ।
आवण जाणा[6] सबदि सिवारे । सचु नामु रखै उरधारे ।
गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ । ५ ।
आवण जाण परज विगोई[7] । बिनु सतिगुर थिरु[8] कोई न होई ।
अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति[9] मिलाइआ । ६ ।
पंच दूत चितवहि विकारा । माइआ मोह का एहु पसारा[10] ।
सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ । ७ ।
बाझु गुरु है मोहु गुबारा । फिरि फिरि डुबै वारोवारा[11] ।
सतिगुर भेटे सचु दृड़ाए सचु नामु मनि भाइआ । ८ ।
साचा दरु[12] साचा दरवारा । सचे सेवहि सबदि पिआरा ।
सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ । ९ ।
घरै अंदरि को घरु पाए[13] । गुर कै सबदे सहजि सुभाए ।
ओथै[14] सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ । १० ।
दूजै भाइ[15] दुसटा का वासा । भउदे फिरहि[16] बहु मोह पिआसा ।
कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ । ११ ।
सतिगुर बाझहु संगति न होई । बिनु सबदे पारु न पाए कोई ।
सहजे गुण रवहि[17] दिनु राती जोती जोति मिलाइआ । १२ ।
काइआ बिरखु पंखी विचि[18] वासा । अंमृतु चुगहि गुर सबदि निवासा ।
उडहि न मूले न आवहि न जाही निजघरि वासा पाइआ । १३ ।

---

1) सुशोभित है 2) अच्छी लगी है 3) अहंभाव में 4) भाग्य 5) यम का रस्सा कभी नहीं कटता 6) आवागमन 7) प्रजा नष्ट हो गई है 8) स्थिरता 9) आत्म-ज्योति परमात्म ज्योति में (मिल जाती है) 10) प्रसार 11) बार-बार 12) द्वार 13) शरीर रूपी घर में परमात्मा का निवास कोई ही पाता है 14) वहाँ 15) द्वैत-भाव 16) घूमते फिरते हैं 17) स्मरण करो 18) में

काइआ सोधहि सबदु वीचारहि । मोह ठगउरी[1] भरमु निवारहि ।
आपे कृपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ । १४ ।
सद ही नेड़ै[2] दूरि न जाणहु[3] । गुर कै सबदि नजीकि[4] पछाणहु ।
बिगसै कमलु[5] किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ । १५ ।
आपे करता सचा होई । आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ।
नानक नामु मिलै वडिआई[6] आपु गवाइ सुखु पाइआ । १६ । २ । २४ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १०४३-१०६९)

मारु वार

पउड़ी

गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा[7] ।
दूजा[8] भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ।
हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ।
सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ।
सभु सचो सचु वरतदा[9] सचु सिरजणहारा । १ ।

सलोकु

केदारा[10] रागा विचि[11] जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ।
सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ।
विचहु[12] मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ।
गुणा की रासि[13] संग्रहै अवगण कढै विडारि[14] ।
नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरु न छोडै आपणा दूजै[15] न धरे पिआरु । १ । १ ।

पउड़ी

निहकंटक राजु भुंचि[16] तू गुरमुखि सचु कमाई ।
सचै तखति बैठा निआउ[17] करि सत संगति मेलि मिलाई ।
सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई[18] ।
ऐथै[19] सुखदाता मनि वसै अंति होइ सखाई[20] ।
हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई । २ ।

---

1) ठगमूरी 2) समीप 3) न जानो 4) पास में 5) हृदय रूपी कमल खिलता है 6) प्रतिष्ठा 7) कठोर तलवार के समान 8) द्वैत-भाव 9) व्याप्त है 10) राग विशेष 11) में 12) अंतर से 13) मूलधन 14) चीर फाड़ कर निकाल दे 15) द्वैत में 16) दुःख रहित राज्य का भोग कर 17) न्याय 18) बन आई है 19) यहाँ 20) सहायक

सलोकु

आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ[1] ।
आपे किस ही बखसि लए[2] आपे कार कमाइ ।
नानक चानणु[3] आपे गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ । २ । २ ।

पउड़ी

माइआ वेखि[4] न भुलु तू मनमुख मूरखा[5] ।
चलदिआ नालि न चलई[6] सभु झूठु दरबु[7] लखा[8] ।
अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा[9] ।
गुरपरसादी उबरे जिनी हरि रसु चखा ।
आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा[10] । ३ ।

सलोकु

जिना गुरु नही भेटिया भै की नाहि बिंद[11] ।
आवणु जावणु[12] दुखु घणा कदे न चूकै चिंद[13] ।
कापड़ जिवै पछोड़ीऐ[14] घड़ी मुहत[15] घड़ीआलु ।
नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु । ११ । ३ ।

त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै[16] बुरी जगति ।
ना झुरु हीअड़े[17] सचु चउ[18] नानक सचो सचु । २ । ४ ।

पउड़ी

गुरमुखि आपे बखसिओनु[19] हरि नामि समाणे ।
आपे भगती लाइओनु[20] गुर सबदि नीसाणे[21] ।
सनमुख सदा सोहणे[22] सचै दरि जाणे ।
ऐथै ओथै[23] मुकति है जिन राम पछाणे ।
धंनु धंनु[24] से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे । ४ ।

पउड़ी

आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ।
किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ।
गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ।
हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस[25] ठाकि रहाइआ ।
हरि रसु पी सदा तृपति भए फिरि तृसना भुख गवाइआ । ५ ।

---

1) मरज़ी, इच्छा 2) क्षमा कर देता है 3) प्रकाश 4) देखकर 5) मूर्ख 6) (इस संसार से) चलने वालों के साथ चलती नहीं 7) धन 8) देखा है 9) भयानक 10) रक्षा, करता है 11) जिन में किंचित् भय नहीं है 12) आवागमन 13) चिंता कभी समाप्त नहीं होती 14) पछाड़े जाते हैं 15) मुहूर्त्त 16) अहंभाव 17) हृदय में मत झुरो 18) बोलो 19) कृपा-पूर्वक 20) लगाए हैं 21) निशान, चिह्न 22) सुंदर 23) इस और उस लोक में 24) धन्य 25) अन्य रस अथवा स्वाद

सलोकु

पिर खुसीऐ धन रावीए[1] धन उरि नामु सीगारु ।
नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि । १ । ५ ।

पउड़ी

तखति राजा सो बहै जि तखते लाइक होई ।
जिणि सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ।
एहि भूपति राजे न आखीअहि[2] दूजै भाइ[3] दुखु होई ।
कीता[4] किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई[5] ।
निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई । ६ ।

सलोकु

सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ।
नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि । १ । ६ ।

मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ।
जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार[6] कै ।
नानक गुरपरसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि । २ । ७ ।

पउड़ी

हरि का नामु अमोलु[7] है किउ कीमति कीजै ।
आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै[8] ।
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ।
गुर सबदी कमलु बिगासिआ[9] इव हरिरसु पीजै ।
आवण जाणा[10] ठाकिया सुखि सहजि सवीजै[11] । ७ ।

सलोकु

सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि[12] ।
नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु[13] । १ । ८ ।

पउड़ी

जो जन लूझहि[14] मनै सिउ से सूरे परधाना ।
हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ।
गिआनीआ का इहु महतु[15] है मन माहि समाना ।
हरि जीउ का महलु[16] पाइआ सचु लाइ धिआना ।
जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना[17] । ८ ।

---

1) रमण करता है 2) नहीं कहला सकते 3) द्वैत-भाव 4) किया हुआ 5) जिसे नष्ट होते देर नहीं लगती 6) प्रभु 7) जिस का मूल्य न आंका जा सके 8) व्याप्त है 9) प्रकाशित हुआ है 10) आवागमन 11) सोता है 12) गुरमुख रूपी भौंरा भय को दूर कर उस में बसता है 13) भौंरा 14) संघर्ष करते हैं 15) महत्त्व 16) परमधाम 17) जीत लिया है

सलोकु

जोगी होवा जगि भवा[1] घरि घरि भीखिआ लेउ ।
दरगह[2] लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ।
भिखिआ नामु संतोखु मड़ी[3] सदा सचु है नालि[4] ।
भेखी हाथ न लधीआ[5] सभ बधी[6] जमकालि ।
नानक गला[7] झूठीआ सचा नामु समालि । १ । ९ ।
जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ।
ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु[8] जिसु जेवडु[9] अवरु न कोइ ।
तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ।
सचु द्रिड़ाए सचु द्रिडु सचा ओउ सबदु देइ ।
हिरदै जिस दै सच है तनु मनु भी सचा होइ ।
नानक सचै हुकमि मंनीऐ सची वडिआई[10] देइ ।
सचे माहि समावसी[11] जिसनो नदरि[12] करेइ । २ । १० ।

पउड़ी

सूरे एहि न आखीअहि[13] अहंकारि मरहि दुखु पावहि ।
अंधे आपु न पछाणनी दूजै[14] पचि जावहि ।
अति करोध सिउ लूझदे[15] अगै पिछै दुखु पावहि ।
हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ।
अहंकारि मुए से विगती[16] गए मरि जनमहि फिरि आवहि । ९ ।

सलोकु

कागउ[17] होइ न ऊजला[18] लोहे नाव न पारु ।
पिरम[19] पदारथु मंनि लै धंनु सवारणहारु ।
हुकमु[20] पछाणै ऊजला सिरी कासट लोहा पार ।
तृसना छोडै भै वसै नानक करणीसारु[21] । १ । ११ ।
मारू मारण जो गए[22] मारि न सकहि गवार ।
नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ।
एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै[23] सभु कोइ ।
नानक मन ही कउ मनु मारसी[24] जे सतिगुरु भेटै सोइ । २ । १२ ।

---

1) घूमता फिरूँ 2) प्रभु के द्वार पर 3) कोठा 4) साथ 5) भेस से प्रभु की थाह नहीं पाई जा सकती 6) बंधी हुई 7) बातें 8) ढूंढ लो 9) जितना 10) बड़ाई 11) समा जाएगा 12) कृपा-दृष्टि 13) कहला नहीं सकते 14) द्वैत-भाव 15) झगड़ते हैं 16) मोक्ष से वंचित 17) कौआ 18) उज्ज्वल 19) परमात्मा के प्रेम का 20) आज्ञा 21) श्रेष्ठ 22) मरुस्थल अथवा वन में जो मन को मारने के लिए गए 23) चाहे 24) मारेगा

पउड़ी

दोवै तरफा उपाईओनु[1] विचि[2] सकति सिव वासा ।
सकती किनै न पाइओ फिरि जनमि बिनासा ।
गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास गिरासा ।
सिमृति सासत[3] सोधि देखु ऊतम हरि दासा ।
नानक नाम बिना को थिरु[4] नही नामे बलि जासा । १० ।

सलोकु

होवा पंडितु जोतकी[5] वेद पड़ा मुखि चारि ।
नवखंड मधे पूजीआ अपणै चजि[6] वीचारि ।
मतु सचा अखरु भुलि जाइ[7] चउकै भिटै न कोइ[8] ।
झूठे चउके नानका सचा एको सोइ । १ । १३ ।*
आपि उपाए करे आपि आपे नदरि[9] करेइ ।
आपे दे वडिआईआ[10] कहु नानक सचा सोइ । २ । १४ ।

पउड़ी

कंटकु कालु एकु है होरु[11] कंटकु न सुझै[12] ।
अफरिओ[13] जग महि वरतदा[14] पापी सिउ लूझै[15] ।
गुरसबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ।
सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ।
मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै[16] । ११ ।
मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ।
खिन महि मारि पछाड़सी[17] भाइ दूजै ठागे[18] ।
फिरि बेला हथि न आवई[19] जमका डंडु लागे ।
तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ।
सभ तेरी तुधु[20] छडावणी[21] सभु तुधै लागे । १२ ।

---

1) दोनों मार्ग (अच्छा और बुरा) पैदा किए हैं 2) में 3) शास्त्र 4) स्थिर 5) ज्योतिषी 6) चर्या, कर्मकांड 7) भूल जाए 8) चौके में कोई अपवित्र नहीं होता *इस श्लोक की प्रथम दो पंक्तियाँ 'श्लोक वारा ते वधीक' प्रसंग (आदि ग्रंथ, पृ. १४१३) के तीसरे श्लोक के रूप में भी संकलित हुई हैं। 9) कृपा-दृष्टि 10) प्रतिष्ठाएँ 11) और, अन्य 12) सूझता नहीं 13) न फिरने वाला 14) व्याप्त है 15) संघर्ष करता है 16) परमधाम में सफल मनोरथ होता है 17)पछाड़ेगा 18) द्वैत-भाव में ठगे हुए हैं 19) हाथ नहीं आता 20) तुमने 21) मुक्त कराना है

आपे पिंडु सवारिओनु विचि नवनिधि नामु।
इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु।
इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतमरामु।
इकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु।
अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु। १३।
जिनी अंदरु भालिआ[1] गुर सबदि सुहावै[2]।
जो इछनि सो पाइदे[3] हरिनामु धिआवै।
जिसनो कृपा करे तिसु गुर मिलै सो हरि गुण गावै।
धरम राइ तिन का मितु[4] है जम मणि न पावै[5]।
हरिनामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै। १४।
इसु जगु महि नामु निधानु है नामो नालि[6] चलै।
एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै[7]।
हरि जन नेड़ि[8] न आवई जम कंकर जमकलै[9]।
से साह[10] सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै।
हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै[11]। १५।

सलोकु

मनमुख वापारै सार[12] न जाणनी बिखु विहाझहि[13]।
बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु।
बाहरहु पंडित सदाइदे[14] मनहु मूरख गावार।
हरि सिउ चितु न लाइनी[15] वादी[16] धरनि पिआरु।
वादा कीआ करनि कहाणीआ[17] कूड़ु[18] बोलि करहि आहारु।
जग महि राम नाम हरि निरमला होरु[19] मैला सभु आकारु।
नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार। १। १५।

दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु[20] मने दुखु जाइ।
आपे दाता सुखै दा[21] आपे देइ सजाइ[22]।
नानक एवै जाणीऐ[23] सभु किछु तिसै रजाइ[24]। २। १६।

1) ढूंढा है 2) सुंदर 3) जिस की इच्छा करते हैं, वही प्राप्त करते हैं 4) मित्र 5) यम-मार्ग पर नहीं पड़ते 6) साथ 7) नाम रूपी खज़ाना अक्षुण्ण है कभी खत्म नहीं होता, खाने और खर्च करने पर भी कुछ कुछ बचा रहता है 8) समीप 9) यम-दूत और यमकाल 10) साहूकार 11) भेजता है 12) वास्तविकता 13) वाणिज्य करता है 14) कहलवाते हैं 15) नहीं लगाते 16) वाद विवाद में 17) वाद विवाद की कहानियाँ कहते हैं 18) झूठ 19) अन्य, और 20) आज्ञा 21) सुख का 22) दंड 23) इस प्रकार समझिए 24) मरज़ी, इच्छा

सलोकु

हरिनाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै तृपति नाही ।
दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ।
बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ।
आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि छुटाही ।
आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही । १६ ।

सलोकु

इसु जग महि संती[1] धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ।
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ इसु धंन की कीमति कही न जाइ ।
इतु धनि पाइऐ भुख लथी[2] सुखु वसिआ मनि आइ ।
जिन्हा कउ धुरि[3] लिखिआ तिनी पाइआ आइ ।
मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ[4] ।
अनदिनु[5] फिरदा सदा रहै भुख न कदे[6] जाइ ।
सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ।
सदा चिंत चितवदा रहै[7] सहसा[8] कदे न जाइ ।
नानक विणु[9] सतिगुर मति भवी[10] सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ।
सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ । १ । १७ ।

जिनि उपाई मेदनी[11] सोई सार[12] करेइ ।
एको सिमरहु भाइरहु[13] तिसु बिनु अवरु न कोइ ।
खाणा सबदु चंगिआईआ[14] जितु खाधै[15] सदा तृपति होइ ।
पैनणु सिफति सनाइ[16] है सदा सदा ओहु ऊजला[17] मैला कदे न होइ ।
सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ।
देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ।
नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले[18] सोइ । २ । १८ ।

पउड़ी

अंतरि जपु तपु संजमो गुरसबदी जापै[19] ।
हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै[20] अगिआनु गवावै[21] ।

1) संत-साधकों ने 2) भूख दूर हो गई 3) आदि काल से, परमात्मा के द्वार से 4) विलाप करने फिरते हैं 5) प्रतिदिन 6) कभी 7) चिंता से चिंतित रहता है 8) संशय 9) बिना 10) बुद्धि भ्रष्ट है 11) सृष्टि 12) देख-भाल, संभाल 13) भाइओ 14) अच्छे गुण 15) खाने से 16) उसकी स्तुति एवं यश को पहनना चाहिए 17) उज्ज्वल 18) दिखाता है 19) प्रतीत होता है 20) अहंभाव 21) नष्ट हो जाता है

अंदरु अंमृति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ।
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ।
हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै । १७ ।

सलोकु

लोकु अवगणा की बन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ।
गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ।
गुरपरसादी गुण पाईअनि जिस नो नदरि करेइ । १ । १९ ।
गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते[1] करतारि ।
नानक हुकमि[2] मंनिऐ सुखु पाईऐ गुरसबदी वीचारि । २ । २० ।

पउड़ी

अंदरि राजा तखतु हैं आपे करे निआउ[3] ।
गुरसबदी दर जाणीऐ अंदरि महलु असराउ[4] ।
खरे परखि खजाणै पाईअनि[5] खोटिआ नाही थाउ[6] ।
सभु सचो सचु वरतदा[7] सदा सचु निआउ ।
अमृत का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ । १८ ।

सलोक

मनु माणकु जिनि परखिआ गुरसबदी वीचारि ।
से जन विरले जाणीअहि[8] कलजुग विचि[9] संसारि ।
आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै[10] दुबिधा मारि ।
नानक नामि रते दुतरु[11] तरे भउजल बिखमु संसारु । २ । २१ ।

पउड़ी

मनमुख अंदरु न भालनी[12] मुठे अहंमते[13] ।
चारे कुंडा भवि थके अंदरि तिख तते[14] ।
सिमृति सासत[15] न सोधनी मनमुख विगुते[16] ।
बिनु गुर किनै न पाइओ हरिनामु हरि सते[17] ।
ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते[18] । १९ ।

---

1) किए हैं 2) आज्ञा 3) न्याय 4) आश्रय के लिए निवास स्थान है 5) डाले जाते हैं 6) स्थान 7) व्याप्त 8) समझने चाहिए 9) में 10) अहंभाव 11) दुस्तर 12) ढूंढते नहीं 13) अहं-बुद्धि के कारण लूटे हुए 14) चारों दिशाओं में घूम चुके हैं, परन्तु अंतर में जला देने वाली प्यास है 15) शास्त्र 16) नष्ट हो गए हैं 17) सत्यस्वरूप 18) गति होती हैं

सभे थोक विसारि इको मितु करि ।
मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ।
आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ।
सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ।
नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि । २० ।
भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ।
भाणै सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ।
भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइआ ।
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु समाइआ ।
नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु जगतु उपाइआ । २१ ।

सलोकु

जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिद[1] ।
नानक मुइआ[2] का किआ मारणा जि आपि मारे गोबिंद । १ । २२ ।
मन की पत्री वाचणी[3] सुखी हू सुखु सारु[4] ।
सो ब्रहमणु भला आखीऐ[5] जि बूझै ब्रहमु बीचारु ।
हरि सालाहे हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ।
आइआ ओहु परवाणु[6] है जि कुल का करे उधारु ।
अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ।
होरु कूड़ु पड़णा[7] कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि[8] पिआरु ।
अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ।
नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि । २ । २३ ।

पउड़ी

आपे करि करि वेखदा[9] आपे सभु सचा ।
जो हुकमु न बूझै खसम[10] का सोई नरु कचा ।
जितु भावै तितु लाइदा[11] गुरमुखि हरि सचा ।
सभना का साहिबु एकु है गुरसबदी रचा[12] ।
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिसदे जचा[13] ।
जिउ नानक आपि नचाइदा[14] तिव ही को नचा[15] । २२ । १ । सुधु ।

(आदिग्रंथ, पृ० १०८६-१०९४)

---

1) थोड़ा सा 2) मृत 3) पढ़नी चाहिए 4) श्रेष्ठ 5) कहा जाएगा 6) वह स्वीकृत है, वह प्रामाणिक है 7) अन्य किसी प्रकार का पढ़ना झूठा है 8) साथ, से 9) देखता है 10) स्वामी 11) लगाता है 12) व्यापक है 13) उसी कौतुक हैं 14) नचाता है 15) उसी प्रकार सभी नाचते हैं

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु भैरउ

चउपदे घरु १

जाति का गरबु न करीअहु काई ।
ब्रहमु बिंदे[1] सो ब्राहमणु होई । १ ।
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ।
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा । १ । रहाउ ।
चारे वरन आखै[2] सभु कोई ।
ब्रहमु बिंदु ते सभ ओपति होई[3] । २ ।
माटी एक सगल संसारा ।
बहु बिधि भांडे[4] घड़ै कुम्हारा । ३ ।
पंच ततु मिलि देही का अकारा ।
घटि वधि[5] को करै बीचारा । ४ ।
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई[6] ।
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई । ५ । १ ।

जोगी गृही पंडित भेख धारी ।
ए सूते अपणै अहंकारी । १ ।
माइआ मदि माता रहिआ सोइ ।
जागतु रहै न मूसै कोइ[7] । १ । रहाउ ।
सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ।
पंच दूत ओहु वसगति[8] करै । २ ।
सो जागै जो ततु बीचारै ।
आपि मरै अवरा नह मारै । ३ ।
सो जागै जो एको जाणै ।
परकिरति छाड ततु पछाणै[9] । ४ ।

---

1) ब्रह्म को जो जानता है 2) कहते हैं 3) ब्रह्म के वीर्य से सभी की उत्पत्ति हुई है 4) बरतन 5) कम अथवा अधिक 6) कर्मों का बंधा हुआ है 7) कोई लूटा नहीं जा सकता 8) वश में कर लेता है 9) दूसरों की सेवा (शूद्र-वृत्ति) का त्याग करके वास्तविक तत्त्व को पहचाने

चहु वरना विचि[1] जागै कोइ ।
जमै कालै[2] ते छूटै सोइ । ५ ।
कहत नानक जनु जागै सोइ ।
गिम्रान अंजनु जा की नेत्री होइ । ६ । २.।

जा कउ राखै अपणी सरणाई ।
साचे लागै साचा फलु पाई । १ ।
रे जन कै सिउ[3] करहु पुकारा ।
हुकमे[4] होम्रा हुकमे वरतारा[5] । १ । रहाउ ।
एहु म्राकारु तेरा है धारा[6] ।
खिन महि बिनसै करत न लागै बारा[7] । २ ।
करि प्रसादु इनु खेलु दिखाइम्रा ।
गुर किरपा ते परमपदु पाइम्रा । ३ ।
कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ।
ऐसा बुझहु भरमि न भूलहु कोइ । ४ । ३ ।

मै कामणि[8] मेरा कंतु[9] करतारु ।
जेहा[10] कराए तेहा करी सीगारु[11] । १ ।
जां तिसु भावै तां करे भोगु ।
तनु मनु साचे साहिब जोगु[12] । १ । रहाउ ।
उसतति निंदा करे किम्रा कोई ।
जां आपे वरतै[13] एको सोई । २ ।
गुरपरसादी पिरम कसाई[14] ।
मिलउगी दइम्राल पंच सबद वजाई[15] । ३ ।
भगति नानकु करे किम्रा कोइ ।
जिसनो आपि मिलावै सोइ । ४ । ४ ।

सो मुनि जि मन की दुबिधा[16] मारे ।
दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे । १ ।

---

1) चार वर्णों में 2) यम म्रौर काल से 3) किस से, किस के पास 4) आज्ञा 5) व्यापक होने का भाव 6) धारण किया हुआ है 7) देर नहीं लगती 8) नारी 9) पति 10) जैसा 11) शृंगार 12) योग्य, के लिए 13) व्याप्त 14) प्रेम की खींची हुई 15) पूर्ण आनंदमयी अवस्था में 16) द्विविधा

इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ।
मनु खोजत नामु नउनिधि पाई । १ । रहाउ ।
मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ।
ममता लाइ भरमि भुलाइआ[1] । २ ।
इसु मन ते सभ पिंड पराणा ।
मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा[2] । ३ ।
करमु[3] होवै गुरु किरपा करै ।
इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै । ४ ।
मन का सुभाउ सदा बैरागी ।
सभ महि वसै अतीतु[4] अनरागी[5] । ५ ।
कहत नानकु जो जाणै भेउ[6] ।
आदि पुरखु निरंजन देउ । ६ । ५ ।

राम नामु जगत निसतारा ।
भवजलु पारि उतारणहारा । १ ।
गुरपरसादी हरि नामु सम्हालि ।
सद ही निबहै तेरै नालि[7] । १ । रहाउ ।
नामु न चेतहि मनमुख गावारा ।
बिनु नावै कैसे पावहि पारा । २ ।
आपे दाति करे दातारु ।
देवणहारे कउ जैकारु । ३ ।
नदरि[8] करे सतिगुरु मिलाए ।
नानक हिरदै नामु वसाए । ४ । ६ ।

नामे सभि उधरे जितने लोअ[9] ।
गुरमुखि जिना परापति होइ । १ ।
हरि जीउ अपणी कृपा करेइ ।
गुरमुखि नामु वडिआई[10] देइ । १ । रहाउ ।

---

1) भ्रम में भुला दिया 2) हुक्म को समझ कर उस में समाना चाहिए 3) कृपा 4) सब से परे, त्याग वाला 5) राग-द्वेष से मुक्त 6) भेद 7) सदा तुम्हारे साथ निर्वाह करेगा 8) कृपा-दृष्टि 9) लोक 10) बड़ाई, प्रतिष्ठा

राम नामि जिन प्रीति पिआरु ।
आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु । २ ।
बिनु नावै मनमुख जमपुरि जाहि ।
अउखे होवहि[1] चोटा खाहि । ३ ।
आपे करता देवै सोइ ।
नानक नामु परापति होइ । ४ । ७ ।

गोबिद प्रीति सनकादिक[2] उधारे ।
राम नाम सबदि बीचारे । १ ।
हरि जीउ अपणी किरपा धारु ।
गुरमुखि नामे लगै पिआरु । १ । रहाउ ।
अंतरि प्रीति भगति साची होइ ।
पूरै गुर मेलावा होइ । २ ।
निजघरि वसै सहजि सुभाइ[3] ।
गुरमुखि नामु वसै[4] मनि भाइ । ३ ।
आपे वेखै वेखणहारु[5] ।
नानक नामु रखहु उरधारि । ४ । ८ ।

कलजुग महि राम नामु उरधारु ।
बिनु नावै माथै पावै छारु । १ ।
राम नामु दुलभु[6] है भाई ।
गुर परसादि वसै मनि आई । १ । रहाउ ।
राम नामु जन भालहि[7] सोइ ।
पूरे गुर ते प्रापति होइ । २ ।
हरि का भाणा मंनहि[8] से जन परवाणु[9] ।
गुर कै सबदि नाम नीसाणु[10] । ३ ।
सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ।
नानक गुरमुखि नामु पिआरि । ४ । ९ ।

---

१) कठिनाई में पड़ेंगे 2) ब्रह्मा के चार पुत्र 3) सहज भाव से 4) बसता है 5) देखने वाला देखता है 6) दुर्लभ 7) ढूंढता है 8) इच्छा मानते हैं 9) स्वीकृत, प्रामाणिक 10) निशान, चिह्न

कलजुग महि बहु करम कमाहि ।
ना रुति न करम थाइ पाहि[1] । १ ।
कलजुग महि राम नामु है सारु[2] ।
गुरमुखि साचा लगै पिआरु । १ । रहाउ ।
तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ।
गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ । २ ।
गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ।
राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ[3] । ३ ।
कलिजुग महि जीउ एकु होर रुति न काई[4] ।
नानक गुरमुखि हिरदै नामु लेहु जमाई[5] । ४ । १० ।

घरु २

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे[6] तृसना जलहि अधिकाई[7] ।
मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनम गवाई । १ ।
मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ।
हउमै[8] रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई । १ । रहाउ ।
सिम्रिति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ।
त्रैगुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई । २ ।
इकि आपे काढि[9] लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ।
हरि का नामु निधानो[10] पाइआ सुखु वसिआ[11] मनि आए । ३ ।
चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि[12] तिन निजघरि वासा पाइआ ।
पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ[13] । ४ ।
एकसु की सिरिकार[14] एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ।
नानक निहचलु साचा एको ना ओहु[15] मरै न जाइआ । ५ । १ । ११ ।

---

1) उचित मौसम नहीं है, कर्म उचित स्थान प्राप्त नहीं करते 2) श्रेष्ठ 3) तीन लोकों में 4) अन्य कोई मौसम नहीं है 5) उत्पन्न कर लो 6) राग-द्वेष में लीन रहते हैं 7) बहुत अधिक 8) अहंभाव 9) निकाल लेता है 10) सुखों का खज़ाना 11) बस गया 12) विचरण करता हैं 13) अंतर से अपने-पन की भावना को नष्ट कर दिया है 14) शासन 15) वह

मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ।
गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुरसबदी वीचारा । १ ।
हरि जीउ सतिसंगति मेलाइ ।
नानक तिसनो देइ वडिआई[1] जो राम नामि चितु लाइ । १ । रहाउ ।
ममता कालि सभि रोगि बिआपे[2] तिन जम की है सिरिकारा[3] ।
गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि[4] न आवै जिन हरि राखिआ उरिधारा । २ ।
जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता[5] से जग महि काहे आइआ ।
गुर की सेवा कदे न कीनी[6] बिरथा जनमु गवाइआ । ३ ।
नानक से पूरे वडभागी[7] सतिगुर सेवा लाए ।
जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए । ४ । २ । १२ ।

दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ[8] ।
गरभ जोनी विचि[9] कदे न निकलै बिसटा माहि समाइ । १ ।
धृगु धृगु मनमुखि जनमु गवाइआ ।
पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ । १ । रहाउ ।
गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिसनो हरि जीउ लाए ।
नामे नामि मिलै वडिआई[10] जिसनो मंनि वसाए । २ ।
सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख सारु[11] ।
से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु । ३ ।
तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइआ ।
नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ।
। ४ । ३ । १३ ।

सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ।
साची भगति करहि दिनु राती तां[12] तनि दुखु न होई । १ ।
भगतु भगतु कहै सभु कोई ।
बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई । १ । रहाउ ।
मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई[13] ।
जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ[14] पति[15] खोई । २ ।

1) बड़ाई, प्रतिष्ठा 2) व्याप्त है 3) शासन 4) समीप 5) गुरु के उपदेश द्वारा नहीं जाना 6) कभी नहीं की 7) श्रेष्ठ भाग्य वाले 8) दु:ख में ही कर्म करते हैं 9) में से 10) बड़ाई 11) तत्व 12) तब 13) लाभ कैसे हो सकता है 14) द्वैत-भाव 15) प्रतिष्ठा

बहले[1] भेख भवहि दिनु राती हउमै[2] रोगु न जाई ।
पड़ि पड़ि लूझहि[3] बादु वखरणाहि[4] मिलि माइआ सुरति गवाई । ३ ।
सतिगुरु सेवहि परमगति पावहि नामि मिलै वडिग्राई[5] ।
नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाइ । ४ । ४ । १४ ।

मनमुख ग्रासा नही उतरै दूजै भाइ खुग्राए[6] ।
उदरु नैसाणु[7] न भरीऐ कबहु तृसना अगनि पचाए । १ ।
सदा अनंदु राम रसि राते ।
हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अंमृतु पी तृपताते[8] । १ । रहाउ ।
आपे पारब्रहमु सृसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए ।
माइआ मोहु कीआ जिनि ग्रापे आपे दूजै लाए[9] । २ ।
तिसनो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै[10] माहि समाए ।
गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए[11] । ३ ।
सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु ग्राकारा ।
नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा । ४ । ५ । १५ ।

कलि महि प्रेत जिनी रामु न पछाता सतिजुग परमहंस बीचारी ।
दुग्रापुरि त्रेतै माणस बरतहि[12] विरलै हउमै[13] मारी । १ ।
कालि महि राम नामि बडिग्राई[14] ।
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता[15] विणु[16] नावै मुकति न पाई । १ । रहाउ ।
हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ।
आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई । २ ।
मेरा प्रभु है गुण का दाता अवगण सबदि जलाए ।
जिन मनि वसिग्रा से जन सोहे[17] हिरदै नामु वसाए । ३ ।
घरु दरु महलु सतिगुरु दिखाइग्रा रंग सिउ रलीग्रा माणै[18] ।
जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै[19] । ४ । ६ । १६ ।

---

1) बहुत ग्रधिक 2) अहंभाव 3) वाद-विवाद करते हैं 4) विवाद का बखान करते हैं 5) बड़ाई 6) द्वैत-भाव में नष्ट होते हैं 7) नदी के समान पेट 8) तृप्त होते हैं 9) द्वैत- भाव में लगाया है 10) तुम में ही 11) ग्रात्म-ज्योति ब्रह्म-ज्योति में मिल जाती है 12) विचरण करते हैं 13) अहंभाव 14) प्रतिष्ठा 15) जाना है 16) बिना 17) सुशोभित हैं 18) प्रेम पूर्वक मौज मनाते हैं 19) बखान करते हैं

मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ।
गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारोवार[1] । १ ।
मन मेरे राम नामु आधारु ।
गुरपरसादि परमपदु पाइआ सभ इछ पुजावनहारु[2] । १ । रहाउ ।
सभ महि एको रवि रहिआ[3] गुर बिनु बूझ न पाइ ।
गुरमुखि प्रगट होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु[4] हरि गुण गाइ । २ ।
सुखदाता हरि एकु है होरथै[5] सुखु न पाहि ।
सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि । ३ ।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ[6] ।
नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ[7] । ४ । ७ । १७ ।

बाझु गुरु जगतु बउराना[8] भूला चोटा खाई ।
मरि मरि जंमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई । १ ।
मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ।
हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा । १ । रहाउ ।
भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ।
अंतरि तिसा[9] भूख अति बहुती[10] भउकत फिरै दरबारु[11] । २ ।
गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ।
अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उरधारि । ३ ।
जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ।
नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई[12] । ४ । ८ । १८ ।

हउमै[13] माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुखु खाइ ।
अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ । १ ।
मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि[14] ।
राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे[15] न लागै पिआरु । १ । रहाउ ।

1) बार-बार 2) सभी इच्छाएँ पूर्ण करने वाला है 3) व्याप्त है 4) प्रतिदिन 5) अन्य स्थान पर 6) भाग कर नहीं लगता 7) आत्म-ज्योति परमात्म-ज्योति में समा जाती है 8) पागल 9) तृष्णा 10) अत्यधिक 11) द्वार-द्वार पर भूँकते फिरते हैं 12) प्रतिष्ठा 13) अहंभाव 14) संसार में मन के अनुसार चलने वाले व्यक्ति के जीवन को धिक्कार है 15) कभी

पसूआ करम करै नही बूझै कूडु[1] कमावे कूड़ो होइ ।
सतिगुरु मिलै त उलटी,होवै[2] खोजि लहै जनु कोइ । २ ।
हरि हरि नामु रिदै सदि वसिआ[3] पाइआ गुणी निधानु[4] ।
गुरपरसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु । ३ ।
आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ।
आपे गुरमुखि दे वडिआई[5] नानक नामि समाए । ४ । ९ । १९ ।

मेरी पटीआ[6] लिखहु हरि गोविंद गोपाला ।
दूजै भाइ फाथे जम जाला[7] ।
सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ।
हरि सुखदाता मेरे नाला[8] । १ ।
गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ।
सासना[9] ते बालकु गमु[10] न करै । १ । रहाउ ।
माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ।
पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ।
प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ।
राम नामु न छोडा[11] गुरि दीआ बुझाइ । २ ।
संडा मरका[12] सभि जाइ पुकारे ।
प्रहिलादु आपि विगड़िआ[13] सभि चाटड़े[14] विगाड़े ।
दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ।
प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ । ३ ।
हाथि खड़गु करि धाइआ[15] अति अहंकारि ।
हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ।
खिन महि भैआन[16] रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि[17] ।
हरनाखसु नखी बिदारिआ[18] प्रहलादु लीआ उबारि । ४ ।

---

1) झूठ 2) बुद्धि संसार से उलट कर हरिनाम में लग जाती है 3) बस गया 4) गुणों का खज़ाना, परमात्मा 5) बड़ाई 6) लिखने की तख्ती 7) द्वैत-भाव के फलस्वरूप यम-के जाल में फँस जाते हैं 8) साथ 9) यातना 10) गम नही करता, घबड़ाता नहीं 11) नहीं छोड़ूँगा 12) शुक्राचार्य के दो पुत्रों के नाम 13) बिगड़ गया है 14) चेले 15) भाग कर आया 16) भयंकर 17) स्तम्भ को फोड़कर 18) नाखूनों से चीर फाड़ दिया

संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ।
प्रहलाद जन के इकीह[1] कुल उधारे ।
गुर कै सबदि हउमै[2] कुल बिखु मारे ।
नानक राम नामि संत निसतारे । ५ । १० । २० ।

आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ[3] आपे राखा सोई ।
जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई । १ ।
जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ[4] ।
दैत पुत्र प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ । १ । रहाउ ।
अनदिनु[5] भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ।
सदा निरमल है जो सचि राते सच वसिआ[6] मनि सोई । २ ।
मूरख दुबिधा पढ़हि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ।
संत चना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ[7] । ३ ।
प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ[8] ।
संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ[9] । ४ ।
आपणी पैज आपे राखै भगतां देइ वडिआई[10] ।
नानक हरनाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई । ५ । ११ । २१ ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ ११२८-११३३)

भैरउ घरु २
असटपदीआ

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ।
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ।
मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ।
कारणु करता करदा आइआ[11] । १ ।
गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ।
हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु । १ । रहाउ ।

---

1) इक्कीस 2) अहंभाव 3) प्रभु स्वयं ही संतों के पीछे दैत्य लगा देता है 4) रक्षा करता आया है 5) प्रतिदिन 6) बसा हुआ 7) क्रोध से आतुर कर दिया 8) किसी का डराया हुआ डरता नहीं 9) दैत्य का काल समीप आ गया 10) बढ़ाई 11) कर्त्तार ऐसा कारण करता ही आया है

पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ[1] ।
लै पाटी[2] पाधे कै आइआ ।
नाम बिना नह पड़उ अचार ।
मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंन्द मुरारि । २ ।
पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ[3] ।
परविरति[4] न पड़हु रही समझाइ ।
निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि[5] ।
जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि[6] । ३ ।
प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे[7] ।
हमारा कहिआ न सुण आपणे कारज सवारे ।
सभ नगरी महि भगति दृड़ाई ।
दुसट सभा का किछु न वसाई[8] । ४ ।
संडै मरकै[9] कीई पुकार ।
सभे दैत रहे झख मारि ।
भगत जना की पति[10] राखै सोई ।
कीते कै कहिऐ किआ होई । ५ ।
किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ।
हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ।
पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ।
अंधा न बूझै कालु नेड़ै[11] आइआ । ६ ।
प्रहलादु कोठे विचि[12] राखिआ बारि दीआ ताला ।
निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ।
कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ[13] ।
जो धुरि लिखिआ सो आइ पहुता[14] जन सिउ वादु रचाइआ । ७ ।
पिता प्रहलाद सिउ गुरज[15] उठाई ।
कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ।

---

1) पढ़ने के लिए भेजा 2) पटिया 3) माता ने 4) पर-वृत्ति, अन्य रीति 5) साथ 6) कुल को कलंक लगता है 7) चेले बिगाड़ दिए 8) कुछ बस नहीं चलता 9) शुक्राचार्य के पुत्र और प्रह्लाद के पाचे 10) प्रतिष्ठा, मर्यादा 11) समीप 12) में 13) परमात्मा द्वारा बनाया हुआ उस की बराबरी करता है और बिना अस्तित्व ही अपना नाम ऊँचा सिद्ध करता है 14) पहुँच गया है, मिल गया है 15) गदा

जगजीवनु दाता अंति सखाई[1] ।
जह देखा तह रहिआ समाई । ८ ।
थम्हु उपाड़ि[2] हरि आपु दिखाइआ ।
अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ।
भगता मनि आनंदु वजी वधाई[3] ।
अपने सेवक कउ दे वडिआई[4] । ९ ।
जमणु मरणा मोहु उपाइआ ।
आवणु जाणा[5] करतै लिखि पाइआ ।
प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ।
भगता का बोलु आगै आइआ । १० ।
देव कुली[6] लखिमी कउ करहि जैकारु ।
माता नरसिंघ का रूपु निवारु ।
लखिमी भउ करै न साकै जाइ[7] ।
प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ । ११ ।
सतिगुरु नामु निधानु दृड़ाइआ ।
राजु मालु झूठी सभ माइआ ।
लोभी नर रहे लपटाइ ।
हरि के नाम बिनु दरगह[8] मिलै सजाइ । १२ ।
कहै नानकु सभु को करे कराइआ ।
से परवाणु[9] जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ।
भगता का अंगिकारु करदा[10] आइआ ।
करते अपणा रूपु दिखाइ । १३ । ३ ।

गुर सेवा ते अंमृतु फलु पाइआ हउमै[11] तृसन[12] बुझाई ।
हरि का नामु हृदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई । १ ।

1) सहायक 2) स्तम्भ को फोड़ कर 3) बधावा बजने लगा 4) बड़ाई, प्रतिष्ठा 5) आना-जाना, आवागमन 6) समस्त देवताकुल 7) पास नही जा सकती 8) परमात्मा के द्वार पर 9) स्वीकृत, प्रामाणिक, 10) करता 11) अहंभाव, 12) तृष्णा

हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे ।
अनदिनु[1] हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे । १ । रहाउ ।
संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती[2] अंच दूख न लाई ।
आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई । २ ।
भगता कीं पैज[3] रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई[4] ।
जनम जनम के किलविख[5] दुख काटहि दुबिधा रती न राई । ३ ।
हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ।
जो तुधु[6] भावै सोई करसी[7] अवरु न करणा जाई । ४ ।
जगतु उपाइ तुधु धंधै लाइआ भूंडी[8] कार कमाई ।
जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई । ५ ।
मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ।
भवजलु पारि न पावहि कबही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा[9] । ६ ।
साचै सबदि रते[10] जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ।
गुर की बाणी सबदि पछाती[11] साचि रहे लिव लाए । ७ ।
तूं आपि निरमलु तेरे जन हैं निरमल गुर कै सबदि वीचारे ।
नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे । ८ । २ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ ११५४-११५५)

---

1) प्रतिदिन 2) किंचित् 3) मर्यादा 4) बड़ाई 5) पाप, क्लेश 6) तुम्हें(अच्छा लगे) 7) करेगा 8) बुरी, नीच 9) सिर के बल 10) अनुरक्त 11) पहचान ली है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु बसंत

चउपदे घरु १

बसत्र उतारि दिगंबरु होगु[1] ।
जटा धारि किआ कमावै जोगु ।
मनु निरमलु नाही दसवै दुआर ।
भ्रमि भ्रमि आवै मूड़ा वारोवार[2] । १ ।
एकु धिआवहु मूढ़ मना ।
पारि उतरि जाहि इक खिनां[3] । १ । रहाउ ।
सिम्रिति सासत्र करहि वखिआण[4] ।
नादी बेदी पढ़हि पुराण[5] ।
पाखंड दृसटि मनि कपटु कमाहि ।
तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि[6] । २ ।
जे को ऐसा संजमी होइ ।
किआ विसेख[7] पूजा करेइ ।
अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि[8] ।
ओइ निरंजनु कैसे पाहि । ३ ।
कीता होआ करे किआ होइ[8] ।
जिसनो आपि चलाए सोइ ।
नदरि[9] करे तां भरमु चुकाए ।
हुकमै[10] बूझै तां साचा पाए । ४ ।
जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ।
तीरथ भवै दिसंतरि लोइ ।
नानक मिलीऐ सतिगुर संग ।
तउ भवजल के तूटसि[11] बंध । ५ । १ ।

---

1) हो गया 2) बार-बार 3) क्षण भर में 4) बखान करते हैं 5) एक ऐसे हैं जो शब्द-साधना करते हैं, एक वेदों और पुराणों का अध्ययन करते हैं 6) उनके प्रभु समीप नही है 7) विशेष 8) प्रभु के निर्मित जीव से क्या करना संभव हो सकता है 9) कृपा-दृष्टि 10) आज्ञा 11) बंधन टूटते हैं

इकतुका

साहिब भावै[1] सेवकु सेवा करे।
जीवतु मरै सभि कुल उधरै। १।
तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै[2]।
साचु नामु मेरै हिरदै वसै। १। रहाउ।
जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु[3] रहै।
तैसे संत जन राम नाम रवत रहै[4]। २।
मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ।
तउ सरणागति रहउ पइआ। ३।
कहत नानकु संसार के निहफल कामा।
गुर प्रसादि को पावै अंमृत नामा। ४। २।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ ११७०)

दुतुके

माहा रुती[5] महि सद बसंतु।
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु।
किआ हउ आखा[6] किरम जंतु।
तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु। १।
तै साहिब की करहि सेव।
परम सुख पावहि आतम देव। १। रहाउ।
करमु[7] होवै तां सेवा करै।
गुर परसादी जीवत मरै।
अनदिनु[8] साचु नामु उचरै।
इन बिधि प्राणी दुतरु[9] तरै। २।
बिखु अंमृतु करतारि उपाए।
संसार बिरख कउ दुइ[10] फल लाइ।
आपे करता करे कराए।
जो तिसु भावै तिसै खवाए[11]। ३।

---

1) परमात्मा को रुचे 2) कोई हंसता है तो इस से क्या 3) मगन 4) स्मरण करता रहता है 5) ॠतु 6) कह सकता हूँ 7) कृपा 8) प्रतिदिन 9) दुस्तर 10) दो 11) उसे खिलाता है

नानक जिस नो नदरि[1] करेइ ।
अंमृत नामु आपे देइ ।
बिखिआ की बासना मनहि करेइ[2] ।
अपणा भाणा[3] आपि करेइ । ४ । ३ ।
राते[4] साचि हरि नामि निहाला[5] ।
दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ।
तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ।
जिउ भावै तिउ राखै सोइ । १ ।
गुर गोपाल मेरै मनि भाए ।
रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए । १ । रहाउ ।
इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ।
राम बिसारि बहुरि पछुताना ।
बिछुरत मिलाइ गुर सेव रांगे[6] ।
हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे[7] । २ ।
पउण पाणी की इह देह सरीरा ।
हउमै[8] रोगु कठिन तनि पीरा ।
गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ।
करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ । ३ ।
चारि नदीआ[9] अगनी तनि चारे ।
तृसना जलत जले अहंकारे ।
गुरि राखे वडभागी[10] तारे ।
जन नानक उरि हरि अंमृत धारे । ४ । ४ ।

हरि सेवे सो हरि का लोगु ।
साचु सहजु कदे[11] न होवै सोगु ।
मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ।
मरि मरि जंमहि भी मरि जाहि । १ ।

---

1) कृपा 2) रोक देता है 3) इच्छा, मरजी 4) अनुरक्त 5) तृप्त 6) सेवा में रंग कर 7) श्रेष्ठ भाग्य के कारण 8) अहंभाव 9) अग्नि की चार नदियाँ, यथा हिंसा, लोभ, मोह और क्रोध 10) श्रेष्ठ भाग्य वाले 11) कभी

से जन जीवे जिन हरि मन माहि ।
साचु सम्हालहि[1] साचि समाहि । १ । रहाउ ।
हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ।
दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ।
हरि आपे जन लीए लाइ ।
तिन सदा सुखु है तिलु न तमाइ[2] । २ ।
नदरि[3] करे चूकै अभिमानु ।
साची दरगह[4] पावै मानु ।
हरि जीउ वेखै[5] सद हजूरि ।
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि । ३ ।
जीअ जंत की करे प्रतिपाल ।
गुरपरसादी सद सम्हाल[6] ।
दरि साचै पति[7] सिउ घरि जाई ।
नानक नामि वडाई[8] पाइ । ४ । ५ ।

अंतरि पूजा मन ते होइ ।
एको वेखै[9] अउरु न कोइ ।
दूजै[10] लोकी[11] बहुतु दुखु पाइआ ।
सतिगुरि मैनो[12] एकु दिखाइआ । १ ।
मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ।
इहु मनु मउलिआ[13] गाइ गुण गोबिंद । १ । रहाउ ।
गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ।
तां प्रभ साचे लगै पिआरु ।
आपु छोडि होहि दासत भाइ[14] ।
तउ जगजीवनु वसै मनि आइ । २ ।
भगति करे सद वेखै हजूरि[15] ।
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ।
इसु भगती का कोई जाणै भेउ[16] ।
सभु मेरा प्रभु आतम देउ । ३ ।

---

1) संभालता है, स्मरण करता है 2) तिल मात्र लालच नहीं है 3) कृपा-दृष्टि 4) परमधाम 5) देखता है 6) सदा स्मरण कर 7) प्रतिष्ठा 8) बड़ाई 9) एक को ही देखता है 10) द्वैत-भाव के कारण 11) लोगों ने 12) मुझे 13) खिला है, विकसित हुआ है 14) दास्य भाव से 15) पास ही देखता है 16) भेद

आपे सतिगुरु मेलि मिलाए।
जगजीवन सिउ आपि चितु लाए।
मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए।
नानक नामि रहे लिव लाए। ४। ६।

भगति वछलु हरि वसै मनि आइ।
गुर किरपा ते सहज सुभाइ।
भगति करे विचहु आपु खोइ[1]।
तदही[2] साचि मिलावा होइ। १।
भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि।
गुर कै हेति सचै प्रेम पिआरि। १। रहाउ।
भगति करे सो जनु निरमलु होइ।
गुर सबदी विचहु हउमै खोइ[3]।
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ।
सदा सांति सुखि सहजि समाइ। २।
साचि रते तिन सद वसंत।
मनु तनु हरिआ रवि[4] गुण गुबिंद।
बिनु नावै सूका[5] संसारु।
अगनि तृसना जलै वारोवार[6]। ३।
सोई करे जि हरि जीउ भावै।
सदा सुखु सरीरि भाणै[7] चितु लावै।
अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ[8]।
नानक नामु वसे मनि आइ। ४। ७।

माइआ मोहु सबदि जलाए।
मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए।
सफलिओ बिरखु[9] हरि कै दुआरि।
साची वाणी नाम पिआरि। १।

---

1) अंतर से अपने-पन की भावना को निकाल देना चाहिए 2) तभी 3) अंतर से अहंभाव को ख़त्म कर दे 4) स्मरण कर 5) सूख गया है 6) बार-बार 7) इच्छा, भावना 8) सहज-भाव से 9) शरीर रूपी वृक्ष फलयुक्त हो गया है, अर्थात् सफल-मनोरथ हो गया है

ए मन हरिआ सहज सुभाइ ।
सच फलु लागै सति गुरु भाइ । १ । रहाउ ।
आपे नेड़ै[1] आपे दूरि ।
गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि[2] ।
छाव घणी फूली बनराइ[3] ।
गुरमुखि बिगसै[4] सहजि सुभाइ । २ ।
अनदिनु[5] कीरतनु करहि दिन राति ।
सतिगुरि गवाई विचहु[6] जूठि भरांति ।
परपंच वेखि रहिआ[7] विसमादु[8] ।
गुरमुखि पाइऐ नाम प्रसादु । ३ ।
आपे करता सभि रस भोग ।
जो किछु करे सोइ परु होग[9] ।
वडा दाता तिलु न तमाइ ।
नानक मिलीऐ सबदु कमाइ । ४ । ८ ।

पूरै भागि सचु कार कमावै[10] ।
एको चेतै फिरि जोनि न आवै ।
सफल जनमु इसु जग महि आइआ ।
साचि नामि सहजि समाइआ । १ ।
गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ।
हरिनामु सेवहु विचहु आपु गवाइ[11] । १ । रहाउ ।
तिसु जन की है साची बाणी ।
गुर कै सबदि माहि समाणी ।
चहु जुग पसरी[12] साची सोइ ।
नामि रता[13] जनु परगटु होइ । २ ।
इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ।
से जन साचे साचै भाइ ।
साचु धिआइनि देखि हजूरि[14] ।
संत जना की पग पंकज[15] धूरि । ३ ।

---

1) समीप 2) सदा पास में देखता है 3) वनसस्पति 4) प्रसन्न होता है 5) प्रति दिन 6) अंतर से 7) देख रहा है 8) विस्मय अवस्था में 9) अवश्य होगा 10) बहुत बड़ा दाता है और उस में तिल मात्र लालच नहीं है 11) अंतर से अहंभाव को समाप्त कर के 12) फैली हुई है 13) अनुरक्त 14) पास 15) चरण-कमल

एको करता अवरु न कोइ ।
गुर सबदी मेलावा होइ ।
जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ।
नानक सहजे नामि समाइआ । ४ । ९ ।

भगति करहि जन देखि हजूरि[1] ।
संत जना की पग पंकज[2] धूरि ।
हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ।
पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ । १ ।
दासा का दासु विरला कोई होइ ।
ऊतम पदवी पावै सोइ । १ । रहाउ ।
इको सेवहु अवरु न कोइ ।
जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ।
ना ओहु मरै न आवै जाइ ।
तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ[3] । २ ।
से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ।
आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ।
गुरमुखि नामु परापति होइ ।
मनु निरमलु निरमल सचु सोइ । ३ ।
जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ।
साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ।[4]
हरि रसु चाखै तां सुधि होइ ।
नानक नामि रते[5] सचु सोइ । ४ । १० ।

नामि रते कुलां[6] का करहि उधारु ।
साची बाणी नाम पिआरु ।
मनमुख भूले काहे आए ।
नामहु भूले जनमु गवाए । १ ।

1) पास में 2) चरण-कमल 3) माता 4) पहचान 5) अनुरक्त
6) अनेक कुलों का

जीवत मरै मरि मरणु सवारै ।
गुर कै सबदि साचु उरधारै । १ । रहाउ ।
गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ।
मनु निरमलु सद गुणी गहीरा[1] ।
जंमै मरै न आवै जाइ[2] ।
गुरपरसादी साचि समाइ । २ ।
साचा सेवहु साचु पछाणै ।
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै[3] ।
दरि साचै सचु सोभा होइ ।
निज घरि वासा पावै सोइ । ३ ।
आपि अभुलु[4] सचा सचु सोइ ।
होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ[5] ।
साचा सेवहु साची बाणी ।
नानक नामे साचि समाणी । ४ । ११ ।

बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ।
माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ।
मनमुख अंधे ठउर न पाई ।
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई । १ ।
हुकमु मंनै सो जनु परवाणु[6] ।
गुर कै सबदि नामि नीसाणु[7] । १ । रहाउ ।
साचि रते जिना धुरि[8] लिखि पाइआ ।
हरि का नामु सदा मनि भाइआ[9] ।
सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ।
जोती जोति मिलाए सोइ[10] । २ ।
एकु नामु तारे संसारु ।
गुरपरसादी नाम पिआरु ।

---

1) गंभीर गुणों वाला प्रभु 2) आवागमन में नहीं आता 3) निशान, चिह्न 4) न भूलने वाला 5) द्वैत-भाव के कारण अपनी प्रतिष्ठा ख़त्म करते हैं 6) प्रामाणिक, स्वीकृत 7) निशान, चिह्न 8) आदि से, परमधाम से 9) अच्छा लगा है 10) आत्म-ज्योति को ब्रह्म-ज्योति में वह आप ही मिलाता है

बिनु नामै मुकति किनै न पाई ।
पूरे गुर ते नामु पलै पाई । ३ ।
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ।
सतिगुर सेवा नामु दृढ़ाए ।
जिन इकु जाता[1] से जन परवाणु[2] ।
नानक नामि रते दरि नीसाणु[3] । ४ । १२ ।

कृपा करे सतिगुरु मिलाए ।
आपे आपि वसै मनि आए ।
निहचल मति सदा मन धीर ।
हरिगुण गावै गुणी गहीर[4] । १ ।
नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ।
वृथा[5] जनमु फिरि आवहि जाइ । १ । रहाउ ।
बहु भेख करहि मनि सांति न होइ ।
बहु अभिमानि अपणी पति[6] खोइ ।
से वडभागी[7] जिन सबदु पछाणिआ ।
बाहरि जादा घर महि आणिआ[8] । २ ।
घर महि वसतु अगम अपारा ।
गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ।
नामु नवनिधि पाई घर ही माहि ।
सदा रंगि राते सचि समाहि । ३ ।
आपि करे किछु करणु न जाइ ।
आपे भावै लए मिलाइ ।
तिस ते नेड़ै[9] नाही को दूरि ।
नानक नामि रहिआ भरपूरि । ४ । १३ ।

गुरसबदी हरि चेति सुभाइ ।
राम नाम रसि रहै अघाइ[10] ।

---

1) जान लिया है 2) प्रामाणिक, स्वीकृत 3) निशान,प्रतिष्ठा का चिह्न 4) गंभीर गुणों वाला परमात्मा 5) व्यर्थ 6) प्रतिष्ठा 7) श्रेष्ठ भाग्य वाला 8) बाहर को भटकने वाले मन को आत्म-स्वरूप शुद्ध मन में टिकाता है 9) समीप 10) तृप्त

कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि।
जीवत मरहि हरि नामि समाहि । १ ।
हरि की दाति हरि जीउ जाणै[1] ।
गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ[2] हरि गुण दाता नामु वखाणै[3] । १ । रहाउ ।
भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ।
बहु संजमि सांति न पावै कोइ ।
गुरमति नामु परापति होइ ।
बडभागी[4] हरि पावै सोइ । २ ।
कलि महि राम नामि वडिआई[5] ।
गुर पूरे ते पाइआ जाई ।
नामि रते सदा सुखु पाई ।
बिनु नामै हउमै जलि जाई[6] । ३ ।
वडभागी हरि नामु बीचारा ।
छुटै राम नामि दुखु सारा ।
हिरदै वसिआ[7] सु बाहरि पासारा[8] ।
नानक जाणै सभु उपावणहारा[9] । ४ । १४ ।

इकतुके

तेरा कीआ किरम जंतु ।
देहि त जापी आदि मंतु[10] । १ ।
गुण आखि[11] वीचारी मेरी माइ ।
हरि जपि हरि कै लगउ पाइ । १ । रहाउ ।
गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ।
काहे जनमु गवावहु वैरि वादि[12] । २ ।
गुरि किरपा कीनी चूका अभिमानु ।
सहज भाइ पाइआ हरि नामु । ३ ।

---

1) जानता है 2) खिला है, विकसित हुआ है 3) बखान करता है 4) श्रेष्ठ भाग्य वाले 5) बड़ाई 6) अहंभाव में जल जाते हैं 7) बसा हुआ 8) फैला हुआ है 9) उत्पन्न करने वाला 10) प्रथम मंत्र 11) कह 12) वाद-विवाद में

ऊतमु ऊचा सबद कामु ।
नानकु वखाणै[1] साचु नामु । ४ । १५ ।
बनसपति मउली[2] चड़िआ बसंतु[3] ।
इहु मनु मउलिआ[4] सतिगुरु संगि । १ ।
तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ।
तां सुखु पावहु मेरे मना । १ । रहाउ ।
इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ।
अंमृत फलु पाइआ नामु गोबिंद । २ ।
एको एकु सभु आखि वखाणै[5] ।
हुकमु बूझै तां एको जाणै । ३ ।
कहत नानकु हउमै[6] कहै न कोइ ।
आखणु वेखणु[7] सभु साहिब ते होइ । ४ । १६ ।

सभि जुग तेरे कीते[8] होए ।
सतिगुरु भेटै मति बुधि होए । १ ।
हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ।
गुर कै सबदि सच नामि समाइ । १ । रहाउ ।
मनि बसंतु हरे सभि लोइ[9] ।
फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ । २ ।
सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ।
राम नामु राखै[10] उरधारे । ३ ।
मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ।
नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ । ४ । २७ ।

तिन बसंतु जो हरि गुण गाइ ।
पूरै भागि हरि भगति कराइ । १ ।

---

1) बखान करते हैं 2) खिल गई हे 3) वसंत ऋतु का आगमन 4) खिला है, विकास हुआ है 5) कह कर बखान करता है 6) अहंभाव 7) कहने और देखने की क्रिया 8) करने से 9) लोक 10) रखता है

इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ[1] ।
इहु मनु जलिया दूजै दोइ[2] । १ । रहाउ ।
इहु मनु धंधै बाधा करम कमाइ ।
माइआ मूठा सदा बिललाइ[3] । २ ।
इहु मनु छूटै जां सतिगुरु भेटै ।
जम काल की फिरि आवै न फेटै[4] । ३ ।
इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ।
नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ । ४ । १८ ।

बसंतु चड़िआ फूली बनराइ[5] ।
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ । १ ।
इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ।
हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ[6] । १ । रहाउ ।
सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ।
इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए । २ ।
फल फूल लागे जा आपे लाए[7] ।
मूलि लगै[8] तां सतिगुरु पाए । ३ ।
आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी[9] ।
नानक पूरै भागि भगति निराली । ४ । १९ ।

बसंतु हिंडोल घरु २

गुरु की बाणी विटहु[10] वारिआ[11] भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ।
गुरु सालाही सद अपणा भाई गुरु चरणी चितु लाई । १ ।
मेरे मन राम नामि चितु लाइ ।
मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ । १ । रहाउ ।

---

1) खबर, बोध 2) द्वैत-भाव 3) विलाप करता है 4) यमकाल के प्रभाव-क्षेत्र में नहीं आता 5) वनस्पति 6) अहंभाव को धो कर निकाल देता है 7) जब 8) परमात्मा में अनुरक्त हो 9) वाटिका 10) ऊपर से 11) न्योछावर होता हूँ

गुरि राखे[1] से उबरे भाई हरि रसु अंमृतु पीआइ।
विचहु हउमै दुखु उठि गइआ[2] भाई सुखु वुठा[3] मनि आइ। २।
धुरि आपे जिना नो बखसिओनु[4] भाई सबदे लइअनु मिलाइ[5]।
धूड़ि तिना की अघुलीऐ[6] भाई सतसंगति मेलि मिलाइ। ३।
आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोई।
नानक मनि तनि सुखु सद वसै[7] भाई सबदि मिलावा होइ। ४। १। २०।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ ११७२-११७७)

1) गुरु द्वारा रक्षित 2) अंतर से अहंभाव का दुःख चला गया 3) सुख की मन में वर्षा हुई, अर्थात् मन में आनंद छा गया 4) कृपा करता है 5) मिला लेते हैं 6) मुक्ति की प्राप्ति होती है 7) बसता है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु सारंग

असटपदीआ घरु १

मन मेरे हरि कै नामि वडाई[1] ।
हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति गाई । १ । रहाउ ।
सबदि भउ भंजनु[2] जम काल निखंजनु[3] हरि सेती लिव लाई ।
हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई । १ ।
भगतां का भोजनु हरिनाम निरंजनु पैन्हणु[4] भगति वडाई ।
निजघरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई । २ ।
मनमुख बुधि काची[5] मनूआ डोलै[6] अकथु[7] न कथै कहानी ।
गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अंमृत साची बानी । ३ ।
मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई[8] ।
सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई । ४ ।
मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ।
हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै[9] सहजि सुभाई । ५ ।
सबदु वीचारि सदा रंगि राते[10] हउमै[11] तृसना मारी ।
अंतरि निहकेवलु हरि रविआ[12] सभु आतम रामु मुरारी । ६ ।
सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे[13] ।
दुविधा महलु न पावै[14] जगि झूठि गुण अवगण न पछाणे । ७ ।
आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु सबदु सचु बाणी ।
नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी[15] । ८ । १ ।

---

1) बड़ाई, प्रतिष्ठा 2) भय-विनाशक 3) यमकाल संहारक 4) पहनने के लिए वस्त्र 5) कच्ची 6) चंचल, अस्थिर 7) अकथनीय 8) सहज भाव से 9) स्नान करे 10) प्रेम में अनुरक्त 11) अहंभाव 12) सर्वत्र व्यापक 13) मन को रुचते हैं 14) दुविधा की अवस्था में परमधाम की प्राप्ति नहीं हो पाती 15) बखान करने से

मन मेरे हरि का नामु अति मीठा ।
जनम जनम के किलविख[1] भउ[2] भंजन गुरमुखि एको डीठा[3] । १ । रहाउ ।
कोटि कोटंतर[4] के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ[5] ।
हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा[6] सतिगुरि एकु बुझाइआ । १ ।
प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ[7] सहजे रहे समाई ।
सबदि रते से रंगि चलूले[8] राते सहजि सुभाई[9] । २ ।
रसना सबदु वीचारि रसि राती[10] लाल भई रंगु लाई ।
राम नामु निहकेवलु जाणिआ[11] मनु तृपतिआ सांति आई । ३ ।
पंडित पढ़ि पढ़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ।
गुरपरसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि बीचारि । ४ ।
आवागउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ[12] ।
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ[13] । ५ ।
साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ।
अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई[14] । ६ ।
एकस महि सभु जगतो वरतै[15] विरला एकु पछाणै ।
सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु[16] एको जाणै । ७ ।
जिसनो नदरि[17] करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ।
नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई। ८ । २ ।

मन मेरे हरि की अकथ[18] कहाणी ।
हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी । १ । रहाउ ।
करि गहिर गंभीरु गुणी गहीरु[19] गुर कै सबदि पछानिआ ।
बहु बिधि करम करहि भाइ दूजै[20] बिनु सबदै बउरानिआ[21] । १ ।
हरि नामि नावै[22] सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ।
नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई[23] । २ ।
किआ दृड़ां किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई[24] ।

---

1) पाप 2) भय 3) देखने से 4) करोड़ों 5) अच्छा लगने से 6) दूसरा 7) बस गया है 8) गहरे लाल रंग वाले 9) सहज भाव से 10) अनुरक्त, मगन 11) शुद्ध स्वरूप प्रभु को जान लिया 12) मन को रुचने लगा 13) अंतर से अपनेपन की भावना खत्म कर दी 14) बसा दिया 15) व्याप्त है 16) प्रतिदिन 17) कृपा-दृष्टि 18) अकथनीय 19) गंभीर गुणों वाला 20) द्वैत-भाव 21) पागल हो गया है 22) स्नान करे 23) प्रतिष्ठा नष्ट कर ली है 24) मुझे तो समझ नहीं आती

होहि दइआलु कृपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई[1] । ३ ।
सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ[2] लाए ।
गुरु दुआरै सोई बूझै जिसनो आपि बुझाए । ४ ।
देखि बिसमादु[3] इहु मनु नही चेते आवागउणु संसारा ।
सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा । ५ ।
जिन दरु सूझै से कदे न विगाड़हि[4] सतिगुरि बूझ बुझाई ।
सचु संजमु करणी किरति[5] कमावहि आवण जाणु रहाई[6] । ६ ।
से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ।
मनमुख दूजै[7] भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा । ७ ।
आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै[8] ।
नानक से जन थाइ पए[9] है जिन की पति पावै लेखै[10] । ८ । ३ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १२३३-१२३५)

सलोकु*

नउमी[11] नेमु[12] सचु जे करै ।
काम क्रोधु तृसना उचरै[13] ।
दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ।
दुआदसी पंच वसगति[14] करि राखै तउ नानक मनु मानै ।
ऐसा वरतु रहीजै[15] पाडे होर बहुतु सिख[16] किआ दीजै । १ । २१ ।§

पढ़ि पढ़ि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ।
दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि[17] दुखु लागा अति भारी ।
मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउपारी ।
अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ।
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ।
नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को वीचारी । २ । २४ ।

नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ।
जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ।

1) सहायक 2) नाम 3) विस्मय-युक्त, आश्चर्ययुक्त 4) वे (अपने जीवन को) कभी बिगाड़ते नहीं 5) कृत, कर्म, क्रिया 6) आवागमन समाप्त हो जाता है 7) द्वैत-भाव 8) देखता है 9) उचित स्थान प्राप्त करते हैं 10) जो परमात्मा के द्वार पर प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं *ये श्लोक 'सारंग की वार महला ४' में से लिए गए हैं 11) नवमी 12) नियम 13) खा ले, नष्ट करदे 14) वश में 15) व्रत रखा जाए 16) शिक्षा §कोष्ठकों में लिखे अंक संबंधित पौड़ी-पदों के हैं 17) द्वैत-भाव के कारण नाम की प्राप्ति कभी नहीं होती

गुरमुखि होवै सु भाणा[1] मंने सहजे हरि रसु पीजै ।
नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना नामु रवीजै[2] । ३ । २४ ।

सहजे सुखि सुती[3] सबदि समाइ ।
आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ[4] ।
दुविधा चूकी सहजि सुभाइ[5] ।
अंतरि नामु वसिआ[6] मनि आइ ।
से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ[7] ।
नानक जो धुरि मिले ते हुणि आणि मिलाइ[8] । ४ । २५ ।

जिनी नामु विसारिआ[9] किआ जपु जापहि होरि ।
बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ।
नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि । ५ । २५ ।

जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ।
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही[10] उपरि चोर । ६ । २६ ।

जिचरु इहु मनु लहरी विचि है[11] हउमै[12] बहुतु अहंकारु ।
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ।
सेवा थाइ न पवई[13] तिस की खपि खपि होइ खुआरु ।
नानक सेवकु सोई आखीऐ[14] जो सिरु धरे उतारि ।
सतिगुर का भाणा मंनि लए सबदु रखै उरधारि । ७ । २७ ।

सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ।
आपे बखसे मेलि लए आपतु गवावै ।
मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ।
नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै । ८ । २७ ।

विणु सतिगुर सेवै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ।
मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ।
इकि गुरपरसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ।
नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर । ९ । २८ ।

---

1) इच्छा, मरज़ी 2) जिह्वा राम नाम का स्मरण करे 3) सोई हुई 4) गले से लगा लिया 5) सहज भाव से 6) बस गया है 7) जिन्होंने चंचल मन को फोड़ कर पुन: सही रूप में गढ़ा लिया है 8) जो आदि काल में (परमधाम से) मिलना है, वह अब मिल पाता है 9) भुला दिया है 10) दीवार में सूराख करके चोरी करने की विधि 11) चंचलता की लहरों में घिरा है 12) अहंभाव 13) फलदायक नहीं होती 14) कहला सकता है

माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरिनामु ।
धंधा करतिग्रा जनमु गइग्रा अंदरि दुखु सहामु[1] ।
नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि लिखिग्रा करामु[2] । १० । २८ ।

गुर का कहिग्रा[3] जे करे सुखी हू सुखु सारु ।
गुर की करणी भउ[4] कटीऐ नानक पावहि पारु । ११ । २९ ।

सचु पुराणा ना थीऐ[5] नामु न मैला होइ ।
गुर कै भाणै[6] जे चलै बहुड़ि[7] न ग्रावणु होइ ।
नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ[8] । १२ । २९ ।

मनमुख बोलि न जाणन्ही[9] ओना ग्रंदरि कामु क्रोधु ग्रहंकारु ।
थाउ कुथाउ न जाणन्ही[10] सदा चितवहि बिकार ।
दरगहु लेखा मंगीऐ ग्रोथै होहि कूड़िग्रार[11] ।
आपे सृसटि उपाइग्रनु[12] आपे करे बीचारु ।
नानक किस नो ग्राखीऐ[13] सभु बरतै ग्रापि सचिआरु । १३ । ३० ।

हरि गुरमुखि तिनी ग्राराधिग्रा जिन करमि[14] परापति होइ ।
नातक हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वसिआ सोइ । १४ । ३० ।

पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे[15] माइग्रा मोह सुआइ[16] ।
दूजै भाइ[17] नामु विआरिग्रा मन मूरख मिलै सजाइ ।
जिनि कीते तिसै न सेवनी देदा रिजकु समाइ ।
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ।
जिन कउ पूरबि लिखिग्रा सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ।
ग्रनदिनु नामु धिग्राइदे नानक सचि समाइ । १५ । ३१ ।

सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ।
नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि । १६ । ३१ ।

पराई अमाण[13] किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ।
गुर का सबदु गुर थै टिकै होरथै परगटु न होइ ।

1) सहन करता है 2) भाग्य में 3) कहा हुग्रा, उपदेश 4) भय 5) पुराना नहीं होता 6) इच्छा, मरज़ी 7) पुन: 8) जन्म और मरण दोनों बने रहते हैं 9) सही बोलना नहीं जानते 10) उचित ग्रौर अनुचित स्थान को नहीं समझते 11) परमधाम पर लेखा मांगा जाएगा और वहां झूठें सिद्ध होंगे 12) उत्पन्न करते हैं 13) कहा जाए 14) भाग्य में 15) वाद-विवाद करते हैं 16) स्वाद 17) द्वैत-भाव 18) दूसरों की अमानत

अंन्हे बसि माणकु पइआ[1] घरि घरि बेचण जाइ[2] ।
ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ[3] ।
जे आपि परख न आवई तां पारखीआ थावहु[4] लइउ परखाइ ।
जे ओसु नालि चितु[5] लाए तां वथु[6] लहै नउनिधि पलै पाइ ।
घरि होदै धनि[7] जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइ ।
सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै[8] सोगु विजोगु न कोइ ।
वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए[9] ।
नानक बिनु बूझै किनै न पाइओं फिरि फिरि आवै जाए । १७ । (३२)

मनि अनदु[10] भइआ मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे[11] सजण संत पिआरे ।
जो धुरि[12] मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ।
अंतरि सबदु रविआ[13] गुरु पाइआ सगले दूख निवारे ।
हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखां[14] उरधारे ।
मनमुखु तिन की बखीली[15] कि करे जि सचै सबदि सवारे ।
ओना दी आपि पति रखसी[16] मेरा पिआरा सरणागति पए गुरदुआरे ।
नानक गुरमुखि से सुहेले[17] भए मुख ऊजल दरबारे । १८ । (३२)

गुरमुखि अंमृतु नामु है जिसु खाधै[18] सभ भुख जाइ ।
तृसना मूलि न होवई[19] नामु वसै मनि आइ ।
बिनु नावै जि होरु[20] खाणा तिसु रोगु लगै तनि धाइ ।
नानक रस कस[21] सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ । १९ । (३३)

जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ।
बिनु सबदै जगि आन्हेरु[22] है सबदे परगटु होइ ।
पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ।
बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ।
नानक नदरी[23] पाईऐ करमि परापति होइ । २० । (३३)

---

1) अंधे व्यक्ति के हाथ माणिक्य आ गया 2) बेचने के लिए जाता है 3) आधी कौड़ी भी प्राप्त नहीं होती 4) परख करने वालों के द्वारा 5) उस प्रभु में चित्त लगाया जाए 6) वस्तु 7) घर पर धन होते हुए भी 8) वहाँ 9) अपने आप को मूरख बनाता है 10) आनंद 11) आनंदित हुए 12) आदि ते, परमधाम से 13) व्याप्त है 14) रखूँ 15) निंदा 16) उनकी प्रतिष्ठा की स्वयं रक्षा करेगा 17) सुखी, आनंदित 18) जिसके खाने से 19) नहीं होती 20) अन्य, और 21) कसैला आदि रसों का सेवन 22) अंधकार 23) कृपा-दृष्टि

माइआ मोहि विसारआ[1] गुर का भउ[2] हेतु अपारु ।
लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ।
गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह[3] मोख दुआरु ।
नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु[4] । २१ । (३४)

अमरु[5] वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई[6] न हुजति करणी जाइ[7] ।
आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए रजाइ[8] ।
गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ[9] ।
नानक सेवकु सोई आखीऐ[10] जि सचि रहै लिव लाइ । २२ । (३५)

दाति जोति[11] सभ सूरति तेरी ।
बहुतु सिआणप[12] हउमै[13] मेरी ।
बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी[14] ।
नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै सोई गल चंगैरी[15] । २३ । (३५)

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १२४५-१२५७)

---

1) भुला दिया 2) भय 3) परमधाम 4) कृपा करने वाला 5) हुकम, आदेश 6) उस के साथ चालाकी नहीं चलती 7) न तर्क वितर्क किया जा सकता है 8) इच्छा, मरजी 9) अंतर से अहंभाव नष्ट किया जा सकता हैं 10) कहला सकते हैं 11) ज्योति का प्रदान करना 12) समझदारी चालाकी 13) अहंभाव 14) आवागमन समाप्त नहीं होता 15) जो बात उसे अच्छी लगती है वही उत्तम है

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु मलार

चउपदे घरु १

निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ।
करि करि करता आपे वेखै[1] जितु भावै[2] तितु लाए ।
सेवक कउ एहा वडिआई[3] जा कउ हुकमु[4] मनाए । १ ।
आपणा भाणा[5] आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ[6] ।
एह सकति सिवै घरि आवै[7] जीवदिआ[8] मरि रहीऐ । १ । रहाउ ।
वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै[9] ब्रहमा बिसनु महेसा ।
एह त्रिगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा[10] ।
गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा । २ ।
हम दीन मूरख अवीचारी[11] तुम चिंता करहु हमारी ।
होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुम्हारी ।
एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि[12] नामु वखाणी[13] । ३ ।
कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ।
जिउ जल ऊपरि फेनु बुदबुदा तैसा इहु संसारा ।
जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा[14] । ४ । १ ।
जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै[15] सबदि जलाइ ।
सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ।
सदा सचु हरि वेखदे[16] गुर कै सबदि सुभाइ[17] । १ ।
मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ।
प्रभ भाणा[18] अपणा भावदा[19] जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ । १ । रहाउ ।

---

1) देखता है 2) अच्छा लगता है 3) यही बड़ाई है 4) आदेश, आज्ञा 5) इच्छा, मरजी 6) प्राप्त होता है 7) यही माया रूप शक्ति प्रभु की ओर झुकती है 8) जीवित अवस्था में 9) बखान करते हैं 10) संशय 11) विचार-रहित 12) रात-दिन 13) बखान करूँ 14) प्रसार 15) अहं-भाव 16) देखते हैं 17) सहज-भाव से 18) इच्छा, मरजी 19) रुचता है

त्रैगुण सभा धातु[1] है ना हरि भगति न भाइ[2]।
गति मुकति कदे न होवई[3] हउमै करम कमाहि।
साहिब भावै सो थीऐ[4] पइऐ किरति फिराहि[5]। २।
सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ।
तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ।
चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ। ३।
मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ।
गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ।
नानक नामु सलाहि तू हरि हरि सोभा पाइ। ४। २।

गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि[6] करेइ।
गुर बिनु दाता कोइ नाही बखसे[7] नदरि करेइ।
गुर मिलिऐ सांति ऊपजै अनदिनु[8] नामु लएइ। १।
मेरे मनि हरि अंमृत नामु धिआइ।
सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ[9] पाईऐ हरि नामे सदा समाइ। १। रहाउ।
मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किसही नालि[10]।
हउमै वडा रोगु[11] है सिरि मारे जमकालि।
गुरमति सत संगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि[12]। २।
सभना करता एकु तू नित करि देखहि वीचारु।
इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे[13] भगति भंडार।
तू आपे सभु किछु जाणदा[14] किसु आगै करी पूकार। ३।
हरि हरि नामु अंमृतु है नदरी[15] पाइआ जाइ।
अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ।
नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ। ४। ३।

गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई।
गुर परसादि परमपदु पाइआ वडी वडिआई होई[16]।

---

1) भ्रम है, व्यर्थ की भाग-दौड़ है 2) प्रेम 3) कभी नहीं होती 4) होगा 5) कृत कर्मों के फलस्वरूप आवागमन के चक्कर में पड़े रहेंगे 6) कृपा-दृष्टि 7) क्षमा पूर्वक 8) प्रतिदिन 9) नाम 10) साथ 11) अहंभाव बहुत बड़ा रोग है 12) स्मरण करो 13) कृपा करता है 14) जानता है 15) कृपा-दृष्टि से 16) बड़ी बड़ाई हो गई, प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई

अनदिनु[1] गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई । १ ।
मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ।
तजि कूड़ु[2] कुटंबु हउमै[3] बिखु तृसना चलणु रिदै सम्हालि[4] । १ । रहाउ ।
सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाही ।
जीअदानु देइ तृपतासे सचै नामि समाही ।
अनदिनु हरि रविआ[5] रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही । २ ।
सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ।
मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी[6] ।
आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी[7] । ३ ।
आवण जाणा बहुड़ि[8] न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ।
मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मंनु समाइआ ।
साचे ही सचु साचि पतीजै[9] विचहु आपु गवाइआ[10] । ४ ।
एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ।
एको नामु अंमृतु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ।
नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि[11] लिखिआ होई । ५ । ४ ।

गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ।
हउमै[12] मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ।
जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ।
अनदिनु बाणी सबदे गावै साचि रहै लिव लाइ । १ ।
मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ।
गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि[13] । १ । रहाउ ।
मनमुख पाखंडु कदे[14] न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ।
नामु विसारि[15] बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ।
इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ।
मरि मरि जनमै कदे न बूझै बिसटा माहि समाए । २ ।

•

1) प्रतिदिन 2) झूठा 3) अहंकार 4) यह बात हृदय में धारण कर के जीवन-मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए 5) स्मरण किया है 6) अकथनीय कहानी 7) प्रभु 8) पुनः 9) पतियाता है 10) अंतर से अपने-पन को भावना खत्म कर दी जाए 11) आदि से, परमधाम से 12) अहंभाव 13) साथ 14) कभी 15) भुला कर

गुरमुखि नामि रते[1] से उधरे गुर का सबदु वीचारि ।
जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ।
मनु तनु निरमुलु निरमल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ।
एको पुरखु एकु प्रभु जाता[2] दूजा[3] अवरु न कोई । ३ ।
आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि[4] करेइ ।
मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ[5] ।
अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ।
नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ । ४ । ५ ।

दुतुके

सतिगुर ते पावै घर दरु महलु[6] सुथानु ।
गुर सबदि चूकै अभिमानु । १ ।
जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि[7] नामु ।
अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह[8] पावहि मानु । १ । रहाउ ।
मन की बिधि सतिगुर ते जाणै अनदिनु[9] लागै सद हरि सिउ धिआनु ।
गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु । २ ।
इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दहदिस[10] फिरि आवै ।
जां आपे नदरि[11] करे हरि प्रभु साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै । ३ ।
इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ।
नानक नामु धिआइ सदा तू भवसागर जितु पावहि पारि । ४ । ६ ।

जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ।
एकसु बिनु मै अवरु न जाणा[12] सतिगुरि दीआ बुझाई । १ ।
मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ।
अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई । १ । रहाउ ।
मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ।
गुर परसादी भ्रमु भउ[13] भागै एक नामि लिव लाई । २ ।

---

1) अनुरक्त 2) जाना है 3) दूसरा, द्वैत-भाव 4) कृपा-दृष्टि 5) समा जाती है 6) परमधाम 7) आदि से, प्रभु-द्वार से 8) प्रभु-धाम 9) प्रतिदिन 10) दस दिशाएँ 11) कृपा-दृष्टि 12) जानता नहीं 13) भय

गुरबचनी सचु कार कमावै गति मति[1] तबही पाई ।
कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि लिव लाई । ३ ।
जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ।
मन तनु प्रान धरीं तिसु आगै नानक आपु[2] गवाई । ४ । ७ ।

मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ।
भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति[3] पाई । १ ।
मन रे मन सिउ रहउ समाई ।
गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई । १ । रहाउ ।
मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ।
सचु संजमु करणी हरि कीरति[4] हरि सेती लिव लाई । २ ।
आपे सबदु सचु साखी आपे जिन जोती जोति मिलाई[5] ।
देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अंमृतु पाई । ३ ।
आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ।
नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई[6] । ४ । ८ ।

हउमै[7] बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी[8] ।
गरुड़ु सबदु[9] मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी । १ ।
मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ।
इहु भवजलु जगत न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी । १ । रहाउ ।
त्रै गुण माइआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी[10] ।
तुरीआ गुणु सतसंगति पाईऐ नदरी[11] पारि उतारी । २ ।
चंदन गंध सुगंध है बहु बासना बहकारि[12] ।
हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि[13] । ३ ।
कृपा कृपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उरधारि ।
नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि । ४ । ९ ।

---

1) मोक्ष प्राप्ति की बुद्धि 2) अपने-पन की भावना 3) प्रतिष्ठा 4) कीर्ति, यश 5) आत्म-ज्योति परमात्म-ज्योति में मिल जाती है 6) बड़ाई 7) अहंभाव 8) अजगर रूप बहुत अधिक भार लाद लिया 9) सर्प-विष उतारने वाला मंत्र 10) समस्त सृष्टि में व्याप्त है 11) कृपा-दृष्टि 12) सुगन्धि फैलती है 13) विस्तार

घरु २

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी।
कि इहु मनु अवरनु[1] सदा अविनासी।
कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी।
इसु मन कउ ममता किथहु लागी[2]। १।
पंडित इसु मन का करहु बीचारु।
अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु। १। रहाउ।
माइआ ममता करतै लाई[3]।
एहु हुकमु[4] करि सृसटि उपाई।
गुर परसादी बूझहु भाई।
सदा रहहु हरि की सरणाई। २।
सो पंडितु जो तिहां[5] गुणा की पंडु[6] उतारै।
अनदिनु[7] एको नामु वखाणै[8]।
सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ।
सतिगुर आगै सीसु धरेइ।
सदा अलगु रहै निरबाणु।
सो पंडितु दरगह परवाणु[9]। ३।
सभनां महि एको एकु वखाणै।
जा एको वेखै[10] तां एको जाणै।
जाकउ बखसे[11] मेले सोइ।
ऐथै ओथै[12] सदा सुखु होइ। ४।
कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ।
सोइ मुकति जाकउ किरपा होइ।
अनदिनु हरि गुण गावै सोइ।
सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ[13]। ५। १। १०।

---

1) वर्ण-धर्म से रहित 2) कहाँ से लगी है 3) प्रभु ने लगाई है 4) आज्ञा, आदेश 5) तीन 6) गट्ठरी 7) प्रतिदिन 8) बखान करे 9) स्वीकृत, प्रामाणिक 10) देखता है 11) कृपा करता है 12) यहाँ और वहाँ, इस लोक में और परलोक में 13) उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता

भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ।
जमकालु मारे नित पति[1] गवाई ।
सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाइ[2] ।
हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई[3] । १ ।
प्राणी गुरमुखि कामु धिआइ ।
जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउड़ी[4] बदलै जाइ । १ । रहाउ ।
करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ।
अंतरि भगति हरि हरि उरिधारु ।
भवजलु सबदि लंघावण हारु[5] ।
दरि साचै दिसै सचिआरु । २ ।
बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ।
बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ।
हउमै[6] ममता बहु मोहु वधाइआ[7] ।
दूजै भाइ[8] मनमुखि दुखु पाइआ । ३ ।
आपे करता अगम अथाहा ।
गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा[9] ।
हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा[10] ।
नानक गुरमुखि नामि समाहा । ४ । २ । ११ ।

जीवत मुकत गुरमती लागे ।
हरि की भगति अनदिनु[11] सद जागे ।
सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ[12] ।
हउ तिन जन के सद लागउ पाइ । १ ।
हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई ।
गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई । १ । रहाउ ।
माइआ मोहु अगिआनु गुबारु[13] ।
मनमुख मोहे मुगध गवार ।

---

1) प्रतिष्ठा 2) परवशता ख़त्म होती है 3) परमधाम अपने शरीर रूपी घर में ही प्राप्त हो जाता है 4) कौड़ी, तुच्छ वस्तु 5) पार उतारने वाला 6) अहंभाव 7) वृद्धि की है 8) द्वैत-भाव 9) लाभ 10) परमात्मा सभी स्थानों पर मौजूद है, पास में उपस्थित है और उस को किसी की अपेक्षा नहीं 11) प्रतिदिन 12) अपने-पन की भावना नष्ट कर दे 13) अंधकार

अनदिनु[1] धंधा करत विहाइ ।
मरि मरि जंमहि मिलै सजाइ[2] । २ ।
गुरमुखि राम नामि लिव लाई ।
कूड़ै[3] लालचि ना लपटाई ।
जो किछु होवै सहजि सुभाइ[4] ।
हरि रसु पीवै रसन रसाइ[5] । ३ ।
कोटि मधे किसहि बुझाई ।
आपे बखसे[6] दे वडिआई[7] ।
जो धुरि[8] मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ।
नानक हरि हरि नामि समाई। ४ । ३ । १२ ।

रसना नामु सभु कोई कहै ।
सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ।
बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ।
गुर सबदी असथिरु घरि बहै[9] । १ ।
मेरे मन काहे रोसु करीजै ।
लाहा[10] कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदे रवीजै[11] । १ । रहाउ ।
बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ[12] ।
बिनु पिर[13] देखे नींद न पाइ ।
इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ[14] ।
सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ[15] । २ ।
नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ।
तृसना जलिया भूख न जाइ ।
विणु भागा[16] नामु न पाइआ जाइ ।
बहु बिधि थाका[17] करम कमाइ । ३ ।
त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ।
बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ।

---

1) प्रतिदिन 2) दंड 3) झूठे 4) सहज भाव से, स्वाभाविक ही 5) जिह्वा रसलीन हो गई 6) कृपा-पूर्वक 7) बड़ाई 8) आदि से 9) स्थिर घर में निवास करता है 10) लाभ 11) स्मरण किया जाए 12) पपीहा क्षण-क्षण में विलाप करता है 13) प्रियतम 14) सहन नहीं किया जा सकता 15) सहज भाव से 16) बिना भाग्य 17) थका हुआ

मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ।
गुरमुखि तुरीआ गुणु उरिधारु । ४ ।
गुरु मानै मानै सभु कोइ ।
गुरबचसी मनु सीतलु होइ ।
चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ।
नानक गुरमुखि विरला कोइ । ५ । ४ । १३ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १२५७-१२६२)

मलार घरु १
असटपदीआ

करमु[1] होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु[2] करमै पाइआ न जाइ ।
सतिगुरु मिलिऐ कंचनु हीईऐ जो हरि की होइ रजाइ[3] । १ ।
मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ।
सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ । १ । रहाउ ।
सतिगुर ते गिआनु ऊपजै तां इह संसा[4] जाइ ।
सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ । २ ।
गुरपरसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ।
मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ[5] । ३ ।
गुरपरसादी सिव घरि जंमै[6] विचहु सकति[7] गवाइ ।
अचरु चरै[8] बिबेक बुधि पाए पुरखै पूरखु मिलाइ[9] । ४ ।
धातुर बाजी[10] संसारु अचेतु है चले मूलु गवाइ ।
लाहा[11] हरि सत संगति पाईए करमी पलै पाइ । ५ ।
सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु[12] रिदै बीचारि ।
वडभागी[13] गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि । ६ ।
हरिनामां हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ।
कृपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु । ७ ।

---

1) कृपा 2) बिना 3) इच्छा, मरज़ी 4) संशय 5) अंतर से अपनेपन की भावना को नष्ट कर दे 6) उत्पन्न हो 7) माया 8) (कामादिक) न खाई जा सकने वाली वस्तुओं को (नष्ट कर दे) 9) गुरु के द्वारा परमात्मा में मिले 10) नाशवान, विनाश-शील 11) लाभ 12) देख लो 13) बड़े भाग्य वाला

मसतकि लिलाटि लिखिग्रा धुरि[1] ठाकुरि मेटणा न जाइ ।
नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ[2] । ८ । १ ।

बेद बाणी जगु वरतदा[3] त्रैगुण करे बीचारु ।
बिनु नावै जमडंडु सहै मरि जनमै वारो वार[4] ।
सतिगुर भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु । १ ।
मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ।
वडै भागि[5] गुरु पूरा पाइग्रा हरि हरि नामु धिग्राइ । १ । रहाउ ।
हरि आपणै भाणै[6] सृसटि उपाई हरि ग्रापे देइ अधारु ।
हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीग्रा हरि सिउ लागा पिग्रारु ।
हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु । २ ।
वाहु वाहु बाणी सति है गुरमखि बूझै कोइ ।
वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ[7] ।
आपे बखसे[8] मेलि लए करमि परापति होइ । ३ ।
साचा साहिबु माहरो[9] सतिगुरि दीआ दिखाइ ।
अंमृत वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ।
हरि कै नाइ[10] सदा हरीआवली फिरि सकै[11] ना कुमलाइ । ४ ।
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ[12] ।
हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ[13] ।
मनसुख भरमि भुलाइग्रा बिनु भागा हरि धनु न पाइ । ५ ।
त्रै गुण सभा धातु[14] है पड़ि पड़ि करहि बीचारु ।
मुकति कदे[15] न होवई नहु पाइनि मोखदुआरु ।
बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु । ६ ।
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदां का अभिआसु ।
हरि नामु चिति न ग्रावई नह निज घरि होवै वासु ।
जमकालु सिरहु न उतरै ग्रंतरि कपट विणासु[16] । ७ ।

---

1) आदि से, परमधाम से 2) प्रभु की इच्छा ग्रच्छी लगी है 3) वेद वाणी के अनुरूप चलता है 4) बार-बार 5) श्रेष्ठ भाग्य 6) इच्छा, मरजी 7) उस जितना बड़ा और कोई नहीं 8) कृपा करे 9) स्वामी प्रधान 10) नाम 11) सूखता नहीं 12) देखकर ही कोई पतियाता है 13) सहज भाव से 14) मायामय 15) कभी 16) विनाश

हरि नावै नो सभको परतापदा[1] विणु[2] भागां पाइआ न जाइ ।
नदरि[3] करे गुरु भेटीऐ हरिनामु वसै मनि आइ ।
नानक नामे ही पति[4] ऊपजे हरि सिउ रहां समाइ । ८ । २ ।

घरु २

हरि हरि कृपा करे गुर की कार लाए ।
दुखु पल्हरि[5] हरि नामु वसाए ।
साची गति साचै चितु लाए ।
गुर की बाणी सबदि सुणाए । १ ।
मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु[6] ।
गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु[7] लागै सहजि धिआनु । १ । रहाउ ।
बिनु पिर[8] कामणि करे सींगारु ।
दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ।
मनमुख का इहु बादि[9] आचारु ।
बहु करम दृड़ावदि नामु विसारि[10] । २ ।
गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ।
सबदे पिरु रखिआ उरधारि ।
एकु पछाण हउमै[11] मारि ।
सोभावंती कहीऐ नारि । ३ ।
बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ।
मनमुख लोभि दूजे[12] लोभाइआ ।
ऐसे गिआनी बूझहु कोई ।
बिनु मन मूए भगति न होइ । ४ ।
कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ।
बिनु मन मूए भगति न होइ ।
गिआन मति कमल परगासु[13] ।
तितु घटि नामै नामि निवासु । ५ ।

---

1) अभिलाषा करता है 2) बिना 3) कृपा-दृष्टि 4) प्रतिष्ठा 5) दुर करके, त्याग कर 6) सुख-निधि 7) प्रतिदिन 8) प्रियतम 9) बुरा, नीच 10) भुलाकर 11) अहंभाव 12) द्वैत-भाव 13) खिल जाता है, विकासित हो जाता है

हउमै[1] भगति करे सभु कोइ ।
ना मनु भीजै ना सुखु होइ ।
कहि कहि कहणु आपु जाणाए[2] ।
बिरथी[3] भगति सभु जनमु गवाए । ६ ।
से भगत सतिगुर मनि भाए ।
अनदिनु[4] नामि रहे लिव लाए ।
सदही नामु वेखहि हजूरि[5] ।
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि । ७ ।
आपे बखसे[6] देइ पिआरु ।
हउमै रोगु वडा[7] संसारि ।
गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ।
नानक साचे साचि समाइ । ८ । १ । ३ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १२७६-१२७८)

सलोक*

गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ[8] जिउ वुठै धरणि सीगार[9] ।
सभ दिसै हरीआवली[10] सर भरे सुभर[11] ताल ।
अंदरु रचै सच रंगि[12] जिउ मंजीठै लालु ।
कमलु बिगसै[13] सचु मनि गुर कै सबदि निहालु ।
मनमुख दूजी तरफ[14] है वेखहु नदरि निहालि[15] ।
फाही फाथे मिरग[16] जिउ सिरि दिसै जमकालु ।
खुधिआ[17] तृसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ।
एनी अखी नदरि न आवई[18] जिचरु[19] सबदि न करे बीचारु ।
तुधु[20] भावै संतोखीआ चूकै आल जंजालु ।
मूलु रहै[21] गुरु सेविऐ गुर पउड़ी[22] बोहथु ।
नानक लगी[23] ततु लै तू सचा मनि सचु । १ ।§ (१)

---

1) अहंभाव 2) अपने आप को बदता है 3) व्यर्थ 4) प्रतिदिन 5) पास अथवा सामने देख 6) कृपा पूर्वक 7) बड़ा *ये श्लोक 'वार मलार की महला १' में से लिए गए हैं 8) प्रसन्न होता है 9) जैसे वर्षा होने से धरती का शृंगार हो जाता है 10) हरी-भरी 11) भरपूर 12) अंतर में सत्य स्वरूप का प्रेम भर जाता है 13) खिल जाता है 14) द्वैत-भाव 15) दृष्टि डाल कर देख लो 16) फँदे में फंसे मृग के समान 17) भूख 18) इन आँखों से दिखाई नहीं पड़ता 19) जब तक 20) तुम्हें 21) मूलाधार कायम रहता है 22) सीढ़ी 23) जो हरि-प्रेम में लग जाती है §(कोष्ठको से लिखे अंक सम्बंधित पौड़ी-पदों के हैं

ऊंनवि ऊंनवि आइआ[1] अवरि करेंदा वंन[2] ।
किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु[3] ।
रंगु रहिआ तिन कामणी जिन्ह मति भउ भाउ[4] होइ ।
नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ । २ । (५)

ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपंगु[5] ।
नानक दुखु लागा तिन्ह कामणी जिन कंतै सिउ मनि भंगु[6] । ३ । (५)

ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी[7] ।
नानक भाणै[8] चलै कंत कै सु माणे सदा रली[9] । ४ । (६)

किआ उठि उठि देखहु बपुड़े[10] इसु हथि किछु नाहि ।
जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु मन मांहि ।
तिसनो मंनि वसाइसी[11] जा कउ नदरि[12] करेइ ।
नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ[13] । ५ । (६)

बाबीहा[14] जिस नो तू पुकारदा[15] तिस नो लोचै सभु कोइ ।
अपणी किरपा करि कै वससी[16] वणु तृणु हरिआ होइ ।
गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ।
बहदिआ उठदिआ[17] नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ।
नानक अंमृतु सद ही वरसदा[18] गुरमुखि देवै हरि सोइ । ६ । (७)

कलमलि[19] होई मेदनी अरदासि[20] करे लिव लाइ ।
सचै सुणिआ कंनु[21] दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ।
इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ[22] ।
अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ।
नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु सबाहि ।
जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ । ७ । (७)

नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि जमु किछु होइ ।
तिसै सरेविहु प्राणी हो तिसु बिनु अवरु न कोइ ।

1) झुक झुक कर आ गया है 2) और अन्य रंग करता है 3) उस हरि के साथ मेरी प्रीति कैसे रहेगी ? 4) भय और प्रेम 5) पंक-रहित 6) जिस का मन प्रियतम से हट गया है 7) लगातार वर्षा की स्थिति 8) इच्छा, मरज़ी 9) मौज, आनंद 10) बेचारे 11) बसाएगा 12) कृपा-दृष्टि करेगा 13) सब कारुण्य एवं प्रलाप करते हैं 14) पपीहा 15) पुकारता है 16) बरसेगा 17) बैठते और उठते 18) बरसता है 19) व्याकुल 20) प्रार्थना 21) कान 22) मूसलाधार वर्षा हुई

गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां[1] सदा सदा सुखु होइ ।
सहसा[2] मूलि न होवई सभ चिंता विचहु[3] जाइ ।
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ।
सचा साहिबु मनि वसै तां मनि चिंदिआ[4] फलु पाइ ।
नानक तिन का आखिआ[5] आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ[6] । ८ । (८)

अंमृतु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार[7] ।
गुरमुखि जिनी बुझिआ हरि अंमृतु रखिआ उरिधारि ।
हरि अंमृतु पीवहि सदा रंगि राते[8] हउमै[9] तृसना मारि ।
अंमृतु हरिका नामु है वरसै किरपा धारि ।
नानक गुरमुखि नदरी आइआ[10] हरि आतम रामु मुरारि[11] । ९ । (८)

बाबीहा[12] ना बिललाइ[13] ना तरसाइ एहु मनु खसम[14] का हुकमु मंनि ।
नानक हुकमि मंनिऐ तिख[15] उतरै चड़ै चवगणि वंनु[16] । १० । (९)

बाबीहा जल महि तेरा वासु है जलही माहि फिराहि ।
जल की सार न जाणही[17] तां तूं कूकण पाहि[18] ।
जल थल चहु दिसि वरसदा[19] खाली को थाउ[20] नाहि ।
एतै जलि वरसदै तिख मरहि[21] भाग तिन्हा के नाहि ।
नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि । ११ । (९)

इहु जलु सभ तै वरसदा[22] वरसै भाइ सुभाइ ।
से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ।
नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का[23] दुखु जाइ । १२ । (१०)

भिनी रैणि[24] चमकिआ वुठा छहबर लाइ ।
जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ।
जितु खाधै मनु तृपतीऐ जीआ जुगति समाइ ।
इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ।
गिआनी का धनु नामु है सदही रहै समाइ ।
नानक जिन कउ नदरि करे तां इहु धनु पलै पाइ । १३ । (१०)

1) तो 2) संशय 3) अंतर से 4) मन में इच्छित 5) कहा हुआ 6) जिनको अपने खाते में डाल लेता है, अपना बना लेता है 7) समझने वाले समझ लेते हैं 8) प्रेम में अनुरक्त 9) अहंभाव 10) दृष्टिगत हुआ 11) प्रभु के नाम सूचक शब्द 12) पपीहा 13) विलाप 14) स्वामी 15) प्यास 16) चार गुणा अधिक रंग चढ़ता है 17) वास्तविकता को नहीं समझता 18) तभी चीख पुकार करता है 19) बरसता है 20) स्थान 21) इतना जल बरसने से जो प्यासे मरते हैं 22) बरसता है 23) इन ऋतुओं का 24) भीगी हुई रात्रि

बाबीहा[1] एहु जगतु[2] है मत को भरमि भुलाइ।
इहु बाबीहा पसू है इसनो बूझणु[3] नाहि।
अंमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख[4] जाइ।
नानक गुरमुखि जिन पीआ तिन्ह बहुड़ि[5] न लागी आइ।१४।(११)

मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ।
हरि जीउ अपणी कृपा करे तां वरतै सभ लोइ[6]।
वुठै जीआ जुगति होइ[7] धरणी नो सीगारु होइ।
नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ।
गुरपरसादी को बिरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ।१५।(११)

बाबीहा खसमै का महलु[8] न जाणही महलु देखि अरदासि[9] पाइ।
आपणै भाणै[10] बहुता बोलिआ थाइ न पाइ[11]।
खसमु वडा दातारु है[12] जो इछे सो फल पाइ।
बाबीहा किआ बपुड़ा जगत की तिख[13] खाइ।१६।१२।

बाबीहा भिनी रैणि[14] बोलिआ सहजे सचि सुभाइ[15]।
इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ।
गुरसबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ[16]।
नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी[17] सो सतिगुरि दीआ मिलाइ।१७।(१२)

बाबीहा गुणवंती महलु[18] पाइआ अउगुणवंती दूरि।
अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि[19]।
कूक पुकार[20] न होवई नदरी नदरि निहाल[21]।
नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरु कै घाल।१८।(१३)

बाबीहा बेनती करे किरपा देहु जीउ दान।
जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान।
तू सुखदाता बेअंतु है गुण दाता नेधानु।
नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु।१९।(१३)

---

1) पपीहा 2) पशु वृत्ति वाला 3) समझ 4) प्यास 5) पुन: 6) सभ संसार में व्याप्त हो जाती है 7) बरसने से जीवन-युक्ति पैदा होती हे 8) स्वामी का ठिकाना 9) प्रार्थना 10) इच्छा, मरज़ी 11) बोलने से उचित स्थान (परमधाम) प्राप्त नहीं होता 12) स्वामी बड़ा दाता है 13) प्यास 14) भीगी हुई रात्रि 15) सहज भाव से 16) अंतर से अपनेपन की भावना खत्म होती है 17) जीवित नहीं रहती थी 18) परमधाम 19) पास, सामने 20) चीख़-पुकार 21) कृपालु कृपा दृष्टि से देखता है

बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ।
मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ[1] ।
बाबीहे कूक पुकार[2] रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ।
नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनां जीआ रिजकु समाइ[3] । २० । (१५)

चात्रिक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है[4] कितु पीतै तिख जाइ ।
दूजै भाइ[5] भरंमिआ अंमृत जलु पलै न पाइ ।
नदरि[6] करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै सुभाइ[7] ।
नानक सतिगुर ते अंमृत जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ । २१ । (१५)

बाबीहा अंमृत वेलै[8] बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ।
मेघै नो फुरमानु होआ[9] वरसहु किरपा धारि ।
हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ।
नानक नामे सभ हरीआवली[10] गुर कै सबदि वीचारि । २२ । (१६)

बाबीहा इव तेरी तिखा[11] न उतरै जे सउ करहि पुकार ।
नदरी[12] सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ।
नानक साहिबु मनि वसै विचहु[13] जाहि विकार । २३ । (१६)

सावणि सरसी कामणी[14] गुरसबदी वीचारि ।
नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि । २४ । (१७)

सावणि दझै[15] गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ[16] पिआरु ।
नानक पिर[17] की सार न जाणइ सभु सीगारु खुआरु । २५ । (१७)

गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ।
गुर सबदि एकु पछाणिआ एको सचा सोइ[18] ।
मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ[19] ।
अंदरि सची भगति है सहजे ही पति[20] होइ ।
कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ।
से वडभागी[21] नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ । २६ । (१८)

---

1) घनी मूसलाधार वर्षा होती है 2) चीख़-पुकार 3) सभी जीवों को आजीविका पहुँचाता है 4) तुम्हारे अंतर में प्यास है 5) द्वैत-भाव 6) कृपा-दृष्टि 7) सहज भाव से 8) प्रातः काल 9) आज्ञा हुई 10) हरी-भरी, प्रसन्न 11) प्यास 12) कृपा-दृष्टि 13) अंतर से 14) स्त्री रसलीन हो गई है 15) जलती है 16) द्वैत-भाव 17) प्रियतम 18) वही 19) ख़बर 20) प्रतिष्ठा 21) श्रेष्ठ भाग्य वाले

इंदु[1] वरसै करि दइआ लोकां मनि उपजै चाउ[2] ।
जिस कै हुकमि[3] इंदु वरसदा तिस कै सद बलिहारै जांउ ।
गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ[4] सचे के गुण गाउ ।
नानक नामि रते[5] जन निरमले सहजे सचि समाउ । २७ । (१८)

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १२७८-१२८६)

---

1) इंद्र 2) लोगों के मन में चाहना (उत्साह) पैदा होता है 3) आज्ञा 4) स्मरण करते हैं 5) नाम में अनुरक्त

१ओ सतिगुर प्रसादि

रागु प्रभाती

चउपदे

गुरमुखि बिरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ।
नामि रते[1] सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई । १ ।
हरि हरि नामु जपहु जन भाई ।
गुरप्रसादि मनु असथिरु[2] होवै अनदिनु[3] हरि रसि रहिआ अघाई[4] । १ । रहाउ ।
अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा[5] भाई ।
सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई । २ ।
सुखु सीगारु सतिगुरु दिखाइआ नामि वडी वडिआई[6] ।
अखुट[7] भंडार भरे कदे तोटि न आवै[8] सदा हरि सेवहु भाई । ३ ।
आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आइ ।
नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई । ४ । १ ।

निरगुणीआरे कउ बखसि[9] लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ।
तू बिअंतु[10] तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई । १ ।
हरि जीउ तुधु विटहु[11] बलि जाई ।
तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई । १ । रहाउ ।
आपणे भाणे विचि सदा रखु[12] सुआमी हरिनामो देहि वडिआई ।
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई । २ ।
तेरै भाणै भगति जे तुधु[13] भावै आपे बखसि मिलाई ।
तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि तृसना अगनि बुझाई । ३ ।

---

1) अनुरक्त, मगन 2) स्थिर 3) प्रतिदिन 4) तृप्त 5) लाभ 6) बहुत बड़ाई है 7) न खत्म होने वाला 8) कमी नहीं आती 9) क्षमा कर दे, कृपा कर दे 10) अनंत 11) तुम्हारे ऊपर से 12) सदा अपनी इच्छा के अनुसार रखो 13) तुम्हें

जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ।
नानक नावै जेवडु[1] अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई । ४ । २ ।

गुरमुखि हरि सालाहिआ जिंना[2] तिन सलाहि हरि जाता[3] ।
विचहु[4] भरमु गइआ है दूजा[5] गुर कै सबदि पछाता । १ ।
हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ।
तुधु[6] जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई । १ । रहाउ ।
गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अंमृतु सारु[7] ।
सदा मीठा कदे[8] न फीका गुरसबदी वीचारु । २ ।
जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिस विटहु[9] बलि जाई ।
सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई[10] । ३ ।
सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाए ।
नानक नामु मिलै वडिआई[11] गुरसबदी सचु पाए । ४ । ३ ।

जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु[12] ।
तुधु जेवडु[13] मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु[14] । १ ।
हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ।
जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई । १ । रहाउ ।
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की करहि प्रतिपाल ।
आपि कृपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै[15] जम कालु । २ ।
तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ।
जो हरि छोडि दूजै भाइ[16] लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ । ३ ।
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ।
नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि । ४ । ४ ।

गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ।
गुरसबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ।

---

1) नाम जितना बड़ा 2) जिन्होंने 3) जान लिया है 4) अंतर से 5) द्वैत-भाव 6) तुम्हें 7) उत्तम 8) कभी 9) उस के ऊपर से 10) अंतर से अहंभाव नष्ट कर दो 11) बड़ाई 12) उसकी रक्षा करने के तुम समर्थ हो 13) तुम्हारे जितना बड़ा 14) न होगा 15) स्पर्श तक नहीं कर पाता 16) द्वैत-भाव

सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान[1] । १ ।
मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ।
हरि का नामु सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै । १ । रहाउ ।
मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ।
गुर कै सबदि कमलु परगासिआ[2] हउमै[3] दुरमति खोई ।
सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई । २ ।
गुरमती मनु निरमलु होआ अंमृतु ततु वखानै[4] ।
हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि[5] मन ही मनु मानै ।
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु[6] जितु आतम रामु पछानै । ३ ।
मानस जनमि सतिगुरु न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ।
नदरि[7] करे तां सतिगुर मेले सहजे सहजि समाइआ ।
नानक नामु मिलै वडिआई[8] पूरै भागि धिआइआ । ४ । ५ ।

आपे भांति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ।
करि करि वेखै[9] करे कराए सरब जीआ नो रिजकु[10] दीआ । १ ।
कलीकाल महि रविआ[11] रामु ।
घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु । १ । रहाउ ।
गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि[12] घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ।
नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ[13] । २ ।
इंद्री पंच पंचे वसि आणै[14] खिमा संतोखु गुरमति पावै ।
सो धनु धनु हरिजनु वड[15] पूरा जो भै बैरागि हरिगुण गावै । ३ ।
गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ।
करि आचार बहु संपउ संचै[16] जो किछु करै सु नरकि परै । ४ ।
एको सबदु एको प्रभु वरतै[17] सभ एकसु ते उतपति चलै ।
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै । ५ । ६ ।

---

1) समाहित हो जाता है 2) हृदय रूपी कमल खिल गया 3) अहंभाव 4) तत्त्व का बखान करते हैं 5) में 6) ऊपर से 7) कृपा-दृष्टि 8) बड़ाई 9) देखता है 10) आजीविका 11) व्यापक है 12) कलियुग में नाम गुप्त रूप है 13) भाग कर गिर पड़ा हैं 14) वश में लाए 15) बड़ा 16) सम्पत्ति का संचय करे 17) व्याप्त है

मेरे मन गुरु अपणा सालाहि ।
पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि[1] । १ । रहाउ ।
अंमृत नामु भोजनु हरि देइ ।
कोटि मधे कोई विरला लेइ ।
जिस नो अपणी नदरि[2] करेइ । १ ।
गुर के चरण मन माहि वसाइ[3] ।
दुखु अन्हेरा[4] अंदरहु जाइ ।
आपे साचा लए मिलाइ । २ ।
गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ।
ऐथै ओथै[5] एहु अधारु ।
आपे देवै सिरजनहारु । ३ ।
सचा मनाए अपणा भाणा[6] ।
सोई भगतु सुघडु सोजाणा[7] ।
नानक तिस कै सद कुरबाणा । ४ । ७ ।

(आदिग्रंथ, पृष्ठ १३३२-१३३५)

प्रभाती विभास
असटपदीआ

गुर परसादी वेखु तू[8] हरि मंदरु तेरै नालि[9] ।
हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि । १ ।
मन मेरे सबदि रपै[10] रंगु होइ ।
सची भगति सचा हरिमंदरु प्रगटी साची सोइ[11] । १ । रहाउ ।
हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआन रतनि परगटु होइ ।
मनमुख मूलु न जाणनी[12] माणसि हरि मंदरु न होइ । २ ।
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि[13] सवारि ।
धुरि[14] लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु । ३ ।

---

1) गाता रहूँ, विचार करता रहूँ 2) कृपा-दृष्टि 3) बसाता है 4) अज्ञान रूपी अंधकार 5) लोक परलोक में 6) इच्छा, गरजी 7) श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाला तथा समझदार 8) तुम देखो 9) साथ 10) रँगा जाए 11) शोभा 12) वास्तविकता को नहीं पहचानते 13) आदेश 14) आदि का, परमधाम से

सबदु चीनि सुखु पाइआ सचै नाइ[1] पिआर ।
हरि मंदरु सबदे सोहणा[2] कंचनु कोटु अपार । ४ ।
हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार[3] ।
दूजा भाउ[4] करि पूजदे मनमुख अंध गवार । ५ ।
जिथै[5] लेखा मंगीऐ तिथै[6] देह जाति न जाइ[7] ।
साचि रते[8] से उबरे दुखीए दूजै भाइ । ६ ।
हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ।
गुरपरसादी चीनिआ हरि राखिआ उरि धारि । ७ ।
गुर की बाणी गुर ते जाती[9] जि सबदि रते रंगु लाइ ।
पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ । ८ ।
हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ।
तिसु विचि[10] सउदा[11] एकु नाम गुरमुखि लैनि सवारि । ९ ।
हरि मंदर मनु लोहटु[12] है मोहिआ दूजै भाइ ।
पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ[13] कीमति कही न जाइ । १० ।
हरिमंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ[14] ।
नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा हउदा होइ । ११ । १ ।

भै भाइ[15] जागे से जन जागण करहि हउमै[16] मैलु उतारि ।
सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर[17] काढहि मारि[18] । १ ।
मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ।
जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ । १ । रहाउ ।
गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु[19] जाइ ।
हरिनामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ । २ ।
गुरमती मुख सोहणे[20] हरि राखिआ उरि धारि ।
ऐथै ओथै[21] सुख घणा जपि हरि हरि उतरे पारि । ३ ।
हउमै विचि जागणु न होवई हरि भगति न पवई थाई[22] ।

---

1) नाम 2) सुन्दर 3) घोर अंधकार 4) द्वैत-भाव 5) जहाँ 6) वहाँ 7) जाना नहीं जा सकता 8) अनुरक्त 9) जान ली है 10) में 11) सौदा, वस्तुएँ 12) लोहा 13) हो गया 14) वही 15) भय और प्रेम 16) अहंभाव 17) कामादिक पाँच वासनाएँ 18) मार कर निकाल दिए 19) अंतर से अहंभाव चला जाए 20) सुन्दर 21) लोक परलोक में 22) सफल मनोरथ नहीं होती

मनमुख दरि ढोई ना लहहि[1] भाइ दूजै करम कमाइ[2] । ४ ।
धृगु खाणा धृगु पैन्हणा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ।
बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि होहि खुआरु । ५ ।
जिन कउ सतिगुरु मेटिआ तिना विटहु[3] बलि जाउ ।
तिनकी संगति मिलि रहां सचे सचि समाउ । ६ ।
पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ।
सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै[4] सबदि जलाइ । ७ ।
हरि सरणाई भजु[5] मन मेरे सभ किछु करणै जोगु[6] ।
नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु[7] । ८ । २ ।

(आदिग्रन्थ, पृष्ठ १३४६-१३४७)

सलोक

चिंता भि अपि कराइसी[8] अचिंतु भि आपे देइ ।
नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ[9] । २२० । १ ।*

फरीदा काली धउली[10] साहिबु सदा है जे को चिति करे ।
आपणा लाइआ पिरमु[11] न लगई जे लोचै सभु कोइ ।
एहु पिरमु पिआला खसम[12] का जै भावै तै देइ । १३ । २ ।§
काइ पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहिरेइ[13] ।
नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि[14] करेइ । १०४ । ३ ।§

लाहौर सहरु अंमृतसरु सिफती दा घरु[15] । २८ । ८ ।†

---

1) मनमुख व्यक्ति परमात्मा के द्वार पर गौरव प्राप्त नहीं करते 2) द्वैत-भाव के अधीन कर्म करते हैं 3) ऊपर से 4) अहंकार 5) भाग कर पड़ो 6) समर्थ 7) होगा 8) कराएगा या करेगा 9) ख़बर रखेगा *यह श्लोक संत कबीर के श्लोकों के साथ पृष्ठ १३७६ में संकलित है §ये दोनों श्लोक बाबा फरीद के श्लोकों के साथ क्रमशः पृष्ठ १३७८ और १३८३ में संकलित हैं 10) जवानी और बुढ़ापे में 11) प्रेम 12) स्वामी, मालिक, पति-परमात्मा 13) रेशमी वस्त्र किस लिए फाड़ रहे हो और ऊनी वस्त्र धारण कर रहे हो (दोनों सांसारिकता और दरवेशी के प्रतीक है) 14) ठीक करो 15) गुणों का घर । †यह 'श्लोक वारा ते वधीक' प्रसंग के गुरु नानक के नामाधीन संकलित श्लोकों में से लिया गया है (पृष्ठ १४१०)

१ओ सतिगुर प्रसादि

सलोक वारा ते वधीक

अभिआगत[1] एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ।
तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु[2] । १ ।

अभै निरंजन[3] परमपदु ता का भीखकु[4] होइ ।
तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ २ ।
होवा पंडितु जोतकी[5] वेद पड़ा मुखि चारि ।
नवा खंडा विचि जाणीआ[6] अपने चज[7] वीचार । ३ ।*

ब्रह्मण कैली[8] धातु कंजका[9] अणचारी[10] का धानु ।
फिटक फिटका कोड़ु बदीआ[11] सदा सदा अभमानु ।
पाहि एते जाहि[12] वीसरि नानका इकु नामु ।
सभ बुधी जालीअहि[13] इकु रहै ततु गिआनु । ४ ।
माथै जो धुरि[14] लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ।
नानक जो लिखिआ सो वरतदा[15] सो बूझै जिस नो नदरि[16] होइ । ५ ।

जिनी नामु विसारिआ कूड़ै[17] लालचि लगि ।
धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ।
जिन्हा वेलि न तूंबड़ी[18] माइआ ठगे ठगि ।
मनमुख बंन्हि चलाइअहि ना मिलही वगि सगि[19] ।
आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ।
नानक गुरमुखि छुटीऐ[20] जे चलै सतिगुर भाइ[21] । ६ ।

1) भिक्षा मांगने के लिए सामने आया हुआ 2) उसी प्रकार का पुण्य होगा 3) भय रहित और मायामुक्त 4) भिक्षुक 5) ज्योतिषी 6) में जाना जाए 7) आचार से *इस प्रसंग के प्रथम दो श्लोक 'रामकली की वार' में एक श्लोक के रूप में अंक ११ पर पहले ही आ चुके हैं और तीसरा श्लोक 'मारु की वार' आधे श्लोक के रूप में अंक १३ पर पीछे आ चुका है 8) कपिला गाय 9) लड़की 10) कुकर्मी 11) उन्हें धिक्कार-फटकार है जिन के पास बुराइयों का कोढ़ है 12) इतने पाप उनको लगते हैं 13) जला दी जाएँ 14) आदि से, परमधाम से 15) व्याप्त होता है 16) कृपा-दृष्टि 17) झूठे 18) जिनके हृदय में भक्ति रूपी बेल और ज्ञान-रूपी तूँबी (कद्दू) नहीं है 19) गायों का समुदाय कुत्तों के झुंड में नहीं मिल सकता 20) मुक्त हो सकते हैं 21) इच्छा में, प्रेम में

सालाही सालाहणा[1] भी सचा सालाहि ।
नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि[2] । ७ ।

नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ।
जह देखा तह एकु है गुरमुखि[3] परगटु होइ । ८ ।

दूख विसारणु[4] सबदु है जे मंनि वसाए[5] कोइ ।
गुर किरपा ते मनि वसै करम[6] परापति होइ । ९ ।

नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि[7] लख असंख ।
सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख[8] । १० ।

जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ।
गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख[9] जाइ ।
से जन निरमल ऊजले[10] जि गुरमुखि नामि समाइ ।
नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ[11] नामि रते[12] पातिसाह । ११ ।
जिउ पुरखै घरि भगती[13] नारि है अति लोचै भगती भाइ[14] ।
बहु रस सालणे सवारदी खट रस[15] मीठे पाइ ।
तिउ बाणी भगत सलाहदे[16] हरि नामै चितु लाइ ।
मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ[17] गुर आगै जाइ ।
भै भगती भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा[18] पूरि मिलाइ ।
हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ[19] ।
सतिगुर कै भाणै[20] जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ।
धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ[21] । १२ ।
सतिगुरु न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ।
धिगु तिना का जीविआ[22] कितु आए संसारि ।
गुरमती भउ[23] मनि पवै तां हरि रसि लगै पिआरि ।
नाउ मिलै धुरि[24] लिखिआ जन नानक पारि उतारि । १३ ।

---

1) सराहना करने योग्य प्रभु की सराहना करनी चाहिए 2) दूसरे द्वार को त्याग दो 3) गुरु के उपदेश के द्वारा 4) दु:ख को नष्ट करने वाला 5) मन में बसा लेता है 6) कृपा से, सौभाग्य से 7) अक्षौहिणी, चतुरंगिणी सेना का एक परिमाण, भाव अनंत जीव 8) अलख, अलक्ष्य 9) भूख 10) उज्ज्वल 11) अन्य बादशाहियाँ झूठी हैं 12) अनुरक्त 13) सेवा भाव वाली 14) प्रेम 15) खाने के लिए नमकीन पदार्थ यथा दाल, तरकारी आदि 16) सराहना करते हैं 17) बेचा है 18) चाहना, इच्छा 19) क्या खाने से तृप्त होता है 20) इच्छा, मरज़ी 21) भावना के अनुसार 22) उनके जीने को धिक्कार है 23) भय 24) आदि से, परमधाम से

माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै[1] खबरि न होइ ।
काम क्रोधि मनु हिरि लइआ[2] मनमुख अंधा लोइ[3] ।
गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ[4] ।
नाम रतनु परगासिआ[5] मनु तनु निरमलु सोइ ।
नामहीन नकटे[6] फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ।
नानक जो धुरि[7] करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ । १४ ।

गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ।
नामु पदारथु पाइआ अतुट[8] भरे भंडार ।
हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ।
नानक सभ कारण करता करै वेखै[9] सिरजनहारु । १५ ।

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि[10] ।
तिथै ऊंघ न भुख है[11] हरि अंमृत नामु सुख वासु ।
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै[12] आतमराम प्रगासु । १६ ।

काम क्रोध का चोलड़ा[13] सभ गलि आए पाइ ।
इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि हुकमे[14] आवै जाइ ।
जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ[15] ।
बंधनि बंधि भवाईअनु[16] करणा कछु न जाइ । १७ ।

जिन कउ किरपा धारीअनु[17] तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ।
सतिगुरि मिले उलटी भई[18] मरि जीविआ सहजि सुभाइ[19] ।
नानक भगती रतिआ[20] हरि हरि नामि समाई । १८ ।

मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ।
कीता करतिआ बिरथा गइआ[21] इकु तिलु थाइ न पाई[22] ।
पुंन दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ।
बिनु सतिगुरु जमकालु न छोडई[23] दूजै भाइ[24] खुआई ।

---

1) लूटा जा रहा है 2) काबू कर लिया है, जीत लिया है 3) लोक में 4) वही 5) प्रकट हुआ है 6) नाक कटी अवस्था में, अप्रतिष्ठित अवस्था में 7) आदि से, परमधाम से 8) अक्षुण्ण, न खत्म होने वाले 9) देखता है 10) दशम द्वार में 11) वहाँ नींद और भूख नहीं है 12) जहाँ 13) चोला, वस्त्र 14) ईश्वरीय आज्ञा से 15) द्वैत-भाव 16) भ्रमित किए जाते है 17) कृपा की जाती है 18) बुद्धि माया से हट गई 19) सहज भाव से 20) अनुरक्त होने से 21) किया कराया व्यर्थ चला गया 22) तिल मात्र लाभ न हुआ 23) छोड़ता नहीं 24) द्वैत-भाव

जोबनु जांदा नदरि न आवई[1] जरु पहुचै मरि जाई ।
पुतु कलतु[2] मोहु हेतु है अंति बेली[3] को न सखाई[4] ।
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ।
नानक से वडे वडभागी[5] जि गुरमुखि नामि समाई । १९ ।

मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ।
आतमारामु न पूजनी दूजै[6] किउ सुख होई ।
हउमै[7] अंतरि मैलु है सबदि न काढहि[8] धोइ ।
नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ । २० ।

मनमुख बोले[9] अंधुले तिसु महि अगनी[10] का वासु ।
बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु[11] ।
ओना[12] आपनी अंदरि सुध नही गुरबचनि न करहि विसासु[13] ।
गिआनीआ अंदरि गुरसबदु है नित हरि लिव सदा विगासु[14] ।
हरि गिआनीआ की रखदा[15] हउ सद बलिहारी तासु ।
गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु । २१ ।

माइआ भइअंगमु[16] सरपु है जगु घेरिआ बिनु माइ[17] ।
बिखु का मारणु[18] हरिनामु है गुर गरुड़[19] सबदु मुखि पाइ ।
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ।
मिलि सतिगुर निरमलु होइआ बिनु हउमै गइआ बिलाइ[20] ।
गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह[21] सोभा पाइ ।
जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ[22] । २२ ।

सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ।
निरवैरै नालि[23] वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाई[24] ।
अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ।
कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ।

---

1) योवन खत्म होता दृष्टिगत नहीं होता 2) स्त्री 3) साथी 4) सहायक 5) श्रेष्ठ भाग्य वाले हैं 6) द्वैत-भाव 7) अहंभाव 8) निकालते नहीं 9) बहरे 10) तृष्णा रूपी अग्नि 11) ज्ञान का प्रकाश नहीं करते 12) उन को 13) विश्वास, श्रद्धा 14) विकसित स्थिति, आनंदित अवस्था 15) रक्षा करता है 16) कुंडलाकार 17) माया 18) नाशक 19) सर्प की विष उतारने वाला मंत्र 20) अहंकार दूर हो गया 21) दरबार में, परमधाम में 22) भाव, प्रेम 23) साथ 24) आग लगाता है

बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति[1] गवाइ ।
बेसुआ[2] केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ[3] ।
हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ।
हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ।
जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ । २३ ।

नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जमपुरि जांहि[4] ।
नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि । २४ ।

चिंता धावत[5] रहि गए तां मनि भइआ अनंदु ।
गुरप्रसादी बुझीऐ साधन सुती निचिंद[6] ।
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोबिंदु ।
नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु । २५ ।

सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ।
सतिगुर का भाणा[7] मंनि लैनि हरिनामु रखहि उरधारि ।
ऐथै ओथै मंनीअनि[8] हरिनामि लगे वापारि ।
गुरमुखि सबदि सिञापदे[9] तितु साचै दरबारि[10] ।
सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ।
जमकालु नेड़ि[11] न आवई आपि बखसे[12] करतारि ।
नानक नाम रते[13] से धनवंत[14] हैनि निरधनु होरु संसारु । २६ ।

जन की टेक हरिनामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ[15] ।
गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ।
वडभागी[16] नामु धिआइआ अहिनिसि[17] लागा भाउ[18] ।
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ । २७ ।

लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ।
इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ[19] नालि चलै न अंतीवार[20] ।

---

1) प्रतिष्ठा 2) वेश्या 3) नहीं होता (चला जाता है) 4) जाएँगे 5) भ्रम के कारण भटकना 6) जीव रूपी स्त्री निश्चित भाव से सो रही है 7) इच्छा, मरज़ी 8) लोक परलोक में मानते हैं 9) पहचाने जाते हैं 10) परमधाम में 11) समीप 12) कृपा की है 13) अनुरक्त 14) धनवान 15) ठौर ठिकाना नहीं है 16) श्रेष्ठ भाग्य वाला 17) रातदिन 18) प्रेम 19) फैला हुआ है 20) अंतकाल में साथ नहीं चलते

बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ।
वडभागी[1] सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु विचारु ।
तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरिधारि । २८ ।

असी खते बहुतु कमावदे[2] अंतु न पारावारु ।
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु[3] हउ पापी वड[4] गुनहगारु ।
हरि जीउ लेखै वार न आवई[5] तूं बखसि मिलावणहारु ।
गुरु तुठै[6] हरिप्रभु मेलिआ सभ किलविख[7] कटि विकार ।
जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु । २९ ।

विछुडि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ[8] ।
जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ।
गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंनि[9] ।
नानक लालु अमोलका[10] गुरमुखि खोजि लहंनि[11] । ३० ।

मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ।
जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु[12] ।
इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घर वासु ।
मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु[13] ।
गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु[14] ।
हरि हरि नामु उरिधारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु[15] ।
सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु[16] ।
नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु । ३१ ।

सबदि मरै सोई जनु सिझै[17] बिनु सबदै मुकति न होई ।
भेख करहि बहु करम विगुते[18] भाइ दूजै परज विगोई[19] ।
नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोइ । ३२ ।
हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊचीहूं ऊचा होई[20] ।

---

1) श्रेष्ठ भाग्य वाले 2) हम बहुत भूलें (पाप) करते हैं 3) क्षमा कर दो 4) बड़े 5) लेखा करने से बारी नहीं आती 6) प्रसन्न होने पर 7) पाप 8) भय और प्रेम से 9) उपलब्ध होते हैं 10) जिन का मूल्यांकन नहीं हो पाता 11) प्राप्त कर लेते हैं 12) गुणसमूह, प्रभु 13) आवागमन में ही मरती हैं 14) श्रेष्ठ भाग्य रूपी मणि मस्तक पर लिखी है 15) हृदय रूपी कमल खिल जाता है 16) उस पर 17) मुक्त होता है सफल मनोरथ होता है 18) फंसे हुए 19) द्वैत-भाव में जनता नष्ट हो रही है. 20) ऊँचे से भी ऊँची है

अपड़ि कोइ न सकई[1] जे सउ लोचै कोई ।
मुखि संजम हछा न होवई[2] करि भेख भवै सभ कोई ।
गुर की पउड़ी[3] जाइ चड़ै करमि परापति होई ।
अंतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ।
नानक सबदि मरै मनु मानीऐ[4] साचे साची सोइ[5] । ३३ ।

माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु[6] तरिआ न जाइ ।
मेरा मेरा करदे पचि मुए[7] हउमै करत विहाइ[8] ।
मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ[9] ।
जो धुरि[10] लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ।
गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभ देखिआ ब्रहमु सुभाइ[11] ।
नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी[12] चड़ै ते भउजलि परि लंघाइ[13] । ३४ ।

विनु सतिगुर दाता को नही जो हरिनामु आधारु ।
गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरिधारि ।
तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ[14] पिआरि ।
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि । ३५ ।

बिनु सबदै जगतु बरलिआ[15] कहणा कछू न जाइ ।
हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ।
नानक करता सभ किछु जाणदा[16] जिनि रखी बणत बणाइ[17] । ३६ ।

होम जग सभि तीरथा पढ़ि पंडित थके पुराण ।
बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु[18] ।
सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ।
जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु । ३७ ।

माइआ मोहु बहु चितवदे[19] बहु आसा लोभु विकार ।
मनमुखि असथिरु ना थीऐ[20] मरि बिनसि जाइ खिन वार ।

1) कोई वहाँ पहुँच नहीं सकता 2) मुख द्वारा संयम कहने से कोई पवित्र या श्रेष्ठ नहीं हो सकता 3) सीढ़ी 4) मन मान जाता है 5) शोभा 6) दुस्तर 7) जल गए हैं 8) अहंभाव में ही जीवन गुजार दिया 9) आधे मार्ग में ही उलझे हुए हैं 10) आदि से, परमधाम से 11) स्वाभाविक ढंग से 12) श्रेष्ठ भाग्य वाले 13) पार उतार दिए जाते हैं 14) नाम 15) दीवाना, पागल 16) जानता है 17) जिस ने सारी व्यवस्था की हुई है 18) अहंभाव में आवागमन बना रहता है 19) चिंता करते हैं, सोचते हैं 20) स्थिर नहीं होते

वडभागु[1] होवै सतिगुरु मिलै हउमै[2] तजै विकार ।
हरिनामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार । ३८ ।

बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ।
जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि । ३९ ।

लोभी का वेसाहु[3] न कीजै जेका पारि वसाइ[4] ।
अंतिकालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ[5] ।
मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ।
मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि[6] जनमु गवाइ ।
सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ।
जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरिगुन गाइ । ४० ।

धुरि[7] हरि प्रभु करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ।
जीउ पिंड सभु तिसदा[8] प्रतिपालि करे हरि राइ ।
चुगल निंदक भुखे रुलि मुए[9] एना हथु न किथाऊ पाइ[10] ।
बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ।
खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ[11] ।
नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि[12] मिलाइ । ४१ ।

मन आवण जाणु[13] न सुझई न सुझै दरबारु[14] ।
माइआ मोहि पलेटिआ[15] अंतरि अगिआनु गुबारु ।
तब नरु सुता जागिआ[16] सिरि डंडु लगा बहु भारु ।
गुरमुखां करां उपरि[17] हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ।
नानक आपि ओहि उधरे सभ कुटंब तरे परवारा । ४२ ।

सबदि मरै सो मुआ जापै ।
गुरपरसादी हरि रसि धापै[18] ।
हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै[19] ।
बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ।

1) श्रेष्ठ भाग्य 2) अहंभाव 3) विश्वास 4) जितना संभव हो सके 5) अंतकाल में वहां धोखा करता है, जहाँ कुछ बन नहीं पाता 6) जाएंगे 7) आदि से, परमधाम से 8) उसका 9) रुल रुल कर मर गए 10) इन के हाथ कुछ भी नहीं लगा 11) अंतकाल में सामने आ जाता है 12) कृपा करके 13) आवागमन 14) प्रभु का धाम 15) लपेटा हुआ है 16) सोया हुआ जागा 17) इन्हीं हाथों पर, अर्थात् इसी जन्म में 18) तृप्त होता है 19) पहचाना जाता है

मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ।
हरिनामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ।
नानक करता करे सु होइ । ४३ ।

गुरमुखि बुढे कदे नाही[1] जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ।
सदा सदा हरिगुण रवहि[2] अंतरि सहज धिआनु ।
ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ।
तिना नदरी[3] इको आइआ सभु आतम रामु पछानु । ४४ ।

मनमुख बालकु बिरधि समानि है जिना अंतरि हरि सुरति नाही ।
विचि हउमै[4] करम कमावदे सभ धरमराइ कै जांही[5] ।
गुरमुखि हछे[6] निरमले गुर कै सबदि सुभाइ[7] ।
ओना मैलु पतंगु न लगई[8] जि चलनि सतिगुर भाइ ।
मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ।
नानक गुरमुख मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ[9] । ४५ ।

बुरा करे सु केहा सिझै[10] ।
आपणै रोहि आपे ही दझै[11] ।
मनमुखि कमला रगड़ै लुझै[12] ।
गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ।
*नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै[13] । ४६ ।

जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो[14] वीचारु ।
ओइ मानस जूनि न आखीअनि[15] पसू ढोर गावार ।
ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ।
मनमुख मुए विकार महि मरि जंमहि वारोवार[16] ।
जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे[17] हरि जगजीवन उरधारि ।
नानक गुरमुखि सोहणे[18] तितु सचै दरबारि । ४७ ।

---

1) कभी वृद्ध नहीं होते 2) स्मरण करते हैं 3) दृष्टि में 4) अहंभाव में 5) जाकर लेखा प्रस्तुत करेंगे 6) पवित्र 7) सहज भाव से 8) उनको जरा सा मैल भी नहीं लगता 9) गोद में, वक्ष में समा जाते हैं 10) कैसे सफल हो सकता है 11) जलते हैं 12) मूर्ख वाद-विवाद में ग्रस्त रहता है 13) संघर्ष करता है 14) न किया 15) कहे जा सकते 16) बार-बार 17) जीवित लोगों (श्रेष्ठ साधकों) को जो मिलते हैं वही जीवित रहते हैं 18) सुन्दर, शोभायमान

हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि[1] ।
गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजलि[2] ।
हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ।
धनु भगवंती[3] नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि[4] ।
वडभागी[5] गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि । ४८ ।

मनमुख दहदिसि[6] फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार ।
माइआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारोवार[7] ।
सतिगुर सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ।
जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि । ४९ ।

हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह[8] पावहि मानु ।
किलविख[9] पाप सभि कटीअहि हउमै[10] चुकै गुमानु ।
गुरमुखि कमलु विगसिआ[11] सभु आतम ब्रहमु पछानु ।
हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु । ५० ।

धनासरी[12] धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ।
तनु मनु सउपे जीअ सउ[13] भाई लए हुकमि फिराउ[14] ।
जह बैसावहि बैसह[15] भाई जह भेजहि तह जाउ ।
एवडु[16] धनु होरु को नही भाई जेवडु[17] सचा नाउ ।
सदा सचे के गुण गावां[18] भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ।
पैनणु गुण चंगिआईआ[19] भाई आपणी पति[20] के साद आपे खाइ ।
तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ।
सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ[21] भाई करमि[22] मिलै ता पाइ ।
इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ[23] फिराइ ।
संगति ढोई[24] ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ[25] ।
नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ।
तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ । ५१ ।

---

1) साथ 2) भली भाँति जला दिया है 3) वह स्त्री भाग्यवान है 4) हरि को ढूंढ कर प्राप्त कर लिया है 5) श्रेष्ठ भाग्य वाले ने 6) दस दिशाओं में 7) बार-बार 8) प्रभु-धाम में 9) दोष, पाप 10) अहंभाव 11) हृदय रूपी कमल खिल गया 12) राग विशेष के संदर्भ में 13) हृदय से 14) हुकम के अनुसार विचरण करे 15) जहाँ बिठाए वहीं बैठता हूँ 16) इतना बड़ा 17) जितना बड़ा 18) गाता हूँ 19) गुणों और अच्छी बातों को वस्त्र बनाते हैं 20) प्रतिष्ठा 21) सद्गुरु में बहुत विशेषताएँ हैं 22) कृपा-पूर्वक 23) द्वैत-भाव 24) शरण, आश्रय 25) स्थान

से दाड़ीआं सचीआ[1] जि गुर चरनी लगंन्हि[2] ।
अनदिनु[3] सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि[4] ।
नानक से मुह सोहणे[5] सचै दरि दिसंन्हि[6] । ५२ ।

मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ।
सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर मांहि समांहि[7] ।
सची रासी[8] सचु धनु उतम पदवी पांहि[9] ।
सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ।
सची दरगह बैसणा[10] सचे माहि समाहि ।
नानक विणु[11] सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जांहि । ५३ ।

बाबीहा[12] प्रिउ प्रिउ करे जल निधि[13] प्रेम पिआरि ।
गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ।
तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार[14] ।
नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरिधारि । ५४ ।

बाबीहा तूं सचु चउ[15] सचे सउ लिव लाइ ।
बोलिआ तेरा थाइ पवै[16] गुरमुखि होइ अलाइ[17] ।
सबदु चीनि तिख[18] उतरै मंनि लै रजाइ[19] ।
चारे कुंडा झोकि वरसदा[20] बूंद पवै सहजि सुभाइ ।
जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ।
नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ । ५५ ।

बाबीहा[21] तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ।
सभ किछु तेरै नालि[22] है सतिगुर दिआ दिखाइ ।
आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ[23] ।
झिमि झिमि अंमृतु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ।
कूक पुकार[24] न होवई जोती जोति मिलाइ ।
नानक सुखि सवन्हि[25] सोहागणी सचै नामि समाइ । ५६ ।

---

1) वे डाढ़ियाँ सच्ची है 2) लगती हैं 3) प्रतिदिन 4) रहती है 5) सुंदर 6) दिखाई पड़ते हैं 7) में समाहित हो जाते हैं 8) मूलधन, राशि 9) प्राप्त करते हैं 10) सच्चे दरबार में बैठने के लिए स्थान मिलता 11) बिना 12) पपीहा 13) बादल 14) चीख़-पुकार 15) बोल 16) सफल हो 17) आलाप 18) तृष्णा, प्यास 19) इच्छा, मरज़ी 20) चारों दिशाओं में खूब झुककर बरसता है 21) पपीहा 22) साथ 23) एक रस मूसलाधार रूप में बरसता है 24) चीख़-पुकार 25) सोते हैं

घुरहु[1] खसमि भेजिआ सचै हुकमि[2] पठाइ ।
इंदु[3] वरसै दइआ करि गूढ़ी छहबर लाइ[4] ।
बाबीहे[5] तनि मनि सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ।
अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ।
अनदिनु[6] लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ।
आपे सचा बखसि[7] लए करि किरपा करै रजाइ[8] ।
हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ।
भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइ ।
नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ[9] । ५७ ।
बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊड़ि[10] चड़हि आकासि ।
सतिगुरि मिलिऐ जलु जाईऐ चूकै भूख पिआस ।
जीउ पिंडु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ।
विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि[11] ।
नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास[12] । ५८ ।

नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुर सेवि समाइ ।
हरि वुठा[13] मनु तनु सभु परफड़ै[14] सभु जगु हरीआवलु होइ[15] । ५९ ।

सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ।
नानक नामु न वीसरै[16] जिनि सिरिआ[17] सभु कोइ । ६० ।

नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ[18] ।
हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ । ६१ ।

वडड़ै झालि झलुंभलै नावड़ा लईऐ किसु[19] ।
नाउ लइऐ परमेसरै भंनण घड़ण समरथु[20] । ६२ ।

हरहट[21] भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ।
साहिबु सदा हदूरि[22] है किआ उची करहि पुकार ।

---

1) आदि, से, परमधाम से 2) आज्ञा, आदेश 3) इंद्र 4) खूब मूसलाधार रूप में 5) पपीहा 6) प्रतिदिन 7) क्षमा कर लेता है 8) इच्छा, मरज़ी 9) परमधाम में मुक्त करा देता है 10) उड़कर 11) प्रार्थना 12) प्रकाशित करती है 13) बरसने से, प्रसन्न होने से 14) खिल जाते हैं, आनंदित हो जाते हैं 15) सब हरे भरे हो जाते हैं 16) नहीं भूलना चाहिए 17) उत्पन्न किया है 18) वही 19) प्रात:काल के समय किस का नाम लिया जाए 20) सर्जन और लय की शक्ति रखता है 21) रहट, अरसट्ट 22) पास है

जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु[1] कुरबाणु ।
आपु छोडहि तां सहु मिलै[2] सचा एहु वीचारु ।
हउमै[3] फिका बोलणा बुझि न सका कार[4] ।
वणु तृणु त्रिभुवणु तुझै धिआइदा[5] अनदिनु[6] सदा विहाण[7] ।
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करि करि थके वीचार ।
नदरि[8] करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ।
नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु[9] । ६३ ।

जोगि न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ।
नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि । ६४ ।

चारे कुंडा जे भवहि[10] वेद पड़हि जुग चारि ।
नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोखदुआर । ६५ ।

नानक हुकमु वरतै खसम का[11] मति भवी फिरहि चल चित[12] ।
मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ।
गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ।
जंमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित । ६६ ।

भुलिआं आपि समझाइसी[13] जा कउ नदरि[14] करे ।
नानक नदरी बाहरी[15] करणपलाह करे[16] । ६७ ।

(आदिग्रन्थ, पृष्ठ १४१३-१४२१)

---

1) उस के ऊपर से 2) अपनेपन की भावना को त्याग देने के पश्चात् प्रियतम की प्राप्ति होती है 3) अहंभाव 4) परमात्मा के कार्य को समझ नहीं पाते 5) अराधना करते हैं 6) प्रतिदिन 7) व्यतीत होता है 8) कृपा-दृष्टि 9) स्वीकृत, प्रामाणिक 10) चारों दिशाओं का भ्रमण कर लूं 11) स्वामी की आज्ञा सर्वत्र व्यापक है 12) तुम्हारी बुद्धि फिर भ्रमित है और चित्त चंचल है 13) भूले हुए को स्वयं समझाएगा 14) कृपा-दृष्टि 15) कृपा-दृष्टि से बाहर जाते हैं 16) कारुण्य-प्रलाप करते है